**Name: SAMPLE,  DOB: 21:12:1945**

**TOB: 11:34:00,  PLACE: ranchi (India)**

# श्रीगणेशाय नमः

**गणानां त्वां गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ।**
**ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ।।**

## नवग्रहस्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्पेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

## फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्‌गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्निसमुद्भवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ।।

**इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ।।**

जो जपापुष्प के समान अरुणिम आभावाले, महान तेज से संपन्न, अंधकार के विनाशक, सभी पापों को दूर करने वाले तथा महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, उन सूर्य को मैं प्रणाम करता हूं। जो दधि, शंख तथा हिम के समान आभा वाले, क्षीर समुद्र से प्रादुर्भूत, भगवान शंकर के शिरोभूषण तथा अमृतस्वरुप हैं, उन चंद्रमा को मैं नमस्कार करता हूं। जो पृथ्वी देवी से उद्‌भूत, विद्युत् की कान्ति के समान प्रभावाले, कुमारावस्था वाले तथा हाथ में शक्ति लिए हुए हैं, उन मंगल को मैं प्रणाम करता हूं। जो प्रियंगु लता की कली के समान गहरे हरित वर्ण वाले, अतुलनीय सौन्दर्य वाले तथा सौम्य गुण से संपन्न हैं, उन चंद्रमा के पुत्र बुध को मैं प्रणाम करता हूं। जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, स्वर्णिम आभा वाले हैं, ज्ञान से संपन्न हैं तथा लोकों के स्वामी हैं, उन बृहस्पति जी को मैं नमस्कार करता हूं। जो हिम, कुन्दपुष्प तथा कमलनाल के तन्तु के समान श्वेत आभा वाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के उपदेष्टा तथा महर्षि भृगु के पुत्र हैं, उन शुक्र को मैं प्रणाम करता हूं। जो नीले कज्जल के समान आभा वाले, सूर्य के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता तथा सूर्य पत्नी छाया तथा मार्तण्ड से उत्पन्न हैं, उन शनैश्चर को मैं नमस्कार करता हूं। जो आधे शरीर वाले हैं, महान पराक्रम से संपन्न हैं, सूर्य तथा चंद्र को ग्रसने वाले हैं तथा सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हैं, उन राहु को मैं प्रणाम करता हूं। पलाश पुष्प के समान जिनकी आभा है, जो रुद्र स्वभाव वाले और रुद्र के पुत्र हैं, भयंकर हैं, तारकादि ग्रहों में प्रधान हैं, उन केतु को मैं प्रणाम करता हूं। भगवान वेदव्यास जी के मुख से प्रकट इस स्तुति का जो दिन में अथवा रात में एकाग्रचित्त होकर पाठ करता है, उसके समस्त विघ्न शान्त हो जाते हैं, स्त्री–पुरुष और राजाओं के दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है। पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य और आरोग्य प्राप्त होता है तथा उनके पुष्टि की वृद्धि होती है।

# ज्योतिष सारिणी

## मुख्य विवरण

| | |
|---|---|
| जन्म दिनाकं | 21:12:1945(शुक्रवार) |
| जन्म समय | 11:34:00 |
| जन्म स्थान | ranchi |
| अक्षांश | 023:20:00N |
| रेखांश | 085:19:00E |
| यु./ग्रीष्म समय संस्कार | -00:00 |
| जी. एम. टी. समय | 006:03:00 |
| स्थानीय समय | 011:45:15 hrs |
| सांपातिक काल | 017:43:03 hrs |
| स्थानीय समय संस्कार | 000:11:15 |
| अयनांश | N.C.Lahiri(023:06:08) |
| सूर्योदय | 06:28:54AM |
| सूर्यास्त | 05:04:58PM |
| विक्रम संवत | 2002 |
| शक संवत | 1867 |
| संवत्सर | पार्थिव |
| संवत्सर अधिपति | अग्नि |

## घात चक्र

| | |
|---|---|
| राशि (सूर्य) | कुम्भ |
| मास | फाल्गुन |
| तिथि | 5,10,15 |
| वार | शुक्रवार |
| नक्षत्र | अश्लेषा |
| प्रहर | 4 |
| लग्न | सिहं |
| सूर्य सिद्धान्त योग | वज्र |
| करण | चतुश्पद |

## अवकहड़ा चक्र

| | |
|---|---|
| लग्न | मीन |
| लग्नाधिपति | बृहस्पति |
| राशि (चन्द्रमा) | कक्र |
| राशिपति | चन्द्रमा |
| नक्षत्र | पुष्य |
| नक्षत्रपति | शनि |
| नक्षत्र चरण | 1 |
| ऋतु | बसन्त |
| मास | चैत्र |
| पक्ष | कृष्ण |
| तिथि | तृतीया |
| तिथि श्रेणी | जया |
| तिथि पति | मंगल |
| करण | वनिज |
| करण श्रेणी | चर |
| करणपति | मनिभद्र |
| गण | देव |
| योनि | हस्त (स्त्री) |
| वर्ण | विप्र |
| सूर्य सिद्धान्त योग | इन्द्र |
| रज्जु | कटि |
| वश्य | जलचर |
| तत्व | जल |
| विहग | पिंगला |
| तत्वाधिपति | शुक्र |
| नाड़ी | मध्य |
| नाड़ी पद | मध्य |
| वेध | पूर्वाषाढ़ |
| आद्याक्षर | Hoo |
| पाया | रजत |

# ग्रह स्थिती

## लग्न कुण्डली

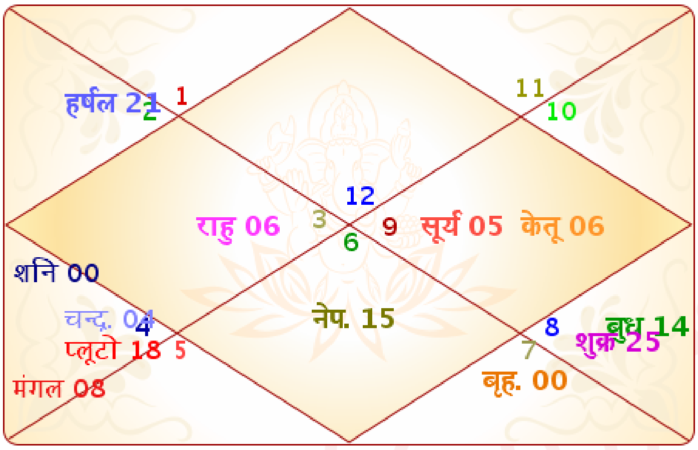


## नवांमश कुण्डली

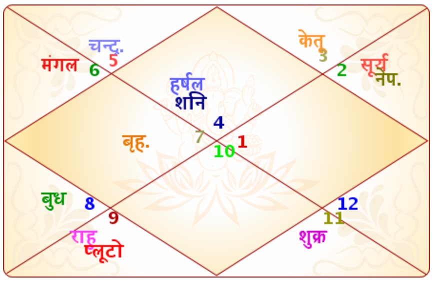


## चन्द्र कुण्डली

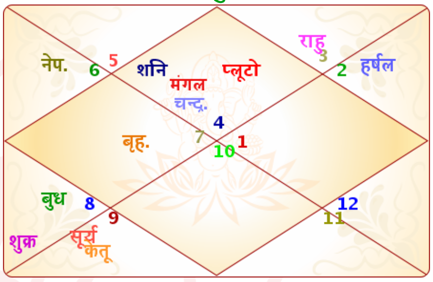


## ग्रह स्थिती

| ग्रह | राशि | अंश | गति | रा. पति | नक्षत्र | च. | न | न. पति | नवांश | नव. पति | विशेष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | मीन | 01:13:22 | .. | बृहस्पति | पूर्वाभाद | 4 | 25 | बृहस्पति | कक्र | चन्द्रमा | |
| सूर्य | धनु | 05:55:36 | 01:01:05 | बृहस्पति | मूला | 2 | 19 | केतु | वृष | शुक्र | मित्र राशि |
| चन्द्रमा | कक्र | 04:53:31 | 14:03:28 | चन्द्रमा | पुष्य | 1 | 8 | शनि | सिहं | सूर्य | स्व राशि |
| मंगल (व.) | कक्र | 08:17:39 | 00:13:28 | चन्द्रमा | पुष्य | 2 | 8 | शनि | कन्या | बुध | नीच राशि |
| बुध | वृश्चिक | 14:56:55 | 00:33:28 | मंगल | अनुराधा | 4 | 17 | शनि | वृश्चिक | मंगल | सम राशि |
| बृहस्पति | तुला | 00:18:58 | 00:08:28 | शुक्र | चित्रा | 3 | 14 | मंगल | तुला | शुक्र | शत्रु राशि |
| शुक्र | वृश्चिक | 25:47:49 | 01:15:27 | मंगल | ज्येष्ठा | 3 | 18 | बुध | कुम्भ | शनि | सम राशि |
| शनि (व.) | कक्र | 00:04:04 | 00:04:16 | चन्द्रमा | पुनर्वसु | 4 | 7 | बृहस्पति | कक्र | चन्द्रमा | शत्रु राशि |
| राहु (व.) | मिथुन | 06:56:43 | 00:03:10 | बुध | अरिद्रा | 1 | 6 | राहु | धनु | बृहस्पति | मित्र राशि |
| केतु (व.) | धनु | 06:56:43 | 00:03:10 | बृहस्पति | मूला | 3 | 19 | केतु | मिथुन | बुध | स्व नक्षत्र |
| हर्षल (व.) | वृष | 21:45:53 | 00:02:26 | शुक्र | रोहिणी | 4 | 4 | चन्द्रमा | कक्र | चन्द्रमा | ... |
| नेपच्यून | कन्या | 15:24:33 | 00:00:40 | बुध | हस्ता | 2 | 13 | चन्द्रमा | वृष | शुक्र | ... |
| प्लूटो (व.) | कक्र | 18:23:22 | 00:00:57 | चन्द्रमा | अश्लेषा | 1 | 9 | बुध | धनु | बृहस्पति | ... |

## ग्रह से भाव (भाव मध्य) के बीच की दूरी

| | लग्न | सूर्य | चन्द्रमा | मंगल | बुध | बृहस्पति | शुक्र | शनि | राहु | केतु | हर्षल | नेपच्यून | प्लूटो |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | .. | 275 | 124 | 127 | 254 | 209 | 265 | 119 | 96 | 276 | 81 | 194 | 137 |
| सूर्य | 85 | .. | 209 | 212 | 339 | 294 | 350 | 204 | 181 | 1 | 166 | 279 | 222 |
| चन्द्रमा | 236 | 151 | .. | 3 | 130 | 85 | 141 | 355 | 332 | 152 | 317 | 71 | 13 |
| मंगल | 233 | 148 | 357 | .. | 127 | 82 | 138 | 352 | 329 | 149 | 313 | 67 | 10 |
| बुध | 106 | 21 | 230 | 233 | .. | 315 | 11 | 225 | 202 | 22 | 187 | 300 | 243 |
| बृहस्पति | 151 | 66 | 275 | 278 | 45 | .. | 55 | 270 | 247 | 67 | 231 | 345 | 288 |
| शुक्र | 95 | 10 | 219 | 222 | 349 | 305 | .. | 214 | 191 | 11 | 176 | 290 | 233 |
| शनि | 241 | 156 | 5 | 8 | 135 | 90 | 146 | .. | 337 | 157 | 322 | 75 | 18 |
| राहु | 264 | 179 | 28 | 31 | 158 | 113 | 169 | 23 | .. | 180 | 345 | 98 | 41 |
| केतु | 84 | 359 | 208 | 211 | 338 | 293 | 349 | 203 | 180 | .. | 165 | 278 | 221 |
| हर्षल | 279 | 194 | 43 | 47 | 173 | 129 | 184 | 38 | 15 | 195 | .. | 114 | 57 |
| नेपच्यून | 166 | 81 | 289 | 293 | 60 | 15 | 70 | 285 | 262 | 82 | 246 | .. | 303 |
| प्लूटो | 223 | 138 | 347 | 350 | 117 | 72 | 127 | 342 | 319 | 139 | 303 | 57 | .. |

**MindSutra Software Technologies**

**A-16, Ramdutt Enclave, Milap Nagar,**

Uttam Nagar, New Delhi-110059

# भाव स्फूट और कुण्डली

## भाव कुण्डली

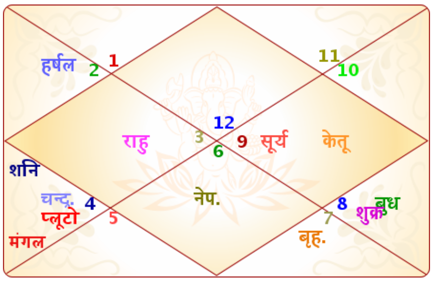


## लग्न कुण्डली

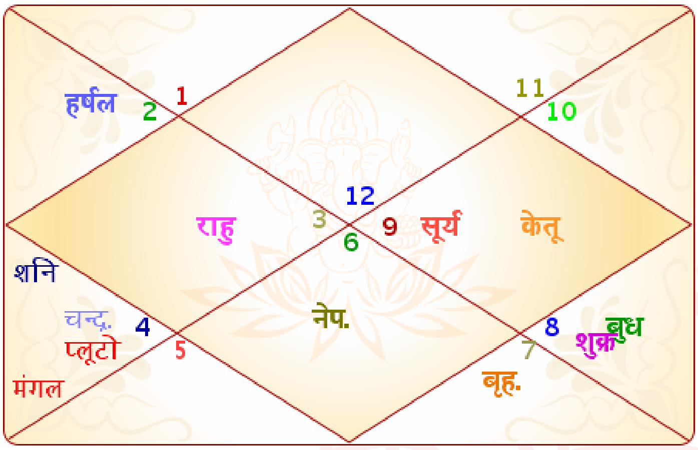


## भाव चलित कुण्डली

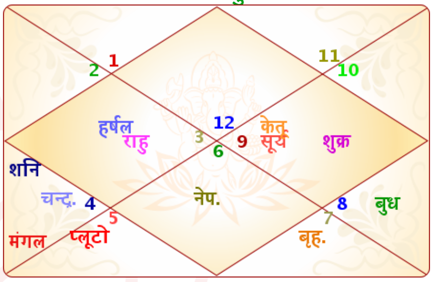


| भाव सख्या | भाव मध्य | | भाव विस्तार (आरम्भ———अन्त) | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | मीन | 01:13:22 | कुम्भ | 16:31:14 | मीन | 16:31:14 |
| 2 | मेष | 01:49:07 | मीन | 16:31:14 | मेष | 17:06:59 |
| 3 | वृष | 02:24:52 | मेष | 17:06:59 | वृष | 17:42:45 |
| 4 | मिथुन | 03:00:37 | वृष | 17:42:45 | मिथुन | 17:42:45 |
| 5 | कर्क | 02:24:52 | मिथुन | 17:42:45 | कर्क | 17:06:59 |
| 6 | सिहं | 01:49:07 | कर्क | 17:06:59 | सिहं | 16:31:14 |
| 7 | कन्या | 01:13:22 | सिहं | 16:31:14 | कन्या | 16:31:14 |
| 8 | तुला | 01:49:07 | कन्या | 16:31:14 | तुला | 17:06:59 |
| 9 | वृश्चिक | 02:24:52 | तुला | 17:06:59 | वृश्चिक | 17:42:45 |
| 10 | धनु | 03:00:37 | वृश्चिक | 17:42:45 | धनु | 17:42:45 |
| 11 | मकर | 02:24:52 | धनु | 17:42:45 | मकर | 17:06:59 |
| 12 | कुम्भ | 01:49:07 | मकर | 17:06:59 | कुम्भ | 16:31:14 |

## ग्रह से भाव (भाव मध्य) के बीच की दूरी

| भाव | सूर्य | चन्द्रमा | मंगल | बुध | बृहस्पति | शुक्र | शनि | राहु | केतु | हर्षल | नेपच्यून | प्लूटो |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| I | 275 | 124 | 127 | 254 | 209 | 265 | 119 | 96 | 276 | 81 | 194 | 137 |
| II | 244 | 93 | 96 | 223 | 178 | 234 | 88 | 65 | 245 | 50 | 164 | 107 |
| III | 214 | 62 | 66 | 193 | 148 | 203 | 58 | 35 | 215 | 19 | 133 | 76 |
| IV | 183 | 32 | 35 | 162 | 117 | 173 | 27 | 4 | 184 | 349 | 102 | 45 |
| V | 154 | 2 | 6 | 133 | 88 | 143 | 358 | 335 | 155 | 319 | 73 | 16 |
| VI | 124 | 333 | 336 | 103 | 58 | 114 | 328 | 305 | 125 | 290 | 44 | 347 |
| VII | 95 | 304 | 307 | 74 | 29 | 85 | 299 | 276 | 96 | 261 | 14 | 317 |
| VIII | 64 | 273 | 276 | 43 | 358 | 54 | 268 | 245 | 65 | 230 | 344 | 287 |
| IX | 34 | 242 | 246 | 13 | 328 | 23 | 238 | 215 | 35 | 199 | 313 | 256 |
| X | 3 | 212 | 215 | 342 | 297 | 353 | 207 | 184 | 4 | 169 | 282 | 225 |
| XI | 334 | 182 | 186 | 313 | 268 | 323 | 178 | 155 | 335 | 139 | 253 | 196 |
| XII | 304 | 153 | 156 | 283 | 238 | 294 | 148 | 125 | 305 | 110 | 224 | 167 |

# षोडश वर्ग कुण्डली

### होरा कुण्डली

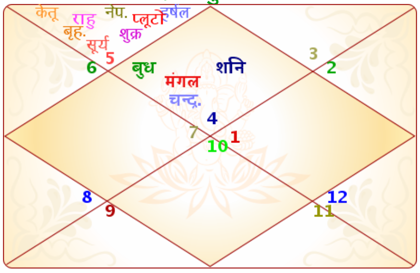


धन दौलत के लिए

### द्रेष्काण कुण्डली

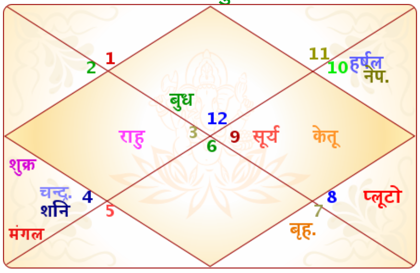


सहोदरों का जीवन और स्वास्थ्य

### चतुर्थांश कुण्डली

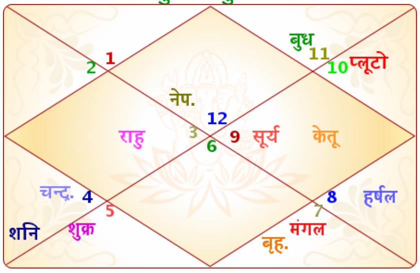


भाग्य और रिहायशी मकान

### सप्तमांश कुण्डली

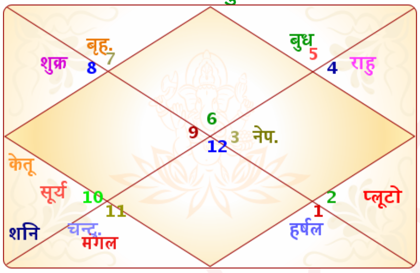


संतान और उनकी संतान

### नवांश कुण्डली

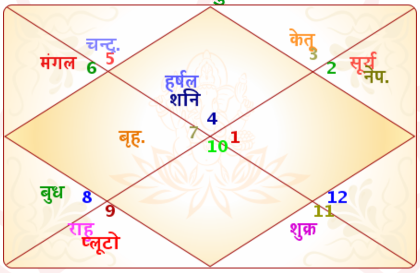


जीवनसाथी और उनका स्वास्थ्य

### दसमांश कुण्डली

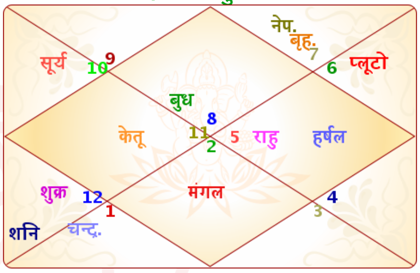


कारोबार और किसी भी कार्य में सफलता

### द्वादशांश कुण्डली

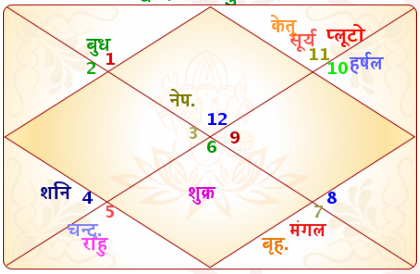


माता पिता का जीवन और उनका स्वास्थ्य

### षोडशांश कुण्डली

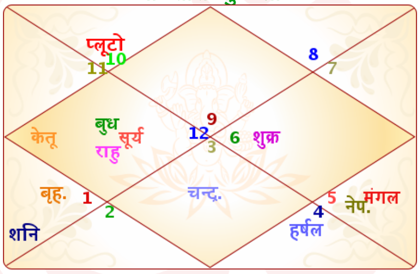


वाहन से संबंधित बातें

### विशांश कुण्डली

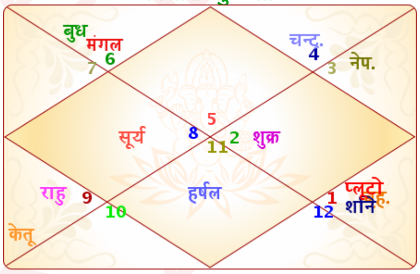


आध्यात्मिक रूझान

### चर्तुविशांश कुण्डली

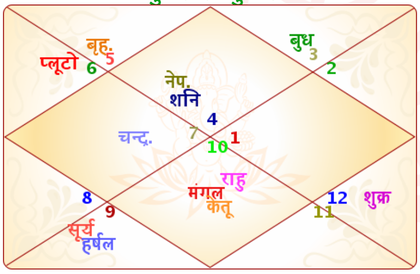


शिक्षा, ज्ञान और समझ

### सप्तविशांश कुण्डली

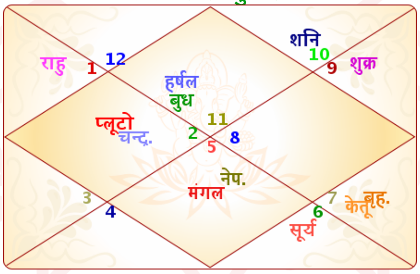


ताकत और दुर्बलता

### त्रिशांश कुण्डली

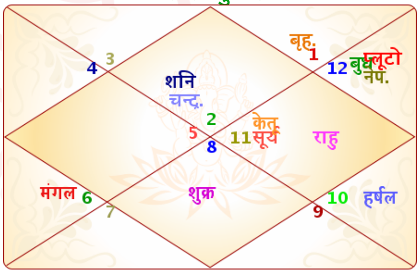


दरिद्रता, कठिनाईयाँ और दुर्गति

### खवेदांश कुण्डली

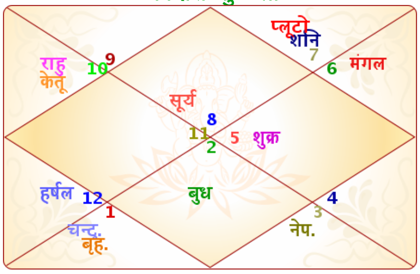


शुभ अशुभ घटनाँए

### अक्षवेदांश कुण्डली

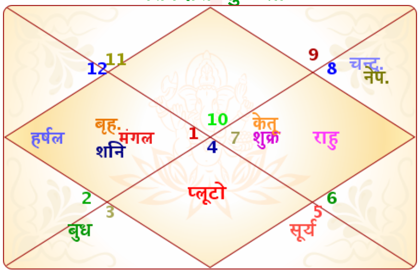


सभी मुद्दों के लिए

### षष्टांश कुण्डली

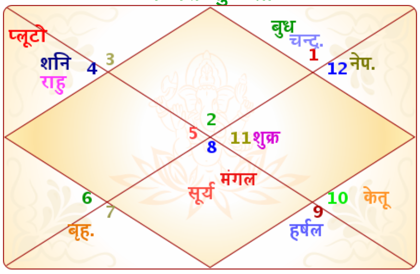


सभी मुद्दों के लिए

# मैत्री चक्र

## नैसर्गिक मैत्री

| ग्रह | सूर्य | चन्द्रमा | मंगल | बुध | बृहस्पति | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | ---- | मित्र | मित्र | सम | मित्र | शत्रु | शत्रु | शत्रु | शत्रु |
| चन्द्रमा | मित्र | ---- | सम | मित्र | सम | सम | सम | शत्रु | शत्रु |
| मंगल | मित्र | मित्र | ---- | शत्रु | मित्र | सम | सम | शत्रु | मित्र |
| बुध | मित्र | शत्रु | सम | ---- | सम | मित्र | सम | सम | सम |
| बृहस्पति | मित्र | मित्र | मित्र | शत्रु | ---- | शत्रु | सम | मित्र | सम |
| शुक्र | शत्रु | शत्रु | सम | मित्र | सम | ---- | मित्र | मित्र | मित्र |
| शनि | शत्रु | शत्रु | शत्रु | मित्र | सम | मित्र | ---- | मित्र | मित्र |
| राहु | शत्रु | शत्रु | शत्रु | सम | मित्र | मित्र | मित्र | ---- | सम |
| केतु | शत्रु | शत्रु | मित्र | सम | सम | मित्र | मित्र | सम | ---- |

## तत्कालिक मैत्री

| ग्रह | सूर्य | चन्द्रमा | मंगल | बुध | बृहस्पति | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | ---- | शत्रु | शत्रु | मित्र | मित्र | मित्र | शत्रु | शत्रु | शत्रु |
| चन्द्रमा | शत्रु | ---- | शत्रु | शत्रु | मित्र | शत्रु | शत्रु | मित्र | शत्रु |
| मंगल | शत्रु | शत्रु | ---- | शत्रु | मित्र | शत्रु | शत्रु | मित्र | शत्रु |
| बुध | मित्र | शत्रु | शत्रु | ---- | मित्र | शत्रु | शत्रु | शत्रु | मित्र |
| बृहस्पति | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | ---- | मित्र | मित्र | शत्रु | मित्र |
| शुक्र | मित्र | शत्रु | शत्रु | शत्रु | मित्र | ---- | शत्रु | शत्रु | मित्र |
| शनि | शत्रु | शत्रु | शत्रु | शत्रु | मित्र | शत्रु | ---- | मित्र | शत्रु |
| राहु | शत्रु | मित्र | मित्र | शत्रु | शत्रु | शत्रु | मित्र | ---- | शत्रु |
| केतु | शत्रु | शत्रु | शत्रु | मित्र | मित्र | मित्र | शत्रु | शत्रु | ---- |

## पंचधा मैत्री

| ग्रह | सूर्य | चन्द्रमा | मंगल | बुध | बृहस्पति | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | ---- | सम | सम | मित्र | अधिमित्र | सम | अधिशत्रु | अधिशत्रु | अधिशत्रु |
| चन्द्रमा | सम | ---- | शत्रु | सम | मित्र | शत्रु | शत्रु | सम | अधिशत्रु |
| मंगल | सम | सम | ---- | अधिशत्रु | अधिमित्र | शत्रु | शत्रु | सम | सम |
| बुध | अधिमित्र | अधिशत्रु | शत्रु | ---- | मित्र | सम | शत्रु | शत्रु | मित्र |
| बृहस्पति | अधिमित्र | अधिमित्र | अधिमित्र | सम | ---- | सम | मित्र | सम | मित्र |
| शुक्र | सम | अधिशत्रु | शत्रु | सम | मित्र | ---- | सम | सम | अधिमित्र |
| शनि | अधिशत्रु | अधिशत्रु | अधिशत्रु | सम | मित्र | सम | ---- | अधिमित्र | सम |
| राहु | अधिशत्रु | सम | सम | शत्रु | सम | सम | अधिमित्र | ---- | शत्रु |
| केतु | अधिशत्रु | अधिशत्रु | सम | मित्र | मित्र | अधिमित्र | सम | शत्रु | ---- |

# षड्बल और भाव बल

## षड्बल

| बल | सूर्य | चन्द्रमा | मंगल | बुध | बृहस्पति | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उच्च बल | 18.64 | 39.37 | 6.57 | 40.02 | 31.56 | 19.6 | 23.36 |
| सप्त वर्ग बल | 88.12 | 112.5 | 33.75 | 65.62 | 82.5 | 35.62 | 46.88 |
| युग्म अयुग्म बल | 15 | 15 | 0 | 0 | 30 | 15 | 0 |
| केन्द्रादी बल | 60 | 30 | 30 | 15 | 30 | 15 | 30 |
| द्रेक्कन बल | 15 | 0 | 15 | 15 | 15 | 15 | 0 |
| स्थान बल | 196.77 | 196.87 | 85.32 | 135.64 | 189.06 | 100.22 | 100.23 |
| वांछित स्थान बल | 165 | 133 | 96 | 165 | 165 | 133 | 96 |
| वांछित अंश | 119.25 | 148.02 | 88.87 | 82.21 | 114.58 | 75.36 | 104.41 |
| दिग बल | 59.03 | 49.37 | 11.76 | 24.58 | 9.7 | 2.4 | 39.62 |
| वांछित दिग बल | 35 | 50 | 30 | 35 | 35 | 50 | 30 |
| वांछित अंश | 168.65 | 98.75 | 39.2 | 70.22 | 27.71 | 4.81 | 132.05 |
| नतोन्नत बल | 1 | 58.92 | 58.92 | 1 | 60 | 1 | 58.92 |
| पक्ष बल | 9.66 | 50.34 | 9.66 | 50.34 | 50.34 | 50.34 | 9.66 |
| त्रिभाग बल | 0 | 0 | 0 | 0 | 60 | 0 | 60 |
| वर्ष बल | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 15 |
| मास बल | 30 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| दिन बल | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 45 | 0 |
| होरा बल | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 60 |
| अयन बल | 0.07 | 3.73 | 54.45 | 56.55 | 18.18 | 0.79 | 2.74 |
| युद्ध बल | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| काल बल | 40.72 | 112.99 | 123.02 | 107.9 | 188.52 | 97.13 | 206.31 |
| वांछित काल बल | 112 | 100 | 67 | 112 | 112 | 100 | 67 |
| वांछित अंश | 36.36 | 112.99 | 183.61 | 96.34 | 168.32 | 97.13 | 307.93 |
| चेष्टा बल | 0.07 | 50.34 | 0 | 30 | 30 | 30 | 0 |
| वांछित चेष्टा बल | 50 | 30 | 40 | 50 | 50 | 30 | 40 |
| वांछित अंश | 0.14 | 167.82 | 0 | 60 | 60 | 100 | 0 |
| नैसर्गिक बल | 60 | 51.43 | 17.14 | 25.71 | 34.29 | 42.86 | 8.57 |
| द्रिक बल | 1.11 | 10.67 | 9.82 | -12.77 | -31.28 | -3.28 | 19.37 |
| कुल षड्बल | 357.7 | 471.68 | 247.06 | 311.05 | 420.28 | 269.34 | 374.11 |
| षड्बल (रूप में) | 5.96 | 7.86 | 4.12 | 5.18 | 7 | 4.49 | 6.24 |
| न्यूनतम वांछनिय | 390 | 360 | 300 | 420 | 390 | 330 | 300 |
| वांछित अंश | 91.72 | 131.02 | 82.35 | 74.06 | 107.77 | 81.62 | 124.7 |
| तुलनात्मक स्थिति | 4 | 1 | 7 | 5 | 2 | 6 | 3 |
| इष्ट फल | 2.46 | 44.52 | 0 | 34.65 | 30.77 | 24.25 | 0 |
| कष्ट फल | 57.54 | 15.48 | 60 | 25.35 | 29.23 | 35.75 | 60 |
| दिप्ति बल | 100 | 50.34 | 49.21 | 44.95 | 21.87 | 12.93 | 51.95 |

## भावबल

| भाव सँख्या | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भाव राशि | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ |
| भावाधिपति बल | 420.28 | 247.06 | 269.34 | 311.05 | 471.68 | 357.7 | 311.05 | 269.34 | 247.06 | 420.28 | 374.11 | 374.11 |
| भाव दिग्बल | 30 | 20 | 10 | 30 | 50 | 20 | 0 | 10 | 40 | 30 | 50 | 50 |
| भाव दृष्टिबल | -14.88 | -57.57 | -6.28 | 4.95 | 18.71 | 10.66 | -6.9 | -45.63 | -18.95 | 16.16 | -12.12 | 6.84 |
| भावबल योग | 435.4 | 209.49 | 273.06 | 346.01 | 540.39 | 388.36 | 304.16 | 233.71 | 268.12 | 466.44 | 411.99 | 430.94 |
| भावबल (रूप में) | 7.26 | 3.49 | 4.55 | 5.77 | 9.01 | 6.47 | 5.07 | 3.9 | 4.47 | 7.77 | 6.87 | 7.18 |
| तुलनात्मक स्थिति | 3 | 12 | 9 | 7 | 1 | 6 | 8 | 11 | 10 | 2 | 5 | 4 |

# सुदर्शन चक्र

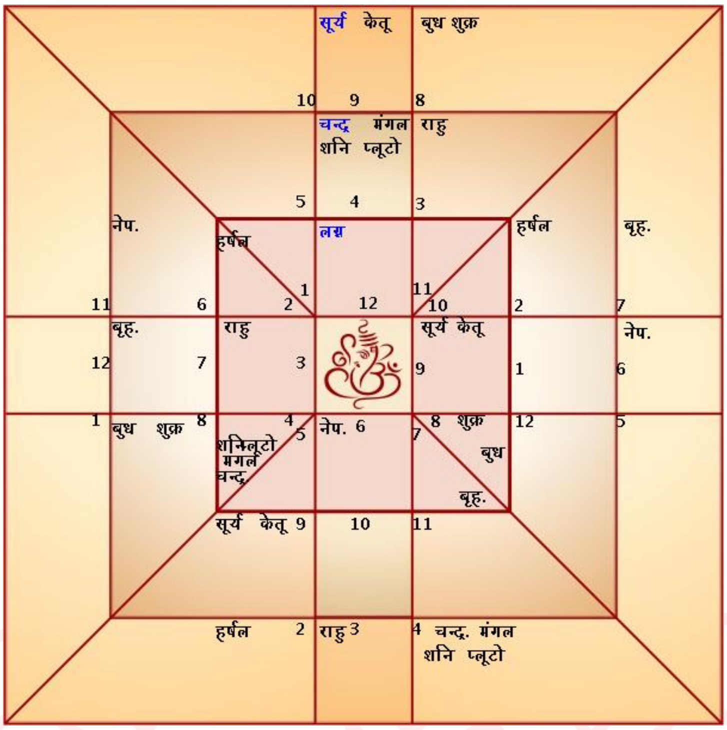


सुदर्शन चक्र शुभ और अशुभ ग्रहों के प्रभाव को दर्शाता है यह (i) लग्न (ii) चन्द्रमा और (iii)सूर्य की स्थिति से इन प्रभावों को देखता है। यह जातक की उम्र को भी दर्शाता है कि कब ये प्रभाव जातक पर पड़गें।

यदि केवल शुभ ग्रहों (वृहस्पति, शुक्र वुध, चन्द्रमा) का प्रभाव है तो पूरा साल खुशीयो से भरा होगा और मांगलिक कार्य होगें। यदि केवल अशुभ ग्रहों (मंगल, शनि, राहु, केतू, सुर्य) का प्रभाव है तो यह साल अमंगलकारी होगा।

# ग्रह अवस्था और तारा चक्र

## ग्रह

| ग्रह | स्वप्नादि 3 | बलादि 5 | लज्जितादि 9 | दिप्तादि 9 | दिप्तादि 10 |
|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | स्वप्न | बाल | क्षुदित | प्रमुदित | मुदित |
| चन्द्रमा | जाग्रत | मृत | लज्जित | स्वस्थ | स्वस्थ |
| मंगल | स्वप्न | वृद्ध | लज्जित | दीन | वक्र |
| बुध | सुप्त | युवा | क्षुदित | दु:खित | दीन |
| बृहस्पति | स्वप्न | बाल | मुदित | दीन | मुदित |
| शुक्र | स्वप्न | बाल | मुदित | दीन | शान्त |
| शनि | स्वप्न | मृत | लज्जित | दीन | वक्र |
| राहु | स्वप्न | वृद्ध | क्षुदित | दीन | शान्त |
| केतु | स्वप्न | वृद्ध | क्षुदित | दीन | मुदित |

## सन्नाड़ि

| जन्म | कर्म | संघातिक | समुद्य | विनाश | मानस |
|---|---|---|---|---|---|
| पुष्य | अनुराधा | धनिष्ठा | पूर्वाभाद्र | कृतिका | मृगशिरा |

## स्थुन

| | |
|---|---|
| कंटक स्थुन | मूला |
| कुज स्थुन | शतभिशा |
| रक्त स्थुन | पुनर्वसु |

## त्रि–नाड़ि

| | |
|---|---|
| जाति | मृगशिरा |
| देश | अरिद्रा |
| प्रतिष्ठा | पुनर्वसु |

## नव–तारा चक्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| जन्म | पुष्य | अनुराधा | उत्तरभाद्र |
| सम्पत | अश्लेशा | ज्येष्ठा | रेवति |
| विपत | मघा | मूला | अश्विनी |
| खेष्म | पुर्वफाल्गुनी | पूर्वाशाढ़ | भरणी |
| प्रत्यरी | उत्तरफाल्गुनी | उत्तराशाढ | कृतिका |
| साधक | हस्ता | श्रवण | रोहिणी |
| निधन | चित्रा | धनिष्ठा | मृगशिरा |
| मित्र | स्वाति | शतभिशा | अरिद्रा |
| अति मित्र | विशाखा | पूर्वाभाद्र | पुनर्वसु |

## आक्रचतुष्टय

| | |
|---|---|
| जन्मव | पुष्य |
| कर्मव | अनुराधा |
| आधान | उत्तरभाद्र |
| नैधव | भरणी |

## नवशुभ अक्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | दग्ध : मूला | क्षय : धनिष्ठा |
| | शूल : उत्तरभाद्र | सन्निपात : मृगशिरा | ध्वज : अश्लेशा |
| उल्का : उत्तरफाल्गुनी | भुकम्प : हस्ता | वज्रक : चित्रा | निर्घात : स्वाति |

# गोचर शनि

द्वादशे जन्मगै राशौ द्वितीये च शनैश्चर। सर्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत।।

(गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चंद्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।)

## प्रथम चक्र

| साढ़ेसाती चक्र | गोचर राशि में | आरम्भ का समय | समाप्ति का समय | भ्रमण काल (व—म—दि) | शनि मूर्ति |
|---|---|---|---|---|---|
| द्वितिय ढ़ैय्या | कर्क | 22/12/1945 | 22/12/1945 | 0.0 y.0.0 m.0 d. | स्वर्ण |
| द्वितिय ढ़ैय्या | कर्क | 08/06/1946 | 26/07/1948 | 2.0 y.1.0 m.18 d. | स्वर्ण |
| तृतिय ढ़ैय्या | सिहं | 26/07/1948 | 20/09/1950 | 2.0 y.1.0 m.25 d. | स्वर्ण |
| कंटक शनि | तुला | 25/11/1952 | 24/04/1953 | 0.0 y.4.0 m.28 d. | रजत |
| कंटक शनि | तुला | 21/08/1953 | 12/11/1955 | 2.0 y.2.0 m.22 d. | स्वर्ण |
| अष्टम शनि | कुम्भ | 27/01/1964 | 09/04/1966 | 2.0 y.2.0 m.12 d. | रजत |
| अष्टम शनि | कुम्भ | 03/11/1966 | 20/12/1966 | 0.0 y.1.0 m.17 d. | रजत |

## द्वितिय चक्र

| साढ़ेसाती चक्र | गोचर राशि में | आरम्भ का समय | समाप्ति का समय | भ्रमण काल (व—म—दि) | शनि मूर्ति |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रथम ढ़ैय्या | मिथु. | 10/06/1973 | 23/07/1975 | 2.0 y.1.0 m.13 d. | ताम्र |
| द्वितिय ढ़ैय्या | कर्क | 23/07/1975 | 07/09/1977 | 2.0 y.1.0 m.16 d. | ताम्र |
| तृतिय ढ़ैय्या | सिहं | 07/09/1977 | 04/11/1979 | 2.0 y.1.0 m.28 d. | ताम्र |
| तृतिय ढ़ैय्या | सिहं | 15/03/1980 | 27/07/1980 | 0.0 y.4.0 m.12 d. | ताम्र |
| कंटक शनि | तुला | 06/10/1982 | 21/12/1984 | 2.0 y.2.0 m.15 d. | ताम्र |
| कंटक शनि | तुला | 01/06/1985 | 17/09/1985 | 0.0 y.3.0 m.17 d. | स्वर्ण |
| अष्टम शनि | कुम्भ | 05/03/1993 | 15/10/1993 | 0.0 y.7.0 m.11 d. | लौह |
| अष्टम शनि | कुम्भ | 10/11/1993 | 02/06/1995 | 1.0 y.6.0 m.22 d. | ताम्र |
| अष्टम शनि | कुम्भ | 10/08/1995 | 16/02/1996 | 0.0 y.6.0 m.8 d. | रजत |

## तृतिय चक्र

| साढ़ेसाती चक्र | गोचर राशि में | आरम्भ का समय | समाप्ति का समय | भ्रमण काल (व—म—दि) | शनि मूर्ति |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रथम ढ़ैय्या | मिथु. | 23/07/2002 | 08/01/2003 | 0.0 y.5.0 m.17 d. | ताम्र |
| प्रथम ढ़ैय्या | मिथु. | 07/04/2003 | 06/09/2004 | 1.0 y.5.0 m.1 d. | रजत |
| प्रथम ढ़ैय्या | मिथु. | 13/01/2005 | 26/05/2005 | 0.0 y.4.0 m.12 d. | रजत |
| द्वितिय ढ़ैय्या | कर्क | 06/09/2004 | 13/01/2005 | 0.0 y.4.0 m.7 d. | ताम्र |
| द्वितिय ढ़ैय्या | कर्क | 26/05/2005 | 01/11/2006 | 1.0 y.5.0 m.7 d. | लौह |
| द्वितिय ढ़ैय्या | कर्क | 10/01/2007 | 16/07/2007 | 0.0 y.6.0 m.5 d. | स्वर्ण |
| तृतिय ढ़ैय्या | सिहं | 01/11/2006 | 10/01/2007 | 0.0 y.2.0 m.10 d. | ताम्र |
| तृतिय ढ़ैय्या | सिहं | 16/07/2007 | 10/09/2009 | 2.0 y.1.0 m.26 d. | रजत |
| कंटक शनि | तुला | 15/11/2011 | 16/05/2012 | 0.0 y.6.0 m.1 d. | रजत |
| कंटक शनि | तुला | 04/08/2012 | 02/11/2014 | 2.0 y.2.0 m.29 d. | रजत |
| अष्टम शनि | कुम्भ | 29/04/2022 | 12/07/2022 | 0.0 y.2.0 m.13 d. | लौह |
| अष्टम शनि | कुम्भ | 17/01/2023 | 29/03/2025 | 2.0 y.2.0 m.11 d. | लौह |

# अष्टकवर्ग सिद्धान्त — भिन्नाष्टक वर्ग

**सूर्य भिन्नाष्टक वर्ग**

| राशि | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भाव | II | III | IV | V | VI | VII | VIII | IX | X | XI | XII | I | |
| शनि | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 8 |
| बृहस्पति | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 4 |
| मंगल | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 8 |
| सूय | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 8 |
| शुक्र | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 3 |
| बुध | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 7 |
| चन्द्रमा | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 4 |
| लग्न | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 6 |
| योग | 5 | 5 | 3 | 4 | 6 | 3 | 5 | 0 | 3 | 5 | 4 | 5 | 48 |

सूर्य

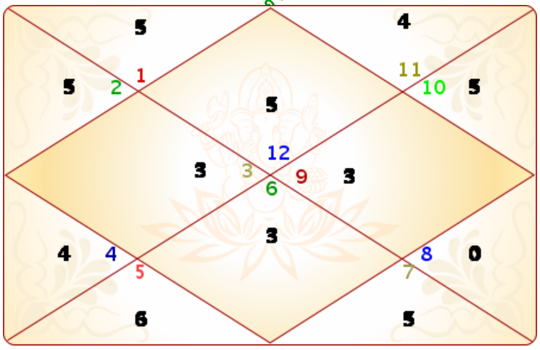


**चन्द्रमा भिन्नाष्टक वर्ग**

| राशि | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भाव | II | III | IV | V | VI | VII | VIII | IX | X | XI | XII | I | |
| शनि | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 4 |
| बृहस्पति | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 7 |
| मंगल | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 7 |
| सूय | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 6 |
| शुक्र | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 7 |
| बुध | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 8 |
| चन्द्रमा | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 6 |
| लग्न | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 4 |
| योग | 3 | 8 | 2 | 4 | 5 | 7 | 2 | 3 | 4 | 5 | 3 | 3 | 49 |

चन्द्रमा

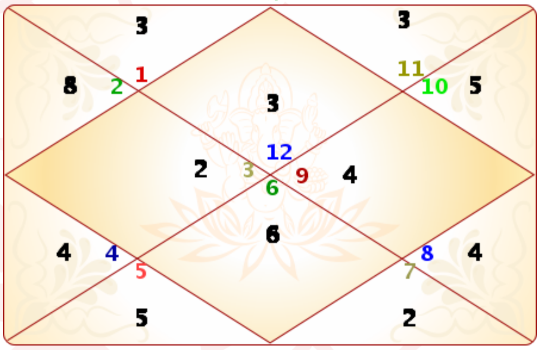


**मंगल भिन्नाष्टक वर्ग**

| राशि | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भाव | II | III | IV | V | VI | VII | VIII | IX | X | XI | XII | I | |
| शनि | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 7 |
| बृहस्पति | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 4 |
| मंगल | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 7 |
| सूय | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 5 |
| शुक्र | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 4 |
| बुध | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 4 |
| चन्द्रमा | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 3 |
| लग्न | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 5 |
| योग | 5 | 5 | 1 | 3 | 3 | 5 | 4 | 0 | 2 | 4 | 3 | 4 | 39 |

मंगल

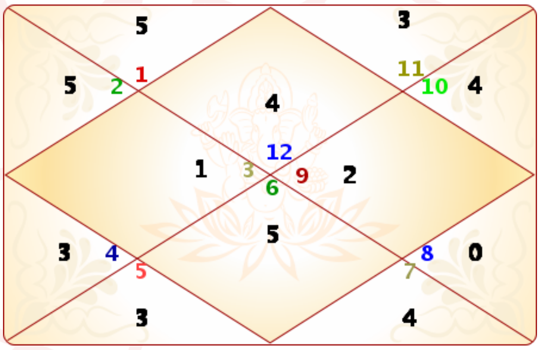


**बुध भिन्नाष्टक वर्ग**

| राशि | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भाव | II | III | IV | V | VI | VII | VIII | IX | X | XI | XII | I | |
| शनि | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 8 |
| बृहस्पति | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 4 |
| मंगल | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 8 |
| सूय | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 5 |
| शुक्र | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 8 |
| बुध | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 8 |

बुध

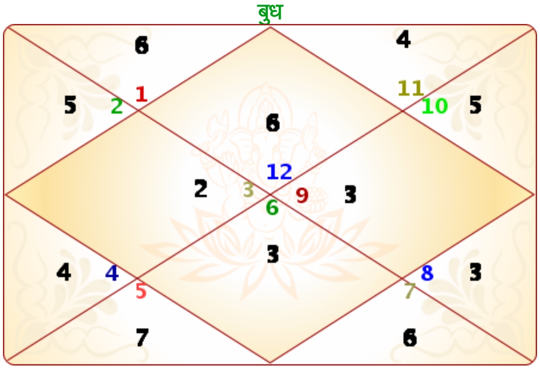

| | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चन्द्रमा | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 6 |
| लग्न | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 7 |
| योग | 6 | 5 | 2 | 4 | 7 | 3 | 6 | 3 | 3 | 5 | 4 | 6 | 54 |

# अष्टकवर्ग सिद्धान्त —— भिन्नाष्टक वर्ग

| बृहस्पति भिन्नाष्टक वर्ग | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राशि | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | |
| भाव | II | III | IV | V | VI | VII | VIII | IX | X | XI | XII | I | |
| शनि | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 4 |
| बृहस्पति | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 8 |
| मंगल | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 7 |
| सूय | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 9 |
| शुक्र | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 6 |
| बुध | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 8 |
| चन्द्रमा | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 5 |
| लग्न | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 9 |
| योग | 5 | 3 | 3 | 6 | 7 | 5 | 3 | 5 | 6 | 5 | 3 | 5 | 56 |

बृहस्पति

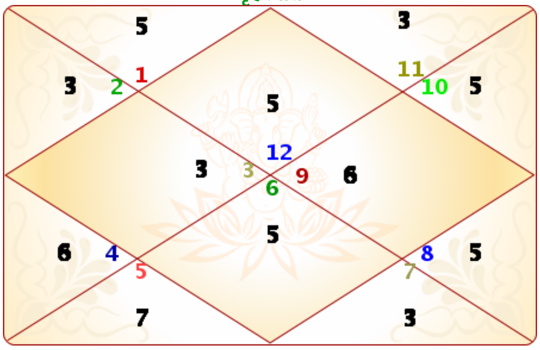

| शुक्र भिन्नाष्टक वर्ग | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राशि | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | |
| भाव | II | III | IV | V | VI | VII | VIII | IX | X | XI | XII | I | |
| शनि | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 7 |
| बृहस्पति | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 5 |
| मंगल | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 6 |
| सूय | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 3 |
| शुक्र | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 9 |
| बुध | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 5 |
| चन्द्रमा | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 9 |
| लग्न | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 8 |
| योग | 3 | 5 | 5 | 6 | 3 | 5 | 4 | 6 | 2 | 3 | 4 | 6 | 52 |

शुक्र

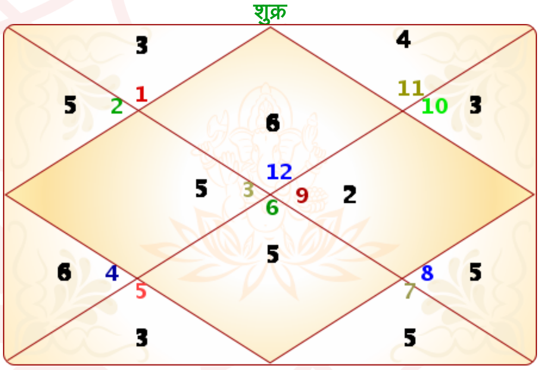

| शनि भिन्नाष्टक वर्ग | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राशि | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | |
| भाव | II | III | IV | V | VI | VII | VIII | IX | X | XI | XII | I | |
| शनि | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 4 |
| बृहस्पति | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 4 |
| मंगल | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 6 |
| सूय | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 7 |
| शुक्र | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 3 |
| बुध | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 6 |
| चन्द्रमा | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 3 |
| लग्न | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 6 |
| योग | 3 | 4 | 4 | 2 | 3 | 7 | 3 | 2 | 5 | 2 | 1 | 3 | 39 |

शनि

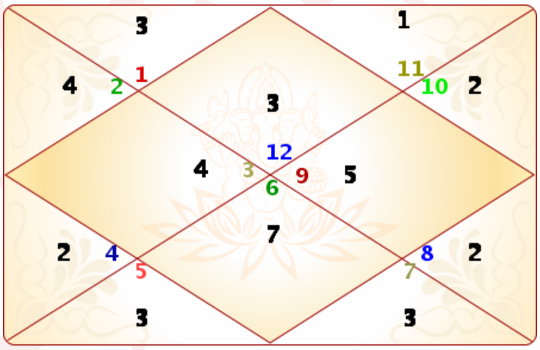

| लग्न भिन्नाष्टक वग | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राशि | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | |
| भाव | II | III | IV | V | VI | VII | VIII | IX | X | XI | XII | I | |
| शनि | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 6 |
| बृहस्पति | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 9 |
| मंगल | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 5 |
| सूय | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 6 |
| शुक्र | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 7 |
| बुध | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 7 |

लग्न

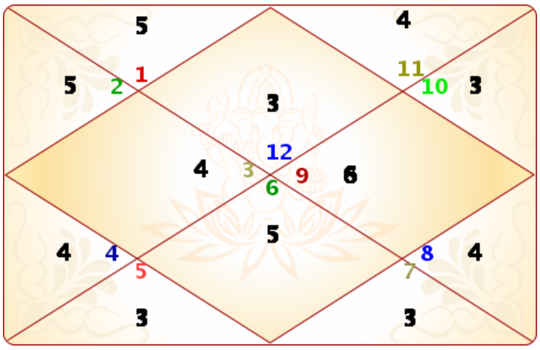

| | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चन्द्रमा | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 5 |
| लग्न | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 4 |
| योग | 5 | 5 | 4 | 4 | 3 | 5 | 3 | 4 | 6 | 3 | 4 | 3 | 49 |

# अष्टकवर्ग सिद्धान्त —— भिन्नाष्टक वर्ग

| राहु भिन्नाष्टक वर्ग | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राशि | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | |
| भाव | II | III | IV | V | VI | VII | VIII | IX | X | XI | XII | I | |
| शनि | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 6 |
| बृहस्पति | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 5 |
| मंगल | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 4 |
| सूय | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 7 |
| शुक्र | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 4 |
| बुध | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 5 |
| चन्द्रमा | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 7 |
| लग्न | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 5 |
| योग | 4 | 5 | 5 | 3 | 1 | 5 | 3 | 4 | 3 | 4 | 4 | 2 | 43 |

बृहस्पति

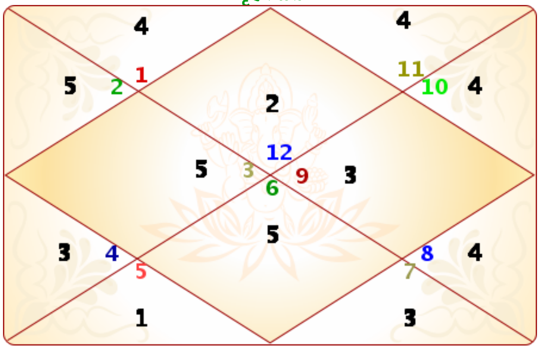


| कक्ष बल | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राशि | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | |
| भाव | II | III | IV | V | VI | VII | VIII | IX | X | XI | XII | I | |
| शनि | 5 | 7 | 1 | 4 | 2 | 5 | 5 | 4 | 4 | 3 | 4 | 4 | 48 |
| बृहस्पति | 3 | 4 | 3 | 5 | 8 | 4 | 3 | 2 | 1 | 3 | 4 | 5 | 45 |
| मंगल | 7 | 8 | 2 | 5 | 5 | 4 | 4 | 3 | 4 | 4 | 4 | 4 | 54 |
| सूय | 2 | 4 | 4 | 5 | 3 | 6 | 8 | 3 | 3 | 3 | 4 | 4 | 49 |
| शुक्र | 4 | 2 | 4 | 5 | 3 | 6 | 3 | 3 | 4 | 4 | 4 | 5 | 47 |
| बुध | 7 | 1 | 3 | 5 | 6 | 8 | 3 | 4 | 2 | 5 | 3 | 6 | 53 |
| चन्द्रमा | 4 | 8 | 2 | 2 | 3 | 6 | 2 | 2 | 6 | 2 | 2 | 2 | 41 |
| लग्न | 3 | 6 | 5 | 2 | 7 | 1 | 2 | 2 | 7 | 8 | 1 | 5 | 49 |
| योग | 35 | 40 | 24 | 33 | 37 | 40 | 30 | 23 | 31 | 32 | 26 | 35 | 386 |

शुक्र

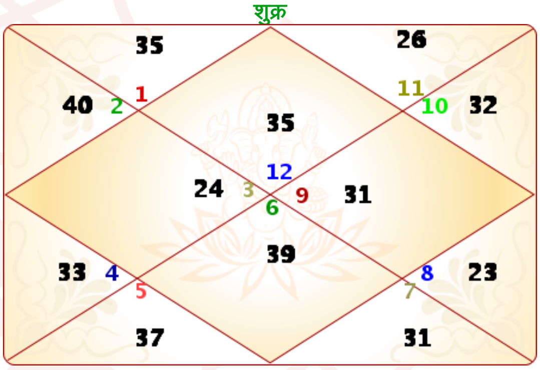

# अष्टकवर्ग सिद्धान्त —— त्रिकोन और एकाधिपत्य शोधन

## आधार लग्न (जन्म) कुण्डली (परासर) अष्टकवर्ग सिद्धान्त —— (परासर)

### सूर्य

शोधन से पूर्व

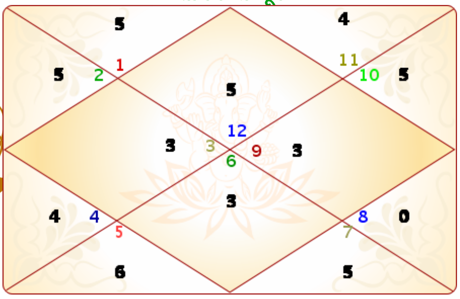


राशि पिण्ड 135

त्रिकोन शोधन

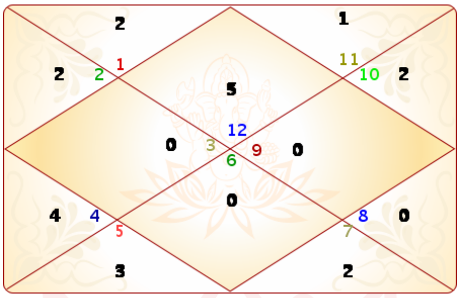


ग्रह पिण्ड 104

एकाधिपत्य शोधन

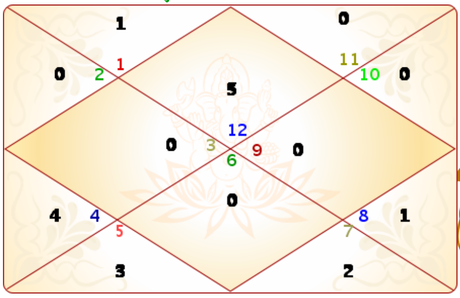


शुद्ध पिण्ड 239

### चन्द्रमा

शोधन से पूर्व

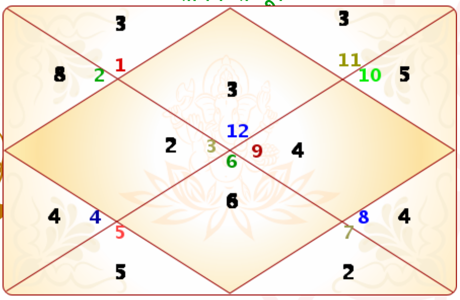


राशि पिण्ड 87

त्रिकोन शोधन

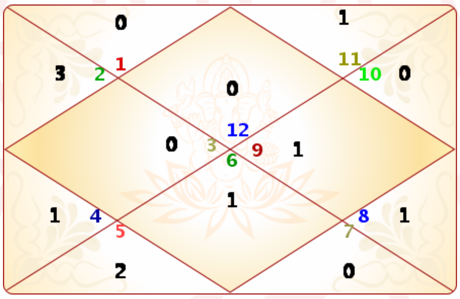


ग्रह पिण्ड 35

एकाधिपत्य शोधन

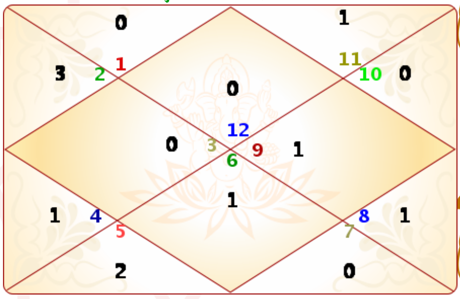


शुद्ध पिण्ड 122

### मंगल

शोधन से पूर्व

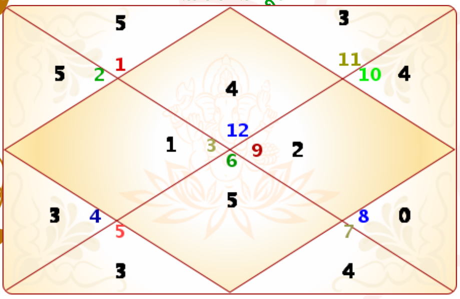


राशि पिण्ड 139

त्रिकोन शोधन

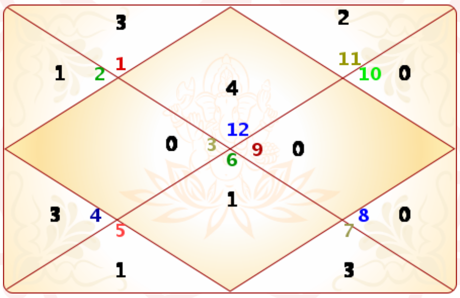


ग्रह पिण्ड 84

एकाधिपत्य शोधन

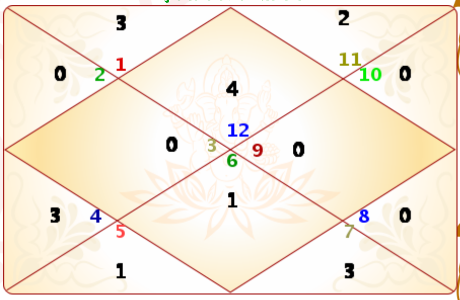


शुद्ध पिण्ड 223

### बुध

शोधन से पूर्व

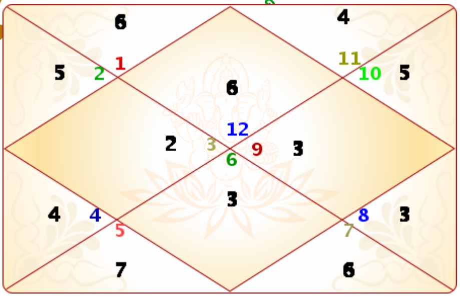


राशि पिण्ड 129

त्रिकोन शोधन

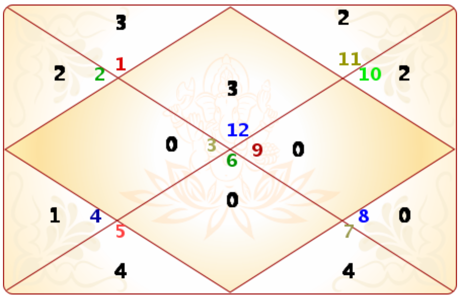


ग्रह पिण्ड 58

एकाधिपत्य शोधन

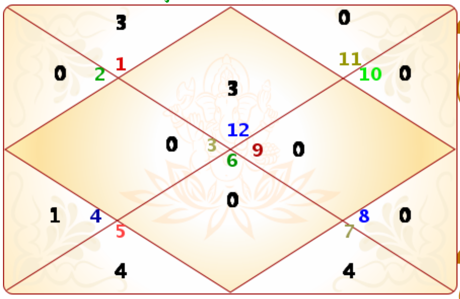


शुद्ध पिण्ड 187

# अष्टकवर्ग सिद्धान्त — त्रिकोन और एकाधिपत्य शोधन

## आधार लग्न (जन्म) कुण्डली (परासर) अष्टकवर्ग सिद्धान्त — (परासर)

### बृहस्पति

शोधन से पूर्व

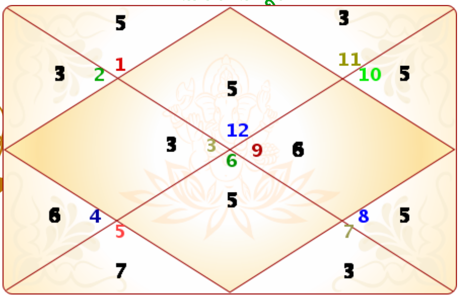


राशि पिण्ड 53

त्रिकोन शोधन

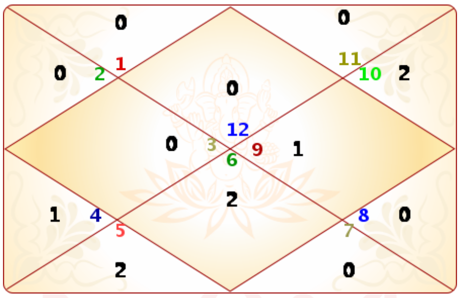


ग्रह पिण्ड 23

एकाधिपत्य शोधन

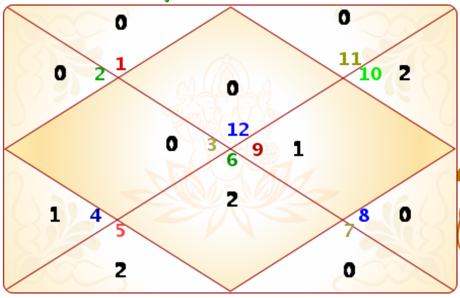


शुद्ध पिण्ड 76

### शुक्र

शोधन से पूर्व

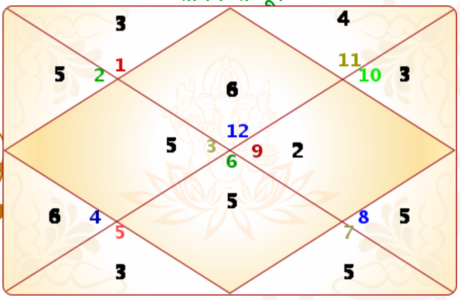


राशि पिण्ड 58

त्रिकोन शोधन

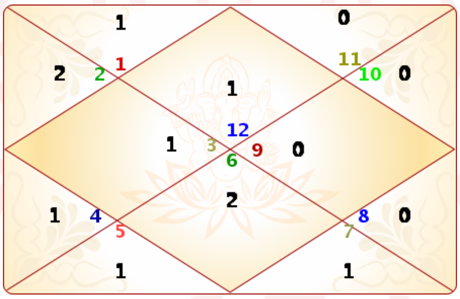


ग्रह पिण्ड 40

एकाधिपत्य शोधन

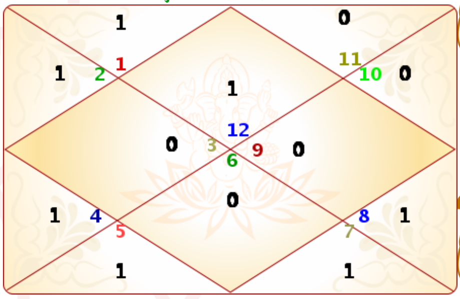


शुद्ध पिण्ड 98

### शनि

शोधन से पूर्व

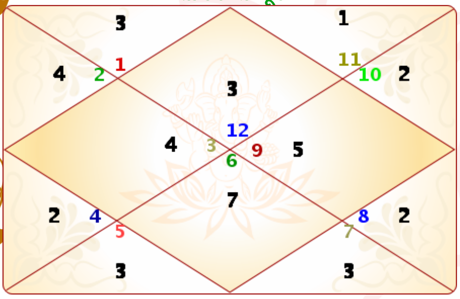


राशि पिण्ड 69

त्रिकोन शोधन

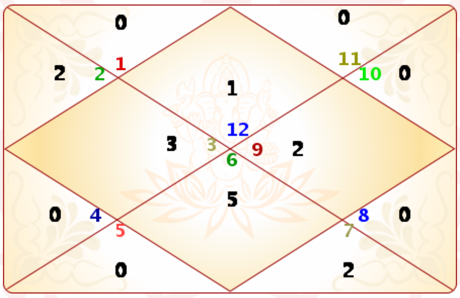


ग्रह पिण्ड 54

एकाधिपत्य शोधन

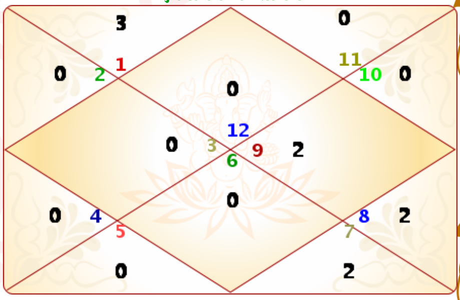


शुद्ध पिण्ड 123

### लग्न

शोधन से पूर्व

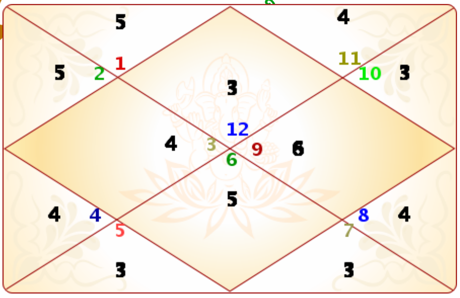


राशि पिण्ड 77

त्रिकोन शोधन

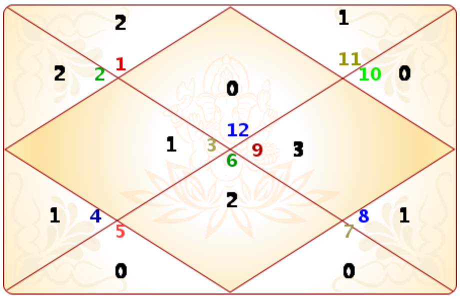


ग्रह पिण्ड 45

एकाधिपत्य शोधन

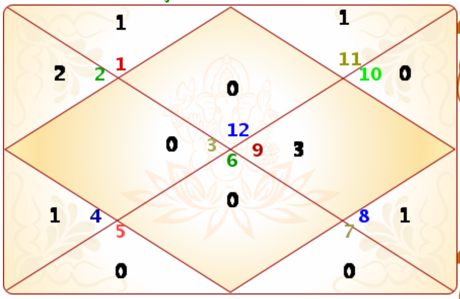


शुद्ध पिण्ड 122

# त्रि–पाप चक्र

| | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प्रथम चक्र उम्र | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| द्वितिय चक्र उम्र | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 |
| तृतिय चक्र उम्र | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 |
| केतू पताकी | बृहस्पति | राहु | केतु | शुक्र | सूर्य | चन्द्रमा | मंगल | बुध | शनि | बृहस्पति | राहु | केतु |
| केतू कुण्डली | मंगल | केतु | बृहस्पति | बृहस्पति | बृहस्पति | चन्द्रमा | चन्द्रमा | चन्द्रमा | केतु | शुक्र | शुक्र | शुक्र |
| गुरू कुण्डली | सूर्य | मंगल | केतु | चन्द्रमा | बुध | बृहस्पति | शुक्र | शनि | राहु | सूर्य | मंगल | केतु |

| | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प्रथम चक्र उम्र | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 |
| द्वितिय चक्र उम्र | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 |
| तृतिय चक्र उम्र | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 |
| केतू पताकी | शुक्र | सूर्य | चन्द्रमा | मंगल | बुध | शनि | बृहस्पति | राहु | केतु | शुक्र | सूर्य | चन्द्रमा |
| केतू कुण्डली | राहु | राहु | केतु | शनि | शनि | शनि | सूर्य | सूर्य | सूर्य | केतु | बुध | बुध |
| गुरू कुण्डली | चन्द्रमा | बुध | बृहस्पति | शुक्र | शनि | राहु | सूर्य | मंगल | केतु | चन्द्रमा | बुध | बृहस्पति |

| | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प्रथम चक्र उम्र | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 |
| द्वितिय चक्र उम्र | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 |
| तृतिय चक्र उम्र | 97 | 98 | 99 | 100 | 101 | 102 | 103 | 104 | 105 | 106 | 107 | 108 |
| केतू पताकी | मंगल | बुध | शनि | बृहस्पति | राहु | केतु | शुक्र | सूर्य | चन्द्रमा | मंगल | बुध | शनि |
| केतू कुण्डली | बुध | मंगल | मंगल | मंगल | केतु | बृहस्पति | बृहस्पति | बृहस्पति | चन्द्रमा | चन्द्रमा | चन्द्रमा | केतु |
| गुरू कुण्डली | शुक्र | शनि | राहु | सूर्य | मंगल | केतु | चन्द्रमा | बुध | बृहस्पति | शुक्र | शनि | राहु |

## त्रि–आयुध चक्र से विश्लेषण

आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने पर रथ चक्र के अनुसार यह घोड़े के जुए पर स्थित है। आप की कुण्डली में यदि कोई संशोधित प्रभाव नहीं है तो, आपको अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है और आपको आपकी मेहनत के अनुसार फल प्राप्त करने में भी बाधा हो सकती है।

आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने पर घूर्ण चक्र के अनुसार यह छठहे भाग में स्थित है। आप की कुण्डली में यदि कोई संशोधित प्रभाव नहीं है तो, आपको अपने जीवन में कड़े विरोध का सामना करना पड़ सकता है। ऐसा होने पर आपको इस टकराव से बचना ही ठीक रहेगा।

आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने पर चाप चक्र के अनुसार यह धनुष के चाप पर स्थित है। आप की कुण्डली में यदि कोई संशोधित प्रभाव नहीं है तो, आप साहसी और शक्तिशाली रहेंगे। आप अपने गुणों के द्वारा वीरता पूर्वक कार्य करके आप अपनी एक अमिट छाप छोडेंगे।

## ग्रह दृष्टि (पराशरी)

| ग्रह | मुख्य दृष्टि | विशेष दृष्टि |
|---|---|---|
| सूर्य | राहु | ...... |
| चन्द्रमा | ...... | ...... |
| मंगल | ...... | बृहस्पति |
| बुध | ...... | ...... |
| बृहस्पति | ...... | राहु |
| शुक्र | ...... | ...... |
| शनि | ...... | ...... |
| राहु | सूर्य, केतु | ...... |
| केतु | राहु | ...... |

## ग्रह दृष्टि (जैमिनी)

| राशि (ग्रह) | सम्मुख दृष्टि | पृष्ठ दृष्टि |
|---|---|---|
| मेष | वृश्चिक(बुध, शुक्र) | सिहं, कुम्भ |
| वृष | तुला(बृहस्पति) | कर्क(चन्द्रमा, मंगल, शनि), मकर |
| मिथुन(राहु) | कन्या | धनु(सूर्य, केतु), मीन |
| कर्क(चन्द्रमा, मंगल, शनि) | कुम्भ | वृष, वृश्चिक(बुध, शुक्र) |
| सिहं | मकर | मेष, तुला(बृहस्पति) |
| कन्या | मिथुन(राहु) | धनु(सूर्य, केतु), मीन |
| तुला(बृहस्पति) | वृष | सिहं, कुम्भ |
| वृश्चिक(बुध, शुक्र) | मेष | कर्क(चन्द्रमा, मंगल, शनि), मकर |
| धनु(सूर्य, केतु) | मीन | मिथुन(राहु), कन्या |
| मकर | सिहं | वृष, वृश्चिक(बुध, शुक्र) |
| कुम्भ | कर्क(चन्द्रमा, मंगल, शनि) | मेष, तुला(बृहस्पति) |
| मीन | धनु(सूर्य, केतु) | मिथुन(राहु), कन्या |

नोट – सम्मुख दृष्टि का प्रभाव पृष्ठ दृष्टि से अधिक होता है।

## ग्रह दृष्टि (ताजिक)

| ग्रह | लग्न | सूर्य | चन्द्रमा | मंगल | बुध | बृहस्पति | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | --- | | | | | | | | | |
| सूर्य | 4/10(+) | --- | | | | | | | | |
| चन्द्रमा | 5/9(+) | 6/8(+) | --- | | | | | | | |
| मंगल | 5/9(-) | 6/8(+) | 1/1(+) | --- | | | | | | |
| बुध | 5/9(-) | 2/12(+) | 5/9(-) | 5/9(-) | --- | | | | | |
| बृहस्पति | 6/8(+) | 3/11(+) | 4/10(+) | 4/10(+) | 2/12(-) | --- | | | | |
| शुक्र | 5/9(-) | 2/12(-) | 5/9(-) | 5/9(-) | 1/1(-) | 2/12(-) | --- | | | |
| शनि | 5/9(+) | 6/8(+) | 1/1(+) | 1/1(+) | 5/9(-) | 4/10(+) | 5/9(-) | --- | | |
| राहु | 4/10(-) | 7/7(+) | 2/12(+) | 2/12(+) | 6/8(-) | 5/9(-) | 6/8(-) | 2/12(-) | --- | |
| केतु | 4/10(-) | 1/1(+) | 6/8(+) | 6/8(+) | 2/12(-) | 3/11(-) | 2/12(-) | 6/8(-) | 7/7 (+) | --- |

### लिजेण्ड –

लिजेण्ड – 1/1 युति, 2/12 अर्द्ध सेक्सटाइल, 3/11 सेक्सटाइल, 4/10 स्कवायर, 5/9 ट्राइन, 6/8 क्वीन्कशं, 7/7 से अभिप्राय यह है कि इसमें ग्रह दृष्टि की सीमा का समावेश है। (+) से अभिप्राय यह है कि इसमें ग्रह दृष्टि की सीमा का समावेश नहीं है।

नोट – ग्रह दृष्टि के लिए ताजिक सिद्धान्त के अनुसार औसत ग्रह दृष्टि की सीमा का प्रयोग किया गया है। राहु और केतू के लिए ग्रह दृष्टि की सीमा 6 अंश है, परन्तु लग्न के लिए ग्रह दृष्टि की सीमा का प्रयोग नहीं किया गया है।

# जैमिनी लग्न कुण्डली

### नवांश कुण्डली

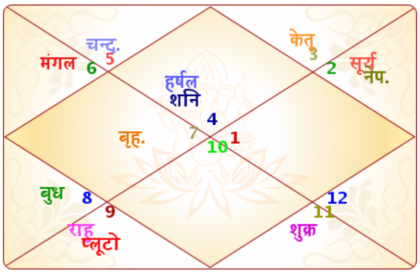


### नवांश कुण्डली (कृष्ण मिश्र)

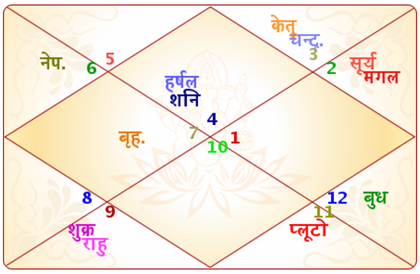


### कारकांश कुण्डली (राशि)

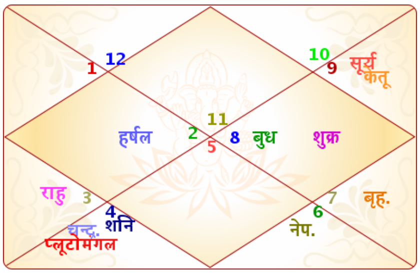


### द्रेष्काण लग्न (प्र.त्रा.) कुण्डली

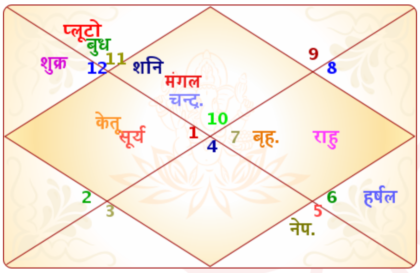


### द्रेष्काण लग्न (सोमनाथ) कुण्डली

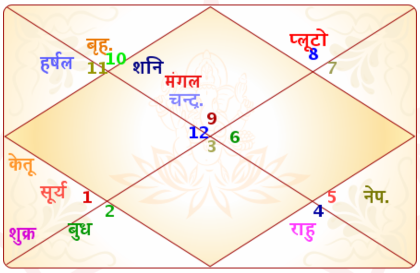


### आरूढ़ लग्न कुण्डली

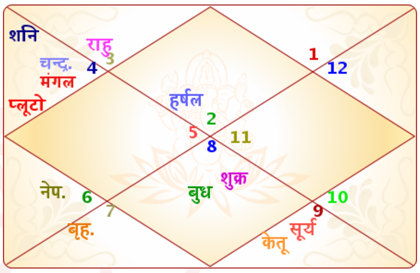


### उपपद लग्न कुण्डली

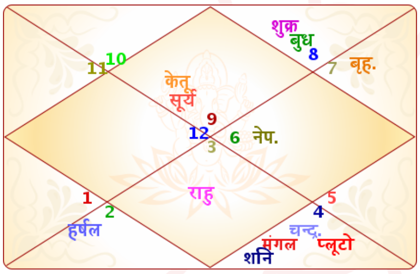


### होरा लग्न (वृद्धि करिका) कुण्डली

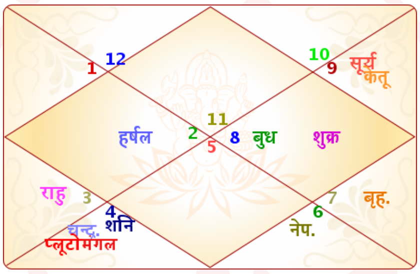


### होरा लग्न (सवाया) कुण्डली

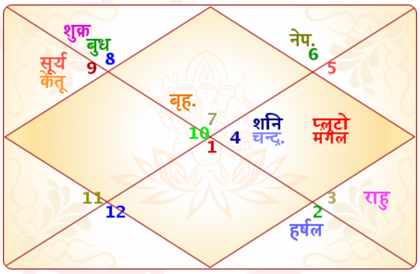


### आयुर लग्न कुण्डली

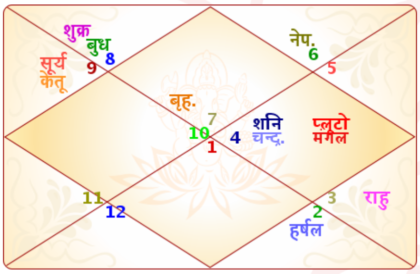


### पका लग्न कुण्डली

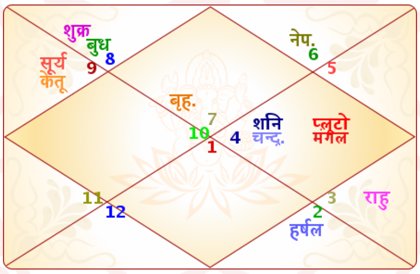


### इन्दु लग्न कुण्डली

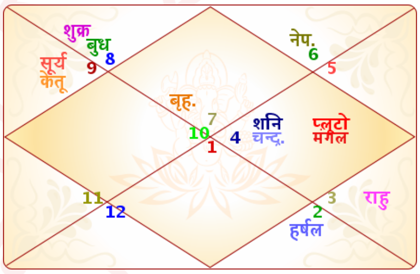


### दिव्य लग्न कुण्डली

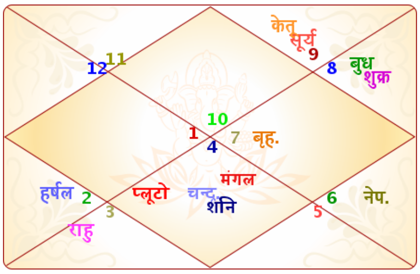


### तारा लग्न कुण्डली

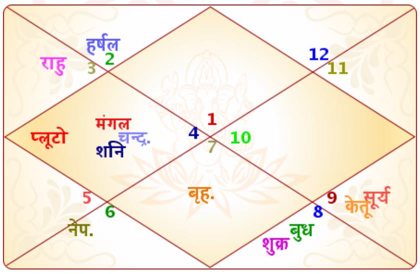


### त्रिप्रवन लग्न कुण्डली

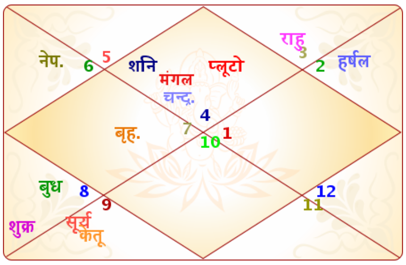

# विंशोत्तरी दशा

जन्म के समय विंशोत्तरी भोग्य दशा ( अयनाश : 023:06:08) चन्द्रमा 16.0 व.9.0 म.11 द.

| क्र0 स0 | ग्रह दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | शनि | 16.0 y.9.0 m.11 d. | 21:12:1945 |
| 2 | बुध | 17.0 y.0.0 m.0 d. | 01:10:1962 |
| 3 | केतु | 7.0 y.0.0 m.0 d. | 01:10:1979 |
| 4 | शुक्र | 20.0 y.0.0 m.0 d. | 01:10:1986 |
| 5 | सूर्य | 6.0 y.0.0 m.0 d. | 01:10:2006 |
| 6 | चन्द्रमा | 10.0 y.0.0 m.0 d. | 01:10:2012 |
| 7 | मंगल | 7.0 y.0.0 m.0 d. | 01:10:2022 |
| 8 | राहु | 18.0 y.0.0 m.0 d. | 01:10:2029 |
| 9 | बृहस्पति | 16.0 y.0.0 m.0 d. | 01:10:2047 |

### शनि दशा

| अन्तर्दशा | से |
|---|---|
| शनि | 21:12:1945 |
| बुध | 04:10:1946 |
| केतु | 14:06:1949 |
| शुक्र | 23:07:1950 |
| सूर्य | 22:09:1953 |
| चन्द्रमा | 04:09:1954 |
| मंगल | 04:04:1956 |
| राहु | 14:05:1957 |
| बृहस्पति | 20:03:1960 |

### बुध दशा

| अन्तर्दशा | से |
|---|---|
| बुध | 01:10:1962 |
| केतु | 27:02:1965 |
| शुक्र | 24:02:1966 |
| सूर्य | 25:12:1968 |
| चन्द्रमा | 01:11:1969 |
| मंगल | 02:04:1971 |
| राहु | 29:03:1972 |
| बृहस्पति | 16:10:1974 |
| शनि | 22:01:1977 |

### केतु दशा

| अन्तर्दशा | से |
|---|---|
| केतु | 01:10:1979 |
| शुक्र | 27:02:1980 |
| सूर्य | 29:04:1981 |
| चन्द्रमा | 04:09:1981 |
| मंगल | 05:04:1982 |
| राहु | 01:09:1982 |
| बृहस्पति | 19:09:1983 |
| शनि | 25:08:1984 |
| बुध | 04:10:1985 |

### शुक्र दशा

| अन्तर्दशा | से |
|---|---|
| शुक्र | 01:10:1986 |
| सूर्य | 31:01:1990 |
| चन्द्रमा | 31:01:1991 |
| मंगल | 01:10:1992 |
| राहु | 01:12:1993 |
| बृहस्पति | 01:12:1996 |
| शनि | 01:08:1999 |
| बुध | 01:10:2002 |
| केतु | 01:08:2005 |

### सूर्य दशा

| अन्तर्दशा | से |
|---|---|
| सूर्य | 01:10:2006 |
| चन्द्रमा | 19:01:2007 |
| मंगल | 20:07:2007 |
| राहु | 25:11:2007 |
| बृहस्पति | 19:10:2008 |
| शनि | 07:08:2009 |
| बुध | 20:07:2010 |
| केतु | 26:05:2011 |
| शुक्र | 01:10:2011 |

### चन्द्रमा दशा

| अन्तर्दशा | से |
|---|---|
| चन्द्रमा | 01:10:2012 |
| मंगल | 01:08:2013 |
| राहु | 02:03:2014 |
| बृहस्पति | 01:09:2015 |
| शनि | 31:12:2016 |
| बुध | 01:08:2018 |
| केतु | 31:12:2019 |
| शुक्र | 01:08:2020 |
| सूर्य | 02:04:2022 |

### मंगल दशा

| अन्तर्दशा | से |
|---|---|
| मंगल | 01:10:2022 |
| राहु | 27:02:2023 |
| बृहस्पति | 17:03:2024 |
| शनि | 21:02:2025 |
| बुध | 02:04:2026 |
| केतु | 30:03:2027 |
| शुक्र | 26:08:2027 |
| सूर्य | 25:10:2028 |
| चन्द्रमा | 02:03:2029 |

### राहु दशा

| अन्तर्दशा | से |
|---|---|
| राहु | 01:10:2029 |
| बृहस्पति | 13:06:2032 |
| शनि | 07:11:2034 |
| बुध | 13:09:2037 |
| केतु | 01:04:2040 |
| शुक्र | 20:04:2041 |
| सूर्य | 19:04:2044 |
| चन्द्रमा | 14:03:2045 |
| मंगल | 13:09:2046 |

### बृहस्पति दशा

| अन्तर्दशा | से |
|---|---|
| बृहस्पति | 01:10:2047 |
| शनि | 19:11:2049 |
| बुध | 01:06:2052 |
| केतु | 07:09:2054 |
| शुक्र | 14:08:2055 |
| सूर्य | 14:04:2058 |
| चन्द्रमा | 31:01:2059 |
| मंगल | 01:06:2060 |
| राहु | 08:05:2061 |

# शनि ग्रह दशा

( Start Date: 21:12:1945, End Date: 30:09:1962 )

### शनि अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शनि | .... |
| बुध | .... |
| केतु | .... |
| शुक्र | .... |
| सूर्य | .... |
| चन्द्रमा | .... |
| मंगल | .... |
| राहु | 21:12:1945 |
| बृहस्पति | 11:05:1946 |

### बुध अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बुध | 04:10:1946 |
| केतु | 20:02:1947 |
| शुक्र | 19:04:1947 |
| सूर्य | 30:09:1947 |
| चन्द्रमा | 18:11:1947 |
| मंगल | 08:02:1948 |
| राहु | 05:04:1948 |
| बृहस्पति | 31:08:1948 |
| शनि | 09:01:1949 |

### केतु अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| केतु | 14:06:1949 |
| शुक्र | 07:07:1949 |
| सूर्य | 13:09:1949 |
| चन्द्रमा | 03:10:1949 |
| मंगल | 06:11:1949 |
| राहु | 29:11:1949 |
| बृहस्पति | 29:01:1950 |
| शनि | 24:03:1950 |
| बुध | 27:05:1950 |

### शुक्र अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शुक्र | 23:07:1950 |
| सूर्य | 01:02:1951 |
| चन्द्रमा | 31:03:1951 |
| मंगल | 05:07:1951 |
| राहु | 10:09:1951 |
| बृहस्पति | 02:03:1952 |
| शनि | 04:08:1952 |
| बुध | 03:02:1953 |
| केतु | 17:07:1953 |

### सूर्य अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| सूर्य | 22:09:1953 |
| चन्द्रमा | 09:10:1953 |
| मंगल | 07:11:1953 |
| राहु | 28:11:1953 |
| बृहस्पति | 19:01:1954 |
| शनि | 06:03:1954 |
| बुध | 30:04:1954 |
| केतु | 18:06:1954 |
| शुक्र | 08:07:1954 |

### चन्द्रमा अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| चन्द्रमा | 04:09:1954 |
| मंगल | 22:10:1954 |
| राहु | 25:11:1954 |
| बृहस्पति | 19:02:1955 |
| शनि | 07:05:1955 |
| बुध | 07:08:1955 |
| केतु | 28:10:1955 |
| शुक्र | 01:12:1955 |
| सूर्य | 06:03:1956 |

### मंगल अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| मंगल | 04:04:1956 |
| राहु | 28:04:1956 |
| बृहस्पति | 28:06:1956 |
| शनि | 21:08:1956 |
| बुध | 24:10:1956 |
| केतु | 20:12:1956 |
| शुक्र | 13:01:1957 |
| सूर्य | 21:03:1957 |
| चन्द्रमा | 11:04:1957 |

### राहु अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| राहु | 14:05:1957 |
| बृहस्पति | 17:10:1957 |
| शनि | 05:03:1958 |
| बुध | 17:08:1958 |
| केतु | 11:01:1959 |
| शुक्र | 13:03:1959 |
| सूर्य | 02:09:1959 |
| चन्द्रमा | 24:10:1959 |
| मंगल | 19:01:1960 |

### बृहस्पति अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बृहस्पति | 20:03:1960 |
| शनि | 21:07:1960 |
| बुध | 15:12:1960 |
| केतु | 25:04:1961 |
| शुक्र | 18:06:1961 |
| सूर्य | 19:11:1961 |
| चन्द्रमा | 05:01:1962 |
| मंगल | 23:03:1962 |
| राहु | 16:05:1962 |

# बुध ग्रह दशा

( Start Date: 01:10:1962, End Date: 30:09:1979 )

### बुध अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बुध | 01:10:1962 |
| केतु | 03:02:1963 |
| शुक्र | 26:03:1963 |
| सूर्य | 20:08:1963 |
| चन्द्रमा | 02:10:1963 |
| मंगल | 15:12:1963 |
| राहु | 04:02:1964 |
| बृहस्पति | 15:06:1964 |
| शनि | 11:10:1964 |

### केतु अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| केतु | 27:02:1965 |
| शुक्र | 20:03:1965 |
| सूर्य | 20:05:1965 |
| चन्द्रमा | 07:06:1965 |
| मंगल | 07:07:1965 |
| राहु | 28:07:1965 |
| बृहस्पति | 20:09:1965 |
| शनि | 08:11:1965 |
| बुध | 04:01:1966 |

### शुक्र अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शुक्र | 24:02:1966 |
| सूर्य | 16:08:1966 |
| चन्द्रमा | 06:10:1966 |
| मंगल | 31:12:1966 |
| राहु | 02:03:1967 |
| बृहस्पति | 04:08:1967 |
| शनि | 20:12:1967 |
| बुध | 01:06:1968 |
| केतु | 26:10:1968 |

### सूर्य अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| सूर्य | 25:12:1968 |
| चन्द्रमा | 10:01:1969 |
| मंगल | 05:02:1969 |
| राहु | 23:02:1969 |
| बृहस्पति | 10:04:1969 |
| शनि | 22:05:1969 |
| बुध | 10:07:1969 |
| केतु | 23:08:1969 |
| शुक्र | 10:09:1969 |

### चन्द्रमा अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| चन्द्रमा | 01:11:1969 |
| मंगल | 14:12:1969 |
| राहु | 13:01:1970 |
| बृहस्पति | 31:03:1970 |
| शनि | 08:06:1970 |
| बुध | 29:08:1970 |
| केतु | 11:11:1970 |
| शुक्र | 11:12:1970 |
| सूर्य | 07:03:1971 |

### मंगल अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| मंगल | 02:04:1971 |
| राहु | 23:04:1971 |
| बृहस्पति | 16:06:1971 |
| शनि | 03:08:1971 |
| बुध | 30:09:1971 |
| केतु | 20:11:1971 |
| शुक्र | 11:12:1971 |
| सूर्य | 10:02:1972 |
| चन्द्रमा | 28:02:1972 |

### राहु अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| राहु | 29:03:1972 |
| बृहस्पति | 16:08:1972 |
| शनि | 18:12:1972 |
| बुध | 15:05:1973 |
| केतु | 24:09:1973 |
| शुक्र | 17:11:1973 |
| सूर्य | 21:04:1974 |
| चन्द्रमा | 07:06:1974 |
| मंगल | 23:08:1974 |

### बृहस्पति अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बृहस्पति | 16:10:1974 |
| शनि | 04:02:1975 |
| बुध | 15:06:1975 |
| केतु | 10:10:1975 |
| शुक्र | 27:11:1975 |
| सूर्य | 13:04:1976 |
| चन्द्रमा | 25:05:1976 |
| मंगल | 02:08:1976 |
| राहु | 19:09:1976 |

### शनि अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शनि | 22:01:1977 |
| बुध | 26:06:1977 |
| केतु | 13:11:1977 |
| शुक्र | 09:01:1978 |
| सूर्य | 22:06:1978 |
| चन्द्रमा | 10:08:1978 |
| मंगल | 31:10:1978 |
| राहु | 27:12:1978 |
| बृहस्पति | 23:05:1979 |

# केतु ग्रह दशा

( Start Date: 01:10:1979, End Date: 30:09:1986 )

## केतु अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| केतु | 01:10:1979 |
| शुक्र | 10:10:1979 |
| सूर्य | 04:11:1979 |
| चन्द्रमा | 11:11:1979 |
| मंगल | 24:11:1979 |
| राहु | 02:12:1979 |
| बृहस्पति | 25:12:1979 |
| शनि | 14:01:1980 |
| बुध | 06:02:1980 |

## शुक्र अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शुक्र | 27:02:1980 |
| सूर्य | 09:05:1980 |
| चन्द्रमा | 30:05:1980 |
| मंगल | 05:07:1980 |
| राहु | 29:07:1980 |
| बृहस्पति | 01:10:1980 |
| शनि | 27:11:1980 |
| बुध | 03:02:1981 |
| केतु | 04:04:1981 |

## सूर्य अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| सूर्य | 29:04:1981 |
| चन्द्रमा | 05:05:1981 |
| मंगल | 16:05:1981 |
| राहु | 24:05:1981 |
| बृहस्पति | 12:06:1981 |
| शनि | 29:06:1981 |
| बुध | 19:07:1981 |
| केतु | 06:08:1981 |
| शुक्र | 14:08:1981 |

## चन्द्रमा अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| चन्द्रमा | 04:09:1981 |
| मंगल | 22:09:1981 |
| राहु | 04:10:1981 |
| बृहस्पति | 05:11:1981 |
| शनि | 03:12:1981 |
| बुध | 06:01:1982 |
| केतु | 05:02:1982 |
| शुक्र | 18:02:1982 |
| सूर्य | 25:03:1982 |

## मंगल अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| मंगल | 05:04:1982 |
| राहु | 13:04:1982 |
| बृहस्पति | 06:05:1982 |
| शनि | 26:05:1982 |
| बुध | 18:06:1982 |
| केतु | 09:07:1982 |
| शुक्र | 18:07:1982 |
| सूर्य | 12:08:1982 |
| चन्द्रमा | 19:08:1982 |

## राहु अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| राहु | 01:09:1982 |
| बृहस्पति | 28:10:1982 |
| शनि | 18:12:1982 |
| बुध | 17:02:1983 |
| केतु | 12:04:1983 |
| शुक्र | 05:05:1983 |
| सूर्य | 08:07:1983 |
| चन्द्रमा | 27:07:1983 |
| मंगल | 28:08:1983 |

## बृहस्पति अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बृहस्पति | 19:09:1983 |
| शनि | 03:11:1983 |
| बुध | 27:12:1983 |
| केतु | 14:02:1984 |
| शुक्र | 05:03:1984 |
| सूर्य | 01:05:1984 |
| चन्द्रमा | 18:05:1984 |
| मंगल | 15:06:1984 |
| राहु | 05:07:1984 |

## शनि अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शनि | 25:08:1984 |
| बुध | 29:10:1984 |
| केतु | 25:12:1984 |
| शुक्र | 18:01:1985 |
| सूर्य | 26:03:1985 |
| चन्द्रमा | 15:04:1985 |
| मंगल | 19:05:1985 |
| राहु | 12:06:1985 |
| बृहस्पति | 11:08:1985 |

## बुध अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बुध | 04:10:1985 |
| केतु | 25:11:1985 |
| शुक्र | 16:12:1985 |
| सूर्य | 14:02:1986 |
| चन्द्रमा | 04:03:1986 |
| मंगल | 03:04:1986 |
| राहु | 24:04:1986 |
| बृहस्पति | 18:06:1986 |
| शनि | 05:08:1986 |

# शुक्र ग्रह दशा

( Start Date: 01:10:1986, End Date: 30:09:2006 )

## शुक्र अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शुक्र | 01:10:1986 |
| सूर्य | 22:04:1987 |
| चन्द्रमा | 22:06:1987 |
| मंगल | 01:10:1987 |
| राहु | 11:12:1987 |
| बृहस्पति | 11:06:1988 |
| शनि | 21:11:1988 |
| बुध | 02:06:1989 |
| केतु | 21:11:1989 |

## सूर्य अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| सूर्य | 31:01:1990 |
| चन्द्रमा | 18:02:1990 |
| मंगल | 21:03:1990 |
| राहु | 11:04:1990 |
| बृहस्पति | 05:06:1990 |
| शनि | 23:07:1990 |
| बुध | 19:09:1990 |
| केतु | 10:11:1990 |
| शुक्र | 01:12:1990 |

## चन्द्रमा अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| चन्द्रमा | 31:01:1991 |
| मंगल | 23:03:1991 |
| राहु | 27:04:1991 |
| बृहस्पति | 27:07:1991 |
| शनि | 16:10:1991 |
| बुध | 21:01:1992 |
| केतु | 16:04:1992 |
| शुक्र | 22:05:1992 |
| सूर्य | 31:08:1992 |

## मंगल अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| मंगल | 01:10:1992 |
| राहु | 26:10:1992 |
| बृहस्पति | 29:12:1992 |
| शनि | 24:02:1993 |
| बुध | 02:05:1993 |
| केतु | 01:07:1993 |
| शुक्र | 26:07:1993 |
| सूर्य | 05:10:1993 |
| चन्द्रमा | 27:10:1993 |

## राहु अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| राहु | 01:12:1993 |
| बृहस्पति | 14:05:1994 |
| शनि | 07:10:1994 |
| बुध | 30:03:1995 |
| केतु | 01:09:1995 |
| शुक्र | 04:11:1995 |
| सूर्य | 05:05:1996 |
| चन्द्रमा | 28:06:1996 |
| मंगल | 28:09:1996 |

## बृहस्पति अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बृहस्पति | 01:12:1996 |
| शनि | 10:04:1997 |
| बुध | 11:09:1997 |
| केतु | 27:01:1998 |
| शुक्र | 25:03:1998 |
| सूर्य | 03:09:1998 |
| चन्द्रमा | 22:10:1998 |
| मंगल | 11:01:1999 |
| राहु | 08:03:1999 |

## शनि अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शनि | 01:08:1999 |
| बुध | 31:01:2000 |
| केतु | 14:07:2000 |
| शुक्र | 19:09:2000 |
| सूर्य | 31:03:2001 |
| चन्द्रमा | 28:05:2001 |
| मंगल | 01:09:2001 |
| राहु | 08:11:2001 |
| बृहस्पति | 30:04:2002 |

## बुध अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बुध | 01:10:2002 |
| केतु | 25:02:2003 |
| शुक्र | 26:04:2003 |
| सूर्य | 15:10:2003 |
| चन्द्रमा | 06:12:2003 |
| मंगल | 01:03:2004 |
| राहु | 01:05:2004 |
| बृहस्पति | 04:10:2004 |
| शनि | 19:02:2005 |

## केतु अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| केतु | 01:08:2005 |
| शुक्र | 26:08:2005 |
| सूर्य | 05:11:2005 |
| चन्द्रमा | 27:11:2005 |
| मंगल | 01:01:2006 |
| राहु | 26:01:2006 |
| बृहस्पति | 31:03:2006 |
| शनि | 26:05:2006 |
| बुध | 02:08:2006 |

# सूर्य ग्रह दशा

( Start Date: 01:10:2006, End Date: 30:09:2012 )

### सूर्य अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| सूर्य | 01:10:2006 |
| चन्द्रमा | 07:10:2006 |
| मंगल | 16:10:2006 |
| राहु | 22:10:2006 |
| बृहस्पति | 08:11:2006 |
| शनि | 22:11:2006 |
| बुध | 10:12:2006 |
| केतु | 25:12:2006 |
| शुक्र | 31:12:2006 |

### चन्द्रमा अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| चन्द्रमा | 19:01:2007 |
| मंगल | 03:02:2007 |
| राहु | 14:02:2007 |
| बृहस्पति | 13:03:2007 |
| शनि | 06:04:2007 |
| बुध | 05:05:2007 |
| केतु | 31:05:2007 |
| शुक्र | 11:06:2007 |
| सूर्य | 11:07:2007 |

### मंगल अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| मंगल | 20:07:2007 |
| राहु | 28:07:2007 |
| बृहस्पति | 16:08:2007 |
| शनि | 02:09:2007 |
| बुध | 22:09:2007 |
| केतु | 10:10:2007 |
| शुक्र | 18:10:2007 |
| सूर्य | 08:11:2007 |
| चन्द्रमा | 14:11:2007 |

### राहु अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| राहु | 25:11:2007 |
| बृहस्पति | 13:01:2008 |
| शनि | 26:02:2008 |
| बुध | 18:04:2008 |
| केतु | 04:06:2008 |
| शुक्र | 23:06:2008 |
| सूर्य | 17:08:2008 |
| चन्द्रमा | 03:09:2008 |
| मंगल | 30:09:2008 |

### बृहस्पति अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बृहस्पति | 19:10:2008 |
| शनि | 27:11:2008 |
| बुध | 13:01:2009 |
| केतु | 23:02:2009 |
| शुक्र | 12:03:2009 |
| सूर्य | 30:04:2009 |
| चन्द्रमा | 14:05:2009 |
| मंगल | 08:06:2009 |
| राहु | 25:06:2009 |

### शनि अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शनि | 07:08:2009 |
| बुध | 01:10:2009 |
| केतु | 20:11:2009 |
| शुक्र | 10:12:2009 |
| सूर्य | 06:02:2010 |
| चन्द्रमा | 23:02:2010 |
| मंगल | 24:03:2010 |
| राहु | 13:04:2010 |
| बृहस्पति | 04:06:2010 |

### बुध अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बुध | 20:07:2010 |
| केतु | 02:09:2010 |
| शुक्र | 20:09:2010 |
| सूर्य | 11:11:2010 |
| चन्द्रमा | 27:11:2010 |
| मंगल | 22:12:2010 |
| राहु | 09:01:2011 |
| बृहस्पति | 25:02:2011 |
| शनि | 07:04:2011 |

### केतु अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| केतु | 26:05:2011 |
| शुक्र | 03:06:2011 |
| सूर्य | 24:06:2011 |
| चन्द्रमा | 01:07:2011 |
| मंगल | 11:07:2011 |
| राहु | 19:07:2011 |
| बृहस्पति | 07:08:2011 |
| शनि | 24:08:2011 |
| बुध | 13:09:2011 |

### शुक्र अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शुक्र | 01:10:2011 |
| सूर्य | 01:12:2011 |
| चन्द्रमा | 19:12:2011 |
| मंगल | 19:01:2012 |
| राहु | 09:02:2012 |
| बृहस्पति | 04:04:2012 |
| शनि | 23:05:2012 |
| बुध | 20:07:2012 |
| केतु | 10:09:2012 |

# चन्द्रमा ग्रह दशा

( Start Date: 01:10:2012, End Date: 30:09:2022 )

### चन्द्रमा अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| चन्द्रमा | 01:10:2012 |
| मंगल | 26:10:2012 |
| राहु | 13:11:2012 |
| बृहस्पति | 29:12:2012 |
| शनि | 08:02:2013 |
| बुध | 28:03:2013 |
| केतु | 10:05:2013 |
| शुक्र | 27:05:2013 |
| सूर्य | 17:07:2013 |

### मंगल अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| मंगल | 01:08:2013 |
| राहु | 14:08:2013 |
| बृहस्पति | 15:09:2013 |
| शनि | 13:10:2013 |
| बुध | 16:11:2013 |
| केतु | 16:12:2013 |
| शुक्र | 28:12:2013 |
| सूर्य | 02:02:2014 |
| चन्द्रमा | 13:02:2014 |

### राहु अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| राहु | 02:03:2014 |
| बृहस्पति | 23:05:2014 |
| शनि | 04:08:2014 |
| बुध | 30:10:2014 |
| केतु | 16:01:2015 |
| शुक्र | 17:02:2015 |
| सूर्य | 19:05:2015 |
| चन्द्रमा | 15:06:2015 |
| मंगल | 31:07:2015 |

### बृहस्पति अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बृहस्पति | 01:09:2015 |
| शनि | 05:11:2015 |
| बुध | 21:01:2016 |
| केतु | 30:03:2016 |
| शुक्र | 27:04:2016 |
| सूर्य | 18:07:2016 |
| चन्द्रमा | 11:08:2016 |
| मंगल | 21:09:2016 |
| राहु | 19:10:2016 |

### शनि अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शनि | 31:12:2016 |
| बुध | 02:04:2017 |
| केतु | 23:06:2017 |
| शुक्र | 27:07:2017 |
| सूर्य | 31:10:2017 |
| चन्द्रमा | 29:11:2017 |
| मंगल | 16:01:2018 |
| राहु | 19:02:2018 |
| बृहस्पति | 16:05:2018 |

### बुध अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बुध | 01:08:2018 |
| केतु | 14:10:2018 |
| शुक्र | 13:11:2018 |
| सूर्य | 07:02:2019 |
| चन्द्रमा | 05:03:2019 |
| मंगल | 17:04:2019 |
| राहु | 17:05:2019 |
| बृहस्पति | 03:08:2019 |
| शनि | 11:10:2019 |

### केतु अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| केतु | 31:12:2019 |
| शुक्र | 13:01:2020 |
| सूर्य | 18:02:2020 |
| चन्द्रमा | 28:02:2020 |
| मंगल | 17:03:2020 |
| राहु | 29:03:2020 |
| बृहस्पति | 30:04:2020 |
| शनि | 29:05:2020 |
| बुध | 02:07:2020 |

### शुक्र अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शुक्र | 01:08:2020 |
| सूर्य | 11:11:2020 |
| चन्द्रमा | 11:12:2020 |
| मंगल | 31:01:2021 |
| राहु | 07:03:2021 |
| बृहस्पति | 07:06:2021 |
| शनि | 27:08:2021 |
| बुध | 01:12:2021 |
| केतु | 25:02:2022 |

### सूर्य अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| सूर्य | 02:04:2022 |
| चन्द्रमा | 11:04:2022 |
| मंगल | 26:04:2022 |
| राहु | 07:05:2022 |
| बृहस्पति | 03:06:2022 |
| शनि | 27:06:2022 |
| बुध | 26:07:2022 |
| केतु | 21:08:2022 |
| शुक्र | 01:09:2022 |

# मंगल ग्रह दशा

( Start Date: 01:10:2022, End Date: 30:09:2029 )

### मंगल अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| मंगल | 01:10:2022 |
| राहु | 10:10:2022 |
| बृहस्पति | 01:11:2022 |
| शनि | 21:11:2022 |
| बुध | 15:12:2022 |
| केतु | 05:01:2023 |
| शुक्र | 14:01:2023 |
| सूर्य | 07:02:2023 |
| चन्द्रमा | 15:02:2023 |

### राहु अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| राहु | 27:02:2023 |
| बृहस्पति | 26:04:2023 |
| शनि | 16:06:2023 |
| बुध | 16:08:2023 |
| केतु | 09:10:2023 |
| शुक्र | 31:10:2023 |
| सूर्य | 03:01:2024 |
| चन्द्रमा | 22:01:2024 |
| मंगल | 23:02:2024 |

### बृहस्पति अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बृहस्पति | 17:03:2024 |
| शनि | 01:05:2024 |
| बुध | 24:06:2024 |
| केतु | 12:08:2024 |
| शुक्र | 01:09:2024 |
| सूर्य | 28:10:2024 |
| चन्द्रमा | 14:11:2024 |
| मंगल | 12:12:2024 |
| राहु | 01:01:2025 |

### शनि अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शनि | 21:02:2025 |
| बुध | 26:04:2025 |
| केतु | 23:06:2025 |
| शुक्र | 16:07:2025 |
| सूर्य | 22:09:2025 |
| चन्द्रमा | 12:10:2025 |
| मंगल | 15:11:2025 |
| राहु | 08:12:2025 |
| बृहस्पति | 07:02:2026 |

### बुध अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बुध | 02:04:2026 |
| केतु | 23:05:2026 |
| शुक्र | 13:06:2026 |
| सूर्य | 12:08:2026 |
| चन्द्रमा | 31:08:2026 |
| मंगल | 30:09:2026 |
| राहु | 21:10:2026 |
| बृहस्पति | 14:12:2026 |
| शनि | 31:01:2027 |

### केतु अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| केतु | 30:03:2027 |
| शुक्र | 07:04:2027 |
| सूर्य | 02:05:2027 |
| चन्द्रमा | 10:05:2027 |
| मंगल | 22:05:2027 |
| राहु | 31:05:2027 |
| बृहस्पति | 22:06:2027 |
| शनि | 12:07:2027 |
| बुध | 05:08:2027 |

### शुक्र अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शुक्र | 26:08:2027 |
| सूर्य | 05:11:2027 |
| चन्द्रमा | 26:11:2027 |
| मंगल | 31:12:2027 |
| राहु | 25:01:2028 |
| बृहस्पति | 29:03:2028 |
| शनि | 25:05:2028 |
| बुध | 01:08:2028 |
| केतु | 30:09:2028 |

### सूर्य अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| सूर्य | 25:10:2028 |
| चन्द्रमा | 01:11:2028 |
| मंगल | 11:11:2028 |
| राहु | 19:11:2028 |
| बृहस्पति | 08:12:2028 |
| शनि | 25:12:2028 |
| बुध | 14:01:2029 |
| केतु | 02:02:2029 |
| शुक्र | 09:02:2029 |

### चन्द्रमा अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| चन्द्रमा | 02:03:2029 |
| मंगल | 20:03:2029 |
| राहु | 01:04:2029 |
| बृहस्पति | 03:05:2029 |
| शनि | 01:06:2029 |
| बुध | 05:07:2029 |
| केतु | 04:08:2029 |
| शुक्र | 16:08:2029 |
| सूर्य | 21:09:2029 |

# राहु ग्रह दशा

( Start Date: 01:10:2029, End Date: 30:09:2047 )

### राहु अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| राहु | 01:10:2029 |
| बृहस्पति | 26:02:2030 |
| शनि | 07:07:2030 |
| बुध | 10:12:2030 |
| केतु | 29:04:2031 |
| शुक्र | 26:06:2031 |
| सूर्य | 07:12:2031 |
| चन्द्रमा | 25:01:2032 |
| मंगल | 17:04:2032 |

### बृहस्पति अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बृहस्पति | 13:06:2032 |
| शनि | 08:10:2032 |
| बुध | 24:02:2033 |
| केतु | 28:06:2033 |
| शुक्र | 18:08:2033 |
| सूर्य | 11:01:2034 |
| चन्द्रमा | 24:02:2034 |
| मंगल | 08:05:2034 |
| राहु | 28:06:2034 |

### शनि अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शनि | 07:11:2034 |
| बुध | 20:04:2035 |
| केतु | 15:09:2035 |
| शुक्र | 14:11:2035 |
| सूर्य | 06:05:2036 |
| चन्द्रमा | 27:06:2036 |
| मंगल | 22:09:2036 |
| राहु | 22:11:2036 |
| बृहस्पति | 27:04:2037 |

### बुध अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बुध | 13:09:2037 |
| केतु | 23:01:2038 |
| शुक्र | 18:03:2038 |
| सूर्य | 20:08:2038 |
| चन्द्रमा | 06:10:2038 |
| मंगल | 22:12:2038 |
| राहु | 15:02:2039 |
| बृहस्पति | 04:07:2039 |
| शनि | 05:11:2039 |

### केतु अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| केतु | 01:04:2040 |
| शुक्र | 23:04:2040 |
| सूर्य | 26:06:2040 |
| चन्द्रमा | 16:07:2040 |
| मंगल | 17:08:2040 |
| राहु | 08:09:2040 |
| बृहस्पति | 05:11:2040 |
| शनि | 26:12:2040 |
| बुध | 25:02:2041 |

### शुक्र अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शुक्र | 20:04:2041 |
| सूर्य | 19:10:2041 |
| चन्द्रमा | 13:12:2041 |
| मंगल | 14:03:2042 |
| राहु | 17:05:2042 |
| बृहस्पति | 29:10:2042 |
| शनि | 24:03:2043 |
| बुध | 13:09:2043 |
| केतु | 15:02:2044 |

### सूर्य अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| सूर्य | 19:04:2044 |
| चन्द्रमा | 06:05:2044 |
| मंगल | 02:06:2044 |
| राहु | 21:06:2044 |
| बृहस्पति | 10:08:2044 |
| शनि | 23:09:2044 |
| बुध | 14:11:2044 |
| केतु | 31:12:2044 |
| शुक्र | 19:01:2045 |

### चन्द्रमा अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| चन्द्रमा | 14:03:2045 |
| मंगल | 29:04:2045 |
| राहु | 31:05:2045 |
| बृहस्पति | 21:08:2045 |
| शनि | 02:11:2045 |
| बुध | 28:01:2046 |
| केतु | 15:04:2046 |
| शुक्र | 17:05:2046 |
| सूर्य | 17:08:2046 |

### मंगल अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| मंगल | 13:09:2046 |
| राहु | 05:10:2046 |
| बृहस्पति | 02:12:2046 |
| शनि | 22:01:2047 |
| बुध | 24:03:2047 |
| केतु | 17:05:2047 |
| शुक्र | 08:06:2047 |
| सूर्य | 11:08:2047 |
| चन्द्रमा | 30:08:2047 |

# बृहस्पति ग्रह दशा

( Start Date: 01:10:2047, End Date: 30:09:2063 )

## बृहस्पति अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बृहस्पति | 01:10:2047 |
| शनि | 13:01:2048 |
| बुध | 16:05:2048 |
| केतु | 03:09:2048 |
| शुक्र | 19:10:2048 |
| सूर्य | 26:02:2049 |
| चन्द्रमा | 06:04:2049 |
| मंगल | 10:06:2049 |
| राहु | 25:07:2049 |

## शनि अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शनि | 19:11:2049 |
| बुध | 14:04:2050 |
| केतु | 23:08:2050 |
| शुक्र | 16:10:2050 |
| सूर्य | 19:03:2051 |
| चन्द्रमा | 05:05:2051 |
| मंगल | 21:07:2051 |
| राहु | 13:09:2051 |
| बृहस्पति | 29:01:2052 |

## बुध अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बुध | 01:06:2052 |
| केतु | 27:09:2052 |
| शुक्र | 14:11:2052 |
| सूर्य | 01:04:2053 |
| चन्द्रमा | 12:05:2053 |
| मंगल | 20:07:2053 |
| राहु | 06:09:2053 |
| बृहस्पति | 09:01:2054 |
| शनि | 29:04:2054 |

## केतु अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| केतु | 07:09:2054 |
| शुक्र | 27:09:2054 |
| सूर्य | 23:11:2054 |
| चन्द्रमा | 10:12:2054 |
| मंगल | 07:01:2055 |
| राहु | 27:01:2055 |
| बृहस्पति | 19:03:2055 |
| शनि | 03:05:2055 |
| बुध | 26:06:2055 |

## शुक्र अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शुक्र | 14:08:2055 |
| सूर्य | 23:01:2056 |
| चन्द्रमा | 12:03:2056 |
| मंगल | 01:06:2056 |
| राहु | 28:07:2056 |
| बृहस्पति | 21:12:2056 |
| शनि | 30:04:2057 |
| बुध | 01:10:2057 |
| केतु | 16:02:2058 |

## सूर्य अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| सूर्य | 14:04:2058 |
| चन्द्रमा | 28:04:2058 |
| मंगल | 23:05:2058 |
| राहु | 09:06:2058 |
| बृहस्पति | 23:07:2058 |
| शनि | 31:08:2058 |
| बुध | 16:10:2058 |
| केतु | 26:11:2058 |
| शुक्र | 13:12:2058 |

## चन्द्रमा अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| चन्द्रमा | 31:01:2059 |
| मंगल | 12:03:2059 |
| राहु | 10:04:2059 |
| बृहस्पति | 22:06:2059 |
| शनि | 26:08:2059 |
| बुध | 11:11:2059 |
| केतु | 19:01:2060 |
| शुक्र | 16:02:2060 |
| सूर्य | 08:05:2060 |

## मंगल अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| मंगल | 01:06:2060 |
| राहु | 21:06:2060 |
| बृहस्पति | 11:08:2060 |
| शनि | 26:09:2060 |
| बुध | 19:11:2060 |
| केतु | 06:01:2061 |
| शुक्र | 26:01:2061 |
| सूर्य | 24:03:2061 |
| चन्द्रमा | 10:04:2061 |

## राहु अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| राहु | 08:05:2061 |
| बृहस्पति | 17:09:2061 |
| शनि | 11:01:2062 |
| बुध | 30:05:2062 |
| केतु | 01:10:2062 |
| शुक्र | 21:11:2062 |
| सूर्य | 16:04:2063 |
| चन्द्रमा | 30:05:2063 |
| मंगल | 11:08:2063 |

# योगिनी दशा

| ग्रह (नक्षत्र) | दशा अवधि | से– | सिद्धी बिन्दु |
|---|---|---|---|
| धान्य (वृहस्पति)(पु) | 2.0 y.7.0 m.24 d. | 21:12:1945 | 270:23:03 |
| भ्रमरि (मंगल)(अश्लेषा) | 4.0 y.0.0 m.0 d. | 15:08:1948 | 323:14:35 |
| भद्रिका (बुध)(मघा) | 5.0 y.0.0 m.0 d. | 15:08:1952 | 111:53:39 |
| उल्का (शनि)(पुर्वफाल्गुनी) | 6.0 y.0.0 m.0 d. | 15:08:1957 | 325:51:53 |
| सिद्धा (शुक्र)(उत्तरफाल्गुनी) | 7.0 y.0.0 m.0 d. | 15:08:1963 | 121:43:26 |
| संकटा (शनि)(हस्ता) | 8.0 y.0.0 m.0 d. | 15:08:1970 | 161:50:15 |
| मंगला(चन्द्रमा)(चित्रा) | 1.0 y.0.0 m.0 d. | 15:08:1978 | 193:11:11 |
| पिगंला (सूर्य)(स्वाति) | 2.0 y.0.0 m.0 d. | 15:08:1979 | 312:52:20 |
| धान्य (वृहस्पति)(विशाखा) | 3.0 y.0.0 m.0 d. | 15:08:1981 | 000:37:57 |
| भ्रमरि (मंगल)(अनुराधा) | 4.0 y.0.0 m.0 d. | 15:08:1984 | 188:21:44 |
| भद्रिका (बुध)(ज्येश्ठा) | 5.0 y.0.0 m.0 d. | 15:08:1988 | 089:53:51 |
| उल्का (शनि)(मूला) | 6.0 y.0.0 m.0 d. | 15:08:1993 | 337:00:48 |
| सिद्धा (शुक्र)(पूर्वाशाढ़) | 7.0 y.0.0 m.0 d. | 15:08:1999 | 111:35:38 |
| संकटा (शनि)(उत्तराशाढ़) | 8.0 y.0.0 m.0 d. | 15:08:2006 | 312:52:20 |
| मंगला(चन्द्रमा)(श्रवण) | 1.0 y.0.0 m.0 d. | 15:08:2014 | 189:47:03 |
| पिगंला (सूर्य)(धनिश्ठा) | 2.0 y.0.0 m.0 d. | 15:08:2015 | 344:13:16 |
| धान्य (वृहस्पति)(शतभिशा) | 3.0 y.0.0 m.0 d. | 15:08:2017 | 247:15:42 |
| भ्रमरि (मंगल)(पूर्वाभाद्र) | 4.0 y.0.0 m.0 d. | 15:08:2020 | 278:36:38 |
| भद्रिका (बुध)(उत्तरभाद्र) | 5.0 y.0.0 m.0 d. | 15:08:2024 | 315:01:00 |
| उल्का (शनि)(रेवाति) | 6.0 y.0.0 m.0 d. | 15:08:2029 | 315:01:00 |
| सिद्धा (शुक्र)(अश्विनी) | 7.0 y.0.0 m.0 d. | 15:08:2035 | 122:44:32 |
| संकटा (शनि)(भरणी) | 8.0 y.0.0 m.0 d. | 15:08:2042 | 302:44:32 |
| मंगला(चन्द्रमा)(कृतिका) | 1.0 y.0.0 m.0 d. | 15:08:2050 | 340:49:08 |
| पिगंला (सूर्य)(रोहिणी) | 2.0 y.0.0 m.0 d. | 15:08:2051 | 340:49:08 |

# अष्टोत्तरी दशा ( प्रचलित विभाजन विधि )

**जन्म के समय अष्टोत्तरी योग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:06:08) : रवि : 2 व. 9 मा. 26 दि.**

**आपकी कुण्डली में अष्टोत्तरी दशा का क्रितिकादी सिद्धान्त प्रावी हो रहा है।**

राहु लग्न में स्थित नहीं है, और लग्नाधिपति से केन्द्र या त्रिकोन में स्थित है। अष्टोत्तरी दशा के कुण्डली में प्रभावी होने की यह स्थिति आपकी कुण्डली में उपस्थित है।

कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म या शुक्ल पक्ष में रात का जन्म। अष्टोत्तरी दशा के कुण्डली में प्रभावी होने की यह स्थिति आपकी कुण्डली में उपस्थित है।

| क्र0 स0 | ग्रह दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | सूर्य | 2.0 y.9.0 m.27 d. | 21:12:1945 |
| 2 | चन्द्रमा | 15.0 y.0.0 m.0 d. | 18:10:1948 |
| 3 | मंगल | 8.0 y.0.0 m.0 d. | 18:10:1963 |
| 4 | बुध | 17.0 y.0.0 m.0 d. | 18:10:1971 |
| 5 | शनि | 10.0 y.0.0 m.0 d. | 18:10:1988 |
| 6 | बृहस्पति | 19.0 y.0.0 m.0 d. | 18:10:1998 |
| 7 | राहु | 12.0 y.0.0 m.0 d. | 18:10:2017 |
| 8 | शुक्र | 21.0 y.0.0 m.0 d. | 18:10:2029 |

**सूर्य दशा**

| अन्तर्दशा | से |
|---|---|
| सूर्य | |
| चन्द्रमा | |
| मंगल | |
| बुध | |
| शनि | |
| बृहस्पति | 21:12:1945 |
| राहु | 18:12:1946 |
| शुक्र | 18:08:1947 |

**चन्द्रमा दशा**

| अन्तर्दशा | से |
|---|---|
| चन्द्रमा | 18:10:1948 |
| मंगल | 17:11:1950 |
| बुध | 28:12:1951 |
| शनि | 09:05:1954 |
| बृहस्पति | 28:09:1955 |
| राहु | 19:05:1958 |
| शुक्र | 17:01:1960 |
| सूर्य | 18:12:1962 |

**मंगल दशा**

| अन्तर्दशा | से |
|---|---|
| मंगल | 18:10:1963 |
| बुध | 22:05:1964 |
| शनि | 25:08:1965 |
| बृहस्पति | 22:05:1966 |
| राहु | 18:10:1967 |
| शुक्र | 07:09:1968 |
| सूर्य | 29:03:1970 |
| चन्द्रमा | 07:09:1970 |

**बुध दशा**

| अन्तर्दशा | से |
|---|---|
| बुध | 18:10:1971 |
| शनि | 22:06:1974 |
| बृहस्पति | 17:01:1976 |
| राहु | 14:01:1979 |
| शुक्र | 04:12:1980 |
| सूर्य | 25:03:1984 |
| चन्द्रमा | 06:03:1985 |
| मंगल | 15:07:1987 |

**शनि दशा**

| अन्तर्दशा | से |
|---|---|
| शनि | 18:10:1988 |
| बृहस्पति | 21:09:1989 |
| राहु | 25:06:1991 |
| शुक्र | 04:08:1992 |
| सूर्य | 15:07:1994 |
| चन्द्रमा | 03:02:1995 |
| मंगल | 25:06:1996 |
| बुध | 22:03:1997 |

**बृहस्पति दशा**

| अन्तर्दशा | से |
|---|---|
| बृहस्पति | 18:10:1998 |
| राहु | 20:02:2002 |
| शुक्र | 01:04:2004 |
| सूर्य | 11:12:2007 |
| चन्द्रमा | 31:12:2008 |
| मंगल | 22:08:2011 |
| बुध | 17:01:2013 |
| शनि | 14:01:2016 |

**राहु दशा**

| अन्तर्दशा | से |
|---|---|
| राहु | 18:10:2017 |
| शुक्र | 17:02:2019 |
| सूर्य | 18:06:2021 |
| चन्द्रमा | 17:02:2022 |
| मंगल | 18:10:2023 |
| बुध | 07:09:2024 |
| शनि | 29:07:2026 |
| बृहस्पति | 07:09:2027 |

**शुक्र दशा**

| अन्तर्दशा | से |
|---|---|
| शुक्र | 18:10:2029 |
| सूर्य | 17:11:2033 |
| चन्द्रमा | 17:01:2035 |
| मंगल | 18:12:2037 |
| बुध | 09:07:2039 |
| शनि | 28:10:2042 |
| बृहस्पति | 08:10:2044 |
| राहु | 18:06:2048 |

# अष्टोत्तरी दशा ( प्रचलित विभाजन विधि )

जन्म के समय अष्टोत्तरी योग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:06:08) : रवि : 2 व. 9 मा. 26 दि.

## सूर्य दशा (21:12:1945 – 18:10:1948 )

सूर्य अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| सूर्य | .... |
| चन्द्रमा | .... |
| मंगल | .... |
| बुध | .... |
| शनि | .... |
| बृहस्पति | .... |
| राहु | .... |
| शुक्र | .... |

चन्द्रमा अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| चन्द्रमा | .... |
| मंगल | .... |
| बुध | .... |
| शनि | .... |
| बृहस्पति | .... |
| राहु | .... |
| शुक्र | .... |
| सूर्य | .... |

मंगल अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| मंगल | .... |
| बुध | .... |
| शनि | .... |
| बृहस्पति | .... |
| राहु | .... |
| शुक्र | .... |
| सूर्य | .... |
| चन्द्रमा | .... |

बुध अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बुध | .... |
| शनि | .... |
| बृहस्पति | .... |
| राहु | .... |
| शुक्र | .... |
| सूर्य | .... |
| चन्द्रमा | .... |
| मंगल | .... |

शनि अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शनि | .... |
| बृहस्पति | .... |
| राहु | .... |
| शुक्र | .... |
| सूर्य | .... |
| चन्द्रमा | .... |
| मंगल | .... |
| बुध | .... |

बृहस्पति अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बृहस्पति | 21:12:1945 |
| राहु | 03:02:1946 |
| शुक्र | 18:03:1946 |
| सूर्य | 01:06:1946 |
| चन्द्रमा | 22:06:1946 |
| मंगल | 15:08:1946 |
| बुध | 12:09:1946 |
| शनि | 12:11:1946 |

राहु अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| राहु | 18:12:1946 |
| शुक्र | 14:01:1947 |
| सूर्य | 02:03:1947 |
| चन्द्रमा | 16:03:1947 |
| मंगल | 18:04:1947 |
| बुध | 07:05:1947 |
| शनि | 14:06:1947 |
| बृहस्पति | 06:07:1947 |

शुक्र अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शुक्र | 18:08:1947 |
| सूर्य | 09:11:1947 |
| चन्द्रमा | 03:12:1947 |
| मंगल | 31:01:1948 |
| बुध | 02:03:1948 |
| शनि | 09:05:1948 |
| बृहस्पति | 17:06:1948 |
| राहु | 31:08:1948 |

# अष्टोत्तरी दशा ( प्रचलित विभाजन विधि )

जन्म के समय अष्टोत्तरी योग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:06:08) : रवि : 2 व. 9 मा. 26 दि.

## चन्द्रमा दशा (18:10:1948 – 18:10:1963 )

### चन्द्रमा अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| चन्द्रमा | 18:10:1948 |
| मंगल | 01:02:1949 |
| बुध | 29:03:1949 |
| शनि | 27:07:1949 |
| बृहस्पति | 05:10:1949 |
| राहु | 16:02:1950 |
| शुक्र | 11:05:1950 |
| सूर्य | 06:10:1950 |

### मंगल अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| मंगल | 17:11:1950 |
| बुध | 17:12:1950 |
| शनि | 19:02:1951 |
| बृहस्पति | 29:03:1951 |
| राहु | 08:06:1951 |
| शुक्र | 23:07:1951 |
| सूर्य | 10:10:1951 |
| चन्द्रमा | 02:11:1951 |

### बुध अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बुध | 28:12:1951 |
| शनि | 12:05:1952 |
| बृहस्पति | 31:07:1952 |
| राहु | 30:12:1952 |
| शुक्र | 05:04:1953 |
| सूर्य | 19:09:1953 |
| चन्द्रमा | 06:11:1953 |
| मंगल | 06:03:1954 |

### शनि अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शनि | 09:05:1954 |
| बृहस्पति | 25:06:1954 |
| राहु | 22:09:1954 |
| शुक्र | 17:11:1954 |
| सूर्य | 24:02:1955 |
| चन्द्रमा | 24:03:1955 |
| मंगल | 02:06:1955 |
| बुध | 10:07:1955 |

### बृहस्पति अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बृहस्पति | 28:09:1955 |
| राहु | 15:03:1956 |
| शुक्र | 01:07:1956 |
| सूर्य | 04:01:1957 |
| चन्द्रमा | 27:02:1957 |
| मंगल | 11:07:1957 |
| बुध | 20:09:1957 |
| शनि | 19:02:1958 |

### राहु अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| राहु | 19:05:1958 |
| शुक्र | 25:07:1958 |
| सूर्य | 21:11:1958 |
| चन्द्रमा | 25:12:1958 |
| मंगल | 19:03:1959 |
| बुध | 03:05:1959 |
| शनि | 07:08:1959 |
| बृहस्पति | 02:10:1959 |

### शुक्र अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शुक्र | 17:01:1960 |
| सूर्य | 12:08:1960 |
| चन्द्रमा | 10:10:1960 |
| मंगल | 07:03:1961 |
| बुध | 25:05:1961 |
| शनि | 09:11:1961 |
| बृहस्पति | 15:02:1962 |
| राहु | 22:08:1962 |

### सूर्य अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| सूर्य | 18:12:1962 |
| चन्द्रमा | 04:01:1963 |
| मंगल | 15:02:1963 |
| बुध | 09:03:1963 |
| शनि | 26:04:1963 |
| बृहस्पति | 25:05:1963 |
| राहु | 17:07:1963 |
| शुक्र | 20:08:1963 |

# अष्टोत्तरी दशा ( प्रचलित विभाजन विधि )

जन्म के समय अष्टोत्तरी योग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:06:08) : रवि : 2 व. 9 मा. 26 दि.

## मंगल दशा (18:10:1963 – 18:10:1971 )

### मंगल अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| मंगल | 18:10:1963 |
| बुध | 03:11:1963 |
| शनि | 07:12:1963 |
| बृहस्पति | 27:12:1963 |
| राहु | 03:02:1964 |
| शुक्र | 27:02:1964 |
| सूर्य | 09:04:1964 |
| चन्द्रमा | 22:04:1964 |

### बुध अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बुध | 22:05:1964 |
| शनि | 02:08:1964 |
| बृहस्पति | 14:09:1964 |
| राहु | 04:12:1964 |
| शुक्र | 24:01:1965 |
| सूर्य | 23:04:1965 |
| चन्द्रमा | 19:05:1965 |
| मंगल | 22:07:1965 |

### शनि अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शनि | 25:08:1965 |
| बृहस्पति | 19:09:1965 |
| राहु | 06:11:1965 |
| शुक्र | 06:12:1965 |
| सूर्य | 27:01:1966 |
| चन्द्रमा | 11:02:1966 |
| मंगल | 21:03:1966 |
| बुध | 10:04:1966 |

### बृहस्पति अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बृहस्पति | 22:05:1966 |
| राहु | 21:08:1966 |
| शुक्र | 17:10:1966 |
| सूर्य | 25:01:1967 |
| चन्द्रमा | 22:02:1967 |
| मंगल | 04:05:1967 |
| बुध | 12:06:1967 |
| शनि | 31:08:1967 |

### राहु अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| राहु | 18:10:1967 |
| शुक्र | 23:11:1967 |
| सूर्य | 25:01:1968 |
| चन्द्रमा | 12:02:1968 |
| मंगल | 28:03:1968 |
| बुध | 22:04:1968 |
| शनि | 12:06:1968 |
| बृहस्पति | 12:07:1968 |

### शुक्र अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शुक्र | 07:09:1968 |
| सूर्य | 27:12:1968 |
| चन्द्रमा | 27:01:1969 |
| मंगल | 16:04:1969 |
| बुध | 28:05:1969 |
| शनि | 26:08:1969 |
| बृहस्पति | 17:10:1969 |
| राहु | 25:01:1970 |

### सूर्य अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| सूर्य | 29:03:1970 |
| चन्द्रमा | 07:04:1970 |
| मंगल | 30:04:1970 |
| बुध | 12:05:1970 |
| शनि | 06:06:1970 |
| बृहस्पति | 21:06:1970 |
| राहु | 20:07:1970 |
| शुक्र | 07:08:1970 |

### चन्द्रमा अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| चन्द्रमा | 07:09:1970 |
| मंगल | 03:11:1970 |
| बुध | 03:12:1970 |
| शनि | 05:02:1971 |
| बृहस्पति | 14:03:1971 |
| राहु | 25:05:1971 |
| शुक्र | 09:07:1971 |
| सूर्य | 25:09:1971 |

# अष्टोत्तरी दशा ( प्रचलित विभाजन विधि )

जन्म के समय अष्टोत्तरी योग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:06:08) : रवि : 2 व. 9 मा. 26 दि.

## बुध दशा (18:10:1971 – 18:10:1988 )

### बुध अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बुध | 18:10:1971 |
| शनि | 20:03:1972 |
| बृहस्पति | 19:06:1972 |
| राहु | 08:12:1972 |
| शुक्र | 27:03:1973 |
| सूर्य | 02:10:1973 |
| चन्द्रमा | 26:11:1973 |
| मंगल | 10:04:1974 |

### शनि अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शनि | 22:06:1974 |
| बृहस्पति | 14:08:1974 |
| राहु | 23:11:1974 |
| शुक्र | 26:01:1975 |
| सूर्य | 18:05:1975 |
| चन्द्रमा | 18:06:1975 |
| मंगल | 06:09:1975 |
| बुध | 19:10:1975 |

### बृहस्पति अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बृहस्पति | 17:01:1976 |
| राहु | 28:07:1976 |
| शुक्र | 26:11:1976 |
| सूर्य | 27:06:1977 |
| चन्द्रमा | 26:08:1977 |
| मंगल | 25:01:1978 |
| बुध | 16:04:1978 |
| शनि | 05:10:1978 |

### राहु अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| राहु | 14:01:1979 |
| शुक्र | 31:03:1979 |
| सूर्य | 13:08:1979 |
| चन्द्रमा | 20:09:1979 |
| मंगल | 25:12:1979 |
| बुध | 14:02:1980 |
| शनि | 02:06:1980 |
| बृहस्पति | 05:08:1980 |

### शुक्र अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शुक्र | 04:12:1980 |
| सूर्य | 27:07:1981 |
| चन्द्रमा | 02:10:1981 |
| मंगल | 18:03:1982 |
| बुध | 16:06:1982 |
| शनि | 23:12:1982 |
| बृहस्पति | 13:04:1983 |
| राहु | 12:11:1983 |

### सूर्य अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| सूर्य | 25:03:1984 |
| चन्द्रमा | 13:04:1984 |
| मंगल | 31:05:1984 |
| बुध | 26:06:1984 |
| शनि | 19:08:1984 |
| बृहस्पति | 20:09:1984 |
| राहु | 20:11:1984 |
| शुक्र | 29:12:1984 |

### चन्द्रमा अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| चन्द्रमा | 06:03:1985 |
| मंगल | 03:07:1985 |
| बुध | 05:09:1985 |
| शनि | 19:01:1986 |
| बृहस्पति | 09:04:1986 |
| राहु | 07:09:1986 |
| शुक्र | 12:12:1986 |
| सूर्य | 28:05:1987 |

### मंगल अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| मंगल | 15:07:1987 |
| बुध | 18:08:1987 |
| शनि | 30:10:1987 |
| बृहस्पति | 11:12:1987 |
| राहु | 01:03:1988 |
| शुक्र | 22:04:1988 |
| सूर्य | 20:07:1988 |
| चन्द्रमा | 15:08:1988 |

# अष्टोत्तरी दशा ( प्रचलित विभाजन विधि )

जन्म के समय अष्टोत्तरी योग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:06:08) : रवि : 2 व. 9 मा. 26 दि.

## शनि दशा (18:10:1988 — 18:10:1998 )

### शनि अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शनि | 18:10:1988 |
| बृहस्पति | 18:11:1988 |
| राहु | 17:01:1989 |
| शुक्र | 23:02:1989 |
| सूर्य | 30:04:1989 |
| चन्द्रमा | 19:05:1989 |
| मंगल | 05:07:1989 |
| बुध | 30:07:1989 |

### बृहस्पति अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बृहस्पति | 21:09:1989 |
| राहु | 12:01:1990 |
| शुक्र | 24:03:1990 |
| सूर्य | 27:07:1990 |
| चन्द्रमा | 01:09:1990 |
| मंगल | 29:11:1990 |
| बुध | 16:01:1991 |
| शनि | 27:04:1991 |

### राहु अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| राहु | 25:06:1991 |
| शुक्र | 09:08:1991 |
| सूर्य | 27:10:1991 |
| चन्द्रमा | 19:11:1991 |
| मंगल | 14:01:1992 |
| बुध | 13:02:1992 |
| शनि | 17:04:1992 |
| बृहस्पति | 25:05:1992 |

### शुक्र अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शुक्र | 04:08:1992 |
| सूर्य | 21:12:1992 |
| चन्द्रमा | 29:01:1993 |
| मंगल | 08:05:1993 |
| बुध | 29:06:1993 |
| शनि | 19:10:1993 |
| बृहस्पति | 24:12:1993 |
| राहु | 27:04:1994 |

### सूर्य अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| सूर्य | 15:07:1994 |
| चन्द्रमा | 27:07:1994 |
| मंगल | 24:08:1994 |
| बुध | 08:09:1994 |
| शनि | 10:10:1994 |
| बृहस्पति | 28:10:1994 |
| राहु | 03:12:1994 |
| शुक्र | 26:12:1994 |

### चन्द्रमा अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| चन्द्रमा | 03:02:1995 |
| मंगल | 15:04:1995 |
| बुध | 22:05:1995 |
| शनि | 10:08:1995 |
| बृहस्पति | 26:09:1995 |
| राहु | 24:12:1995 |
| शुक्र | 18:02:1996 |
| सूर्य | 27:05:1996 |

### मंगल अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| मंगल | 25:06:1996 |
| बुध | 15:07:1996 |
| शनि | 26:08:1996 |
| बृहस्पति | 20:09:1996 |
| राहु | 07:11:1996 |
| शुक्र | 07:12:1996 |
| सूर्य | 29:01:1997 |
| चन्द्रमा | 13:02:1997 |

### बुध अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बुध | 22:03:1997 |
| शनि | 21:06:1997 |
| बृहस्पति | 13:08:1997 |
| राहु | 22:11:1997 |
| शुक्र | 25:01:1998 |
| सूर्य | 17:05:1998 |
| चन्द्रमा | 18:06:1998 |
| मंगल | 05:09:1998 |

# अष्टोत्तरी दशा ( प्रचलित विभाजन विधि )

जन्म के समय अष्टोत्तरी योग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:06:08) : रवि : 2 व. 9 मा. 26 दि.

## बृहस्पति दशा (18:10:1998 — 18:10:2017 )

### बृहस्पति अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बृहस्पति | 18:10:1998 |
| राहु | 21:05:1999 |
| शुक्र | 03:10:1999 |
| सूर्य | 28:05:2000 |
| चन्द्रमा | 04:08:2000 |
| मंगल | 21:01:2001 |
| बुध | 21:04:2001 |
| शनि | 30:10:2001 |

### राहु अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| राहु | 20:02:2002 |
| शुक्र | 17:05:2002 |
| सूर्य | 13:10:2002 |
| चन्द्रमा | 25:11:2002 |
| मंगल | 12:03:2003 |
| बुध | 08:05:2003 |
| शनि | 07:09:2003 |
| बृहस्पति | 17:11:2003 |

### शुक्र अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शुक्र | 01:04:2004 |
| सूर्य | 20:12:2004 |
| चन्द्रमा | 05:03:2005 |
| मंगल | 08:09:2005 |
| बुध | 17:12:2005 |
| शनि | 17:07:2006 |
| बृहस्पति | 19:11:2006 |
| राहु | 14:07:2007 |

### सूर्य अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| सूर्य | 11:12:2007 |
| चन्द्रमा | 01:01:2008 |
| मंगल | 24:02:2008 |
| बुध | 24:03:2008 |
| शनि | 24:05:2008 |
| बृहस्पति | 28:06:2008 |
| राहु | 04:09:2008 |
| शुक्र | 17:10:2008 |

### चन्द्रमा अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| चन्द्रमा | 31:12:2008 |
| मंगल | 14:05:2009 |
| बुध | 24:07:2009 |
| शनि | 23:12:2009 |
| बृहस्पति | 22:03:2010 |
| राहु | 08:09:2010 |
| शुक्र | 24:12:2010 |
| सूर्य | 29:06:2011 |

### मंगल अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| मंगल | 22:08:2011 |
| बुध | 29:09:2011 |
| शनि | 18:12:2011 |
| बृहस्पति | 04:02:2012 |
| राहु | 05:05:2012 |
| शुक्र | 01:07:2012 |
| सूर्य | 09:10:2012 |
| चन्द्रमा | 07:11:2012 |

### बुध अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बुध | 17:01:2013 |
| शनि | 08:07:2013 |
| बृहस्पति | 17:10:2013 |
| राहु | 27:04:2014 |
| शुक्र | 26:08:2014 |
| सूर्य | 27:03:2015 |
| चन्द्रमा | 26:05:2015 |
| मंगल | 25:10:2015 |

### शनि अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शनि | 14:01:2016 |
| बृहस्पति | 14:03:2016 |
| राहु | 05:07:2016 |
| शुक्र | 14:09:2016 |
| सूर्य | 17:01:2017 |
| चन्द्रमा | 22:02:2017 |
| मंगल | 22:05:2017 |
| बुध | 09:07:2017 |

# अष्टोत्तरी दशा ( प्रचलित विभाजन विधि )

जन्म के समय अष्टोत्तरी योग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:06:08) : रवि : 2 व. 9 मा. 26 दि.

## राहु दशा (18:10:2017 – 18:10:2029 )

### राहु अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| राहु | 18:10:2017 |
| शुक्र | 11:12:2017 |
| सूर्य | 16:03:2018 |
| चन्द्रमा | 12:04:2018 |
| मंगल | 18:06:2018 |
| बुध | 24:07:2018 |
| शनि | 09:10:2018 |
| बृहस्पति | 23:11:2018 |

### शुक्र अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शुक्र | 17:02:2019 |
| सूर्य | 01:08:2019 |
| चन्द्रमा | 18:09:2019 |
| मंगल | 14:01:2020 |
| बुध | 17:03:2020 |
| शनि | 30:07:2020 |
| बृहस्पति | 17:10:2020 |
| राहु | 16:03:2021 |

### सूर्य अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| सूर्य | 18:06:2021 |
| चन्द्रमा | 02:07:2021 |
| मंगल | 05:08:2021 |
| बुध | 23:08:2021 |
| शनि | 30:09:2021 |
| बृहस्पति | 22:10:2021 |
| राहु | 04:12:2021 |
| शुक्र | 31:12:2021 |

### चन्द्रमा अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| चन्द्रमा | 17:02:2022 |
| मंगल | 12:05:2022 |
| बुध | 26:06:2022 |
| शनि | 30:09:2022 |
| बृहस्पति | 25:11:2022 |
| राहु | 12:03:2023 |
| शुक्र | 19:05:2023 |
| सूर्य | 14:09:2023 |

### मंगल अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| मंगल | 18:10:2023 |
| बुध | 11:11:2023 |
| शनि | 01:01:2024 |
| बृहस्पति | 31:01:2024 |
| राहु | 28:03:2024 |
| शुक्र | 04:05:2024 |
| सूर्य | 06:07:2024 |
| चन्द्रमा | 24:07:2024 |

### बुध अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बुध | 07:09:2024 |
| शनि | 25:12:2024 |
| बृहस्पति | 27:02:2025 |
| राहु | 28:06:2025 |
| शुक्र | 13:09:2025 |
| सूर्य | 25:01:2026 |
| चन्द्रमा | 04:03:2026 |
| मंगल | 08:06:2026 |

### शनि अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शनि | 29:07:2026 |
| बृहस्पति | 04:09:2026 |
| राहु | 15:11:2026 |
| शुक्र | 30:12:2026 |
| सूर्य | 19:03:2027 |
| चन्द्रमा | 10:04:2027 |
| मंगल | 06:06:2027 |
| बुध | 06:07:2027 |

### बृहस्पति अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बृहस्पति | 07:09:2027 |
| राहु | 21:01:2028 |
| शुक्र | 16:04:2028 |
| सूर्य | 13:09:2028 |
| चन्द्रमा | 26:10:2028 |
| मंगल | 10:02:2029 |
| बुध | 08:04:2029 |
| शनि | 08:08:2029 |

# अष्टोत्तरी दशा ( प्रचलित विभाजन विधि )

जन्म के समय अष्टोत्तरी योग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:06:08) : रवि : 2 व. 9 मा. 26 दि.

## शुक्र दशा (18:10:2029 – 18:10:2050 )

### शुक्र अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शुक्र | 18:10:2029 |
| सूर्य | 04:08:2030 |
| चन्द्रमा | 26:10:2030 |
| मंगल | 21:05:2031 |
| बुध | 08:09:2031 |
| शनि | 30:04:2032 |
| बृहस्पति | 15:09:2032 |
| राहु | 05:06:2033 |

### सूर्य अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| सूर्य | 17:11:2033 |
| चन्द्रमा | 11:12:2033 |
| मंगल | 08:02:2034 |
| बुध | 12:03:2034 |
| शनि | 18:05:2034 |
| बृहस्पति | 26:06:2034 |
| राहु | 09:09:2034 |
| शुक्र | 26:10:2034 |

### चन्द्रमा अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| चन्द्रमा | 17:01:2035 |
| मंगल | 14:06:2035 |
| बुध | 01:09:2035 |
| शनि | 16:02:2036 |
| बृहस्पति | 24:05:2036 |
| राहु | 28:11:2036 |
| शुक्र | 27:03:2037 |
| सूर्य | 20:10:2037 |

### मंगल अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| मंगल | 18:12:2037 |
| बुध | 29:01:2038 |
| शनि | 28:04:2038 |
| बृहस्पति | 20:06:2038 |
| राहु | 28:09:2038 |
| शुक्र | 30:11:2038 |
| सूर्य | 20:03:2039 |
| चन्द्रमा | 21:04:2039 |

### बुध अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बुध | 09:07:2039 |
| शनि | 15:01:2040 |
| बृहस्पति | 06:05:2040 |
| राहु | 04:12:2040 |
| शुक्र | 18:04:2041 |
| सूर्य | 08:12:2041 |
| चन्द्रमा | 13:02:2042 |
| मंगल | 31:07:2042 |

### शनि अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| शनि | 28:10:2042 |
| बृहस्पति | 02:01:2043 |
| राहु | 07:05:2043 |
| शुक्र | 25:07:2043 |
| सूर्य | 10:12:2043 |
| चन्द्रमा | 18:01:2044 |
| मंगल | 26:04:2044 |
| बुध | 18:06:2044 |

### बृहस्पति अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| बृहस्पति | 08:10:2044 |
| राहु | 02:06:2045 |
| शुक्र | 30:10:2045 |
| सूर्य | 19:07:2046 |
| चन्द्रमा | 02:10:2046 |
| मंगल | 07:04:2047 |
| बुध | 16:07:2047 |
| शनि | 14:02:2048 |

### राहु अन्तर्दशा

| पत्यंतरदशा | से |
|---|---|
| राहु | 18:06:2048 |
| शुक्र | 21:09:2048 |
| सूर्य | 06:03:2049 |
| चन्द्रमा | 22:04:2049 |
| मंगल | 18:08:2049 |
| बुध | 20:10:2049 |
| शनि | 03:03:2050 |
| बृहस्पति | 21:05:2050 |

# जैमिनी चर दशा (नीलकान्त सिद्धान्त)

| क्र0 स0 | ग्रह दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | मीन | 5.0 y.0.0 m.0 d. | 21:12:1945 |
| 2 | मेष | 3.0 y.0.0 m.0 d. | 21:12:1950 |
| 3 | वृष | 6.0 y.0.0 m.0 d. | 21:12:1953 |
| 4 | मिथुन | 5.0 y.0.0 m.0 d. | 21:12:1959 |
| 5 | कर्क | 12.0 y.0.0 m.0 d. | 21:12:1964 |
| 6 | सिहं | 4.0 y.0.0 m.0 d. | 21:12:1976 |
| 7 | कन्या | 10.0 y.0.0 m.0 d. | 21:12:1980 |
| 8 | तुला | 1.0 y.0.0 m.0 d. | 21:12:1990 |
| 9 | वृश्चिक | 11.0 y.0.0 m.0 d. | 21:12:1991 |
| 10 | धनु | 10.0 y.0.0 m.0 d. | 21:12:2002 |
| 11 | मकर | 6.0 y.0.0 m.0 d. | 21:12:2012 |
| 12 | कुम्भ | 5.0 y.0.0 m.0 d. | 21:12:2018 |

## जैमिनी चर दशा की भुक्ति

### मीन दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| मेष | 21:12:1945 |
| वृष | 22:05:1946 |
| मिथुन | 21:10:1946 |
| कर्क | 22:03:1947 |
| सिहं | 21:08:1947 |
| कन्या | 20:01:1948 |
| तुला | 21:06:1948 |
| वृश्चिक | 20:11:1948 |
| धनु | 22:04:1949 |
| मकर | 21:09:1949 |
| कुम्भ | 20:02:1950 |
| मीन | 22:07:1950 |

### मेष दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| वृष | 21:12:1950 |
| मिथुन | 22:03:1951 |
| कर्क | 21:06:1951 |
| सिहं | 21:09:1951 |
| कन्या | 21:12:1951 |
| तुला | 21:03:1952 |
| वृश्चिक | 21:06:1952 |
| धनु | 20:09:1952 |
| मकर | 21:12:1952 |
| कुम्भ | 22:03:1953 |
| मीन | 21:06:1953 |
| मेष | 21:09:1953 |

### वृष दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| मेष | 21:12:1953 |
| मीन | 21:06:1954 |
| कुम्भ | 21:12:1954 |
| मकर | 21:06:1955 |
| धनु | 21:12:1955 |
| वृश्चिक | 21:06:1956 |
| तुला | 21:12:1956 |
| कन्या | 21:06:1957 |
| सिहं | 21:12:1957 |
| कर्क | 21:06:1958 |
| मिथुन | 21:12:1958 |
| वृष | 21:06:1959 |

### मिथुन दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| वृष | 21:12:1959 |
| मेष | 21:05:1960 |
| मीन | 21:10:1960 |
| कुम्भ | 22:03:1961 |
| मकर | 21:08:1961 |
| धनु | 20:01:1962 |
| वृश्चिक | 21:06:1962 |
| तुला | 21:11:1962 |
| कन्या | 22:04:1963 |
| सिहं | 21:09:1963 |
| कर्क | 20:02:1964 |
| मिथुन | 21:07:1964 |

### कर्क दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| मिथुन | 21:12:1964 |
| वृष | 21:12:1965 |
| मेष | 21:12:1966 |
| मीन | 21:12:1967 |
| कुम्भ | 21:12:1968 |
| मकर | 21:12:1969 |
| धनु | 21:12:1970 |
| वृश्चिक | 21:12:1971 |
| तुला | 21:12:1972 |
| कन्या | 21:12:1973 |
| सिहं | 21:12:1974 |
| कर्क | 21:12:1975 |

### सिहं दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| कन्या | 21:12:1976 |
| तुला | 22:04:1977 |
| वृश्चिक | 21:08:1977 |
| धनु | 21:12:1977 |
| मकर | 22:04:1978 |
| कुम्भ | 21:08:1978 |
| मीन | 21:12:1978 |
| मेष | 22:04:1979 |
| वृष | 21:08:1979 |
| मिथुन | 21:12:1979 |
| कर्क | 21:04:1980 |
| सिहं | 21:08:1980 |

### कन्या दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| तुला | 21:12:1980 |
| वृश्चिक | 21:10:1981 |
| धनु | 21:08:1982 |
| मकर | 21:06:1983 |
| कुम्भ | 21:04:1984 |
| मीन | 20:02:1985 |
| मेष | 21:12:1985 |
| वृष | 21:10:1986 |
| मिथुन | 21:08:1987 |
| कर्क | 21:06:1988 |
| सिहं | 22:04:1989 |
| कन्या | 20:02:1990 |

### तुला दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| वृश्चिक | 21:12:1990 |
| धनु | 20:01:1991 |
| मकर | 20:02:1991 |
| कुम्भ | 22:03:1991 |
| मीन | 22:04:1991 |
| मेष | 22:05:1991 |
| वृष | 21:06:1991 |
| मिथुन | 22:07:1991 |
| कर्क | 21:08:1991 |
| सिहं | 21:09:1991 |
| कन्या | 21:10:1991 |
| तुला | 21:11:1991 |

### वृश्चिक दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| तुला | 21:12:1991 |
| कन्या | 20:11:1992 |
| सिहं | 21:10:1993 |
| कर्क | 21:09:1994 |
| मिथुन | 21:08:1995 |
| वृष | 21:07:1996 |
| मेष | 21:06:1997 |
| मीन | 22:05:1998 |
| कुम्भ | 22:04:1999 |
| मकर | 21:03:2000 |
| धनु | 20:02:2001 |
| वृश्चिक | 20:01:2002 |

### धनु दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| वृश्चिक | 21:12:2002 |
| तुला | 21:10:2003 |
| कन्या | 21:08:2004 |
| सिहं | 21:06:2005 |
| कर्क | 22:04:2006 |
| मिथुन | 20:02:2007 |
| वृष | 21:12:2007 |
| मेष | 21:10:2008 |
| मीन | 21:08:2009 |
| कुम्भ | 21:06:2010 |
| मकर | 22:04:2011 |
| धनु | 20:02:2012 |

### मकर दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| धनु | 21:12:2012 |
| वृश्चिक | 21:06:2013 |
| तुला | 21:12:2013 |
| कन्या | 21:06:2014 |
| सिहं | 21:12:2014 |
| कर्क | 21:06:2015 |
| मिथुन | 21:12:2015 |
| वृष | 21:06:2016 |
| मेष | 21:12:2016 |
| मीन | 21:06:2017 |
| कुम्भ | 21:12:2017 |
| मकर | 21:06:2018 |

### कुम्भ दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| मीन | 21:12:2018 |
| मेष | 22:05:2019 |
| वृष | 21:10:2019 |
| मिथुन | 21:03:2020 |
| कर्क | 21:08:2020 |
| सिहं | 20:01:2021 |
| कन्या | 21:06:2021 |
| तुला | 21:11:2021 |
| वृश्चिक | 22:04:2022 |
| धनु | 21:09:2022 |
| मकर | 20:02:2023 |
| कुम्भ | 22:07:2023 |

# जैमिनी चर दशा (नीलकान्त सिद्धान्त)

## मकर दशा (21:12:2012 से 21:12:2018)

### धनु दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| वृश्चिक | 21:12:2012 |
| तुला | 05:01:2013 |
| कन्या | 20:01:2013 |
| सिहं | 05:02:2013 |
| कर्क | 20:02:2013 |
| मिथुन | 07:03:2013 |
| वृष | 22:03:2013 |
| मेष | 06:04:2013 |
| मीन | 22:04:2013 |
| कुम्भ | 07:05:2013 |
| मकर | 22:05:2013 |
| धनु | 06:06:2013 |

### वृश्चिक दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| तुला | 21:06:2013 |
| कन्या | 07:07:2013 |
| सिहं | 22:07:2013 |
| कर्क | 06:08:2013 |
| मिथुन | 21:08:2013 |
| वृष | 06:09:2013 |
| मेष | 21:09:2013 |
| मीन | 06:10:2013 |
| कुम्भ | 21:10:2013 |
| मकर | 05:11:2013 |
| धनु | 21:11:2013 |
| वृश्चिक | 06:12:2013 |

### तुला दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| वृश्चिक | 21:12:2013 |
| धनु | 05:01:2014 |
| मकर | 20:01:2014 |
| कुम्भ | 05:02:2014 |
| मीन | 20:02:2014 |
| मेष | 07:03:2014 |
| वृष | 22:03:2014 |
| मिथुन | 06:04:2014 |
| कर्क | 22:04:2014 |
| सिहं | 07:05:2014 |
| कन्या | 22:05:2014 |
| तुला | 06:06:2014 |

### कन्या दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| तुला | 21:06:2014 |
| वृश्चिक | 07:07:2014 |
| धनु | 22:07:2014 |
| मकर | 06:08:2014 |
| कुम्भ | 21:08:2014 |
| मीन | 06:09:2014 |
| मेष | 21:09:2014 |
| वृष | 06:10:2014 |
| मिथुन | 21:10:2014 |
| कर्क | 05:11:2014 |
| सिहं | 21:11:2014 |
| कन्या | 06:12:2014 |

### सिहं दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| कन्या | 21:12:2014 |
| तुला | 05:01:2015 |
| वृश्चिक | 20:01:2015 |
| धनु | 05:02:2015 |
| मकर | 20:02:2015 |
| कुम्भ | 07:03:2015 |
| मीन | 22:03:2015 |
| मेष | 06:04:2015 |
| वृष | 22:04:2015 |
| मिथुन | 07:05:2015 |
| कर्क | 22:05:2015 |
| सिहं | 06:06:2015 |

### कर्क दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| मिथुन | 21:06:2015 |
| वृष | 07:07:2015 |
| मेष | 22:07:2015 |
| मीन | 06:08:2015 |
| कुम्भ | 21:08:2015 |
| मकर | 06:09:2015 |
| धनु | 21:09:2015 |
| वृश्चिक | 06:10:2015 |
| तुला | 21:10:2015 |
| कन्या | 05:11:2015 |
| सिहं | 21:11:2015 |
| कर्क | 06:12:2015 |

### मिथुन दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| वृष | 21:12:2015 |
| मेष | 05:01:2016 |
| मीन | 20:01:2016 |
| कुम्भ | 05:02:2016 |
| मकर | 20:02:2016 |
| धनु | 06:03:2016 |
| वृश्चिक | 21:03:2016 |
| तुला | 06:04:2016 |
| कन्या | 21:04:2016 |
| सिहं | 06:05:2016 |
| कर्क | 21:05:2016 |
| मिथुन | 06:06:2016 |

### वृष दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| मेष | 21:06:2016 |
| मीन | 06:07:2016 |
| कुम्भ | 21:07:2016 |
| मकर | 06:08:2016 |
| धनु | 21:08:2016 |
| वृश्चिक | 05:09:2016 |
| तुला | 20:09:2016 |
| कन्या | 06:10:2016 |
| सिहं | 21:10:2016 |
| कर्क | 05:11:2016 |
| मिथुन | 20:11:2016 |
| वृष | 06:12:2016 |

### मेष दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| वृष | 21:12:2016 |
| मिथुन | 05:01:2017 |
| कर्क | 20:01:2017 |
| सिहं | 05:02:2017 |
| कन्या | 20:02:2017 |
| तुला | 07:03:2017 |
| वृश्चिक | 22:03:2017 |
| धनु | 06:04:2017 |
| मकर | 22:04:2017 |
| कुम्भ | 07:05:2017 |
| मीन | 22:05:2017 |
| मेष | 06:06:2017 |

### मीन दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| मेष | 21:06:2017 |
| वृष | 07:07:2017 |
| मिथुन | 22:07:2017 |
| कर्क | 06:08:2017 |
| सिहं | 21:08:2017 |
| कन्या | 06:09:2017 |
| तुला | 21:09:2017 |
| वृश्चिक | 06:10:2017 |
| धनु | 21:10:2017 |
| मकर | 05:11:2017 |
| कुम्भ | 21:11:2017 |
| मीन | 06:12:2017 |

### कुम्भ दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| मीन | 21:12:2017 |
| मेष | 05:01:2018 |
| वृष | 20:01:2018 |
| मिथुन | 05:02:2018 |
| कर्क | 20:02:2018 |
| सिहं | 07:03:2018 |
| कन्या | 22:03:2018 |
| तुला | 06:04:2018 |
| वृश्चिक | 22:04:2018 |
| धनु | 07:05:2018 |
| मकर | 22:05:2018 |
| कुम्भ | 06:06:2018 |

### मकर दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| धनु | 21:06:2018 |
| वृश्चिक | 07:07:2018 |
| तुला | 22:07:2018 |
| कन्या | 06:08:2018 |
| सिहं | 21:08:2018 |
| कर्क | 06:09:2018 |
| मिथुन | 21:09:2018 |
| वृष | 06:10:2018 |
| मेष | 21:10:2018 |
| मीन | 05:11:2018 |
| कुम्भ | 21:11:2018 |
| मकर | 06:12:2018 |

# जैमिनी चर दशा (नीलकान्त सिद्धान्त)

| क्र0 स0 | ग्रह दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | मीन | 5.0 y.0.0 m.0 d. | 21:12:1945 |
| 2 | वृश्चिक | 8.0 y.0.0 m.0 d. | 21:12:1950 |
| 3 | कर्क | 12.0 y.0.0 m.0 d. | 21:12:1958 |
| 4 | कुम्भ | 5.0 y.0.0 m.0 d. | 21:12:1970 |
| 5 | तुला | 1.0 y.0.0 m.0 d. | 21:12:1975 |
| 6 | मिथुन | 5.0 y.0.0 m.0 d. | 21:12:1976 |
| 7 | मकर | 10.0 y.0.0 m.0 d. | 21:12:1981 |
| 8 | कन्या | 2.0 y.0.0 m.0 d. | 21:12:1991 |
| 9 | वृष | 10.0 y.0.0 m.0 d. | 21:12:1993 |
| 10 | धनु | 2.0 y.0.0 m.0 d. | 21:12:2003 |
| 11 | सिहं | 8.0 y.0.0 m.0 d. | 21:12:2005 |
| 12 | मेष | 3.0 y.0.0 m.0 d. | 21:12:2013 |

## जैमिनी चर दशा की भुक्ति

### मीन दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| तुला | 21:12:1945 |
| वृश्चिक | 21:12:1946 |
| धनु | 21:12:1947 |
| मकर | 21:12:1948 |
| कुम्भ | 21:12:1949 |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |

### वृश्चिक दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| कर्क | 21:12:1950 |
| मिथुन | 21:12:1951 |
| वृष | 21:12:1952 |
| मेष | 21:12:1953 |
| मीन | 21:12:1954 |
| कुम्भ | 21:12:1955 |
| मकर | 21:12:1956 |
| धनु | 21:12:1957 |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |

### कर्क दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| कर्क | 21:12:1958 |
| मिथुन | 21:12:1959 |
| वृष | 21:12:1960 |
| मेष | 21:12:1961 |
| मीन | 21:12:1962 |
| कुम्भ | 21:12:1963 |
| मकर | 21:12:1964 |
| धनु | 21:12:1965 |
| वृश्चिक | 21:12:1966 |
| तुला | 21:12:1967 |
| कन्या | 21:12:1968 |
| सिहं | 21:12:1969 |

### कुम्भ दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| कर्क | 21:12:1970 |
| मिथुन | 21:12:1971 |
| वृष | 21:12:1972 |
| मेष | 21:12:1973 |
| मीन | 21:12:1974 |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | |

### तुला दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| वृश्चिक | 21:12:1975 |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |

### मिथुन दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| वृश्चिक | 21:12:1976 |
| तुला | 21:12:1977 |
| कन्या | 21:12:1978 |
| सिहं | 21:12:1979 |
| कर्क | 21:12:1980 |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |

### मकर दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| कर्क | 21:12:1981 |
| मिथुन | 21:12:1982 |
| वृष | 21:12:1983 |
| मेष | 21:12:1984 |
| मीन | 21:12:1985 |
| कुम्भ | 21:12:1986 |
| मकर | 21:12:1987 |
| धनु | 21:12:1988 |
| वृश्चिक | 21:12:1989 |
| तुला | 21:12:1990 |
| .. | -- |
| .. | -- |

### कन्या दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| वृश्चिक | 21:12:1991 |
| तुला | 21:12:1992 |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |

### वृष दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| वृश्चिक | 21:12:1993 |
| तुला | 21:12:1994 |
| कन्या | 21:12:1995 |
| सिहं | 21:12:1996 |
| कर्क | 21:12:1997 |
| मिथुन | 21:12:1998 |
| वृष | 21:12:1999 |
| मेष | 21:12:2000 |
| मीन | 21:12:2001 |
| कुम्भ | 21:12:2002 |
| .. | -- |
| .. | -- |

### धनु दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| तुला | 21:12:2003 |
| वृश्चिक | 21:12:2004 |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |

### सिहं दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| धनु | 21:12:2005 |
| मकर | 21:12:2006 |
| कुम्भ | 21:12:2007 |
| मीन | 21:12:2008 |
| मेष | 21:12:2009 |
| वृष | 21:12:2010 |
| मिथुन | 21:12:2011 |
| कर्क | 21:12:2012 |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |

### मेष दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| कर्क | 21:12:2013 |
| मिथुन | 21:12:2014 |
| वृष | 21:12:2015 |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |
| .. | -- |

# जैमिनी चर दशा (नीलकान्त सिद्धान्त)

## मीन दशा (21:12:1945 से 21:12:1950)

### तुला दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| वृश्चिक | 21:12:1945 |
| तुला | 20:01:1946 |
| कन्या | 20:02:1946 |
| सिहं | 22:03:1946 |
| कर्क | 22:04:1946 |
| मिथुन | 22:05:1946 |
| वृष | 21:06:1946 |
| मेष | 22:07:1946 |
| मीन | 21:08:1946 |
| कुम्भ | 21:09:1946 |
| मकर | 21:10:1946 |
| धनु | 21:11:1946 |

### वृश्चिक दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| कर्क | 21:12:1946 |
| मिथुन | 20:01:1947 |
| वृष | 20:02:1947 |
| मेष | 22:03:1947 |
| मीन | 22:04:1947 |
| कुम्भ | 22:05:1947 |
| मकर | 21:06:1947 |
| धनु | 22:07:1947 |
| वृश्चिक | 21:08:1947 |
| तुला | 21:09:1947 |
| कन्या | 21:10:1947 |
| सिहं | 21:11:1947 |

### धनु दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| तुला | 21:12:1947 |
| वृश्चिक | 20:01:1948 |
| धनु | 20:02:1948 |
| मकर | 21:03:1948 |
| कुम्भ | 21:04:1948 |
| मीन | 21:05:1948 |
| मेष | 21:06:1948 |
| वृष | 21:07:1948 |
| मिथुन | 21:08:1948 |
| कर्क | 20:09:1948 |
| सिहं | 21:10:1948 |
| कन्या | 20:11:1948 |

### मकर दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| कर्क | 21:12:1948 |
| मिथुन | 20:01:1949 |
| वृष | 20:02:1949 |
| मेष | 22:03:1949 |
| मीन | 22:04:1949 |
| कुम्भ | 22:05:1949 |
| मकर | 21:06:1949 |
| धनु | 22:07:1949 |
| वृश्चिक | 21:08:1949 |
| तुला | 21:09:1949 |
| कन्या | 21:10:1949 |
| सिहं | 21:11:1949 |

### कुम्भ दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| कर्क | 21:12:1949 |
| मिथुन | 20:01:1950 |
| वृष | 20:02:1950 |
| मेष | 22:03:1950 |
| मीन | 22:04:1950 |
| कुम्भ | 22:05:1950 |
| मकर | 21:06:1950 |
| धनु | 22:07:1950 |
| वृश्चिक | 21:08:1950 |
| तुला | 21:09:1950 |
| कन्या | 21:10:1950 |
| सिहं | 21:11:1950 |

### दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |

### दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |

### दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |

### दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |

### दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |

### दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |

### दशा

| भुक्ति | से |
|---|---|
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |
| ... | --- |

**MindSutra Software Technologies**

**A-16, Ramdutt Enclave, Milap Nagar,**

Uttam Nagar, New Delhi-110059

# जातक से संबंधित सामान्य भविष्यफल

## सामान्य जानकारी :–

आपकी लग्न राशि मीन है, जिसका स्वामी बृहस्पति है। यह जलीय तथा दो सिरों वाली राशि है। विशेषतः यह स्त्री प्रधान एवं फलदायक राशि है। इस राशि में जन्म लेने के कारण आपमें समझने की शक्ति अधिक होगी तथा आप बहुमुखी होंगे। आपमें सही निर्णय लेने की क्षमता होगी। आप सत्यनिष्ठ, परोपकारी और सदाचारी होंगे। आप कुछ चीजों में गोपनीयता रख सकते हैं और दोहरी जिन्दगी जी सकते हैं। आप साहसी और निडर होंगे। आप बातूनी, क्रोधी तथा परिवर्तनशील स्वभाव वाले हो सकते हैं। आप संवेदनशील होंगे। आप परम्पराओं और पुराने रिवाजों तथा पारिवारिक मान्यताओं को महत्व देंगे एवं उनका सम्मान करेंगे।

आप धन सम्पन्न होंगे। आप मितव्ययी होंगे, लेकिन कभी–कभी आप फिजूलखर्ची कर सकते हैं। इतिहास और शिल्पकारी में आपको रूचि होगी। रहस्यपूर्ण विषयों में भी आपकी दिलचस्पी हो सकती है। आप द्वैत चरित्र वाले होंगे तथा कुछ आलसी भी हो सकते हैं। कभी–कभी आप अपनी ही बात का खंडन कर सकते हैं, जिसकी वजह से आपके आस–पास के लोग आप पर असमंजस में पड़ जायेंगे और आपको ठीक से समझ नहीं पायेंगे। आप शान्तिप्रिय होंगे और सौहार्द बनाये रखने के लिए विवादों से दूर रहेंगे। आप महत्वाकांक्षी होंगे और आपको शक्ति प्राप्त करने की चाह होगी। आप दूसरों पर शासन करना चाहेंगे। आपको स्वादिष्ट भोजन और उत्तम वस्त्रों और आभूषणों का शौक होगा।

## मानसिक स्थिति :–

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा कर्क राशि में स्थित है और यह खुद चन्द्रमा द्वारा संचालित है। यह चलायमान, नकारात्मक और जलीय राशि है। आप दयालु तथा मिलनसार होंगे। आप आरामपरस्त और व्यक्तिगत सजावट के शैकीन होंगे। समाज में आपकी पहचान और लोकप्रियता बढ़ेगी, आपको धनी महिलाओं से संरक्षण एवं आम जनता से समर्थन मिलेगा। आपके जीवन में कई परिवर्तन होंगे। आपको मूल्यवान सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा आप दूरस्थ स्थानों की यात्रा कर सकते हैं। विदेश में भी जाने की संभावना है। प्रेम साहित्य, कवितायें, संगीत और चित्रकारी में आपकी रूचि होगी। रहस्यपूण विषयों या आध्यात्मिक विषयों की तरफ झुकाव हो सकता है।

यदि चन्द्रमा का प्रभाव शुभ है तो आपकी कल्पनाशक्ति भी बहुत दृढ़ होगी और आप एक चतुर लेखक हो सकते हैं। आपमें अभिनय करने की, नकल उतारने तथा दूसरों की भावनायें या विचार व्यक्त करने की विशेष योग्यता हो सकती है। परन्तु यदि चन्द्रमा का प्रभाव अशुभ है, तो आप बातूनी हो सकते हैं। लोग आपको गप्पी समझेंगे। बे रोक–टोक खुलेआम अपनी राय देने के कारण आपके कुछ पुराने मित्र आपके घोर आलोचक या शत्रु बन सकते हैं।

आप बेहद कल्पनाशील, भावुक तथा परिवर्तनशील होंगे। आप अपनी आस–पास की परिस्थितियों से बेहद प्रभावित होंगे तथा बाहरी प्रभावों के प्रति संवेदनशील होंगे। आप दूसरों के सुझावों को प्राथमिकता देंगे तथा अपने सहकर्मियों के सुख–दुःख में सहानुभूति रखेंगे। यदि आप अपने किसी निकट सम्बन्धी की सलाह या उसके द्वारा दिये गये दिशा–निर्देशों का पालन करते हैं, तो आप बढ़िया कर सकते हैं और अधिक भाग्यशाली होंगे। आपका अपनी माता या किसी बुजुर्ग महिला से गहरा लगाव होगा, जिनकी आप देखभाल करेंगे। आप घर पर आराम करने के शौकीन होंगे तथा घरेलू आदतों वाले होंगे। आपका अपने निकट के सम्बन्धियों से गहरा लगाव होगा। यदि चन्द्रमा का प्रभाव शुभ है, तो आप बागवानी तथा पौधे लगाने के शौकीन होंगे और यदि चन्द्रमा का प्रभाव अशुभ है, तो आपको पालतू पशुओं से लगाव हो सकता है।

## शारीरिक संरचना :–

आपका कद सामान्य से कुछ कम, शरीर भरा हुआ, पीली त्वचा और मछली की तरह आंखें हो सकती हैं। आपका स्वरूप बहुत आकर्षक होगा। आपका चेहरा अण्डाकार, नेत्र सुन्दर और बाल रेशम की तरह होंगे। आपका सिर बड़ा हो सकता है। आपकी वाणी और चाल बहुत शालीन होगी। आपके कंधे तथा पैर सामान्य से छोटे हो सकते हैं।

## गुण :–

आप भावुक और कोमल हृदय वाले होंगे। आप एक ज्ञानी व्यक्ति होंगे। आपको धर्म में गहरी आस्था होगी और आप धार्मिक कार्यों का निर्वाहन करेंगे। आप न्यायप्रिय होंगे और अनुचित बातों तथा कार्यों को सहन नहीं करेंगे। आपमें चीजों को ग्रहण करने की क्षमता होगी। आपको भ्रमण करने का शौक होगा, अतः आप यात्राओं पर जाना चाहेंगे। आप पीड़ित लोगों की मदद को उत्सुक रहेंगे। आपको अर्न्तज्ञान का उपहार प्राप्त होगा और अपनी पत्नी तथा भाग्य से आप संतुष्ट रहेंगे।

## अवगुण :–

आपमें आत्मविश्वास की कमी हो सकती, जिससे आप भ्रमित हो सकते हैं। आप कुशंकाओं से घिरे रह सकते हैं। आप चालाक और स्वार्थी हो सकते हैं।

## विशेष लक्षण :–

1– मंगल और केतु की दशा आपके लिए शुभ है।

2– आप समुद्र या नदी के किनारे स्थित स्थानों पर अपनी आय अर्जित करेंगे।

3– आपमें रोगों से प्रतिरोध की भारी क्षमता होगी और आप गंभीर रोगों से भी शीघ्र मुक्ति पाकर स्वस्थ हो जायेंगे।

## रोजगार :—

आप कला, संगीत, सिनेमा, सौन्दर्य प्रसाधन की वस्तुओं, फोटोग्राफी, इत्र, होटल, विलास की वस्तुओं के व्यापार से आय अर्जित कर सकते हैं। आयात—निर्यात, जल आपूर्ति, पेय पदार्थ, सिंचाई, बांध निर्माण और जलपोत निर्माण में भी आप उत्तम सफलता प्राप्त कर सकते हैं। चिकित्सा, कारावास या रेस्ट्रा सम्बन्धी कार्यों से भी आप लाभ अर्जित कर सकते हैं।

## शुभ एवं अशुभ ग्रह :—

1— मंगल और केतु की दशा आपके लिए शुभ है।
2— आप समुद्र या नदी के किनारे स्थित स्थानों पर अपनी आय अर्जित करेंगे।
3— आपमें रोगों से प्रतिरोध की भारी क्षमता होगी और आप गंभीर रोगों से भी शीघ्र मुक्ति पाकर स्वस्थ हो जायेंगे।
4— पंचमेश चन्द्रमा और नवमेश मंगल शुभ ग्रह हैं।
5— बृहस्पति उदासीन ग्रह है।
6— शुक्र, शनि और बुध अशुभ ग्रह हैं।
7— सप्तमेश बुध और एकादशेश शनि मारक हैं।

## मीन लग्न वाले कुछ महत्वपूर्ण व्यक्ति :—

जगजीवन राम — पूर्व रक्षा मंत्री, मार्लिन मुनरो — अभिनेत्री, राहुल द्रविड़ — क्रिकेटर, शरत चन्द्र चट्टोपाध्याय — उपन्यासकार, रविन्द्रनाथ टैगोर — कवि, आई सेन्होवर— पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति, मां आनन्दमयी।

# विभिन्न ज्योतिष कारकों का फल

## जन्म कालिक ब्राहस्पत्य (संवत्सर) का फल :

आपका जन्म पार्थिव संवत्सर में हुआ है।जैसाकि नाम से प्रदर्शित होता है, कि आप जमीन से जुड़े एक साधारण और बहुत व्यावहारिक दृष्टिकोण एवं संवेदनशील प्रकृति के व्यक्ति होंगे। आप में धारणाओं और विचारों, आवश्यकता और मोहक लालसाओं, वास्तविक और कल्पना आदि के बीच अन्तर करने की एक विकसित भावना होगी। आप बुद्धिमान होंगे और रूचि के विभिन्न विषयों के ज्ञानी होंगे। आप ललित कला की किसी विधा में दक्ष या कुशल हो सकते हैं। स्वीकार्य सामाजिक रीति–रिवाजों और परम्परागत धार्मिक मान्यताओं के प्रति आपमें सम्मान की भावना होगी। सुनहरी आशाओं के पीछे भागने की बजाय आप स्वयं को किसी फलदायक कार्य में संलग्न रखेंगे और अपने भविष्य का निर्माण करेंगे।

## जन्म कालिक सौर अयन का फल :

आपका जन्म सूर्य के दक्षिणायन (यमयायन) में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो संकेत अनुकूल नहीं हैं। आप कुछ हद तक दम्भी और हठी प्रकृति या असहिष्णु स्वभाव वाले व्यक्ति हो सकते हैं। आप कठोर हृदय वाले या कपटी हो सकते हैं। आप कृषि कार्यों और/या मवेशियों के पालन से अपनी जीविकोपार्जन कर सकते हैं। साथ ही, आप कुछ ऐसे कार्यों को करने में संलग्न हो सकते हैं, जहां आपके द्वारा किए गए कार्यों की अपेक्षा आपको प्राप्त होने वाला पारिश्रमिक बिल्कुल भी सामंजस्यपूर्ण नहीं हो सकता है।

## जन्म कालिक ऋतु का फल :

आपका जन्म हेमन्त ऋतु में हुआ है। यदि कुछ प्रतिकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में मौजूद नहीं हैं, तो ये संकेत अनुकूल हैं। आप अत्यंत बुद्धिमान, विचारवान, ज्ञानी और विवेकशील व्यक्ति होंगे। आप स्वतन्त्र विचारों के साथ–साथ उदार प्रवृत्ति वाले व्यक्ति होंगे और सदैव न्यायसंगत कार्य करने में संलग्न रहेंगे। आपकी धार्मिक रूचि उत्कृष्ट होगी और आप अपनी आजीविका एक वरिष्ठ सलाहकार या एक परामर्शदाता बनकर अर्जित कर सकते हैं। आप सुन्दर आचरण और विनम्र प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे– जिसके लिए लोग आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे।

## जन्म कालिक मास का फल :

आपका जन्म पौष मास (दिसम्बर/जनवरी) में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली मे कुछ संशोधनकारी प्रभाव मौजूद नहीं हैं, तो संकेत बहुत अनुकूल नहीं हैं। यद्यपि आप आकर्षक व्यक्तित्व और सुन्दर स्वरूप वाले होंगे, फिर भी, आपकी शारीरिक संरचना कमजोर हो सकती है, आपको अपने माता–पिता से आर्थिक सहयोग प्राप्त नहीं हो सकता है।, तो भी आप लापरवाही से खर्च कर सकते हैं। साथ ही, आप गोपनीय प्रकृति के हो सकते हैं और अपने विचार व निर्णय अपने तक ही सीमित रख सकते हैं– जिससे आप अपने विरोधियों को आघात पहुंचाने में

सक्षम हो सकते हैं। सुखद पहलु यह है, कि आप धार्मिक विचारों वाले, पवित्र ग्रन्थों का अध्ययन करने के शौकीन और विद्वानों व धर्मपरायण लोगों का उचित सम्मान करने वाले होंगे।

## जन्म कालिक पक्ष का फल :

आपका जन्म कृष्ण पक्ष में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो ये संकेत अनुकूल नहीं हैं। आपकी शारीरिक संरचना कुछ–कुछ कमजोर हो सकती है और आप आसानी से रोगादि से ग्रसित हो सकती हैं। आप चंचल प्रकृति और अस्थिर स्वभाव वाली हो सकती हैं। आप पर शरारती और/या झगड़ालु होने की छाप लग सकती है। आप बहुत भावुक प्रकृति की हो सकती हैं, चीजों को उनके उचित परिपेक्ष्य में देखे बिना ही आप राई को पहाड़ बना सकती हैं।

जैसाकि आपकी कुण्डली में शनि की चंद्रमा के साथ युति है (या इस पर उसकी दृष्टि पड़ रही है), आप विचारशील महिला होंगी और प्रायः विचारमग्न मुद्रा में रहेंगी। आप धैर्य व दृढ़ता की प्रतिमूर्ति होंगी एवं उस क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करेंगी, जहां बहुत अधिक एकाग्रता की जरूरत है। आप किसी उत्तम प्रयोजन के लिए कार्य कर सकती हैं और भारी उत्तरदायित्व का निर्वाह कर सकती हैं। आपके जीवन में घटने वाली कुछ घटनाएं आपको व्यथित कर सकती हैं, आपके मस्तिष्क को खालीपन से भर सकती हैं और आपमें उदासीन दृष्टिकोण पैदा कर सकती हैं।

जैसाकि आपकी कुण्डली में मंगल की चंद्रमा के साथ युति है (या इस पर उसकी दृष्टि पड़ रही है), आपका शरीर भारी व मांसल तथा स्वभाव शीघ्र क्रोधित होने वाला होगा। यद्यपि सामान्यतः आप उल्लासित रहेंगी, फिर भी यदि आपको कोई ठेस पहुंचेगी या आपके हित दांव पर होंगे, तो आप क्रोधित हो सकती हैं। आप रक्त या रक्त–चाप से संबंधित किसी बीमारी से ग्रसित हो सकती हैं। आप सांसारिक मामलों और भौतिक अधिग्रहणों में लीन रह सकती हैं। संपत्ति से संबंधित मामलों में आप किसी विवाद में फंस सकती हैं– जो मुकदमे को जन्म दे सकता है।

## जन्म कालिक वार का फल :

आपका जन्म शुक्रवार को हुआ है। दिवसपति शुक्र की स्थिति आपकी कुण्डली में काफी महत्वपूर्ण है। इसका फल– भाव में इसकी स्थिति के अनुसार– और भी अधिक महत्वपूर्ण होगा। सामान्यतः अन्य सारे संकेत अनुकूल हैं। आप अत्यंत बुद्धिमान और विद्वान व्यक्ति होंगे एवं हमेशा न्यायसंगत मार्ग का अनुसरण करेंगे। आप आकर्षक व्यक्तित्व, हंसमुख चेहरा और दिलकश बर्ताव से सम्पन्न होंगे एवं अपने इन गुणों से आप अपने से मिलने वाले व्यक्ति के मन पर पर अपनी एक अमिट छाप छोड़ने में सक्षम होंगे। आप सुन्दर और विलासितापूर्ण वस्तुओं– जिससे जीवन सजीव हो, के असाधारण रूप से शौकीन होंगे। आपको सफेद, क्रीम और चांदी जैसे चमकते रंग सर्वाधिक पसन्द होंगे।

## दिन या रात के जन्म का फल :

आपका जन्म दिन के समय में हुआ है। ये संकेत अनुकूल हैं। आप सक्रिय, उर्जावान, बुद्धिमान और प्रतिभाशाली

होंगे। आपको अपने पिता से सद्गुण विरासत में प्राप्त होंगे, सुन्दर प्रभावशाली आँखे होंगी और आशावादी दृष्टिकोण होगा। आप अपने सराहनीय कार्यों के लिए जाने जाएंगे। आपकी आय उत्तम होगी और उच्च स्तरीय जीवन वाले लोगों से आपकी मित्रता होगी। आपके सद्गुणों और गुणों के लिए, सामान्य लोग आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे।

## जन्म कालिक सूर्य सिद्धान्त योग का फल :

सूर्य–सिद्धान्त के अनुसार आपका जन्म इन्द्र योग में हुआ है। यह योग अनुकूल श्रेणी से संबंध रखता है। इस योग में जन्म होने के कारण, आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप मिलनसार प्रकृति और उत्कृष्ट प्रवृत्तियों वाले प्रतिभावन व्यक्ति होंगे। आप यश अर्जित करेंगे और अपनी कुशाग्र बुद्धि, ज्ञान, विचारशीलता, विवेक, साहस, वीरता, बल और ताकत के लिए जाने जाएंगे। आपसे लाभकारी परामर्श और सहयोग प्राप्त करने के लिए लोग आपके इर्द–गिर्द रहेंगे और आपको प्रेरणास्रोत समझेंगे।

## जन्म कालिक तिथि का फल :

आपका जन्म तृतीया तिथि को हुआ है। आप धनी, अध्ययनशील होंगे और शक्ति, साहस व वीरता से परिपूर्ण होंगे। आप संभवतः एक उच्च पद पर आसीन हो सकते हैं और अधिकारियों से समर्थन व लाभ प्राप्त कर सकते हैं। आप अत्यधिक यात्राएं कर सकते हैं और विभिन्न स्थानों पर लम्बे समय तक रह भी सकते हैं। आपका अपने छोटे भाई–बहनों, पड़ोसियों, सहकर्मियों या मित्रों से झगड़ा व मतभेद हो सकते हैं। आपको अपना स्थान परिवर्तित करना पड़ सकता है और/या कई बार अपना आवास बदलना पड़ सकता है। अपनी कामुक प्रकृति और इन्द्रिय सुखों की ओर अत्यधिक झुकाव के कारण आप अपनी कल्पना से पूर्व अपनी मान–प्रतिष्ठा को गवां सकते हैं।

## जन्म कालिक करन का फल :

आपका जन्म वनिजा करन में हुआ है। यह चर श्रेणी का छठवां करन है। आप बहुत बुद्धिमान और सुसंस्कारी होने के साथ–साथ परिष्कृत रूचि, प्रसंन्नचित प्रवृत्ति, सौम्य व्यवहार और मनोहारी बर्ताव वाले व्यक्ति होंगे। आप मानव प्रकृति को बहुत अच्छी तरह समझेंगे और विभिन्न स्रोतों से ज्ञान और सूचनाएं प्राप्त करेंगे– जिनका उपयोग आपके अपने व्यवसाय के क्षेत्र में बहुत ही प्रभावपूर्ण ढंग से करेंगे। आप विद्वान, ज्ञानी, चतुर, युक्तिपूर्ण और दूरदर्शी होंगे, आपमें सामान्य लोगों के साथ बहुत ही दक्षतापूर्ण तरीके से व्यवहार करने की आलौलिक क्षमता विद्यमान होगी। आप व्यापार से भाग्यवर्द्धन करेंगे, प्रचूर धन संग्रहित करेंगे और अपने जीवनसाथी व बच्चों के साथ सुख–सुविधापूर्ण व आधुनिक जीवन व्यतीत करेंगे।

## जन्म कालिक नक्षत्र का फल :

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा पुष्या नक्षत्र में स्थित है। इस नक्षत्र में जन्म लेने के कारण, आप बहुत भाग्यशाली

होंगी। आप आकर्षक व्यक्तित्व, उदार व्यवहार और मनोहारी बर्ताव से सम्पन्न होंगी। आप बड़ों का और वरिष्ठों का बहुत सम्मान करेंगी एवं आपमें कर्तव्यनिष्ठता व उत्तरदायित्व का भाव उच्च स्तर का होगा। आप खनिजों, कृषि उत्पादों, भूमि, निर्माण सामग्री आदि के व्यापार से अत्यधिक धनोपार्जन कर सकती हैं। धनी होने के साथ, आप जीवन की सभी सुख–सुविधाओं का आनन्द लेंगी, किन्तु आपकी इच्छाएं नियंत्रण में रहेंगी। हालांकि, आपका कोई पारिवारिक सदस्य आपके जी का जंजाल हो सकता है– जिसकी वजह से आपका दृष्टिकोण परिवर्तित हो सकता है।

## जन्म कालिक लग्न का फल :

आपका जन्म मीन लग्न में हुआ है। यह राशिचक्र की बारहवीं राशि है। संरचनात्मक रूप से यह एक जलीय तत्व की उभय राशि है– शासित ग्रह बृहस्पति की नकारात्मक राशि। आप उदीयमान राशि मीन और इसके स्वामी ग्रह बृहस्पति की नैसर्गिक विशेषताओं और विशिष्ट गुणों से सम्पन्न होंगे। विपक्ष की खींचतान और दिशा का द्वन्द्व इस राशि की लाक्षणिक विशेषताएं हैं। इस राशि का स्वामित्व शरीर के पैर वाले भाग पर होता है, साथ ही इसका शासन आत्मिक और आध्यात्मिक संकायों पर भी होता है। आप गोखरू, शोथ, दर्द, सूजन आदि से पीड़ित हो सकते हैं। आपको अर्द्धपारदर्शक स्वच्छ रंग पसन्द होंगे, आपका भाग्यशाली रत्न जामुनिया है और आपका पसन्दीदा फूल पीला नरगीस है।

संभवतः यह राशि चक्र की सबसे जटिल राशि है, जिसमे एक लाक्षणिक रूप में द्वैत प्रकृति का समावेश है। यह आपको दो विपरीत दिशाओं में स्थित ध्रुवों से एक साथ खिंचाव का अनुभव करायेगा– जिससे आप बहुत भ्रामक स्थिति में रह सकते हैं, हालांकि यह गहरा भ्रम मानसिक और अगोचर हो सकता है। अपनी चरम संवेदनशील प्रकृति के द्वारा आप संभावनाओं के द्वार खोलेंगे और दूसरों से प्रेरित होने की बजाय, आप एक बहुत वांछित प्रभाव डालने में सक्षम होंगे।

आपका सकारात्मक पक्ष यह है, कि आप दो भावनाओं के बीच एक पूर्ण संतुलन को चतुराई से प्राप्त करने का प्रयत्न करेंगे– अपने संबंध, समझ, चाह और सहानुभूति के मामले में आप ईमानदारीपूर्वक दोनों को महत्व देने का पूरा प्रयत्न करेंगे। आपका दृष्टिकोण कभी भी अन्यायपूर्ण नहीं होगा और आप सदैव स्नेहशील व दानशील व्यक्ति होंगे। आप ना ही कठोर और ना ही मांग करने वाले व्यक्ति होंगे, आप हमेशा उदार रहेंगे– जो आवश्यकता पड़ने पर भरोसेमन्द भी हो सकते हैं।

हालांकि, इसका दूसरा पक्ष यह है, कि आपमें दूसरों पर निर्भर रहने की आदत हो सकती है और इसमें आप मुश्किल से ही कोई लाभ प्राप्त कर सकते है, बल्कि पथभ्रष्ट होने या आपका शोषण होने का भी खतरा हो सकता है। अन्त में आप एक निराश दुर्बल व्यक्ति हो सकते हैं, जिसका अपनी भावनाओं और निजी मामलों पर नियंत्रण नहीं हो सकता है। आप दूसरों के विचारों के अनुसार कार्य कर सकते हैं– जो विकृत दृष्टिकोणों और अयोग्य ज्ञान द्वारा निर्देशित हो सकती हैं।

आपकी कुण्डली में संचालित ग्रहीय प्रभावों का एकत्रित प्रभाव और आपके द्वारा अपनी इच्छा–शक्ति के प्रयोग का तरीका यह निर्धारित करेगा, कि आप कौन सा रास्ता चुनना पसन्द करेंगे और आपको उस पर चलने से वास्तव में किस प्रकार का परिणाम प्राप्त होगा।

## जन्म कालिक होरा का फल :

आपकी कुण्डली में लग्न मेष राशि के दूसरे होरा में स्थित है– जो कि कक्र होरा के समकक्ष है। इस युति के कारण, आप लम्बे कद और बड़ी आंखों वाले होंगे, किन्तु आपके पैरों या अंगुलियों में कुछ विकृति हो सकती है। आप बहुत बुद्धिमान होंगे, किन्तु लापरवाह प्रकृति के होंगे। आपको छोटी विधि और सुविधाजनक साधनों का प्रयोग करने में अधिक रूचि हो सकती है।

## जन्म कालिक द्रेष्काण का फल :

आपकी कुण्डली में लग्न मीन राशि के प्रथम द्रेष्काण में स्थित है– जो स्वयं मीन द्रेष्काण के समकक्ष है। इस योग के कारण, आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। आपकी रंगत गोरी व भूरे रंग की शांत आंखें होंगी– जो शुभता का प्रतीक होंगी। आप अपनी वास्तविक सादगी, उल्लेखनीय व्यवहार, सदाचारी प्रकृति एवं विनम्र व्यवहार के लिए सुविख्यात होंगे। आप बहुत बुद्धिमान और विद्वान, ज्ञानी व विवेकशील भी होंगे। आपका धार्मिक रूझान उत्कृष्ट होगा। आप समर्पित रूप से पवित्र प्राचीन ग्रन्थों व शास्त्रों का रूचि के साथ अध्ययन करेंगे। अगम्य को समझने के योग्य बनने की एक तीव्र लालसा आपके अन्तर्मन को प्रकाशित करेगी– जो आपको एक अनमोल अन्तर्दृष्टि प्राप्त करने में सक्षम बना सकती है।

## जन्म कालिक प्राणपद का फल :

आपकी कुण्डली में, प्राणपद दूसरे भाव (धन भाव) में स्थित है। यह अत्यंत अनुकूल योग है। आप अपने परिवार और पारिवारिक धन के मामले में बहुत भाग्यशाली होंगे। आप प्रचूरता व समृद्धि से सम्पन्न होंगे। आपमें मिट्टी को छूकर सोना बनाने का गुण विद्यमान होगा, आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे। आपका जीवनसाथी आपको अपने जीवन से भी अधिक प्रेम करेगा और आपकी संतानें आनन्द का स्रोत होंगी।

## जन्म कालिक गुलिक का फल :

आपकी कुण्डली में, गुलिक दूसरे भाव (धन–भाव) में स्थित है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो संकेत बहुत अनुकूल नहीं हैं। आप आकर्षक व्यक्तित्व या मनोहारी बर्ताव वाले नहीं हो सकते हैं, तथा आपमें बुरी आदतें व झगड़ालू प्रकृति विद्यमान हो सकती है। आप तीक्ष्ण बुद्धि और हाजिरजवाब से विहिन हो सकते हैं एवं अर्थहीन बातें करने के आदी हो सकते हैं। आप चोरी, प्राकृतिक आपदा या कीड़ों के कारण अपना सामान खो सकते हैं।

## जन्म कालिक गण का फल :

देव गण नक्षत्र में जन्म लेने के कारण आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप आकर्षक व्यक्तित्व, सुन्दर स्वरूप, मनोहारी बर्ताव और उदार स्वभाव के व्यक्ति होंगे। आप ईश्वर के प्रति समर्पित, बड़ों, शिक्षकों व उपदेशकों के प्रति श्रद्धापूर्ण होंगे। आपकी आवाज सुरीली और वचन मधुर होंगे। आपकी भूख कम होगी और आप सात्विक भोजन करना पसन्द करेंगे। आप धनी और सद्गुणी होंगे। आप दूसरों की योग्यताओं की प्रशंसा करने और सद्गुणों को सुनने में भी सक्षम होंगे।

## जन्म कालिक वर्ण का फल :

विप्र वर्ण नक्षत्र में जन्म लेने के कारण आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप आध्यात्मिक विकास की सर्वोच्च श्रेणी से संबंध रखेंगे और अहं की समस्याओं व नीच इरादों से मुक्त रहेंगे। आप ईश्वर के प्रति समर्पित, बड़ों, शिक्षकों व उपदेशकों के प्रति श्रद्धाभाव रखने वाले होंगे। आप ईमानदार और गंभीर होंगे, आप सात्विक भोजन के शौकीन होंगे एवं 'सादा जीवन, उच्च विचार' में विश्वास रखेंगे। आप अत्यंत बुद्धिमान और प्राचीन पवित्र ग्रन्थों सहित विभिन्न विषयों के ज्ञाता होंगे। आप काफी धनी और सद्गुणी होंगे, आप दूसरों की योग्यताओं की प्रशंसा करने और सद्गुणों को सुनने में सक्षम होंगे। आप बहुत ज्ञानी और विवेकशील होंगे, एवं एक सलाहकार या परामर्शदाता के रूप में ख्याति अर्जित कर सकते हैं। सामान्यतः लोग आपके साथ बहुत सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे और अपने कुछ चिन्ताजनक मामलों में आपसे परामर्श भी करेंगे।

# ग्रहों की भावगत और राशिगत स्थिति का फल

## सूर्य की स्थिति का फल :–

आपकी कुण्डली में सूर्य धनु राशि में स्थित है। जैसाकि सूर्य मित्र राशि में सुव्यवस्थित है, आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगी। आप चौड़े गठन की भव्य और प्रभावी शारीरिक संरचना से पूर्ण होंगी। आप बहुत उत्साही, उर्जावान और सदा आशावादी होंगी। आप एक विद्वान, बुद्धिमान और विवेकी महिला होंगी, लोग आपके विचारों और मतों को मान तथा महत्व देंगे और आपको बहुत सम्मान देंगे। आप बड़ों एवं सदाचारी लोगों का आदर करेंगी तथा धर्म व ईश्वर में आस्था रखेंगी। यद्यपि आप अन्दर से शांतिप्रिय होंगी, फिर भी सुरक्षा के उद्देश्य से आपकी मार्शल आर्ट में महारत हासिल करने में बहुत रूचि हो सकती है, आप अपनी विद्वता की कुशलता से उपयोग ईमानदार योग्य लोगों को उचित प्रशिक्षण देने में कर सकती हैं। आपको अपने कार्य क्षेत्र में विशिष्टता प्राप्त होगी और आप कई अनुयायियों की प्रेरणा का स्रोत होंगी।

आपकी कुण्डली में सूर्य दसवें भाव में स्थित है। जैसाकि आपका लग्न मीन है। षष्ठेश सूर्य की दसवें भाव में स्थिति एक बहुत अनुकूल योग है। आपको उत्तम नौकरी प्राप्त होगी– संभवतः किसी सरकारी क्षेत्र में। किसी कठिन प्रतियोगी परीक्षा में सफलता आपके लिए एक नये क्षितिज के दरवाजे खोलेगी। आप चरित्रवान और निष्ठावान होंगी एवं अपने प्रशंसनीय कामों के कारण समाज में विख्यात होंगी। यद्यपि आप बहुत धनवान नहीं हो सकती हैं, फिर भी आपके विशेश योगदानों और विशिष्टता के कारण सामान्य और जीवन के ऊँचे क्षेत्रों के लोग आपको बहुत आदर देंगे। आपका धार्मिक रूझान बहुत उत्कृष्ट होगा और आप पवित्र तीर्थों की यात्रा करेंगी।

## चन्द्रमा की स्थिति का फल :–

आपकी कुण्डली में चंद्रमा कर्क राशि में स्थित है। इस कारण से आप अपनी माता के संबंध में बहुत भाग्यशाली होंगी। हांलाकि, कुछ पारिवारिक समस्याओं के कारण और/या संपत्ति के मामलों में आपको कोई चीज लम्बे समय तक परेशान कर सकती है– जिससे आप बहुत प्रसन्न नहीं हो सकती हैं। आप ऊँची शिक्षा प्राप्त करेंगी और अपने व्यवसाय के क्षेत्र में आपका पद सुरक्षित हो सकता है। आप व्यापार कर सकती हैं और दवा, प्रसाधन सामग्री एवं कम मूल्य वाले सौन्दर्य के सामानों, स्वादिष्ट खाद्य पदार्थों या घरेलू उपयोग की वस्तुओं का व्यापार कर सकती हैं। अपनी सौम्य प्रकृति और उदार व्यवहार के कारण आपके मित्रों एवं परिचितों का दायरा बहुत बड़ा होगा और सामाजिक रूप से आप बहुत विख्यात होंगी। आपको अपने मित्रों एवं संबंधियों के साथ अपने घर पर मौज मस्ती करने का बहुत शौक होगा। आपकी पुत्रियां अधिक हो सकती हैं और वे आपके हमेशा पास रहेंगी।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा पांचवें भाव में स्थित है। इस कारण से आपकी शिक्षा उत्तम होगी और आपकी ललित कलाओं के किसी क्षेत्र में उत्कृष्ट रूचि होगी। आप फलित प्रकृति और प्रसन्न स्वभाव से पूर्ण होंगी, इसके अलावा, मनोरंजन एवं मनोविनोद के विभिन्न क्षेत्रों, छोटे बालक व बालिकाओं के कल्याण तथा अनुमानित निवेशों

की तरफ आप बहुत आकर्षित होंगी। महिलाओं और किशोरों की संगति आपको बहुत प्रिय होगी, आपके बारे में सबसे महत्वपूर्ण उल्लेखनीय बात यह है कि आपकी कोई एक संतान शानदार प्रगति करेगी और आपके परिवार के गौरव और आन्नद का कारण होगी।

## मंगल की स्थिति का फल :—

आपकी कुण्डली में मंगल कर्क राशि में स्थित है— जहां यह नीच का है, लेकिन नीचता एक निर्णायक प्रक्रिया बिल्कुल भी नहीं है और प्रायः एक या अधिक नीच भंग की शर्तें कुण्डली में पायी जाती हैं। यदि कोई ग्रह जैसे बृहस्पति, शनि, सूर्य या चंद्रमा मंगल के साथ स्थित हैं या इस पर दृष्टि रखता है अथवा ऐसा कोई ग्रह लग्न या चंद्र राशि (चंद्रमा को छोड़कर) से केन्द्रिय भाव में है तो लाभकारी प्रभाव प्राप्त होते हैं, यदि शुभ ग्रह मंगल से दसवें या दूसरे भाव में हैं, तो भी परिणाम उत्तम होंगे, हालांकि यदि मंगल लग्न से आठवें भाव में है, तो यह कुछ प्रतिकूल परिणामों को दर्शाता है। एक के बाद एक हम इनकी आगे जांच करेंगे।

आपकी कुण्डली में मंगल के कारण नीच भंग हो रहा है, जैसाकि इसका उच्चस्थ स्वामी शनि या तो इसके साथ स्थित है या उसकी दृष्टि मंगल पर है अथवा शनि लग्न या चंद्र राशि से केन्द्रिय भाव में है। यह एक अनुकूल युति है और आप कई संबंधों में भाग्यशाली होंगे— विशेषकर जीवनसाथी, भौतिक सम्पत्तियों आदि के मामले में। आपका धार्मिक रूझान बहुत उत्कृष्ट होगा और आपका घरेलू जीवन खुशहाल और आनन्दमय होगा।

आपकी कुण्डली में मंगल के कारण नीच भंग हो रहा है, जैसाकि इसका उच्चस्थ स्वामी सूर्य या तो इसके साथ स्थित है या उसकी दृष्टि मंगल पर है अथवा सूर्य लग्न या चंद्र राशि से केन्द्रिय भाव में है। यह एक अनुकूल युति है और आप कई संबंधों में भाग्यशाली होंगे— विशेषकर परिवार, वित्त आदि के मामले में। हांलाकि अपने व्यवसाय के संबंध में आपको दूर स्थानों की यात्रा करनी पड़ सकती है और वहां लम्बे समय तक रहना पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली में मंगल के कारण नीच भंग हो रहा है, जैसाकि इसका नीचस्थ स्वामी बृहस्पति या तो इसके साथ स्थित है या उसकी दृष्टि मंगल पर है अथवा बृहस्पति लग्न या चंद्र राशि से केन्द्रिय भाव में है। यह एक अनुकूल युति है और आप कई संबंधों में भाग्यशाली होंगे— विशेषकर अपने पिता, जीवनसाथी या संतान और संबंधियों (ननिहाल के) के मामले में। आर्थिक रूप से आप बहुत सम्पन्न होंगे, अपना जीवन आराम और शान के साथ गुजारेंगे। आपको आनुमानित निवेशों और/या विदेश व्यापार से उत्तम लाभ प्राप्त हो सकते हैं।आपकी कुण्डली में मंगल के कारण नीच भंग हो रहा है, जैसाकि इसका नीचस्थ स्वामी चंद्रमा या तो इसके साथ स्थित है या उसकी दृष्टि मंगल पर है अथवा चंद्रमा लग्न या चंद्र राशि से केन्द्रिय भाव में है। यह एक अनुकूल युति है और आप कई संबंधों में भाग्यशाली होंगे— विशेषकर अपने पिता, संतान और भौतिक सम्पत्तियों के मामले में। आर्थिक रूप से आप बहुत सम्पन्न होंगे, अपना जीवन आराम और शान के साथ गुजारेंगे। आपको आनुमानित निवेशों और/या विदेश व्यापार से उत्तम लाभ प्राप्त हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में मंगल पांचवें भाव में स्थित है। इस कारण से आप गर्म मिजाज और कुछ हद तक निष्ठुर स्वभाव वाले होंगे। अपने दायें पैर में आग, हथियार, जहर या नुकीले दांत वाले जानवरों से चोटिल हो जाने के कारण आपको कुछ चिन्तायें और पीड़ा हो सकती है, साथ ही आप किसी दुर्घटना का सामना कर सकते हैं और आपको शल्य चिकित्सा करवाना पड़ सकता है। आपकी माता की वाणी कटु हो सकती है– जिससे घर की शांति प्रभावित हो सकती है। आप अपनी संतानों के जन्म के संबंध में भाग्यशाली नहीं हो सकते हैं। यदि मंगल मेष या वृश्चिक राशि में स्थित है, तो स्थिति में आपकी बेहतरी के लिए बहुत सुधार होगा और आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे।

## बुध की स्थिति का फल :–

आपकी कुण्डली में बुध वृश्चिक राशि में स्थित है। इस कारण से आप कुछ मामलों में भाग्यशाली नहीं हो सकते हैं। हांलांकि, यदि बुध अपने नक्षत्र में स्थित है, और/या यदि मंगल उच्चस्थ या अपनी राशि में स्थित है, तो आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे और अपेक्षाकृत कम आयु में अपनी शिक्षा, बुद्धिमत्ता और विवेक का प्रभावी रूप से प्रयोग करके जीवन में प्रगति करेंगे। लेकिन, यदि कुछ संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में मौजूद नहीं है, तो आप बहुत बुद्धिमान नहीं हो सकते हैं– जिससे आपकी शिक्षा उत्तम नहीं हो सकती है। अपनी मध्य किशोरावस्था में आप बुरी संगति में पड़ सकते हैं और गलत रास्तों को अपनाकर अपने भविष्य को बर्बाद कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली में बुध नौवें भाव में स्थित है। आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे, आपकी शिक्षा उत्तम होगी, साहित्यिक कामों में रूचि होगी, ज्ञान के हर रूप और उपयोगों को जानने में रत रहेंगे। आप एक जिज्ञासु पाठक होंगे और हमेशा लिखने वाले होंगे। विदेश में रहने वाले लोग और उनका जीवन आपको बहुत आकर्षित करेगा और आपको ऐसे स्थानों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उत्तम लाभ प्राप्त होंगे। आपका दिमाग हमेशा व्यस्त और निरन्तर सक्रिय रहेगा, व्यापक जानकारियों पर अत्यधिक ध्यान देने के कारण आप कुछ लोगों को बहुत हस्तक्षेप करने वाले प्रतीत हो सकते हैं। आपका स्वभाव दयालु और उदार होगा, लेकिन अपने जीवन में किसी समय आप अपने व्यवसाय में अस्थायी आघात के कारण थोड़ा परेशान हो सकते हैं।

## बृहस्पति की स्थिति का फल :–

आपकी कुण्डली में बृहस्पति तुला राशि में स्थित है। इस कारण से आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे– हालांकि यदि आपका लग्न मीन है, बृहस्पति अपने नक्षत्र में स्थित नहीं है, तो कभी–कभी आपका स्वास्थ्य और सुख आपके परिवार की चिन्ता का कारण हो सकता है। आप एक सक्रिय व्यापार करके और व्यावसायिक गतिविधियों से भाग्य का सुख प्राप्त करेंगे, यदि बुध या शुक्र बृहस्पति के साथ स्थित है या उनमें से किसी की दृष्टि इस पर है, तो आपके भाग्य में और बढ़ोत्तरी होगी। आप एक विद्वान, विनम्र स्वभाव और बड़ों, गुरुजनों तथा उपदेशकों का आदर करने वाले व्यक्ति होंगे। आपको लोगों का साथ पसन्द होगा तथा आप विनम्रतापूर्वक अपने

मित्रों एवं अतिथियों का स्वागत करेंगे।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति आठवें भाव में स्थित है। इस कारण से आप कुछ मामलों में बहुत भाग्यशाली होंगे। आप दीर्घायु होंगे, आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा और आप छोटे–मोटे झगड़ों से मुक्त रहेंगे तथा विरासत, पैतृक सम्पत्ति आदि से उत्तम लाभ प्राप्त करेंगे। आप आर्थिक रूप से सम्पन्न होंगे और आपका जीवनसाथी धनी परिवार से होगा, लेकिन आपकी संतानों का स्वास्थ्य और सुख आपकी चिन्ता का कारण हो सकता है। यदि बृहस्पति धनु या मीन या कक्र राशि में स्थित है, तो आपका जीवन सम्पन्नता से पूर्ण होगा, लेकिन यदि मकर राशि में स्थित है, तो आपको विषम परिस्थितियों में कठिन संघर्ष करना पड़ सकता है। यदि बृहस्पति किसी अन्य राशि में स्थित है या किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह से पीड़ित है, तो आपका दृष्टिकोण विकृत हो सकता है, आपमें अपने साथियों के प्रति सहानुभूति की भावना का लोप हो सकता है और आप जानवरों के प्रति भी निर्दयी बन सकते हैं।

## शुक्र की स्थिति का फल :–

आपकी कुण्डली में शुक्र वृश्चिक राशि में स्थित है। जैसाकि शुक्र इस राशि में सुव्यवस्थित नहीं है, आप कुछ मामलों में भाग्यशाली नहीं हो सकते हैं– यदि कुछ संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में मौजूद नहीं है। आपकी प्रकृति ईर्ष्यालु और ताक्रिक तथा स्वभाव विद्वेषपूर्ण एवं कुछ हद तक बनावटी हो सकता है। आपके जीवनसाथी को कोई स्वास्थ्य समस्या हो सकती है और किसी अशुभ घटना के कारण आपके व्यावसायिक भागीदार को दुर्भाग्य का सामना करना पड़ सकता है। आपका अपने शत्रुओं से कोई मुकाबला नहीं हो सकता है– वे आपसे बहुत ताकतवर हो सकते हैं और आपके लिए परेशानियां पैदा कर सकते हैं। आपके किसी विपरीत लिंग के सदस्य के साथ लम्बे अंतरंग संबंध हो सकते हैं– जिससे आप परेशानी में पड़ सकते हैं।

आपकी कुण्डली में शुक्र नौवें भाव में स्थित है। इस कारण से आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। आपका जन्म एक धनी परिवार में हुआ है और आपके पिता एक विशिष्ट स्तर के व्यक्ति होंगे, आप विदेश से बहुत लाभ प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन आपके लिए वहां जाना आवश्यक नहीं हो सकता है। आप विशुद्ध स्वभाव वाले धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे, प्रशंसनीय कामों और धर्मपरायण कार्यों को करने में रत रहेंगे और आपकी प्रवृति परोपकारी होगी। आप पवित्र प्राचीन शास्त्रों का अध्ययन करेंगे और आपको सदाचारी लोगों की संगति पसन्द होगी, आप पवित्र तीर्थों की यात्रा भी कर सकते हैं। यदि शुक्र वृषभ या मीन या तुला राशि में स्थित है, तो आप बहुत यशस्वी होंगे। लेकिन यदि शुक्र किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह से पीड़ित है, तो आप सांसारिक सुखों के उपभोग में बहुत अधिक रूप से लिप्त हो सकते हैं।

## शनि की स्थिति का फल :–

आपकी कुण्डली में शनि कक्र राशि में स्थित है। इस कारण से आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। अपने शुरूआती बचपन में आपके पिता को कोई आघात लग सकता है और आप कुछ परेशानियों का सामना कर सकते हैं, लेकिन अपने प्रयासों के बल पर आप अपने भाग्य में सुधार करेंगे। अपने जीवन में मध्य काल में आप अपने

प्रिय जीवनसाथी के साथ जीवन के सभी सुखों का आनन्द प्राप्त करेंगे। लेकिन दूसरों से प्रभावित होने के कारण आप कुछ हद तक कुटिल हो सकते हैं और अपने संबंधियों से प्रतिकूल भाव रख सकते हैं। आपका स्वास्थ्य बहुत उत्तम नहीं हो सकता है और कभी–कभी आप छोटी बीमारियों से ग्रसित हो सकते हैं, आपको नेत्रों की कुछ समस्यायें हो सकती हैं। यदि कुछ संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में मौजूद नहीं हैं, तो आपकी माता का स्वास्थ्य और सुख चिन्ता का कारण हो सकता है।

आपकी कुण्डली में शनि पांचवें भाव में स्थित है। यदि शनि आपकी कुण्डली में सुव्यवस्थित नहीं है, तो प्रभाव बिल्कुल भी उत्तम परिणाम नहीं देंगे। प्रारम्भिक आयु के दौरान आपको प्रेम प्रसंगों में निराशा हो सकती है और आप दुखी एवं पीड़ित हो सकते हैं। आनुमानित निवेशों और किस्मत के खेल में आप बिल्कुल भी भाग्यशाली नहीं हो सकते हैं और आपको बड़े नुकसान हो सकते हैं। यदि आप किसी व्यवहारपरक क्षेत्र में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, तो आपकी शिक्षा में व्यवधान आ सकता है– जो समाप्त भी हो सकती है। आप नीजि कम्पनियों में काम कर सकते है और आपकी श्रेणी तथा वेतन बहुत औसत हो सकता है, आवश्यक योग्यताओं से पूर्ण होने के बावजूद भी आपको पदोन्नति नहीं मिल सकती है– जो उचित रूप से आपको मिलना चाहिए थी।

आपका जीवनसाथी भावुक, अताकिक्र और बहुत हठी भी हो सकता है। काफी विलम्ब के बाद आपको संतान की प्राप्ति हो सकती है, लेकिन वह बीमार हो सकती हैं। हालांकि, यदि शनि कुम्भ या मकर या तुला राशि में स्थित है, तो यह शुभ परिणाम देगा।

## राहु की स्थिति का फल :–

आपकी कुण्डली में राहु चौथे भाव में स्थित है। इस कारण से आप उत्तम शिक्षा प्राप्त करने और बौद्धिक कामों में सफलता प्राप्त करने के मामले में भाग्यशाली होंगे, लेकिन आपको वायु विकार हो सकता है और आपकी माता को लकड़ी या पत्थर से चोट लग सकती है। कुछ छोटी समस्याओं के कभी–कभी उभरने के कारण आपको अपने घर या निवास स्थान पर बहुत आराम महसूस नहीं हो सकता है। यदि बृहस्पति भी राहु के साथ है, तो आपकी किसी एक संतान के विचार कुछ हद तक संशयपूर्ण हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में राहु किसी राशि में अकेले स्थित है, जो किसी प्रतिकूल त्रिक भाव (छठे, आठवें या बारहवें) के साथ नहीं मिलता है। इसके अलावा, यह अपने नक्षत्र में स्थित है। यह एक अनुकूल युति है और राहु की स्थिति वाले भाव के महत्व के मामले में आप भाग्यशाली होंगे। राहु की भुक्ति या दशा के दौरान इसके प्रभाव में बढ़ोत्तरी होगी। हालांकि आप इसके अन्तिम चरण के दौरान कुछ छोटी खीज पैदा करने वाली समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली में राहु लग्न से या तो केन्द्र भाव में या त्रिकोण भाव में स्थित है। यह एक अनुकूल युति है, इस स्थिति में होने के कारण राहु इस कुण्डली में एक तात्कालिक लाभप्रदाता का काम करता है। आप शैक्षिणिक

और/या बौद्धिक कार्यों को उत्तम प्रकार से करेंगे और अपने व्यवसाय के क्षेत्र में आपका सुधार होगा। आप बहुत भाग्यशाली होंगे तथा राहु की भुक्ति या दशा के दौरान आपको अपने सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। हालांकि आप इसके अन्तिम चरण के दौरान कुछ छोटी खीज पैदा करने वाली समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

## केतु की स्थिति का फल :–

आपकी कुण्डली में केतु दसवें भाव में स्थित है। इस कारण आपको अपने व्यवसाय के कारण अपना घर या निवास स्थान छोड़ना पड़ सकता है। लेकिन यह आपको और प्रसन्न बना सकता है– चूंकि आप अपने घर या निवास स्थान पर रहते हुए बहुत प्रसन्न नहीं हो सकते हैं। यदि मंगल भी केतु के साथ स्थित है, तो आपके सगे छोटे भाई–बहनों को कुछ गंभीर प्रकार की समस्यायें हो सकती हैं, लेकिन यदि कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह केतु के साथ है या उसकी दृष्टि इस पर है, तो आप मनोरम वातावरण के बीच में एक उत्तम समय गुजारेंगे।

आपकी कुण्डली में, केतु प्रतिकूल आठवें भाव में स्थित नहीं है और यह सूर्य के निकट (3 डिग्री 20 मिनट) में स्थित है। आपको अपनी आंखों से संबंधित कुछ समस्यायें हो सकती हैं। फिर भी, कई मामलों में यह एक अनुकूल योग है। बृहस्पति ग्रह की भुक्ति या दशा के दौरान, आप अपने जीवन में किसी समय, एक व्यक्ति से मिल सकते हैं, जिसका लग्न सिंह होगा– जिससे आप लाभ अर्जित करेंगे।

## हर्षल की स्थिति का फल :–

आपकी कुण्डली में, यूरेनस वृषभ राशि में स्थित है। इस कारण से आपका स्वरूप कम आकर्षक हो सकता है, आपकी गर्दन मोटी और सिर गोल हो सकता है– जो अत्यधिक शारीरिक बल को दर्शाएगा। आपका मिजाज काफी असमान हो सकता है, थोड़ी सी भी उत्तेजना आपको अचानक क्रोधित और आक्रामक बना सकती है। आप गले में फोड़े, झिल्ली में रिसाव, ग्रंथियों में सूजन, गलसुआ, गले का आक्षेप आदि रोगों से पीड़ित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में, यूरेनस तीसरे भाव में स्थित है। इस कारण से, आप बहुत जिज्ञासु, खोजी प्रकृति और हठी स्वभाव वाले हो सकते हैं। अपने लाक्षणिक सनकीपन के कारण, आपका अपने संबंधियों से मनमुटाव हो सकता है। आपके कुछ विचार बहुत तीक्ष्ण हो सकते हैं– जिससे आप विषम आलोचनाओं को आमंत्रण दे सकते हैं एवं लोकप्रियता खो सकते हैं। लघु यात्राओं के दौरान या लिखित संवादों के कारण कुछ परेशानियों का सामना कर सकते हैं।

## नेपच्यून की स्थिति का फल :–

आपकी कुण्डली में, नेप्च्यून कन्या राशि में स्थित है। इस कारण से, आपकी शारीरिक संरचना दुबली, चेहरा कुछ हद तक पतला, हाथ–पैर लचीले व चाल दृढ़ हो सकती है। आपमें आलोचना करने और दूसरों के दोषों का अन्वेषण करने की प्रवृत्ति हो सकती है, फिर भी आप बेईमानी और गलत कार्यों को शीघ्रता से पकड़ लेंगे। भोजन

व दूसरे दैनिक कार्यों के प्रति आप बहुत तुनकमिजाज हो सकते हैं। यद्यपि आपमें सदा मित्रों और परिचितों के एक बड़े दायरे के बीच में रहकर उनकी संगति का आनन्द उठाने की चाह हो सकती है, लेकिन लोग आपको नजर अन्दाज कर सकते हैं। आप मियादी बुखार, आंतों की झिल्ली में सूजन, उदर शूल, मुंहासा, तंत्रिका शूल, फोड़ा, आंत के विकार आदि रोगों से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में, नेप्च्यून सातवें भाव में स्थित है। इस कारण से, आप कपटपूर्ण प्रकृति के हो सकते हैं– जिससे आप असम्मानजनक या अनैतिक क्रियाकलापों के द्वारा सामाजिक नियमों को भंग कर सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकारी प्रभाव मौजूद नहीं हैं, तो अवैध संबंधों या कर्तव्यों की पूर्णतः उपेक्षा करने के कारण आपका वैवाहिक जीवन बर्बाद हो सकता है। साथ ही, आपका जीवनसाथी मनोविक्षेप प्रकार के किसी क्षयकारी रोग से ग्रसित हो सकता है।

## प्लूटो की स्थिति का फल :–

आपकी कुण्डली में, प्लूटो कक्र राशि में स्थित है। इस कारण से, आपकी शारीरिक संरचना अपेक्षाकृत चौड़ी व औसत से कम कद वाली हो सकती है– जो कि उम्र के बढ़ने के साथ स्थूल हो सकती है। आपकी भावनाएं बहुत तीव्र हो सकती हैं और यदि आप वास्तव में बिल्कुल भी बुद्धिमान ना होकर, केवल चतुर प्रतीत होते हैं, तो यह बहुत विनाशकारी हो सकता है। आपमें अपने घर और पारिवारिक हितों के प्रति जबरदस्ती का पागलपन हो सकता है। यदि एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह प्लूटो को पीड़ित करता है, तो परिस्थिति खराब हो सकती है– अचानक ही परिवार के एक या अधिक सदस्य बिना किसी सूचना के गायब हो सकते हैं। आप छाती के विकार, उदर समस्याओं, पेट में अल्सर आदि रोगों से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में, प्लूटो पांचवें भाव में स्थित है। यह बिल्कुल भी लाभकारी प्रभाव नहीं है और आपको बहुत सावधान व सजग रहना चाहिए। आप एक पुरुष हैं, तो आपकी पत्नी गर्भपात का शिकार हो सकती हैं या इसके प्रभाव के कारण उत्तेजित हो सकती है। अनुमानित निवेशों और सट्टों से आपको दूर ही रहना चाहिए। हालांकि, सुखद पहलू यह है, कि आपमें ललित कलाओं की किसी विधा जैसे अभिनय में रचनात्मक दक्षता प्राप्त हो सकती है या वैज्ञानिक आविष्कार में भी आप कुछ निपुण हो सकते हैं।

# शरीर के विभिन्न अंगो का ज्योतिषीय विश्लेषण

## बाहरी व्यक्तित्व, शारीरिक बनावट, कद–काठी व त्वचा का रंग

इनमें से प्रत्येक तत्व अनेक कारकों पर निर्भर हैं, जहां प्रत्येक कारक अनेक संशोधनकारी प्रभाव उत्पन्न कर सकता है, जैसे– लग्न–राशि, लग्न में उपस्थित ग्रह (यदि कोई है तो), लग्न पर दृष्टि डालने वाले ग्रह (यदि कोई है तो), चंद्र–राशि में उपस्थित ग्रह(यदि कोई है तो), चंद्र–राशि पर दृष्टि डालने वाले ग्रह, लग्न का क्रिशांश, ग्रहों की राशिगत स्थिति, लग्नेश की भावगत स्थिति इत्यादि।

## संभावित कद (लंम्बाई) का अनुमान (वयस्क होने पर)

आपकी लग्न राशि मीन है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपकी शारीरिक संरचना अपेक्षाकृत छोटी होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न का स्वामी लग्न से पनफर भाव में स्थित है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपकी शारीरिक संरचना सामान्य होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न की शायन डिग्री राशि के चौथे या अंतिम चतुर्थांश में है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपकी शारीरिक संरचना अपेक्षाकृत छोटी होगी।

## संभावित त्वचा के रंग का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य की ना तो चंद्रमा के साथ युति है और ना ही वह इस पद दृष्टि डाल रहा है। इसके अतिरिक्त सूर्य की केतु के साथ युति है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इसके प्रभाव के कारण संभवतः आप कुछ गहरे वर्ण के होंगे।

## त्वचा के रंग पर ग्रहों का संयुक्त प्रभाव

सूर्य से लेकर शनि तक के सभी ग्रहों के संचित प्रभाव को ध्यान में रखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि आप थोड़े–बहुत गहरे वर्ण के हो सकते हैं।

## शरीर के स्थूलकाय (मोटे) होने का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में चार या चार से अधिक ग्रह जलीय राशि में स्थित हैं। ऐसी ग्रह स्थिति अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इसके प्रतिकूल प्रभाव के कारण संभवतः काफी कम आयु से ही आपके शरीर का वजन बढ़ना शुरु हो सकता है। जिससे आपकी शारीरिक संरचना काफी स्थूल व वजनी हो सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा एक अथवा एक से अधिक ग्रहों के साथ कर्क राशि में युत है, जो कि एक जलीय राशि है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इसके प्रभाव के कारण किशोरावस्था के उत्तरार्द्ध से अथवा उसके बाद के आयु काल से आपके शरीर का वजन बढ़ना शुरू हो सकता है एवं संभवतः आपका शरीर स्थूल एवं वजनी हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्र–राशि तथा इसका स्वामी दोनों ही जलीय राशि में स्थित हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इसके प्रभाव के कारण किशोरावस्था के उत्तरार्द्ध से अथवा उसके बाद के आयु काल से आपके शरीर का वजन बढ़ना शुरू हो सकता है एवं संभवतः शीघ्र ही आपका शरीर स्थूल एवं वजनी हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा एवं मंगल की युति है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो ऐसे ग्रह योग के प्रभाव के कारण किशोरावस्था के उत्तरार्द्ध से अथवा उसके बाद के आयु से आपका शरीर बलिष्ठ होना शुरू हो सकता है तथा बाद में आप  मांसल, स्थूल व भारी शरीर के होते जाएंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो शनि के साथ स्थित हैं या शनि की इस पर दृष्टि पड़ रही है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इसके प्रतिकूल प्रभाव के कारण आपका शरीर अत्यधिक मांसल या स्थूल या भारी नहीं हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो शनि के साथ स्थित हैं या शनि की इस पर दृष्टि पड़ रही है तथा चंद्र–राशि का स्वामी भी इसी प्रकार से व्यवस्थित है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इसके प्रतिकूल प्रभाव के कारण संभवतः आपका शरीर अत्यधिक मांसल या स्थूल या भारी नहीं हो सकता है। बल्कि आप शारीरिक रूप से कुछ कमजोर या रोगी प्रकृति के हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में आपकी देह राशि, बुध एवं शुक्र के युति अथवा दृष्टि के संयुक्त प्रभाव में स्थित है। ऐसी ग्रह स्थिति आपके लिए बहुत अनुकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो ऐसे ग्रह योग के प्रभाव के कारण किशोरावस्था के उत्तरार्द्ध से अथवा उसके बाद के आयु से आपका शरीर बलिष्ठ होना शुरू हो सकता है तथा संभवतः बाद में आप स्थूल व भारी शरीर के होते जाएंगे।

## आँखे और आँखो की रोशनी का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य नीचस्थ और/या ग्रसित है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अपनी दाईं आँख में कुछ परेशानी हो सकती है तथा आपको चश्मा पहनना पड़ सकता है। आपको अपनी आँख के प्रति अधिक सावधानी रखनी चाहिए एवं कभी किसी प्रकार की असुविधा

महसूस होने पर किसी अनुभवी नेत्र–विशेषज्ञ से आपको जांच व परामर्श लेना चाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में दूसरे भाव का स्वामी नीचस्थ और/या अस्त और/या ग्रसित है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अपनी दाईं आँख में कुछ परेशानी हो सकती है तथा आपको चश्मा पहनना पड़ सकता है। आपको अपनी आँख के प्रति अधिक सावधानी रखनी चाहिए एवं यदि आपको कभी किसी प्रकार की असुविधा महसूस होती है तो किसी अनुभवी नेत्र–विशेषज्ञ से जांच करवानी चाहिए।

## जीभ, दांत और बोलने की क्षमता का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में दूसरे भाव का स्वामी ना ही उच्चस्थ है एवं ना ही अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है। इसके अतिरिक्त यह एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रहों के साथ संबंधित है या उनकी इस पर दृष्टि पड़ रही है। ऐसी ग्रह स्थिति आपके लिए अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके दांत अधिक आकर्षक नहीं होंगे अथवा वे अधिक लंबे समय तक मोतियों जैसे या चमकदार नहीं रहेंगे। जैसाकि आप अपने दांतों का उचित ख्याल नहीं रखेंगे इसलिए वे समय से पूर्व ही खराब हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में बुध आपका लग्न–स्वामी नहीं है। यह लग्न से स्क्वायर/वर्ग में स्थित है तथा इसकी दृष्टि काफी नजदीक (3 डिग्री 20 मिनट के अन्दर) है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो, जैसा कि बुध का प्रभाव चल रहा है, इसलिए संभवतः आपके दांतों के बीच में हल्की दरार या खाली जगह हो सकता है–विशेषकर ऊपरी पंक्ति में सामने की तरफ।

आपकी जन्मकुण्डली में बुध आपका लग्न–स्वामी नहीं है। यह चंद्रमा से स्क्वायर/वर्ग में स्थित है तथा इसकी दृष्टि काफी नजदीक (3 डिग्री 20 मिनट के अन्दर) है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो, जैसा कि बुध का प्रभाव चल रहा है, इसलिए संभवतः आपके दांतों के बीच में हल्की दरार या खाली जगह हो सकता है–विशेषकर ऊपरी पंक्ति में सामने की तरफ।

आपकी जन्मकुण्डली में बुध आपका लग्न–स्वामी नहीं है। यह चंद्रमा से काफी नजदीक त्रिक–भाव में स्थित है तथा इसकी दृष्टि काफी नजदीक (3 डिग्री 20 मिनट के अन्दर) है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो, जैसा कि बुध का प्रभाव चल रहा है, इसलिए संभवतः आपके दांतों के बीच में हल्की दरार या खाली जगह हो सकता है–विशेषकर ऊपरी पंक्ति में सामने की तरफ।

आपकी जन्मकुण्डली में बुध आपका लग्न–स्वामी नहीं है। यह लग्न से सेक्सटाइल में स्थित है तथा इसकी दृष्टि काफी नजदीक (3 डिग्री 20 मिनट के अन्दर) है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं

हैं तो, जैसा कि बुध का प्रभाव चल रहा है, इसलिए संभवतः आपके दांतों के बीच में हल्की दरार या खाली जगह हो सकता है–विशेषकर ऊपरी पंक्ति में सामने की तरफ।

आपकी जन्मकुण्डली में बुध आपका लग्न–स्वामी नहीं है। यह चंद्रमा से सेक्सटाइल में स्थित है तथा इसकी दृष्टि काफी नजदीक (3 डिग्री 20 मिनट के अन्दर) है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो, जैसा कि बुध का प्रभाव चल रहा है, इसलिए संभवतः आपके दांतों के बीच में हल्की दरार या खाली जगह हो सकता है–विशेषकर ऊपरी पंक्ति में सामने की तरफ।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र आपका लग्न–स्वामी नहीं है। यह लग्न से स्क्वायर में स्थित है तथा इसकी दृष्टि काफी नजदीक (3 डिग्री 20 मिनट के अन्दर) है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो, जैसा कि शुक्र का प्रभाव चल रहा है, इसलिए संभवतः आपके दांत एक दूसरे से आंशिक रूप से ढके हो सकते हैं–विशेषकर ऊपरी पंक्ति में तथा संभवतः सिर्फ एक तरफ।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र आपका लग्न–स्वामी नहीं है। यह चंद्रमा से स्क्वायर/वर्ग में स्थित है एवं इसकी दृष्टि काफी नजदीक (3 डिग्री 20 मिनट के अन्दर) है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो, जैसा कि शुक्र का प्रभाव चल रहा है, इसलिए संभवतः आपके दांत एक दूसरे से आंशिक रूप से ढके हो सकते हैं–विशेषकर ऊपरी पंक्ति में तथा संभवतः सिर्फ एक तरफ।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र आपका लग्न–स्वामी नहीं है। यह चंद्रमा से त्रिक में स्थित है एवं इसकी दृष्टि काफी नजदीक (3 डिग्री 20 मिनट के अन्दर) है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो, जैसा कि शुक्र का प्रभाव चल रहा है, इसलिए संभवतः आपके दांत एक दूसरे से आंशिक रूप से ढके हो सकते हैं–विशेषकर ऊपरी पंक्ति में तथा संभवतः सिर्फ एक तरफ।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र आपका लग्न–स्वामी नहीं है। यह लग्न से सेक्सटाइल में स्थित है तथा इसकी दृष्टि काफी नजदीक (3 डिग्री 20 मिनट के अन्दर) है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो, जैसा कि शुक्र का प्रभाव चल रहा है, इसलिए संभवतः आपके दांत एक दूसरे से आंशिक रूप से ढके हो सकते हैं–विशेषकर ऊपरी पंक्ति में तथा संभवतः सिर्फ एक तरफ।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र आपका लग्न–स्वामी नहीं है। यह चंद्रमा से सेक्सटाइल में स्थित है एवं इसकी दृष्टि काफी नजदीक (3 डिग्री 20 मिनट के अन्दर) है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो, जैसा कि शुक्र का प्रभाव चल रहा है, इसलिए संभवतः आपके दांत एक दूसरे से आंशिक रूप से ढके हो सकते हैं–विशेषकर ऊपरी पंक्ति में तथा संभवतः सिर्फ एक तरफ।

जैसा कि बुध के भिन्नाष्टक वर्ग में, दूसरे भाव की राशि में छः बिन्दु है। यह योग कुछ अनुकूल तथ्यों की ओर इंगित करता है। इसके प्रभाव से आप एक अनुकूल/ आनन्ददायक वक्ता होंगे। इसके अतिरिक्त आप एक समर्थ लेखक भी होंगे। आप दूसरे लोगों से अपनी बात मनवाने में सक्षम होंगे एवं अपने विचारों व मतों के लिए समर्थन प्राप्त कर लेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में बुध के भिन्नाष्टक वर्ग में, दूसरे भाव की राशि में चार (या अधिक) बिन्दु हैं। बुध अपनी कक्षा में एक बिन्दु का योगदान कर रहा है, जबकि इस भाव राशि में एक (या अधिक) शुभ ग्रह भी बिन्दु का योगदान कर रहा है। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपमें मनोहारी शिष्टाचार होगा। बातचीत के दौरान आप ताक्रिक व हाजिर जवाबी होंगे।

## कान और सुनने की शक्ति

आपकी जन्मकुण्डली में एक नैसर्गिक शुभ ग्रह तीसरे भाव की राशि पर दृष्टि डाल रहा है। यह आंशिक रूप से अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आप एक पुरुष है इसलिए आपके दाएं कान/श्रवण शक्ति से संबंधित किसी प्रकार की समस्या होने की संभावना अत्यंत कम है।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र का ग्रहाकांत राशीश अस्त या ग्रसित या नीचस्थ है। इस ग्रह का आधिपत्य कंठ–कर्ण नली एवं श्रवण संबंधी नलिकाओं पर होता है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आपको अपने कानों से संबंधित कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है और जीवन के उत्तरार्द्ध में आपकी श्रवण शक्ति क्षीण हो सकती है।

## बाँह, हाथ और कन्धे की संरचना का अनुमान

बुध, जो कि प्राकृतिक राशि–चक्र की तीसरी राशि का स्वामी है और आपकी जन्मकुण्डली में बुध एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रहों के साथ युत है, जबकि इसके साथ कोई भी नैसर्गिक अशुभ ग्रह उपस्थित नहीं है और ना ही ऐसे किसी ग्रह की इस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के बांह एवं कंधे वाले भाग भली–भांति विकसित होंगे। जैसा कि बुध आहार–नली, हवा–नली, तंत्रिका प्रणाली व श्वसन प्रणाली को भी संचालित करता है, अतः आपके शरीर के ये अंग भी बिल्कुल सही स्थिति में रहेंगे।

## हृदय और पीठ की स्थिति का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव का स्वामी शक्तिशाली स्थिति में है जैसा कि यह उच्चस्थ है या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है। पांचवें भाव का स्वामी हृदय एवं पीठ को शासित करता है। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के ये भाग सही ढंग से काम करेंगे।

सूर्य जो कि प्राकृतिक राशि–चक्र के पांचवी राशि का स्वामी है, आपकी जन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रहों के साथ युत है तथा इसके साथ कोई भी नैसर्गिक शुभ ग्रह ना तो उपस्थित है और ना ही ऐसे किसी ग्रह कि इस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः यह ग्रह स्थिति आपके लिए अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपका हृदय एवं पीठ मजबूत नहीं होगा। साथ ही आपको अपने शरीर के इस भाग में कुछ जन्मजात परेशानी महसूस हो सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव के स्वामी की शनि के साथ युति अथवा दृष्टि संबंध है, जबकि शनि ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है। अतः यह योग आपके लिए अनुकूल नहीं है। जैसा कि पांचवें भाव के स्वामी का आधिपत्य हृदय एवं पीठ वाले भाग पर होता है। अतः आपके शरीर के ये भाग संभवतः स्वस्थ्य या मजबूत नहीं रहेंगे।

## उदर (पेट) और पाचन क्रिया का अनुमान

कर्क राशि एवं इसके स्वामी चंद्रमा का आधिपत्य शरीर के महत्वपूर्ण आंतरिक अंग 'पेट' पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली में कर्क राशि का स्वामी चंद्रमा शक्तिशाली स्थिति में है, क्योंकि यह उच्चस्थ है अथवा अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है। अतः यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके पेट की कार्य–प्रणाली समस्यारहित होगी और आपकी पाचन शक्ति अच्छी रहेगी।

कर्क राशि का आधिपत्य शरीर के महत्वपूर्ण आंतरिक अंग 'पेट' पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह इस राशि में स्थित हैं, जबकि इसमें कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह उपस्थित नहीं है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके पेट की कार्य–प्रणाली छोटी–मोटी समस्याओं से मुक्त नहीं रह सकती है और आपकी पाचन शक्ति भी अच्छी रहने की संभावना कम है।

चौथे भाव का आधिपत्य शरीर के महत्वपूर्ण आंतरिक अंग 'पेट' पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह इस भाव में स्थित हैं, जबकि इसमें कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह उपस्थित नहीं है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके पेट की कार्य–प्रणाली छोटी–मोटी समस्याओं से मुक्त नहीं रह सकती है और आपकी पाचन शक्ति भी अच्छी रहने की संभावना कम है।

चौथे भाव के स्वामी का आधिपत्य शरीर के महत्वपूर्ण आंतरिक अंग 'पेट' पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रह की इसके साथ युति है, जबकि इसके साथ कोई नैसर्गिक अशुभ ग्रह स्थित नहीं है। अतः यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं

तो आपके पेट की कार्य–प्रणाली समस्यारहित होगी और आपकी पाचन शक्ति अच्छी रहेगी।

कन्या राशि का आधिपत्य शरीर के बहुत महत्वपूर्ण आंतरिक क्रिया 'पाचन तंत्र' पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह की इस राशि पर दृष्टि पड़ रही है, जबकि किसी भी नैसर्गिक शुभ ग्रह की इस राशि पर दृष्टि नहीं है। अतः यह ग्रह स्थिति अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अपने पाचन–प्रणाली को प्रभावित करने वाली कुछ समस्याओं से गुजरना पड़ सकता है, जिसका प्रभाव आपके स्वास्थ्य पर भी पड़ सकता है।

छठवें भाव के स्वामी का आधिपत्य शरीर के बहुत महत्वपूर्ण आंतरिक क्रिया 'पाचन तंत्र' पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह की छठवें भाव के स्वामी के साथ युति है, जबकि कोई भी नैसर्गिक शुभ ग्रह इसके साथ स्थित नहीं है। अतः यह ग्रह स्थिति अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अपने पाचन–प्रणाली को प्रभावित करने वाली कुछ समस्याओं से गुजरना पड़ सकता है, जिसका प्रभाव आपके स्वास्थ्य पर भी पड़ सकता है।

## शरीर के ग्राही, अवशोषी और उत्सर्जी अंगो का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा शक्तिशाली स्थिति में है, जैसा कि वह उच्चराशि या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है। अतः यह एक अनुकूल संकेत है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर की तरल प्रसारण प्रणाली एवं ग्रंथि प्रणाली समस्या रहित होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रहों के साथ संबंधित है या उनकी इस पर दृष्टि पड़ने के कारण दूषित हो रहा है। अतः यह अनुकूल संकेत नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अक्सर अपने शरीर के तरल प्रसारण प्रणाली एवं ग्रंथि प्रणाली से संबंधित कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में एक नैसर्गिक शुभ ग्रह तुला राशि में स्थित है अथवा उसकी इस राशि पर दृष्टि पड़ रही है, जबकि कोई नैसर्गिक अशुभ ग्रह ना तो इस राशि में स्थित है और ना ही ऐसे किसी ग्रह की इस राशि पर दृष्टि पड़ रही है। अतः ये संकेत आपके लिए अनुकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं है तो संभवतः आपको अपने आंतरिक जननेन्द्रिय से संबंधित किसी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में एक नैसर्गिक शुभ ग्रह की शुक्र के साथ युति है अथवा उसकी इस पर दृष्टि पड़ रही है, जबकि शुक्र की किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ ना तो युति है और ना ही ऐसे किसी ग्रह की इस पद दृष्टि पड़ रही है। अतः ये अनुकूल संकेत हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो

संभवतः आपको अपने आंतरिक जननेन्द्रिय से संबंधित किसी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रह वृश्चिक राशि में स्थित हैं अथवा उनकी इस राशि पर दृष्टि पड़ रही है, जबकि कोई भी अशुभ ग्रह इस राशि में ना तो स्थित है और ना ही ऐसे किसी ग्रह की इस राशि पर दृष्टि पड़ रही है। अतः ये अनुकूल संकेत हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आपको अपने बाहरी जननेन्द्रिय तथा उत्सर्जन प्रणाली से संबंधित किसी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल शक्तिशाली स्थिति में नहीं है, जैसा कि यह उच्च राशि या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित नहीं है। इसके अतिरिक्त यह दो या दो से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रहों के साथ जुड़े होने अथवा उनकी दृष्टि पड़ने से दूषित है। अतः ये संकेत आपके लिए अनुकूल नहीं हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अपने बाहरी जननेन्द्रिय और उत्सर्जन प्रणाली से संबंधित किसी प्रकार की गंभीर समस्या का सामना करना पड़ सकता है।

## जाँघ, घुटना, टांगो और पंजो का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में एक अथवा एक से अधिक शुभ ग्रह नौवें भाव में उपस्थित हैं, जो कि नितंब वाले भाग एवं जांघों को संचालित करते हैं। अतः यह एक अनुकूल संकेत है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के ये भाग काफी विकसित होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में दो या दो से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह धनु राशि में उपस्थित हैं, जबकि कोई भी शुभ ग्रह इस राशि में उपस्थित नहीं है। राशि–चक्र की नौवीं राशि नितंब वाले भाग एवं जांघों को संचालित करता है। अतः यह एक अनुकूल संकेत नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के ये भाग अधिक विकसित नहीं होंगे। या फिर आप अपने शरीर के इन भागों के आस–पास जन्मजात कष्ट महसूस कर सकते हैं।

प्राकृतिक राशि–चक्र की दसवीं राशि का स्वामी शनि है, जो कि एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ युत है, जबकि किसी नैसर्गिक शुभ ग्रह की ना तो इसके साथ युति है और ना ही इस पर ऐसे किसी ग्रह की दृष्टि पड़ रही है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के घुटनों के आस–पास वाले भाग उचित रूप से विकसित नहीं होंगे। या फिर आपको अपने शरीर के इस भाग के आस–पास जन्मजात कष्ट महसूस हो सकता है।

प्राकृतिक राशि–चक्र की दसवीं राशि का स्वामी शनि है, जो कि एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह है तथा आपकी कुण्डली में यह एक कार्यात्मक अशुभ ग्रह भी है। इसके अतिरिक्त आपकी कुण्डली में इसकी एक या एक से अधिक

कार्यात्मक अशुभ ग्रह के साथ युति है अथवा इस पर ऐसे किसी ग्रह की दृष्टि पड़ रही है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के घुटनों के आस–पास वाले भाग उचित रूप से विकसित नहीं होंगे। या फिर आपको अपने शरीर के इस भाग के आस–पास जन्मजात कष्ट महसूस हो सकता है।

प्राकृतिक राशि–चक्र की ग्यारहवीं राशि का स्वामी शनि है, जो कि आपकी कुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ युत है, जबकि कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह ना तो इसके साथ स्थित है और ना ही इस पर ऐसे किसी ग्रह की दृष्टि पड़ रही है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के टांग के आस–पास के भाग, 'घुटने से नीचे एवं टखने से ऊपर वाले भाग', उचित रूप से विकसित नहीं होंगे। या फिर आपको अपने शरीर के इस भाग के आस–पास जन्मजात कष्ट महसूस हो सकता है।

प्राकृतिक राशि–चक्र की ग्यारहवीं राशि का स्वामी शनि है, जो कि एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह है तथा आपकी कुण्डली में यह एक कार्यात्मक अशुभ ग्रह भी है। इसके अतिरिक्त आपकी कुण्डली में इसकी एक या एक से अधिक कार्यात्मक अशुभ ग्रह के साथ युति है अथवा इस पर ऐसे किसी ग्रह की दृष्टि पड़ रही है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के टांग के आस–पास के भाग, 'घुटने से नीचे एवं टखने से ऊपर वाले भाग', उचित रूप से विकसित नहीं होंगे। या फिर आपको अपने शरीर के इस भाग के आस–पास जन्मजात कष्ट महसूस हो सकता है।

# स्वास्थ्य और स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएं

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य पीड़ित है, अतः आप किसी प्रकार के जैविक विकार से ग्रसित हो सकते हैं। आपकी मौलिक संरचना अधिक उत्तम नहीं हो सकती है एवं आपमें आनुवांशिक रूप से कोई रोग प्रवेश कर सकता है– संभवतः अपने पिता से।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा पीड़ित है, अतः आपको कुछ ईंद्रियात्मक अनियमितता से पीड़ित होना पड़ सकता है। आपका स्वास्थ्य अधिक समय तक अच्छा नहीं रह सकता है तथा आपको बाह्य कारणों जैसे जलवायु व वातावरणीय स्थितियों में परिवर्तन के कारण रोग हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में लग्न पीड़ित है। अतः आपमें रोगों के लड़ने की उत्तम प्रतिरोधक क्षमता नहीं होगी। आप कभी–कभी एक या अन्य रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में पहले भाव का स्वामी आठवें (आठवां भाव – गंभीर समस्या) में स्थित है। अतः आप किसी गंभीर रोग या त्रासदिक कारणों से ग्रसित हो सकते हैं अथवा आपको किसी प्रकार की दुर्घटना का सामना करना पड़ सकता है। संभवतः आप अपने शुरूआती बचपन में कुछ समस्याओं से बुरी तरह पीड़ित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में बारहवें भाव का स्वामी (बारहवां भाव– बिस्तर पर रहने या अस्पताल में भर्ती होने की दशा) चंद्र राशि में स्थित है। अतः आप अधिक स्वस्थ्य नहीं हो सकते हैं तथा आप कभी–कभी किसी एक या अन्य रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में बृहस्पति तुला राशि में स्थित है तथा लग्न उससे पीड़ित है। अतः आप बुखार, सूजन, अशुद्ध रक्त, संकुचन, बवासीर आदि से ग्रसित हो सकते हैं। आपको ट्यूमर होने की भी कुछ संभावना है।

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य धनु राशि में स्थित है तथा चन्द्रमा उससे पीड़ित है। अतः आप नासूर/भकन्दर, बुखार, मुर्छा रोग, जांघों व फेफड़ों में गर्मी या रीढ़ में विकार से पीड़ित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा कर्क राशि में स्थित है तथा सूर्य उससे पीड़ित है। अतः आप चेचक, उदर विकार, अजीर्ण/अतिभोजन, ऐंठन, ड्राप्सी जैसे रोगों से पीड़ित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल ना ही उच्चस्थ है और ना ही अपने भाव में उपस्थित है और यह वक्री है। अतः आपको अत्यधिक सावधान रहना चाहिए क्योंकि संभवतः आपको किसी गंभीर दुर्घटना का सामना करना पड़ सकता है अथवा आपको कोई बड़ी शल्य चिकित्सा करवानी पड़ सकती है। साथ ही आपको किसी मारकाट या रक्तहीनता का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि उच्चस्थ नहीं है और ना ही अपने भाव में स्थित है और यह वक्री है। अतः आपको बहुत सावधान व सतर्क रहना चाहिए, क्योंकि आपको अपने जीवनकाल में कभी उंचाई से गिरने के कारण चोट लग सकती है अथवा कोई वस्तु आपके शरीर के किसी भाग पर गिरने के कारण भी चोट लग सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में दो घोर अशुभ ग्रह मंगल व शनि एक ही राशि को प्रभावित कर रहे हैं तथा वह राशि है। अतः इससे संबंधित शरीर का भाग किसी दुर्घटना के कारण अथवा किसी अन्य प्रकार से प्रभावित हो सकता है, जिसके कारण आपको अत्यधिक सावधान रहना चाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में कुम्भ राशि पर मंगल व शनि का संयुक्त प्रभाव है। अतः किन्ही आन्तरिक अथवा बाह्य कारणों से आपके टखनों और पिण्डलियों में विकार होने की संभावना है।

आप पुरुष हैं और पीड़ित राशि एक विषम राशि है। अतः आपके शरीर के बाएं हिस्से जो कि पीड़ित राशि दर्शाती है, उसमें चोट लगने या किसी अन्य प्रकार से प्रभावित होने की संभावना है।

# शिक्षा की संभावना और संबंधित तथ्यों की जाँच

## शिक्षा के दौरान आने वाली बाधाओं का आकलन –

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य, राहु/केतु के 3 डिग्री 20 मिनट के अन्दर होने के कारण ग्रसित है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है तथा राहु/केतु के साथ नजदीकी संबंध एक हानिप्रद कारक साबित हो सकता है। कुछ गंभीर समस्याओं के कारण आपकी शिक्षा में बाधा उत्पन्न हो सकती है, जिसका प्रभाव धीरे–धीरे तेज हो सकता है। स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से भी ग्रसित होने की काफी संभावना है तथा आपकी दृष्टि भी किसी प्रकार प्रभावित हो सकती है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिरोधी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके पिता को भी कुछ कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है, जिसके कारण आप भी अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में प्रमुख शिक्षा संबंधी भाव (दूसरे या चौथे या पांचवें) का स्वामी वक्री है। फिर भी यह एक लाभदायक कारक है। चूंकि आप बहुत नियमित या अत्यधिक अध्ययनशील नहीं हो सकते हैं। तब भी आप में एकाग्रता की विशिष्ट क्षमता विद्यमान होगी तथा आप अत्यंत कम समय में अविश्वसनीय रूप से बहुत कुछ प्राप्त करेंगे। आपका उत्साह अवधि/वर्ष/पाठ्यक्रम के प्रारम्भ होने पर और पुनः अन्तिम परीक्षा के दौरान अपने चरम पर होगा, जिसमें की आप निश्चित रूप से सफलता प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में वक्री ग्रह प्रमुख शिक्षा संबंधी भावों में से एक में (दूसरे या चौथे या पांचवें) स्थित है। फिर भी यह एक लाभदायक कारक है। चूंकि आप बहुत नियमित या अत्यधिक अध्ययनशील नहीं हो सकते हैं। तब भी आप में एकाग्रता की विशिष्ट क्षमता विद्यमान होगी तथा आप अत्यंत कम समय में अविश्वसनीय रूप से बहुत कुछ प्राप्त करेंगे। आपका उत्साह अवधि/वर्ष/पाठ्यक्रम के प्रारम्भ होने पर और पुनः अन्तिम परीक्षा के दौरान अपने चरम पर होगा, जिसमें की आप निश्चित रूप से सफलता प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल वक्री है। यह शिक्षा के लिए कदापि बाधक कारक नहीं है, अपितु यह काफी लाभदायक है। आप निश्चित रूप से उच्च महात्वाकांक्षा वाले तथा गर्व की भावना से पूर्ण होंगे, जो कि अप्रत्यक्ष रूप से आपको उत्तम शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित करेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि वक्री है। यह शिक्षा के लिए कदापि बाधक कारक नहीं है, अपितु यह काफी लाभदायक है। आप निश्चित रूप से उच्च महात्वाकांक्षा वाले तथा गर्व की भावना से पूर्ण होंगे, जो कि अप्रत्यक्ष रूप से आपको उत्तम शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित करेगा। आपमें एकाग्रता का गुण विद्यमान होगा तथा मातृ–भाषा के अतिरिक्त विदेशी भाषाओं (जैसे अंग्रजी आदि) सहित अन्य भाषाओं को बोलने व लिखने की काफी अच्छी पकड़ हो सकती है। हालांकि आपको बहुत सावधान रहने की आवश्यकता है, क्योंकि वक्री शनि आपकी शिक्षा में स्थाई या अस्थाई रूप से बाधा डाल सकता है। जैसाकि शनि आपकी कुण्डली में शक्तिशाली स्थिति में

नहीं है, क्योंकि यह उच्चस्थ या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित नहीं है। इसलिए शिक्षा में आने वाली बाधा स्थाई होगी और/या यह बाधा प्रवीणता के अभाव के कारण अथवा 'स्क्रीनिंग परीक्षा' (यह प्रवेश–परीक्षा या प्रारम्भिक स्क्रीनिंग परीक्षा भी हो सकती है) में असफलता के कारण हो सकती है।

## शिक्षा में रूझान और निपुणता (दुसरे भाव से) –

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा दूसरे भाव के स्वामी के साथ उपस्थित है। ऐसी ग्रह स्थिति आपके लिए शैक्षिणिक दृष्टिकोण से अनुकूल है। आपका शिक्षा के प्रति अधिक रूझान होगा तथा आप में शैक्षिणिक योग्यता विद्यमान होगी– विशेषकर आपकी प्रारम्भिक आयु के दौरान।

## लिखावट (तीसरे भाव से) –

आपकी जन्मकुण्डली में, एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रहों की तीसरे भाव पर दृष्टि पड़ रही है। यह दर्शाता है कि आप प्रभावशाली व्यक्तित्व के होंगे तथा आपमें असाधारण लेखन क्षमता विद्यमान होगी। आपकी लिखावट अत्यंत सुन्दर होगी, जिसे सुन्दर भी कहा जा सकता है।

## शिक्षा में लग्नाधिपति की विशेष भूमिका –

आपकी जन्मकुण्डली में, पहले भाव के स्वामी की दृष्टि चौथे भाव पर पड़ रही है, जो कि सामान्य शिक्षा का भाव है। चूंकि इससे चौथे भाव की शक्ति में वृद्धि होती है, अतः यह आपके लिए उत्तम शिक्षा प्राप्त करने में लाभदायक सिद्ध होगा। आप कम से कम एक डिग्री या डिप्लोमाधारी होंगे।

## सामान्य शिक्षा (चौथे भाव से) –

आपकी जन्मकुण्डली में, एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रहों की चौथे भाव पर दृष्टि पड़ रही है। उत्तम शिक्षा प्राप्त करने की दृष्टि से यह एक अनुकूल संकेत है। आप ना केवल सफलतापूर्वक अपनी स्नातक की शिक्षा पूर्ण करेंगे, बल्कि आगे की भी शिक्षा जारी रखेंगे। आप अपनी योग्यता बढ़ाने के लिए किसी प्रतिष्ठित संस्थान से कोई व्यावसायिक शिक्षा या शिक्षा के उपरांत प्रशिक्षण भी ग्रहण कर सकते हैं।

## बुद्धि, मेधा और योग्यता (पाँचवे भाव से) –

आपकी जन्मकुण्डली में, पांचवें भाव का स्वामी उच्चस्थ या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित होने के कारण शक्तिशाली स्थिति में है। उत्तम शिक्षा प्राप्त करने हेतु यह अनुकूल संकेत दे रहा है। आप कुशाग्र बुद्धि तथा अवधारक स्मरणशक्ति वाले होंगे। आप विशिष्ट गुणों से सम्पन्न भी हो सकते हैं। आप ना केवल सुगमतापूर्वक अपनी स्नातक की शिक्षा ग्रहण करेंगे, बल्कि आगे की भी शिक्षा जारी रखेंगे। आप सामान्य क्षेत्रों में उच्च शिक्षा जारी रख सकते हैं अथवा अपनी प्रतिष्ठा अथवा अपने व्यासायिक स्तर में वृद्धि करने के लिए किसी प्रतिष्ठित संस्था से कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

## वस्तु–परक शिक्षा (केन्द्र और त्रिकोन के अधिपतियों के बीच का सह संबंध) –

आपकी जन्मकुण्डली में, सातवें भाव का स्वामी नौवें भाव में उपस्थित है। किसी व्यवहारपरक क्षेत्र में शिक्षा प्राप्त करने के लिए यह एक अनुकूल योग है। आप बहुत बुद्धिमान तथा अवधारक स्मरण शक्ति से परिपूर्ण होंगे। आप अपनी रूचि के अनुसार कोई भी व्यावसायिक कोर्स अत्यंत कम प्रयासों में ही आसानी से प्राप्त करने में सक्षम होंगे। आपको व्यापार प्रबंधन तथा विधि जैसे विषय अत्यधिक आकर्षित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आपको आयात–निर्यात अथवा विदेशी मामलों में भी काफी रूचि हो सकती है।

## उच्च/ब्यावहारिक शिक्षा और शोध (नौवें भाव से) –

आपकी जन्मकुण्डली में, चौथे भाव का स्वामी नौवें भाव में उपस्थित है। यह विशिष्ट शिक्षा प्राप्त करने के लिए अनुकूल योग है, क्योंकि चौथा भाव शिक्षा का कारक है, जबकि नौवां भाव उच्च शिक्षा को दर्शाता है। आपमें बहुत अच्छी प्रवीणता विद्यमान होगी तथा आप उच्च शिक्षा ग्रहण करेंगे। जैसाकि चौथा भाव घर को तथा नौवां भाव दूरस्थ स्थान या विदेश को भी दर्शाता है। अतः आपको अपनी सामान्य शिक्षा अथवा उच्च शिक्षा के लिए ऐसे स्थानों पर जाना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, नौवें भाव का स्वामी पांचवें भाव में उपस्थित है। उत्तम शिक्षा प्राप्ति के लिए यह अत्यंत भाग्यशाली योग है, जैसाकि पांचवा भाव गुण को एवं नौवां भाव उच्च शिक्षा को दर्शाता है। आपमें बहुत अच्छी प्रवीणता विद्यमान होगी तथा आप उच्च शिक्षा ग्रहण करेंगे। आप अपनी रूचि के अनुसार किसी शोध कार्य में भी लगे हो सकते हैं। उच्च शिक्षा अथवा व्यावसायिक शिक्षा प्राप्ति के लिए (और/या अपने व्यवासाय के संदर्भ में) आपका प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से विदेश से कुछ संबंध हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, पांचवें तथा नौवें भाव के स्वामी की परस्पर युति है। अच्छी शिक्षा प्राप्ति के लिए यह बहुत लाभदायक योग है, जैसाकि पांचवा भाव योग्यता को एवं नौवां भाव उच्च शिक्षा को दर्शाता है। आपमें बहुत अच्छी दक्षता विद्यमान होगी तथा आप उच्च शिक्षा ग्रहण करेंगे। जैसाकि पांचवां भाव व्यावहारपरक शिक्षा को एवं नौवां भाव दूरस्थ स्थान या विदेश को भी दर्शाता है। अतः आप अपनी व्यावसायिक शिक्षा किसी प्रतिष्ठित विदेशी संस्थान से प्राप्त करेंगे।

## गुप्त और रहस्यमय विद्याओं का अध्ययन और शोध (बारहवें भाव से) –

आपकी जन्मकुण्डली में, बारहवें भाव का स्वामी पांचवें भाव में उपस्थित है। जैसाकि बारहवां भाव चौथे भाव से नौवां भाव है (या नौवें भाव से चौथा भाव है)। अतः आप अपनी व्यावसायिक शिक्षा के लिए किसी दूरस्थ स्थान पर अथवा विदेश भी जा सकते हैं तथा वहां काफी लम्बे समय तक रह सकते हैं। यद्यपि आप किसी दूरस्थ स्थान पर नहीं जाते हैं तो ऐसी संभावना है कि आपको स्कूल या कॉलेज या विश्वविद्यालय के छात्रावास में रहना पड़ सकता है।

## शिक्षा की संभावना और रूझान के क्षेत्र (बुध के भिन्नाष्टक वर्ग से) –

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध के भिन्नाष्टक–वर्ग में, छठवें भाव में शुभ बिन्दु काफी संख्या (7 या 8) में हैं। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी रूचि होगी तो आप रोगों और उनके उपचार के बारे में औपचारिक या अनौपचारिक अध्ययन के द्वारा काफी ज्ञान व जानकारी प्राप्त करेंगे। यदि आप एक निपुण चिकित्सक नहीं भी होते हैं तो भी आपके व्यवसाय का अथवा शौक भी का संबंध आधुनिक या वैकल्पिक दवाओं से हो सकता है।

## ऐसी शिक्षा जो बाद में ब्यवसाय में काम आये (दसवें भाव से) –

आपकी जन्मकुण्डली में, दशमेश पांचवें भाव में स्थित ग्रह के नक्षत्र में स्थित है। जैसाकि दसवां भाव ज्ञान का कारक है तथा पांचवा भाव योग्यता के स्तर को दर्शाता है। अतः यह बहुत ही अनुकूल संकेत है। यह योग ये सुनिश्चित करता है कि आपको अच्छी शिक्षा प्राप्त होगी तथा अनौपचारिक अध्ययन भी करेंगे, जिसका उपयोग आप अपने व्यावसायिक क्षेत्र में सम्पूर्ण कार्यकाल के दौरान प्रभावपूर्ण ढंग से करेंगे।

## शिक्षा की गुणवत्ता और विस्तार (चर्तुविशांश वर्ग कुण्डली से) –

आपके चतुर्विशांश कुण्डली (जिसका उपयोग विशेष रूप से शिक्षा को विचारने के लिए किया जाता है) में, एक त्रिकोण भाव का स्वामी एक केन्द्र भाव में स्थित है। यह दर्शाता है कि आप व्यवहारपरक क्षेत्र में शिक्षा जारी रख सकते हैं, जिसका संबंध तकनीकि या इंजीनियरिंग से हो सकता है।

## भिन्नाष्टक वर्ग में बिन्दुओं की कुल संख्या से शिक्षा की संभावना का आकलन –

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्न में शुभ बिन्दुओं (शिक्षा के लिए अनुकूल ग्रहों के द्वारा दिये गए योगदान से प्राप्त) की कुल संख्या बहुत ही उत्तम है। यह एक अनुकूल योग है। यह आपको उपयोगी सूचना को एकत्र करने के मामले में बुद्धिमान, सौम्य और सजग बनाएगा तथा आप उनका उपयोग प्रभावशाली रूप से व उद्देश्यपूर्ण ढंग से करने में सक्षम होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, दूसरे भाव में शुभ बिन्दुओं (शिक्षा के लिए अनुकूल ग्रहों के द्वारा दिये गए योगदान से प्राप्त) की कुल संख्या बहुत ही उत्तम है। यह एक अनुकूल योग है। आपका शिक्षा के प्रति रूझान अधिक होगा तथा आपमें शैक्षिणिक दक्षता विद्यमान होगी। आपको वाक्पटुता का वरदान प्राप्त होगा तथा आप आर्थिक सौदों के मामले में बहुत ही विश्वसनीय होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, तीसरे भाव में शुभ बिन्दुओं (शिक्षा के लिए अनुकूल ग्रहों के द्वारा दिये गए योगदान से प्राप्त) की कुल संख्या बहुत ही उत्तम है। यह एक अनुकूल योग है। आपमें असाधारण लेखन क्षमता विद्यमान होगी। आप पत्र व्यवहार/संवाद तथा नवीन विकासों के बारे में होने वाले सभी परिवर्तनों आदि की जानकारी का आदान–प्रदान करने के मामले में बहुत निपुण होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, पांचवें भाव में शुभ बिन्दुओं (शिक्षा के लिए अनुकूल ग्रहों के द्वारा दिये गए योगदान से प्राप्त) की कुल संख्या बहुत ही उत्तम है। यह एक अनुकूल योग है। आप कुशाग्र बुद्धि तथा अवधारक स्मरण शक्ति वाले होंगे। आप अच्छे स्तर की शिक्षा प्राप्त करने में भी भाग्यशाली रहेंगे, जो कि तकनीकि या इंजीनियरिंग जैसे व्यवहारपरक क्षेत्र में हो सकता है। आपको शेयर आदि जैसे काल्पनिक निवेशों में भी कुछ रूचि हो सकती है या आप इसके बारे में अच्छी जानकारी एकत्र कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, छठवें भाव में शुभ बिन्दुओं (शिक्षा के लिए अनुकूल ग्रहों के द्वारा दिये गए योगदान से प्राप्त) की कुल संख्या बहुत ही उत्तम है। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी रूचि होगी तो आप रोगों और उनके उपचार के बारे में औपचारिक या अनौपचारिक अध्ययन के द्वारा काफी ज्ञान व जानकारी प्राप्त करेंगे। यदि आप एक निपुण चिकित्सक नहीं भी होते हैं तो भी आपके व्यवसाय का अथवा शौक भी का संबंध आधुनिक या वैकल्पिक दवाओं से हो सकता है।

# ब्यवसाय (रोजगार) की संभावनाओं का ज्यातिषिय विश्लेषण

आपकी जन्मकुण्डली में  सूर्य लग्न से दसवें भाव में उपस्थित है। अतः आप अत्यंत कर्मठ होंगे एवं अपने सभी प्रयत्नों में सफल होंगे। आपको सरकारी विभागों, दूतावासों आदि से संरक्षण प्राप्त होगा तथा अपनी मध्य आयु में आपको सम्मान भी प्राप्त होगा। आपकी ख्याति सुरक्षित रहेगी। आपमें नेतृत्व करने का गुण विद्यमान होगा तथा आप दूसरों के लिए प्रेरणा का स्रोत होंगे। आपका उठना–बैठना उच्च स्तरीय लोगों के साथ होगा तथा आप अपने विभिन्न उपायों व प्रयासों से धन अर्जित करेंगे। आपको सराहना प्राप्त होगी तथा आपका नाम व यश चारों तरफ फैलेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में बृहस्पति चंद्र–राशि से दसवें भाव पर दृष्टि डाल रहा है। अतः आप अत्यंत भाग्यशाली होंगे क्योंकि यह जीवन में समृद्धि, खुशहाली और स्पर्द्धा के लिए सर्वोत्तम योग है। आप विभिन्न स्रोतों से आय का उपार्जन करेंगे, मानसिक कार्यों से धन अर्जित करेंगे, सरकारी अधिकारियों से सम्मान व संरक्षण प्राप्त करेंगे। आप अपने जीवन में बहुत उन्नति करेंगे, विश्वास और ख्याति अर्जित करेंगे। आपका यश चिर स्थायी होंगा। आपमें नेतृत्व का गुण विद्यमान होगा, आप एक गुणवान व्यक्ति होंगे तथा धर्मों के प्रति आपकी गहरी आस्था होगी। आप कानून को मानने वाले जिम्मेदार नागरिक होंगे तथा समाज में लोग आपका बहुत सम्मान करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि चंद्र–राशि से दसवें भाव पर दृष्टि डाल रहा है। अतः आप धैर्य एवं उद्यमशीलता के प्रतिरूप होंगे। आप अनुशासन का सख्ती से पालन करने वाले, कठोरता से काम लेने वाले तथा उद्देश्यों के प्रति दृढ़ता आपके जीवन का प्रतीक होगा। यदि शनि उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित है तो आप निश्चित रूप से जीवन में उच्च पद की प्राप्ति करेंगे। किन्तु यदि शनि वक्री या नीचस्थ या किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ जुड़ा हुआ है या किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह की शनि पर दृष्टि पड़ रही है तो आपको असफलता और अपमान का सामना करना पड़ेगा तथा अचानक नीचे गिरने का भी खतरा हो सकता है। आपके सार्वजनिक कार्य असफल हो सकते हैं और भारी नुकसान के साथ–साथ आपका मान भी घट सकता है। अतः आपको अत्यंत सावधान व सचेत रहना चाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्र–राशि से दशमेश चंद्रमा के साथ जुड़ा हुआ है। अतः आपको अपने पेशे के सिलसिले में आप आम लोगों के सीधे सम्पक्र में रहना पड़ सकता है। आप चिकित्सा या औषधि का अध्ययन कर सकते हैं और/या आप रसायन शास्त्री अथवा दवा विक्रेता हो सकते हैं। साथ ही/या फिर आप सौन्दर्य प्रसाधन, इत्र, महिलाओं का श्रृंगार प्रसाधन, मिठाई व सामान्य भोज्य पदार्थों का कारोबार कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्र–राशि से दशमेश शनि के साथ जुड़ा हुआ है। अतः आप आप अपने व्यवसाय के संदर्भ में अधिक भाग्यशाली नहीं होंगे। यदि शनि उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित नहीं है तो संभवतः आपको अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है तथा कठिन संघर्ष भी करना पड़ सकता है। आपका पेशा जिम्मेदारी और अधीनस्थता से भरा हो सकता है। आपके कार्यस्थल का परिवेश अधिक अनुकूल नहीं हो सकता है

तथा आपका कार्य–समय भी सुविधाजनक नहीं हो सकता है। आपका पारिश्रमिक आपके कार्य के अनुकूल नहीं हो सकता है तथा आप काफी हताश महसूस कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में दशमेश गुरु पर द्वितीयेश मंगल की दृष्टि पड़ रही है। अतः आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे, विषेशकर धन संबंधी मामलों में। आप किसी वित्तिय संस्थान में कार्यरत हो सकते हैं अथवा आप अपना खुद का कोई व्यवसाय कर सकते हैं। जैसाकि गुरु आपका लग्न–स्वामी है जबकि मंगल भी नौवें भाव का स्वामी है। आपको अपने पेशे के संबंध में अनेक लम्बी यात्राएं करनी पड़ सकती हैं तथा अपने दूरस्थ स्थानों पर रहना पड़ सकता है। आपके विदेशों से सम्पक्र होंगे, आप विदेशी अथवा विदेश में रह रहे लोगों से लाभ प्राप्त करेंगे। आप आयात–निर्यात के व्यापार से काफी धन अर्जित कर सकते हैं। आप एक साथ दो (नौकरी व व्यवसाय) पेशे में संलग्न हो सकते हैं अथवा आप अपने जीवन के मध्य काल में कभी एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में परिवर्तन कर सकते हैं। आपके समकालीन लोग आपकी उन्नति देखकर काफी आश्चर्य चकित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में सूर्य आजीविका का प्राथमिक कारक है। अतः आप सरकारी नौकरी में कार्यरत हो सकते हैं या सरकार के साथ संबंधित कार्यों में सफल हो सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में सूर्य उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित है तो आप राजनीति से जुड़ सकते हैं या यहां तक कि राजदूत भी बन सकते हैं। आप आधुनिक या पारम्परिक दवाओं या हड्डी के रोगों का उत्कृष्ट ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं अथवा नेत्र संबंधी विषयों में आपकी विशेष रूचि हो सकती है। सोना, तांबा, गहनें, घड़ियां व दसरे चमकीले धातुओं आदि का व्यापार आपके लिए अनुकूल होगा। यदि आपकी कुण्डली में सूर्य अच्छी स्थिति में नहीं है तो आप चावल, गेंहू, उनी वस्तुओं, जूट उत्पाद, लकड़ियों के फर्नीचर आदि जैसे उपभोग योग्य वस्तुओं का कारोबार कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र आजीविका का गौण कारक है, इसलिए आपकी रूचि ललित कलाओं एवं कलात्मक कार्यों में अधिक होगी। आपको फोटोग्राफी, सिनेमा, दूरदर्शन तथा अन्य मनोरंजन के क्षेत्र, ब्यूटी पार्लर, पब आदि आकर्षित कर सकते हैं। आपको उन चीजों से अधिकाधिक रूचि होगी जो जीवन को सुन्दर व सजीव बनाती हों। आपके पेशे का कुछ संबंध कम्प्यूटर व इलेक्ट्रानिक्स, वस्त्र, कपड़े, पोशाक, होजरी, आभूषण, सौन्दर्य प्रसाधन, इत्र, फूल, फर्नीचर, आटोमोबाइल, विलासिता की वस्तुएं, मादक पदार्थ, तम्बाकू, गन्ना/चीनी, रबर, पेट्रोलियम यौगिक, मसाले, मिट्टी/चीनी मिट्टी के बर्तन आदि से हो सकता है। यदि शुक्र केवल किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ जुड़ा हुआ है या उसकी शुक्र पर दृष्टि पड़ रही है तो आप नशे की कुछ बुरी लतों के आदि हो सकते हैं।

## कालचक्र दशा अंश और जीव राशि से ब्यवसाय (रोजगार) का विश्लेषण

**आपकी कालचक्र दशा अंश राशि – मीन**

**आपकी कालचक्र दशा जीव राशि – सिहं**

आपकी जन्मकुण्डली में आपका काल चक्र दशा अंश सिंह राशि में है। अंश राशि के स्वामी (सूर्य) से प्रभावित होने के कारण आप जन्मजात भाग्यशाली व्यक्ति होंगे। आप आशावादी दृष्टिकोण वाले व प्रसन्नचित्त स्वभाव वाले होंगे। आपके माता–पिता में से कोई एक अथवा दोनों ही अपने पेशे में ठीक स्थिति में होंगे और/या उनका सरकारी स्रोतों से कुछ संबंध हो सकता है। आप स्वयं भी सरकारी नौकरी में किसी अच्छे पद पर हो सकते हैं अथवा किसी ना किसी प्रकार से सरकारी स्रोतों से आपके अच्छे संबंध हो सकते हैं। आप अधिकारियों से सहयोग और लाभ प्राप्त करेंगे।

# विवाह/प्रेम संबंधों से संबंधित संभावनाओं का आकलन

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र के भिन्नाष्टक वर्ग में, शुक्र से सातवें भाव में शुभ बिन्दुओं की संख्या 5 (या अधिक) है। शुक्र के नैसर्गिक कारक– विवाह व विवाहित जीवन के सुखों के संदर्भ में यह अत्यंत ही भाग्यशाली योग है। आप अपने जीवनसाथी के संदर्भ में बहुत ही भाग्यशाली रहेंगे। वह बहुत आकर्षक, सुसंस्कारी, व्यवहारकुशल व परिष्कृत रूचियों वाली होंगी तथा अत्यंत प्रतिष्ठित परिवार से संबंधित होंगी। जैसाकि आप दोनों एक दूसरे से अपने जीवन से भी अधिक प्रेम करेंगे, इसलिए आपका दाम्पत्य जीवन बहुत ही खुशहाल और आनन्दपूर्ण व्यतीत होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह नवांश में सातवें भाव में है तथा इसका स्वामी लग्न कुण्डली में या नवांश कुण्डली में ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि में है। अतः यह ग्रह स्थिति आपके लिए अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ सौम्य संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आपका दाम्पत्य जीवन अधिक खुशहाल नहीं हो सकता है। आपका अपने जीवनसाथी के साथ निरंतर गलतफहमियां और झगड़े हो सकते हैं जो अक्सर जीवन की सुन्दरता को तोड़ देते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में राहु चौथे भाव में उपस्थित है। यद्यपि यह उच्चस्थ या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित होने के कारण स्पष्ट रूप से शक्तिशाली प्रतीत होता है, फिर भी राहु सदैव वक्री रहता है। अतः यह कदापि अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ सौम्य संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं है तो यह दाम्पत्य जीवन की खुशियों में वृद्धि करने के लिए अनुकूल नहीं है, क्योंकि विचारों में भ्रम और निरंतर होने वाली कलह के कारण शांति का अभाव हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र के भिन्नाष्टक वर्ग में, शुक्र से सातवें भाव में शुभ बिन्दुओं की संख्या 4 (या 5) है। यह एक अनुकूल योग है। आपकी पत्नी बहुत विचारवान होंगी। वह आपकी पसन्द और नापसन्द को उचित महत्व देंगी तथा आपके विचारों का सम्मान करेंगी। आपका दाम्पत्य जीवन खुशहाल व आनन्दपूर्ण व्यतीत होगा।

आपकी नवांश कुण्डली में सप्तमेश एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह है। यह ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ सौम्य संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपका वैवाहिक जीवन गलतफहमियों और निरंतर भावनात्मक टकराव के कारण संभवतः दुखमय व्यतीत हो सकता है।

आपकी कुण्डली में शुक्र जिस राशि में स्थित है उसका स्वामी वक्री है। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपका अपने जीवनसाथी के साथ घनिष्ठ व आत्मीय संबंध होगा, जैसाकि आप अपने जीवनसाथी के साथ एकांत में व्यवधानरहित समय बिताकर आनन्द प्राप्त करने के बहुत शौकीन होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र से गणना करने पर तीन महत्वपूर्ण राशियों (चौथे, आठवें व बारहवें) में से केवल एक राशि एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह से अधिग्रहित है, जबकि उस राशि में कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह काफी प्रतिकूल योग है जिसे अरिष्ट–योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल सौम्य प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो यह योग आपके दाम्पत्य जीवन की खुशियों को बिगाड़ने तथा कलह पैदा करने की संभावना व क्षमता रखता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह सातवें भाव में स्थित है या उस पर दृष्टि डाल रहा है, जबकि कोई भी नैसर्गिक शुभ ग्रह ना तो इसके साथ स्थित है और ना ही उसकी इस पर दृष्टि है तथा दूसरा भाव भी इसी तरह व्यवस्थित है। अतः समग्र रूप से यह प्रतिकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इसकी बहुत संभावना है कि आपके दाम्पत्य जीवन में खुशियों की कमी हो सकती है। यहां तक कि आपको अपनी पत्नी की तरफ से या उनके कारण किसी अशुभ घटना जैसे शारीरिक प्रहार, प्रत्यक्ष लडाई, मुकद्मा या झगड़े का सामना करना पड़ सकता है।

# यात्रा, भ्रमण और विदेश यात्रा

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध नौवें भाव में उपस्थित है। आपके भाग्य में दूरस्थ स्थानों की अनेक यात्राएं करने का योग है। या फिर आपको अपने व्यवसाय के कारण दूरस्थ स्थानों की यात्राएं करनी पड़ सकती हैं, भले ही वह समय के अनुसार कभी–कभी ही हो।

आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल पांचवें भाव में उपस्थित है। यह पंचमेश या दशमेश में से कोई नहीं है। इसके अतिरिक्त यह ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपने भाव मे स्थित है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। आपका अपने वरिष्ठों/अधिकारियों के साथ अच्छे संबंध नहीं हो सकते हैं अथवा परिस्थितियां आपके लिए अनुकूल नहीं हो सकती हैं। आपको कई बार अपने व्यवसाय में परिवर्तन करना पड़ सकता है। जैसाकि मंगल वक्री है, इसलिए ऐसे परिवर्तन अचानक ही हो सकते हैं तथा आपको बिना पर्याप्त तैयारी के ही आगे बढ़ना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, बहुत सारे ग्रह (चार या चार से अधिक) किसी चर–राशि में स्थित हैं। अतः यह दर्शाता है कि आप अत्यधिक यात्राएं करेंगे, जिनमे अनेक कम दूरी वाली व अनेक लम्बी दूरी वाली यात्राएं होंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, नवमेश चर–राशि में स्थित है। यह दर्शाता है कि आप अनेक परिवर्तन करेंगे एवं प्रायः समीपस्थ स्थानों की यात्राएं करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, अष्टमेश चतुर्थेश के साथ उपस्थित है अथवा उसकी इस पर दृष्टि पड़ रही है और अष्टमेश ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपने भाव या अपने नक्षत्र में स्थित है। अतः यह एक प्रतिकूल योग है जो कि आकस्मिक स्थानान्तरण की संभावना को दर्शाता है। यदि आपकी कुण्डली में प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको कई बार अपना निवास स्थान बदलना पड़ सकता है और आप लम्बे समय तक एक स्थान पर नहीं रह सकते हैं। या फिर, ऐसी भी संभावना है कि आपका व्यवसाय/नौकरी स्थानन्तरणीय हो अथवा कई बार आप अपने व्यवसाय/नौकरी में परिवर्तन कर सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप आपको अपना निवासस्थान बदलना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, तीव्र गति से चलने वाला ग्रह (जो वक्री नहीं है) एक दूसरे मंद चलने वाले ग्रह के साथ, जिस पर दृष्टि निर्माण के लिए आवश्यक स्थिति की यथार्थ डिग्री को इसने अभी प्राप्त नहीं किया है, 60 डिग्री की दृष्टि में शामिल है। यह आपके किसी निकट स्थान (आपके जन्म स्थान या मूल–निवास स्थान से) पर स्थानान्तरित होने की संभावना को व्यक्त करता है, जहां आप समृद्ध होंगे एवं काफी लम्बे समय तक रहेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, तीव्र गति से चलने वाला ग्रह (जो वक्री नहीं है) एक दूसरे मंद चलने वाले ग्रह के साथ, जिस पर दृष्टि निर्माण के लिए आवश्यक स्थिति की यथार्थ डिग्री को इसने अभी प्राप्त नहीं किया है, 120 डिग्री की दृष्टि में शामिल है। यह आपके किसी दूरस्थ स्थान (आपके जन्म स्थान या मूल–निवास स्थान से) पर

स्थानान्तरित होने की संभावना को व्यक्त करता है, जहां आप समृद्ध होंगे एवं काफी लम्बे समय तक रहेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, तीव्र गति से चलने वाला ग्रह (जो वक्री नहीं है) एक दूसरे मंद चलने वाले ग्रह के साथ, जिस पर दृष्टि निर्माण के लिए आवश्यक स्थिति की यथार्थ डिग्री को इसने अभी प्राप्त नहीं किया है, 90 डिग्री की दृष्टि में शामिल है। यह किसी आकस्मिक और अप्रत्याशित घटनाक्रम के कारण आपके किसी दूरस्थ स्थान (आपके जन्म स्थान या मूल–निवास स्थान से) पर स्थानान्तरित होने की संभावना को व्यक्त करता है, जहां आप काफी लम्बे समय तक रह सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकारी योग उपस्थित नहीं हैं तो आपके व्यवसाय में किसी संभावित कारण से आघात लग सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, तीव्र गति से चलने वाला ग्रह (जो वक्री नहीं है) एक दूसरे मंद चलने वाले ग्रह के साथ, जिस पर दृष्टि निर्माण के लिए आवश्यक स्थिति की यथार्थ डिग्री को इसने अभी प्राप्त नहीं किया है, 150 डिग्री की दृष्टि में शामिल है। यह किसी आकस्मिक व अप्रत्याशित घटनाक्रम के कारण आपके किसी दूरस्थ स्थान (आपके जन्म स्थान या मूल–निवास स्थान से) पर स्थानान्तरित होने की संभावना को व्यक्त करता है, जहां आप काफी लम्बे समय तक रह सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकारी योग उपस्थित नहीं हैं तो संभावित कारण परिस्थितियों में आकस्मिक परिवर्तन, दुर्घटना या अशुभ घटनाएं आदि हो सकती है।

शुभ दिशा का चुनाव ? यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकारी योग उपस्थित नहीं हैं तो आपके लिए अनुकूल दिशा उत्तर होगी।

# कुण्डली में लागू होने वाले ग्रह योग (ग्रहयुति)

## कुण्डली में लागू होने वाले महत्वपूर्ण योग

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्नेश का राशिपति भी एक अनुकूल भाव में स्थित है– हालांकि लग्नेश एक अनुकूल भाव में स्थित नहीं है। यह समग्र योग अत्यंत अनुकूल है, जैसाकि इसे सफल काम योग कहा जाता है। यद्यपि आप जन्म से ही भाग्यशाली नहीं हो सकते हैं तथा आपको अपने कार्यशील जीवन के प्रारम्भिक वर्ष काफी दयनीय क्षमता में व्यतीत करना पड़ सका है, किन्तु दीर्घ काल में चीजों में बेहतरी के लिए सुधार होगा, आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे तथा बहुत प्रगति करेंगे। अपने सभी समकालीनों से काफी आगे निकल जाना आपकी नियति है। आपकी सभी महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी और सभी अभिलाषित इच्छाएं पूर्ण होंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, एक विशेष ग्रह एक राशि में अकेले स्थित है, चार ग्रह इसकी छः पूर्ववर्ती राशियों में स्थित हैं, जबकि बाकी के चार ग्रह इसकी अनुवर्ती राशियों में कहीं स्थित हैं। यह बहुत अनुकूल योग का निर्माण कर रहा है, इसे अनिवाहप्पू योग कहते हैं। आपकी कुण्डली में इस योग की उपस्थिति के कारण, आप विशिष्ट बौद्धिक क्षमता वाले व्यक्ति होंगे, तथा अवश्य ही एक अधिकारपूर्ण पद तक पहुंचेंगे। जहां एक तरफ आपको वरिष्ठों/अधिकारियों से सक्रिय सहयोग प्राप्त होगा, जबकि दूसरी तरफ, बड़ी संख्या में आपके समर्पित अनुयायी होंगे। (हालांकि, यदि अनिवाहप्पू योग बनाने वाला एकाकी ग्रह एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की दृष्टि पड़ने से पीड़ित है, तो इस योग की शक्ति परिणामस्वरूप कम हो जाएगी, ऐसे में आप एक कमाण्डर या प्रबंध निदेशक होने के बजाय केवल एक कप्तान या साधारण सुपरवाइजर तक ही सीमित रह सकते हैं।)

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्नेश और द्वादशेश परस्पर केन्द्रीय भावों अर्थात लग्न, चौथे, सातवें और दसवें में स्थित हैं– जबकि एक या अधिक मित्र ग्रहों की इन पर दृष्टि है। यह समग्र योग अत्यंत शुभ है तथा इसे पर्वत योग (विद्यानाथ के जातक परिजात के अनुसार) कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग के होने के कारण, आप बहुत भाग्यशाली, प्राचीन धार्मिक ग्रंथों और पवित्र शास्त्रों के ज्ञाता, वाक्पटुता से सम्पन्न एवं परोपकारी प्रवृत्ति वाले व्यक्ति होंगे। इसके अतिरिक्त, आप गौरवशाली एवं प्रसन्नचित्त होंगे तथा शहर/कस्बे/गांव/समाज में बहुत महत्वपूर्ण व अत्यंत सम्मानित व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, पंचमेश तीसरे, छठें, आठवें और बारहवें भाव के अलावा अन्य किसी भाव में स्थित है, पंचमेश का राशिपति पांचवें भाव में स्थित है। इस बहुत अनुकूल परिवर्तन योग को महा योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस शुभ योग की उपस्थिति के कारण, धन की देवी आप पर कृपा बरसाएंगी और आप अधिकारियों व राज्य से सम्मान तथा लाभ प्राप्त करेंगे। आप अपने जीवनसाथी, संतान, संबंधी और मित्रों के साथ आरामदायक व आधुनिकतापूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे। समाज में आप बहुत सम्मानित होंगे और आपकी

विश्वसनीयता, सम्मान, यश व प्रतिष्ठा में हमेशा वृद्धि होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्नेश प्रतिकूल आठवें भाव में स्थित है, तथा इसके साथ कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह ना तो संबद्ध है और ना ही इस पर दृष्टि है। इसके अतिरिक्त, लग्न में कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह ना तो स्थित है और ना ही लग्न पर उसकी दृष्टि है। यह समग्र योग अपेक्षाकृत प्रतिकूल योग है, जिसे देह–कष्ट योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं है, तो आप आर्थिक रूप से सम्पन्न नहीं हो सकते हैं और/या परिस्थितिवश शारीरिक सुख–सुविधाओं से वंचित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह किसी केन्द्र भाव में स्थित है, यह ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है, तथा यह किसी नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ संबद्ध नहीं है, या ना ही किसी शुभ ग्रह की इस पर दृष्टि है। इसके अतिरिक्त, बृहस्पति इसी प्रकार से आठवें भाव में स्थित है– ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है। इस प्रतिकूल योग को पशु–हंता योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आप जानवरों के प्रति निर्दयी हो सकते हैं, आपको शिकार करने का शौक हो सकता है अथवा आप एक कसाई भी हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, विवाह का नैसर्गिक कारक (शुक्र) वक्री या अस्त या ग्रसित नहीं है। इसके अतिरिक्त, इसकी एक नैसर्गिक शुभ ग्रह (बुध) के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि है। यह एक अनुकूल योग है, इसे सत कलत्र योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग के होने के कारण, आप जीवनसाथी प्राप्त करने के मामले में वास्तव में बहुत भाग्यशाली होंगे– जो एक कुलीन परिवार से होंगी और सदगुणों व विशेषताओं की प्रतिमूर्ति होंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, तीसरा भाव एक नैसर्गिक शुभ ग्रह की राशि में है और एक नैसर्गिक शुभ ग्रह तीसरे भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है, जबकि तृतीयेश का नवांश–राशिपति भी एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है। समग्र रूप से यह एक लाभकारी योग है, इसे सत कथादि श्रवण योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग की उपस्थिति के कारण, आप एक पवित्र आत्मा वाले व्यक्ति होंगे, आपको प्राचीन शास्त्रों, धार्मिक ग्रन्थों और दर्शनशास्त्र का अध्ययन करने में रूचि होगी। आपको साधुजनों का दर्शन करने में भी गहन रूचि होगी तथा उनके धार्मिक प्रवचनों को आप बहुत ध्यान से सुनेंगे।

## कुण्डली में लागू होने वाले चन्द्र योग

आपकी जन्मकुण्डली में एक बहुत शक्तिशाली चंद्र–मंगल योग उपस्थित है। आपका जन्म एक समृद्ध परिवार में हुआ है और आप अपने प्रयासों को निर्देशित करके अपने धन व सम्पत्तियों में वृद्धि करेंगे। आप अपना स्वयं का एक स्वतन्त्र व्यवसाय अपना सकते हैं अथवा एक शक्तिशाली व अधिकारपूर्ण पद प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में शक्तिशाली गज केसरी योग उपस्थित है। आपका जन्म वास्तव में एक सम्पन्न परिवार में हुआ है, आपका पालन–पोषण बहुत उत्तम होगा, अपने उच्च अधिकारियों से समर्थन व लाभ प्राप्त करेंगे, सम्मानजनक पद प्राप्त करेंगे तथा आपके भाग्य में निरन्तर वृद्धि होगी।

## कुण्डली में लागू होने वाले रवि योग

जैसाकि आपकी जन्मकुण्डली में एक ग्रह (चंद्रमा के अलावा) सूर्य से बारहवें भाव में उपस्थित है। यह वोसि योग नामक ग्रह स्थिति उत्पन्न कर रहा है। जैसा कि संबंधित ग्रह एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है, अतः यह एक शुभ योग है। इस समग्र योग को शुभ–वोसि योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग की उपस्थिति के कारण, आप स्थायी भाग्य, शक्ति, ज्ञान और यश से सम्पन्न होंगे। आप अत्यंत बुद्धिमान, चालाक और युक्तिपूर्ण होंगे। आप जो भी करेंगे, उसमें बहुत कुशल और दक्ष भी होंगे। आप विस्तारवादी विचार, आशावादी दृष्टिकोण, प्रसन्नचित्त प्रकृति और उदार प्रवृत्ति वाले व्यक्ति होंगे।

## कुण्डली में लागू होने वाले नभश योग

आपकी कुण्डली में केदार योग नामक एक नभश योग मौजूद है। यद्यपि यह एक बहुत शुभ योग नहीं है, फिर भी आप कई मामलों में भाग्यशाली हो सकते हैं। हालांकि आप सत्यनिष्ठ होंगे एवं सदैव केवल अपने कार्यों से मतलब रखेंगे, लेकिन समझ के अभाव के कारण आप काफी अस्थिर–मिजाज वाले हो सकते हैं। यद्यपि आप खुले विचारों वाले एक साधारण व्यक्ति होंगे, फिर भी आप कुछ–कुछ बातुनी और हठी प्रतीत हो सकते हैं। आपके पेशे का कुछ संबंध कृषि, कृषि उत्पाद या कार्यान्वयन आदि से हो सकता है। हालांकि आपकी आय उत्तम होगी और आप सदैव दूसरों के लिए मददगार होंगे।

## कुण्डली में लागू होने वाले धन योग

जैसाकि आपके ग्यारहवें भाव में एक पृथ्वी तत्व की राशि स्थित है। आपको अपने पैतृक/जन्म स्थान से दक्षिण दिशा में स्थित स्थानों पर/से उत्तम लाभ प्राप्त हो सकता है।

## कुण्डली में लागू होने वाले वित्तहानि योग

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश एक प्रतिकूल त्रिक भाव में स्थित है। यह एक प्रतिकूल वित्त हानि योग है तथा आपको बहुत सावधान रहना चाहिए। आपको कुछ दण्डात्मक अधिकारियों के क्रोध के कारण जब्ती/कुर्की और हानि का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश की दृष्टि द्वादशेश के नवांश–राशिपति पर है। यह एक वित्त हानि योग है। आप धनी व्यक्ति नहीं हो सकते हैं। आप आदतन फिजूलखर्ची हो सकते हैं। आपकी इस प्रकृति के कारण, बाद की आयु में आपको आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

# ग्रहों के डिग्री में स्थिति का फल

आपकी कुण्डली में लग्न की स्थिति यह दर्शाती है कि, आप अत्यंत महात्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे, आप निर्भिक प्रकृति एवं नेतृत्व के गुणों से सम्पन्न होंगे। आप जल्दी समझने वाले, मेधावी एवं भाषण कला में निपुण होंगे, जिसकी वजह से आप लोगों के दिमाग में अमिट छाप छोड़कर उन्हें प्रभावित कर सकते हैं। आप अपने दायरे में बहुत सारे लोगों का भरोसा और हार्दिक समर्थन प्राप्त करेंगे।

आपकी कुण्डली में सूर्य की स्थिति यह दर्शाती है कि, आप व्यावहारिक दृष्टिकोण और ईमानदार प्रकृति के होंगे। बेकार बहाना बनाकर बैठने की बजाय आपको काफी सोच–विचार करना चाहिए, आपमें जल्दीबाजी की प्रवृत्ति होगी और आप सभी जगह चक्कर लगाने वाले होंगे। आप ऐसी जगह पर पहुंचेंगे जहां लोग उत्पादक कार्य करने में व्यस्त रहेंगे, आप सदैव रचनात्मक कार्यों में सक्रियता से भाग लेना चाहेंगे।

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति यह दर्शाती है कि, आप बहुत महात्वाकांक्षी हो सकते हैं और आपकी महात्वाकांक्षाएं गगनचुम्बी हो सकती हैं, किन्तु साथ ही आपका धार्मिक रूझान भी काफी उत्कृष्ट होगा। आप दूसरों की पीड़ाओं को राहत पहुंचाने के लिए सक्रियता से कार्य कर सकते हैं– जिसकी वजह से आपका परोपकारी संगठनों व धर्मार्थ संस्थाओं से नजदीकी संबंध हो सकता है।

आपकी कुण्डली में मंगल की स्थिति यह दर्शाती है कि, आप अहंकारी प्रकृति के हो सकते हैं और आपमें उच्च स्तर की आत्म–सम्मान की भावना हो सकती है। यदि आपकी कुण्डली में सूर्य सुव्यवस्थित नहीं है, या कोई नैसर्गिक अशुभ ग्रह लग्न या आठवें भाव को प्रभावित करता है, तो आप साहसी प्रकृति के होने के साथ–साथ शेखी बघारने वाले भी हो सकते हैं। किन्तु यदि सूर्य सुव्यवस्थित है, तो आप उच्च पद व प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे।

आपकी कुण्डली में बुध की स्थिति यह दर्शाती है कि, आप उच्च आदर्शों से परिपूर्ण होंगे तथा आपका धार्मिक रूझान उत्कृष्ट होगा। स्वभाव व मन से आप एक सच्चे मानववादी होंगे और अपने सहकर्मियों के लिए कुछ उपयोगी करने की सच्ची इच्छा आपमें विद्यमान होगी। लोग आपका उचित सम्मान करेंगे और आपको अपना समझेंगे।

आपकी कुण्डली में गुरू की स्थिति यह दर्शाती है कि, यद्यपि बाहरी तौर पर आप जीवन के औपचारिक व बाहरी पक्ष में रूचि ले सकते हैं, किन्तु आन्तरिक रूप से आप एक सच्चे खोजी हो सकते हैं। प्रकट रूप से आप सुन्दरता के प्रेमी और हर उन चीजों के शौकीन होंगे जो जीवन में उत्साह भर दे एवं सुखों में वृद्धि करें। फिर भी आप अपनी खोज के प्रति सदैव सतर्क रहेंगे।

आपकी कुण्डली में शुक्र की स्थिति यह दर्शाती है कि, जब तक आपकी कुण्डली में प्रतिकूल योग उपस्थित हैं, आप भीरू प्रकृति के हो सकते हैं, आपको अपने आन्तरिक विचार व्यक्त करने में काफी कठिनाई महसूस हो

सकती है। बिगड़ती परिस्थितियों के कारण, आप स्वयं को अनुचित महसूस कर सकते हैं। कुछ लोग आपको अनुपयुक्त समझ सकते हैं तथा आपकी निष्ठा पर शक कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली में शनि की स्थिति यह दर्शाती है कि, आपकी प्रकृति कुछ–कुछ आध्यात्मिक किस्म की हो सकती है तथा आप आसानी से उत्तेजनापूर्ण बातों के बह सकते हैं। आपमें दूसरों को प्रभावित करने की आदत हो सकती है। यदि आपकी कुण्डली में चंद्रमा या बृहस्पति में से कोई भी सुव्यवस्थित है, तो आपमें अमिट छाप छोड़ने की काबिलियत हो सकती है, अन्यथा आप कुछ हद तक उत्तेजनापूर्ण स्वभाव वाले हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में राहु की स्थिति यह दर्शाती है कि, अपने प्रारम्भिक जीवन में आपको कुछ दुखद अनुभव हुए होंगे– जिसकी वजह से आपमें एक अविश्वासपूर्ण या संदेहात्मक प्रकृति का विकास हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में चंद्रमा सुव्यवस्थित नहीं है, तो आप क्रोध, विद्वेष या घृणा से भरे हुए हो सकते हैं– जिसे आप व्यक्त तो नहीं कर सकते हैं, किन्तु यह आपके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है।

आपकी कुण्डली में केतु की स्थिति यह दर्शाती है कि, आप गंभीर प्रकृति, संतुलित मिजाज, व्यावहारिक दृष्टिकोण और उच्च आदर्शों वाले अत्यंत महात्वाकांक्षी व्यक्ति हैं। आप सदैव 'कर्म ही पूजा है' की धारणा में विश्वास रखेंगे तथा धैर्य व निरन्तर परिश्रम की प्रतिमूर्ति होंगे। यद्यपि प्रारम्भिक अवस्था में आप बहुत सफल प्रतीत नहीं हो सकते हैं, परन्तु आप निश्चित रूप से जीवन में विशिष्ट स्थिति अर्जित करेंगे।

# विंशोत्तरी दशाफल से भविष्यफल

## शनि दशा

**(21:12:1945 - 01:10:1962)**

वर्तमान समय में आपकी शनि की महादशा चल रही है और शनि आपकी कुण्डली में पांचवें भाव में स्थित है। आपको पुत्र और सम्पत्ति के कारण कष्ट हो सकता है, यद्यपि आपको पुत्र की प्राप्ति की संभावना ना के बराबर हो सकती है। आपको तीव्र उदर पीड़ा हो सकती है। आप दूसरों की कमियां निकाल सकते हैं और ऐसे लोग आपसे बदला लेने की ताक में रह सकते हैं। आपका भाग्य प्रायः बदल सकता है और आप पाखंड के सहारे काम कर सकते हैं।

वर्तमान समय में आपकी शनि की महादशा चल रही है और शनि आपकी कुण्डली में कर्क राशि में स्थित है। शनि की अपनी दशा के दौरान, अपनी संतानों, जीवनसाथी और अन्य संबंधियों के कारण आपका दिमाग विचलित हो सकता है। आपको कान और आँख के रोग हो सकते हैं तथा आप कमजोर हो सकते हैं।

### शनि अन्तर्दशा

**(21:12:1945 - 04:10:1946)**

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान आप मानसिक वेदना, परिवार को कष्ट, विभिन्न रोगों, आपके द्वारा पोषित चौपाया जानवरों को जहरीले प्रभाव का खतरों का सामना करना पड़ सकता है, जिससे आपको धन की हानि हो सकती है। आपको महिला समुदाय से कष्ट हो सकता है और आप अपने आपको ऐसी स्थिति में पा सकते हैं, जहां पर आप कोई निर्णय करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। आपको वात या कफ, आतों में दर्द, लकवा आदि रोगों का सामना करना पड़ सकता है। संबंधी भी आपके लिए परेशानी पैदा कर सकते हैं। आपको अनावश्यक रूप से यात्रायें करनी पड़ सकती हैं। परिस्थितियां कुछ ऐसी बन सकती हैं, कि आपको निचले स्तर के लोगों के बिना अधिकार के और अप्रत्याशित दुर्वचनों का सामना करना पड़ सकता है और ऐसे लोग आपको चोट भी पहुँचा सकते हैं। हालांकि आपको महिलाओं से सावधान रहना चाहिए, जैसाकि आपकी उनके साथ संबंध बनाने की लालसा आपको अपमान और ब्लैकमेल का शिकार बना सकती है। मवेशियों की संख्या और कृषि से आपकी आय में वृद्धि होगी। आप कई लोगों को रोजगार देंगे और उनसे आय प्राप्त करेंगे।

### बुध अन्तर्दशा

**(04:10:1946 - 14:06:1949)**

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम होगी। आपको अपने सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। यदि आप व्यापारी हैं, तो पिछली अन्तर्दशा अर्थात शनि–शनि के दौरान आपको गंभीर आघात का सामना करना पड़ा होगा। लेकिन अब समय

आपको वह सब वापस करेगा, जो आपने खो दिया था। आप बिना किसी संशय के निवेश करके व्यापार को बढ़ा सकते हैं। आपको पूर्ण खुशी और आनन्द प्राप्त होगा। आप या तो नयी भूमि प्राप्त करेंगे या पैतृक सम्पत्ति और भूमि प्राप्त करेंगे। आपका दिमाग स्थिर रहेगा। मित्रों से आपको लाभ होगा। आपको जीवनसाथी और संतान का पूर्ण सुख मिलेगा। आपको विभिन्न समारोहों में शामिल होने के आमंत्रण मिलेंगे तथा सरकार का सहयोग एवं धन का लाभ मिलेगा। आप अपना खाली समय ज्ञानी लोगों की संगति में व्यतीत करेंगे। आपको विष्णु सहस्त्रनाम (भगवान विष्णु के 1000 नाम) का जप करना चाहिए।

### केतु अन्तर्दशा
### (14:06:1949 - 23:07:1950)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपको अर्जित धन की हानि हो सकती है। आपको अपनी सम्पत्ति को एक के बाद एक बेचना पड़ सकता है। रात में बहुत सारे सपने देखने के कारण आपकी नींद खराब हो सकती है और आपको नींद में चलने की आदत हो सकती है। वायु या आग के कारण आपकी सम्पत्ति नष्ट हो सकती है। रक्तविकार के कारण आपको रोग हो सकते हैं और आप गठिया से ग्रसित हो सकते हैं। आपको भगवान श्रीकृष्ण की अराधना करने की सलाह दी जाती है।

### शुक्र अन्तर्दशा
### (23:07:1950 - 22:09:1953)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्य रूप से यह एक शुभ दशा होगी। आपको विभिन्न तरीकों से लाभ मिलेगा। आपको नये अवसरों का लाभ उठाना होगा। आपको अपने जीवनसाथी से आर्थिक सहायता मिलेगी। आप नये घर का निर्माण करेंगे। शुभ परिणामों में सुधार के लिए और अशुभ परिणामों को समाप्त करने के लिए, यदि कोई हो, तो देवी दुर्गा का स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

### रवि अन्तर्दशा
### (22:09:1953 - 04:09:1954)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपके जीवनसाथी और संतान को कष्ट हो सकता है। आपको पेट और आंतों से संबंधित रोग हो सकते हैं। आपकी व्यावसायिक और व्यापारिक प्रगति में विभिन्न प्रकार की बाधायें आ सकती हैं। आपको धन की हानि हो सकती है और अपने अस्तित्वहीन होने का अहसास हो सकता है। आपके शत्रुओं की संख्या बढ़ सकती है। प्रायः यात्रायें कर सकते हैं।

### चंद्र अन्तर्दशा
### (04:09:1954 - 04:04:1956)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। यह अन्तर्दशा आपके

लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपको मृत्युतुल्य कष्ट, धन हानि, वायु विकार तथा आपके जीवनसाथी एवं माता–पिता को खतरा हो सकता है। कार्य या कामना पूर्ण होने को हो सकती है, मगर अचानक बाधायें आकर अवसरों को नष्ट कर सकती हैं। आपको किसी नये व्यापार का प्रारम्भ नहीं करना चाहिए या अपने वर्तमान व्यवसाय को बदलने का प्रयास नहीं करना चाहिए। आपको इस अन्तर्दशा के दौरान देवी दुर्गा के मंत्रों का जाप करना चाहिए।

### मंगल अन्तर्दशा
### (04:04:1956 - 14:05:1957)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपको विदेश यात्रा पर जाने का शौक हो सकता है, जहां पर आप विभिन्न समस्याओं का सामना कर सकते हैं। अतः आपको विदेश में स्थानांतरण या रोजगार या किसी व्यापारिक दौरे को स्वीकार नहीं करना चाहिए। आपको बुखार, हार्निया और आँखों के रोग हो सकते हैं। आपको हर समय मृत्यु का भय बना रह सकता है। आग और धातु के साथ काम करते समय आपको सावधान रहना चाहिए। आपको कुछ शारीरिक चोट या अक्षमता हो सकती है। आप भारी धन हानि का सामना भी कर सकते हैं। आपके जीवनसाथी और घर की महिलाओं को कष्ट हो सकता है। आपको अपमान का भी सामना करना पड़ सकता है। आप अपने पद और स्थिति को खो सकते हैं। भगवान श्रीकृष्ण के मंत्रों का जाप आपके लिए लाभकारी साबित होगा।

### राहू अन्तर्दशा
### (14:05:1957 - 20:03:1960)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपको ऊँचाई से गिरने या किसी कुएं अथवा सुरंग में गिरने के कारण चोट लग सकती है। आप बुखार, फोड़ों, सुजाक, प्लीहा के आकार में भारी वृद्धि, चर्म रोगों से ग्रसित हो सकते हैं। आपको भारी धन हानि हो सकती है। आपका सभी के साथ झगड़ा हो सकता है और आप शत्रुता को आमंत्रण दे सकते हैं। आप किसी की भी सलाह को नहीं मान सकते हैं, जिससे आप हमेशा गंभीर समस्याओं में फँस सकते हैं। आपका व्यवहार बहुत असहिष्णु हो सकता है। आपको इस पूरी अन्तर्दशा के दौरान महामृत्युंजय मंत्र का जाप करना चाहिए।

### गुरु अन्तर्दशा
### (20:03:1960 - 01:10:1962)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। यह अन्तर्दशा आपके लिए बहुत उत्तम होगी, जिसका आप एक लम्बे बुरे दौर के बाद अनुभव करेंगे। आपका विश्वास पुनः लौटेगा। आपमें जीने की चाह बढ़ेगी और आपको जीवन का अर्थ पूरी तरह समझ में आयेगा। आप अपने जीवनसाथी, संतान और मित्रों की संगति का पूर्ण आनन्द प्राप्त करेंगे। आपको अपने हर काम में सफलता मिलेगी

और आप विभिन्न शुभ कार्यों को पूरा करेंगे। ईश्वर के अस्तित्व का आपको पूर्ण अहसास होगा और आप उसकी अराधना करेंगे। आपको भूमि लाभ होगा। विभिन्न कलाओं में आप गहरी रूचि लेंगे। इस अन्तर्दशा के दौरान आपका व्यवहार सौम्य होगा।

## बुध दशा

**(01:10:1962 - 01:10:1979)**

वर्तमान समय में आपकी बुध की महादशा चल रही है और बुध आपकी कुण्डली में नौवें भाव में स्थित है। बुध की इस भाव में दशा अति उत्तम है। आप कई धार्मिक कार्यों में संलग्न होंगे, आप वेदों और तंत्र विद्या को सीखने में रूचि लेंगे। आप प्रायः पवित्र स्थानों की यात्रा करेंगे तथा साधुजनों की संगति करेंगे। आपका विवाह हो सकता है और/या संतानों की प्राप्ति हो सकती है। यदि बुध भयानक रूप से पीड़ित भी है, तो परिणाम अधिक विषम नहीं हो सकते हैं। अन्तर केवला इतना है, कि आप बाहरी रूप से बहुत धार्मिक प्रतीत नहीं हो सकते हैं, लेकिन आपका अन्तर्मन ईश्वर की खोज में हमेशा लगा रहेगा। आप जीवन के छुपे रहस्यों को प्रकट करेंगे और आपकी रूचि तत्व विज्ञान में होगी। 39वें वर्ष की आयु से अचानक सकारात्मक परिर्वतन होगा। इस आयु के बाद आपके अपने अधिकतर उद्देश्यों और अभिलाषाओं की पूर्ति होगी। इस आयु के बाद का समय आप शोध, प्रयोगों और परीक्षणों में व्यतीत करेंगे।

वर्तमान समय में आपकी बुध की महादशा चल रही है और बुध आपकी कुण्डली में वृश्चिक राशि में स्थित है। बुध की अपनी दशा के दौरान, आप उत्तम कार्यों में रत रहेंगे। आपके खर्चे कम और खुशियां सीमित होंगी। आपको अपने प्रियजनों और करीबीयों से दूर रहने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। संबंधी आपको विभिन्न मामलों में प्रायः परेशान कर सकते हैं।

### बुध अन्तर्दशा

**(01:10:1962 - 27:02:1965)**

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम होगी। आपके विभिन्न विद्वान लोगों से संबंध बनेंगे और आप ऐसे संबंधों से धन प्राप्त करेंगे। आप अपने ज्ञान और विद्वता के द्वारा बहुत यश प्राप्त करेंगे। आप उत्तम और शुभ सद्कृत्यों को करने में संलग्न रहेंगे तथा आपका दिमाग तीक्ष्ण और पक्षपात रहित होगा। आपको परिवार के बड़े लोगों से मदद मिलेगी। यदि आपकी कुण्डली में बुध कमजोर है, तो आपको किसी क्षेत्र में काम करने में रूचि और उत्साह नहीं हो सकता है और आप एकाकी जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

### केतु अन्तर्दशा

**(27:02:1965 - 24:02:1966)**

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, अनिश्चितता बनी रहेगी। आपको एक कष्टकारी और दुखी जीवन का सामना करना पड़ सकता है। आप अपने

हर काम में विवादों और झगड़ों में फँस सकते हैं। आपका पूरी तरह से भ्रमित और शंकाग्रस्त दिमाग काफी हद तक उथल–पुथल मचा सकता है। आप गैरमैत्रीपूर्ण और बुरे दिमाग वाले लोगों से घिरे रह सकते हैं। आप जुए की लत में पड़कर धन गवाँ सकते हैं, जिससे आपको उन लोगों, जिनसे आपने धन उधार लिया है, के चंगुल से अपने को बचाने के लिए अपनी भूमि, सम्पत्ति और अन्य सामान बेचना पड़ सकता है, फिर भी आप ऋणमुक्त नहीं हो सकते हैं। आप एक गुलाम की तरह जीवन जीने पर मजबूर हो सकते हैं। अन्ततः आप मिर्गी या पागलपन का शिकार हो सकते हैं। इस अन्तर्दशा के दौरान किसी अनुकूल परिणाम की आप आशा नहीं कर सकते हैं। केतु के अशुभ प्रभाव से बचने के लिए आपको भगवान शिव और देवी पार्वती की अराधना करनी चाहिए।

### शुक्र अन्तर्दशा
### (24:02:1966 - 25:12:1968)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आप आध्यात्मिक मार्ग का अनुसरण करेंगे और अधिकतर समय भगवान की आराधना में रत रहेंगे। आप ऐसे उपदेशकों से सम्पर्क बनाने की कोशिश करेंगे जो आपको ईश्वरीय मार्ग के बारे में अधिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए आपका मार्गदर्शन कर सके। आपकी आय का एक बड़ा भाग इस कार्य में खर्च हो सकता है। इस दशा के दौरान नास्तिक भी आस्तिक बन जाता है, यद्यपि वह दावा कर सकता है, कि उसे भगवान के अस्तित्व में विश्वास नहीं है। ऐसे नास्तिक लोग छिपकर भगवान की पूजा करते हैं। आप स्वादिष्ट भोजन, उत्तम कपड़ों और आभूषणों का आनन्द प्राप्त करेंगे। मित्र और संबंधी आपकी मदद को आगे आयेंगे। आप किसी धर्मपरायण स्त्री के साथ अतिरिक्त वैवाहिक संबंध बना सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में शुक्र बली नहीं है, तो भी इस अन्तर्दशा के दौरान आपको बहुत विषम परिणाम प्राप्त नहीं होंगे।

### रवि अन्तर्दशा
### (25:12:1968 - 01:11:1969)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपके घर पर संपन्नता में निरन्तर वृद्धि होगी। आपको सोना, मूंगा, वाहन और उत्तम घर प्राप्त होगा। आप स्वादिष्ट भोजन और पेय पदार्थों का आनन्द प्राप्त करेंगे। सरकार से आपको समर्थन मिलेगा तथा आपकी क्षमताओं को पहचान मिलेगी। यदि आपकी कुण्डली में सूर्य कमजोर है, तो शुभ परिणामों में कमी हो सकती है।

### चंद्र अन्तर्दशा
### (01:11:1969 - 02:04:1971)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा में आपको शारीरिक व्याधियां हो सकती हैं। आप सिरदर्द, आँखों में फोड़े, कुष्ठ रोग, दाद, गर्दन में दर्द आदि से ग्रस्त हो सकते हैं। आपकी गर्दन या सिर में चोट लग सकती है। आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपके सगे भाई–बहन आपके शत्रु हो सकते हैं। आपको अपने सहोदरों की जिम्मेदारी उठानी पड़ सकती है– विशेषकर यदि आपकी बहनें हैं, तो उनकी। इस अन्तर्दशा के दौरान आपकी या आपके भाई/बहन की शादी हो

सकती है।

### मंगल अन्तर्दशा
### (02:04:1971 - 29:03:1972)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपको व्यवसाय और समाज में कई प्रकार की समस्यायें हो सकती हैं। शत्रुओं से भी आपको कष्ट हो सकता है। आपको आग या बिजली से काम करते समय सावधानी बरतनी चाहिए– जैसाकि आपके जलने की संभावना है। आपको नेत्र और वायु विकार भी हो सकते हैं।

### राहू अन्तर्दशा
### (29:03:1972 - 16:10:1974)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। आपको उन लोगों से खतरा हो सकता है, जिन पर आप आश्रित होंगे या जिसने आपकी बुरे दौर में मदद की हो। आपको संचित धन की हानि हो सकती है। आपका पद और सम्मान दाँव पर लग सकता है। आप जहर और गैस, सिरदर्द, नेत्रों में फोड़ा या पेट में कष्ट से ग्रसित हो सकते हैं। सामान्यतः आप इस अन्तर्दशा के दौरान मानसिक वेदना के शिकार हो सकते हैं और आपको सभी योजनाओं में असफलता मिल सकती है। यदि राहु आपकी कुण्डली में शुभ भी है, तो भी वह शुभ परिणाम देने में शिथिलता बरतेगा।

### गुरु अन्तर्दशा
### (16:10:1974 - 22:01:1977)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आप रोग मुक्त रहेंगे और आपको पूर्ण मानसिक और शारीरिक शांति मिलेगी। आपको अपने व्यवसाय के साथ–साथ समाज में उत्तम कार्य करने के लिए प्रशंसा प्राप्त होगी। आप निडर होंगे। हालांकि, आप अपने हर काम में दुविधाग्रस्त रह सकते हैं। चूंकि, इस दशा में आपको दैवीय कृपा प्राप्त होगी, अतः आप संशयग्रस्त हो सकते हैं, कि कहीं अनजाने में आपने पाप तो नहीं कर दिया। अतः आपको रोज पूजा करनी चाहिए, ताकि आपका दिमाग स्थिर हो सके। आपके सन्यासी होने की संभावना हो सकती है। आपको शांतिपूर्ण घरेलू जीवन का आनन्द प्राप्त होगा, रोजगार में प्रगति होगी और व्यापार समृद्ध होगा। भूमि और सम्पत्ति में निवेश के लिए यह दशा बहुत उत्तम होगी।

### शनि अन्तर्दशा
### (22:01:1977 - 01:10:1979)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको सभी योजनाओं में असफलता और भारी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आप निराशा, कफ और लकवा के शिकार हो सकते हैं। आपको धन हानि हो सकती है। आपमें उचित सोच का अभाव हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में शनि शुभ भी है, तो भी आपको शुभ परिणाम नहीं मिल सकते हैं। इस अशुभ प्रभाव

से बचने के लिए आपको भगवान शिव और देवी पार्वती की अराधना करनी चाहिए।

## केतु दशा

**(01:10:1979 - 01:10:1986)**

वर्तमान समय में आपकी केतु की महादशा चल रही है और केतु आपकी कुण्डली में दसवें भाव में स्थित है। सामान्यतः केतु की दशा तब तक उत्तम नहीं हो सकती है, जब तक यह अपने उच्चस्थ भाव में ना हो, जहां पर परिणाम बहुत लाभकारी होंगे। आपके पिता के लिए यह अशुभ हो सकती है। आप त्वचा, कफ और गुदा की बीमारियों से पीड़ित हो सकते हैं। सवारी के दौरान जानवर की पीठ से गिरने या वाहन चलाते समय दुर्घटनाग्रस्त होने से आप चोटिल हो सकते हैं। आपको अनुमानित निवेशों से सर्वथा दूर रहना चाहिए। आप योजनाओं में असफलता के परिणामस्वरूप हताश हो सकते हैं। भगवान शंकर और नारायण की साथ–साथ पूजा आपको जीवन में संभावित विपदाओं से राहत दिलाएगी।

वर्तमान समय में आपकी केतु की महादशा चल रही है और केतु आपकी कुण्डली में धनु राशि में स्थित है। केतु की अपनी दशा के दौरान, आपके घर में पूर्ण समरसता और खुशी होगी। आपको समाज में बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त होगा तथा लोगों की संगति में शामिल होने का अवसर मिलेगा। इससे आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आप समाज के लिए अपना योगदान देने की कोशिश करेंगे और उसमें बहुत हद तक सफल होंगे। आप भविष्यवक्ता बनकर धन तथा नाम कमा सकते हैं। सहोदरों के लिए यह दशा बहुत खराब हो सकती है। आप पूर्ण ईश्वर भक्त होंगे तथा केवल अपने घर पर ही नहीं, वरन् पवित्र स्थानों जैसे मन्दिर आदि में भी कई धार्मिक कार्यों को पूरा करेंगे।

### केतु अन्तर्दशा

**(01:10:1979 - 27:02:1980)**

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको अपनी योजनाओं में असफलता और भारी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आप निराश हो सकते हैं तथा कफ एवं लकवा के शिकार हो सकते हैं। आपको धन हानि हो सकती है। आप उचित सोच से वंचित हो सकते हैं। यदि आपकी जन्मकुण्डली में शनि शुभ है, तो आपको शुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। इस अशुभ दशा पर विजय पाने के लिए आपको भगवान शिव और देवी पार्वती की अराधना करनी चाहिए।

### शुक्र अन्तर्दशा

**(27:02:1980 - 29:04:1981)**

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, परिस्थितियां ऐसी बन सकती हैं, कि आपको अपने मोहल्ले में रहने वाले किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति की अप्रसन्नता का सामना करना पड़ सकता है और आप साधुजनों एवं उपदेशकों के शाप से प्रभावित हो सकते हैं। जीवनसाथी की बेतुकी बातों पर झगड़ा करने के कारण आप जीवनसाथी के सुख से वंचित हो सकते हैं।

हालांकि, आंतरिक यौन संबंधों के बनने के कारण वैवाहिक संबंध नहीं टूटेगा और वे आपको बार–बार आपस में बांधने में मदद करेंगी। संबंधी भी आपसे अलग नहीं होंगे। वे आपके घरेलू मामलों में दखल दे सकते हैं और आपके जीवन को कष्टमय तथा वेदनापूर्ण बना सकते हैं। आपको पुत्री की प्राप्ति हो सकती है। अन्तर्दशा के मध्य में कुछ शुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। यदि शुक्र बली है, तो अशुभ प्रभावों से थोड़ी राहत मिल सकती है।

## रवि अन्तर्दशा
**(29:04:1981 - 04:09:1981)**

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपमें अपने परिवार और संबंधियों के लिए अरूचि उत्पन्न हो सकती है। आपका उपदेशकों के साथ बहुधा विवाद हो सकता है। सरकारी अधिकारियों से आपको परेशानी हो सकती है। आप बुखार, जलने या कफ की समस्या से ग्रसित हो सकते हैं। आपके परिवार में किसी का स्वास्थ्य बहुत खराब हो सकता है। यह आपका कोई भाई/बहन या उपदेशक या पिता हो सकता है। हालांकि, विभिन्न स्रोतों से आपको आय हो सकती है। विदेश यात्रा से भी आपको लाभ होने के संकेत हैं।

## चंद्र अन्तर्दशा
**(04:09:1981 - 05:04:1982)**

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको धन आसानी से प्राप्त होगा, लेकिन यह जिस प्रकार से आयेगा, उसी प्रकार से खर्च हो सकता है। संतानों के कारण आप चिन्तित रह सकते हैं। नवजात पुत्र के कारण आपको अधिक परेशानी हो सकती है। आपके जीवनसाथी और नौकर को आपसे कुछ सहानुभूति होगी। यदि आप अविवाहित हैं, तो आपका विवाह हो सकता है। यदि आपकी माता इस दशा के दौरान किसी संतान को जन्म देती हैं, तो प्रसव समय आपकी माता को बहुत कष्ट हो सकता है। संक्षेप में, आप सुख और दुख समान अनुपात में अनुभव करेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति औसत स्तर की हो सकती है। यदि चंद्रमा बली है, तो आपको अधिक लाभकारी परिणाम प्राप्त होंगे।

## मंगल अन्तर्दशा
**(05:04:1982 - 01:09:1982)**

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपके परिवार के किसी सदस्य का स्वास्थ्य बहुत खराब हो सकता है। साँप काटने या आग से जलन आदि की भी संभावना है। शत्रु आपको नुकसान पहुँचाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन वे सफल नहीं होंगे। हालांकि, आप तनावग्रस्त रह सकते हैं। आपकी बहुमूल्य वस्तुओं की चोरी हो सकती है।

## राहू अन्तर्दशा
**(01:09:1982 - 19:09:1983)**

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको कोई ऐसा काम करना पड़ सकता है, जिसे आप करना पसन्द नहीं करेंगे। आपको किसी मामले में प्रायः

सरकार की तरफ से चेतावनी या धमकी मिल सकती है। आपकी शत्रुओं और धूर्त लोगों से अनावश्यक बहस हो सकती है और आप न सिर्फ स्वयं के लिए, अपितु अपने परिवार के सदस्यों के लिए परेशानियों को निमंत्रण दे सकते हैं। आपके शरीर के किसी भाग को चोरों या शत्रुओं के कारण चोट पहुँच सकती है।

## गुरु अन्तर्दशा

**(19:09:1983 - 25:08:1984)**

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपकी संतानों की पढ़ाई और व्यवसाय में सफलता आपको संतुष्ट बनायेगी। आपका धार्मिक कार्यों के प्रति रूझान होगा। धर्मपरायण तथा साधुजनों के सम्पर्क में आने के लिए आपको बहुत सारे अवसर प्राप्त होंगे तथा आप उनसे लाभ प्राप्त करेंगे। आप सरकार से समर्थन की आशा कर सकते हैं। आपको भूमि और भवन का सुख प्राप्त होगा। भूमि और सट्टों जैसे लॉटरी, शेयर आदि से आपको आय प्राप्त होगी। यदि आप संतानोत्पत्ति में सक्षम हैं तथा संतान की आशा कर रहे हैं, तो आपको भाग्यशाली पुत्र की प्राप्ति होगी।

## शनि अन्तर्दशा

**(25:08:1984 - 04:10:1985)**

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको अप्रत्याशित दुखों का सामना करना पड़ सकता है। आपका विरोधियों के साथ अनावश्यक विवाद हो सकता है और आपके शरीर पर चोट लग सकती है। शत्रुओं से संघर्ष के कारण उत्पन्न क्रोध के कारण बाद में उससे होने वाली दुर्घटना से भी आपको चोट लग सकती है। नौकर भी आपके लिए समस्यायें पैदा कर सकते हैं। उनकी सेवाओं की घोर आवश्यकताओं के समय में वे आपको और आपके परिवार को छोड़कर जा सकते हैं। आपकी आय बाधित हो सकती है। विदेशियों से व्यवहार करते समय भी आपको गंभीर परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपके स्तर और स्थिति में उतार–चढ़ाव हो सकता है। आपको कफ और शरीर के अंगों में कमजोरी, जैसे लकवा आदि की समस्या हो सकती है। पूरे शरीर में तीव्र पीड़ा हो सकती है।

## बुध अन्तर्दशा

**(04:10:1985 - 01:10:1986)**

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम होगी। आपको योग्य संतानों की प्राप्ति हो सकती है। आपको उनसे सुख और खुशियां मिलेंगी। आपको भूमि और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा उत्तम मित्रों की संगति का आनन्द प्राप्त होगा। आपकी आय भी बढ़ेगी। आपका दिमाग स्थिर होगा और विभिन्न प्रकार से आप आनन्द प्राप्त करेंगे। हालांकि, आपको मवेशियों और कृषि के नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। अतः आपको कोई भी मवेशी जानवर या कृषि भूमि नहीं रखनी चाहिए। इस अन्तर्दशा के समाप्त होने तक आपको उससे दूर रहना चाहिए। आप भवन रख सकते हैं और उनको किराये पर देकर बिना किसी परेशानी के उनसे उत्तम आय प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपके वरिष्ठ अधिकारी आपके उत्तम काम की प्रशंसा करेंगे और आपको समय से पहले पदोन्नति मिल

सकती है।

## शुक्र दशा
**(01:10:1986 - 01:10:2006)**

वर्तमान समय में आपकी शुक्र की महादशा चल रही है और शुक्र आपकी कुण्डली में नौवें भाव में स्थित है। सामान्यतः यह दशा उत्तम है। आपको उत्तम जीवनसाथी, संतान और मित्र मिलेंगे। सरकार के द्वारा आपको लाभ मिलेगा।

वर्तमान समय में आपकी शुक्र की महादशा चल रही है और शुक्र आपकी कुण्डली में वृश्चिक राशि में स्थित है। शुक्र की अपनी दशा के दौरान, आप दूसरों के मामलों में रूचि लेंगे, यश और सम्मान प्राप्त करेंगे। आप कर्जदार हो सकते हैं, जिससे आपको अपने स्थान को छोड़ कर विदेश में रहना पड़ सकता है। आपमें झगड़ालू प्रवृत्ति भी विकसित हो सकती है।

### शुक्र अन्तर्दशा
**(01:10:1986 - 31:01:1990)**

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको अपने जीवनसाथी से भूरपूर सहयोग और खुशियों के साथ–साथ दूसरी स्त्रियों से भी सुख और आनन्द मिलेगा। पिछली अन्तर्दशा की तुलना में आप साफ कपड़े पहनने में विशेष रूचि लेंगे। आपको विभिन्न लोगों से भी वस्त्र और आभूषण उपहार के रूप में मिल सकते हैं। आप विभिन्न लोगों के सहयोग से धन अर्जित कर सकते हैं। दवाओं से आप आय प्राप्त करेंगे। सामान्यतः आपको विभिन्न स्रोतों से धन प्राप्त होगा। लेकिन आय का एक बड़ा हिस्सा मौज मस्ती और मनोरंजन में खर्च हो सकता है। आप वाहन भी प्राप्त कर सकते हैं।

### रवि अन्तर्दशा
**(31:01:1990 - 31:01:1991)**

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, संबंधियों के कारण आपको भारी धन हानि हो सकती है। संबंधियों पर अंधविश्वास आपकी परेशानी का कारण हो सकता है। आपको उनके कपट का ज्ञान तब होगा, जब आप लगभग हर चीज खो चुके होंगे। अतः आपको इस पूरी अन्तर्दशा के दौरान उन पर भरोसा करते समय बहुत अधिक सावधान रहना चाहिए। वे आपकी हर वस्तु को, जो उनको मिलेगी, हड़प सकते हैं। आप गले, नाक या सीने और उदर के रोगों से ग्रसित हो सकते हैं। आपकी आँखों में संक्रमण हो सकता है। बड़े और विशिष्ट लोग आपकी कार्य शैली को नापसन्द कर सकते हैं। सहकर्मी आपसे ईर्ष्या कर सकते हैं। आपके नये शत्रु बन सकते हैं। यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको विभिन्न क्षेत्रों में कड़ी स्पर्धा का सामना करना पड़ सकता है।

### चंद्र अन्तर्दशा
**(31:01:1991 - 01:10:1992)**

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आप सिर, दाँत, नाखून, उदर या लिवर के रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। नाखूनों में किसी प्रकार की विकृति हो सकती है। कीटाणुओं के संक्रमण या किसी दुर्घटना के कारण आपके नाखूनों को हानि पहुँच सकती है या उनके संक्रमण के कारण पेट में कीड़े पड़ सकते हैं। आपको पीलिया भी हो सकता है। आपको कुत्ता, बन्दर या कोई जंगली जानवर जैसे बाघ, बिल्ली आदि के काटने का भय हो सकता है। आपके व्यय आय से अधिक हो सकते हैं। आपको प्रचूर धन प्राप्त होगा, लेकिन व्यय हो जायेगा और आप ऋणी हो सकते हैं। वाहनों और महिलाओं के द्वारा आपको धन प्राप्त हो सकता है। आप स्त्रियों के सम्पर्क में आ सकते हैं, जिन्हें व्यापारिक या आर्थिक सलाह आदि के रूप में आपकी मदद की आवश्यकता हो सकती है। इस मदद के दौरान आपके साथ–साथ उनको भी लाभ होगा। इस दौरान आपके उनसे संबंध भी बन सकते हैं। परिणामस्वरूप आप और आपके जीवनसाथी या परिवार के सदस्यों के बीच में कलह हो सकती है। आपमें ईश्वर के प्रति गहरी भक्ति भावना विकसित होगी और आप भगवान की आराधना करेंगे। आप कई धार्मिक कार्यों जैसे हवन, यज्ञ और अन्य सात्विक कार्य करेंगे। यदि आप युद्ध में संलग्न हैं, तो आपको सफलता मिलेगी और शत्रु को परास्त कर आप लाभ प्राप्त करेंगे।

### मंगल अन्तर्दशा
### (01:10:1992 - 01:12:1993)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आप सोने और उससे बने आभूषण तथा तांबे की वस्तुओं में गहरी रूचि ले सकते हैं। आप स्वर्ण, ताम्र या लौह भस्म से बनी औषधियों का सेवन कर सकते हैं या उनका वितरण कर सकते हैं या आप धातुओं से संबंधित कोई शोध कार्य कर सकते हैं। लेकिन आपको सफलता अगली आने वाली राहु की अन्तर्दशा में मिलेगी। आप भूमि और सम्पत्तियां प्राप्त कर सकते हैं या उनको बेच कर लाभ अर्जित कर सकते हैं। चंद्रमा के अन्तर्दशा के दौरान आपको उन स्त्रियों से कोई गलतफहमी हो सकती है, जिनके साथ आपको अतिरिक्त लगाव है। आपको स्त्री समुदाय से एक प्रकार की नफरत हो सकती है– विशेषकर ऐसी महिलाओं के प्रति संशय के अहसास के कारण। आपको सम्मान प्राप्त होगा तथा विभिन्न स्रोतों से आप आनन्द प्राप्त करेंगे। आप दूसरों की गलतियां ढूंढ सकते हैं, जिसके कारण प्रायः आपका उनसे तनाव हो सकता है। आप गतिविधियों के प्रत्येक क्षेत्र में दक्षता हासिल करना चाहेंगे और निराश हो सकते हैं। आप रक्त चाप, बवासीर या कफ और दिमाग से संबंधित रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। रक्त की अशुद्धता के कारण भी समस्यायें हो सकती हैं।

### राहू अन्तर्दशा
### (01:12:1993 - 01:12:1996)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको अप्रत्याशित धन का लाभ हो सकता है। आपको अपनी खोई हुई सम्पत्ति वापस प्राप्त करने के अवसर मिलेंगे। संतान की अध्ययन और रोजगार में सफलता आपको प्रसन्नता प्रदान करेगी। आपको सबसे सम्मान मिलेगा। शत्रुओं को आप परास्त करेंगे। यदि अब तक कोई अनिर्णित सम्पत्ति विवाद है, तो इस अन्तर्दशा के

अन्त तक वह सुलझ जायेगा। हालांकि, आपको उस सम्पत्ति का सुख अगली अन्तर्दशा जो कि बृहस्पति की होगी, उसके दौरान मिलेगा। आपको चोट लगने का तथा आग से खतरा हो सकता है। चोर आपके लिए परेशानी का कारण बन सकते हैं। यह खतरा आपको आर्थिक सौदों में हो सकता है। आपको किसी प्रकार की असुरक्षा और दंड का भय हो सकता है। हालांकि, परिणाम बहुत विषम नहीं होंगे। आपको राहु मंत्र का जाप और गरीबों को खाना खिलान चाहिए। साथ ही, आपको सांपों को अण्डा और दूध अर्पित करना चाहिए।

### गुरु अन्तर्दशा
### (01:12:1996 - 01:08:1999)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। आपको भिक्षा देने और धार्मिक कार्यों को करने के कई सारे अवसर मिलेंगे। आप स्वयं या पुजारियों से पूजा और हवन करेंगे या करवायेंगे। भोजन की प्रचूरता होगी। आपको भूमि, सम्पत्ति और आभूषण तथा संतान की प्राप्ति होगी। आप खुशियों और सुखों के सागर में गोते लगायेंगे। अपने पद और अधिकर से आप विभिन्न प्रकार के आनन्द प्राप्त करेंगे।

### शनि अन्तर्दशा
### (01:08:1999 - 01:10:2002)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको समाज और सरकार में ऊँचे पदों वाले लोगों का सहयोग मिलेगा। आप विख्यात होंगे। आप समाज के नेतृत्वकर्ता या किसी ऊँचे राजनीतिक पद पर आसीन हो सकते हैं। आपको कुलीन बड़ी महिलाओं के साथ सम्पर्क बनाने के अवसर मिलेंगे। आपकी आय व्यय से अधिक होगी, लेकिन आपको खर्च में सावधानी बरतनी चाहिए। आप धन, वस्तुओं और आभूषणों का संग्रह करेंगे तथा इस पूरी अन्तर्दशा के दौरान आनन्द प्राप्त करेंगे। आपके संबंधी भी संपन्न होंगे। गांवों, कस्बों और शहर पर आपका अधिकार होगा।

### बुध अन्तर्दशा
### (01:10:2002 - 01:08:2005)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आप नाम, यश और धन प्राप्त करेंगे। आप अपने प्रियजनों और संतानों से स्नेह एवं सम्मान प्राप्त करेंगे। आपके शत्रु परास्त होंगे। पेड़ों, फलों और मवेशियों से आप लाभ प्राप्त कर सकते हैं। सरकार या भूमि से धन प्राप्त होगा। इस अन्तर्दशा के दौरान आपकी अधिकतर कामनायें पूरी होंगी। आपको जहरीले जानवरों को काटने से कोई रोग हो सकता है।

### केतु अन्तर्दशा
### (01:08:2005 - 01:10:2006)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपको कई दुखों का सामना करना पड़ सकता है। आपके जीवनसाथी

और संतान भी पीड़ित हो सकते हैं। ईश्वर भी आपसे मुख मोड़ सकते हैं। आपको परित्यक्त और वर्जित स्त्रियों के साथ आनन्द प्राप्त करने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। संबंधियों और शत्रुओं से आपके बहुधा झगड़े हो सकते हैं। हालांकि, शत्रु आपको किसी तरह की हानि नहीं पहुँचा पायेंगे। आपके शरीर के किसी अवयव को हानि नहीं पहुँच सकती है।

## रवि दशा

**(01:10:2006 - 01:10:2012)**

वर्तमान समय में आपकी सूर्य की महादशा चल रही है और सूर्य आपकी कुण्डली में दसवें भाव में स्थित है। सूर्य की दशा के दौरान, आपकी सभी अभिलाषायें पूरी होंगी, आप एक राजा की तरह होंगे। आपकी प्रगति में कोई बाधा नहीं आएगी। लेकिन आपकी माता को विभिन्न प्रकार की परेशानियां और रोग हो सकते हैं। अपने मित्रों और जीवनसाथी से विरह के कारण आपको उदासी हो सकती है। हालाँकि, आपको पिता से सारे सुख और उनकी सम्पत्ति प्राप्त होगी, यदि सूर्य की दशा युवावस्था में पड़ती है। इस दशा में आप प्राचीन ग्रन्थों का ज्ञान, भूमि और सम्पत्ति, पैतृक धन व सम्पत्ति, नाम व यश प्राप्त करेंगे। आपको उत्तम संतानों का सुख प्राप्त होगा। आप उत्तम लोगों के लिए अपनी यथाशक्ति हर काम करेंगे। आप किसी के अधीन होकर नहीं रहेंगे। आप किसी को हानि नहीं पहुंचायेंगे। अपनी 18वर्ष की आयु में सूर्य की दशा होने पर आपको ऊँची शिक्षा प्राप्त होगी। आप कुएं खुदवायेंगे, सराय या अनाथालय बनावयेंगे या अनाथों की मदद करेंगे।

वर्तमान समय में आपकी सूर्य की महादशा चल रही है और सूर्य आपकी कुण्डली में धनु राशि में स्थित है। सूर्य की अपनी दशा के दौरान, आपको जीवनसाथी और संतानों से सुख, सरकार से समर्थन और धार्मिक व सन्तजनों से आशीष मिलेगा। आपको प्राचीन ग्रंथों के अध्ययन में गहरी रूचि होगी। आपको सभी से सम्मान मिलेगा। आपका हठी होना, आपकी सबसे बड़ी कमी होगी, फिर भी आप युक्तिपूर्ण तरीके से काम करेंगे। यह दशा चंहुमुखी समृद्धि प्रदान करेगी। यदि आप व्यापार शुरू करना चाहते हैं, तो इस दशा के दौरान कर सकते हैं। आपकी कुण्डली में यह दसवां भाव है, इस दशा के दौरान आप ज्योतिष, फोटोग्राफी, विधि, राजनीति, हाथी, घोड़ों और वाहनों के व्यापार, पूर्ण या अल्पकालिक अनुशिक्षण से धन अर्जित करेंगे।

### रवि अन्तर्दशा

**(01:10:2006 - 19:01:2007)**

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। आपको सरकार से सम्मान प्राप्त होगा और आप अपनी विशेषज्ञता के क्षेत्र में नाम और यश प्राप्त करेंगे। आपको किसी सुदूर और अलग स्थान पर रहने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। आप उत्तम मात्रा में धन अर्जित करेंगे। आप सरकार या शासित वर्ग से समर्थन/आय प्राप्त कर सकते हैं। आपकी कुण्डली में सूर्य कमजोर है, आप सिरदर्द और उदर पीड़ा, कान में दर्द, गुर्दे की समस्या, बुखार और कफ से पीड़ित हो सकते हैं। अपने पिता से आपके संबंध आत्मीय नहीं हो सकते हैं। आपके संबंधी आपको बहुत परेशान कर सकते हैं। आपकी आय कम और व्यय अधिक हो सकता है। आप राजसी दिखावा करने में भारी व्यय कर सकते हैं और जिसके परिणामस्वरूप आप कर्जदार

हो सकते हैं। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य उच्चस्थ या केन्द्र या त्रिकोण या ग्यारहवें भाव में स्थित है, सूर्य की इस अन्तर्दशा में आप जो भी काम करेंगे, उसमें भारी लाभ प्राप्त होगा, सरकार से आपको समर्थन मिलेगा, आपकी अधिकतर कामनायें पूरी होंगी और आपका विवाह भी हो सकता है।

### चंद्र अन्तर्दशा
### (19:01:2007 - 20:07:2007)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा लग्न से केन्द्रीय अथवा त्रिकोण भाव में है, चंद्रमा की यह अन्तर्दशा अति उत्तम होगी। आपका विवाह हो सकता है, धन की वृद्धि होगी, आप क्रय या विरासत के माध्यम से भूमि और भवन प्राप्त करेंगे, आपको विभिन्न स्रोतों से आय तथा वाहन और सुख प्राप्त होंगे। आपको संतान की प्राप्ति होगी। आपका सदाचारी लोगों से सम्पर्क बढ़ेगा, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, या यदि पहले से आप किसी रोग से पीड़ित हैं, तो आपको उससे मुक्ति मिलेगी। आपका अपने शत्रुओं और विरोधियों से समझौता होगा और अनुकूल समय आने पर आप उन्हें परास्त करेंगे। आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा अपने या उच्चस्थ भाव में है, आपको अपने जीवनसाथी और संतानों से पूर्ण सुख मिलेगा। आपको संतान की प्राप्ति होगी और धन लाभ प्राप्त होगा। आपको सराकार से समर्थन और लाभ मिलेगा।

### मंगल अन्तर्दशा
### (20:07:2007 - 25:11:2007)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। आपकी कुण्डली में मंगल नवमेश या एकादशेश के साथ स्थित है, आपको उत्तम लाभ, यदि सैन्य सेवा में हैं, तो अधिकारपूर्ण ऊँचे पद की प्राप्ति, मानसिक शांति, संबंधियों से मदद और सुख, सहोदरों को सम्पन्नता प्राप्त होगी। आपको अपने सगे भाई–बहनों से मदद मिलेगी। आपकी कुण्डली में मंगल कमजोर है और सूर्य से छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है, इस अन्तर्दशा के दौरान आप निष्ठुर, चालाक, विभिन्न प्रकार की मानसिक तनावों से ग्रस्त, दुर्घटना के कारण अस्पताल में भर्ती, लगभग कारावासीय सजा, नजदीकी संबंधियों का वियोग, भाइयों से शत्रुता, भूमि और सम्पत्ति की हानि, पद की हानि या कार्य क्षेत्र में बहुत सारी परेशानियां, हथियारों और आग से खतरा तथा कई प्रकार की अकथित वेदनाओं जैसे अशुभ परिणामों को प्राप्त कर सकते हैं। आपकी कुण्डली में मंगल अपने नीचस्थ भाव में है या शत्रु ग्रह की इस पर दृष्टि है, आपको सरकारी प्रकोप के कारण बहुत सारा धन गवाँना पड़ सकता है। यह कर, अधिकारियों के द्वारा जुर्माने या अनजाने में आपके द्वारा गबन या आपकी लापरवाही के कारण सरकारी धन की हानि के रूप में हो सकता है। आपको गठिया, पेचीश, बुखार या पित्तरस संबंधी रोग हो सकते हैं। कुछ विद्वान ज्योतिषियों के अनुसार, यदि आपकी जन्मकुण्डली में मंगल उत्तम स्थिति में है या उस पर मित्र या शुभ ग्रह की दृष्टि है, तो भी सूर्य की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के दौरान आपको शुभ परिणाम मिलने की संभावना कम हो सकती है।

### राहू अन्तर्दशा
### (25:11:2007 - 19:10:2008)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के पहले दो मास में आपको भारी धन हानि, अनावश्यक भय, रक्त की अशुद्धता, सर्पदंश या सांपो से भय या सर्पों का स्वप्न, शरीर में फोड़े, जीवनसाथी और संतान के कारण दुख (जीवनसाथी और संतान की बीमारी या उनका आपके प्रति नकारात्मक रवैया या जीवनसाथी से अलगाव/तलाक या उसके द्वारा अनैतिक जीवनशैली अपनाये जाने के कारण) का सामना करना पड़ सकता है। उसके बाद आप उत्तम परिणामों का आनन्द प्राप्त करेंगे। अतः आपके लिए बेहतर यही होगा कि आप इस अवधि के दौरान कोई ऐसा काम ना करें, जिससे आपको बाद में पछताना पड़े। आप दूरस्थ स्थानों की यात्रा पर जा सकते हैं, ताकि ऐसी स्थिति से आप बच सकें। आपको भगवान शंकर के मंत्रों का जाप और उनकी आराधना करनी चाहिए। कुछ ज्योतिषियों के अनुसार, यदि आपकी जन्मकुण्डली में राहु किसी उत्तम भाव में स्थित है, तो भी सूर्य की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के दौरान यह कोई शुभ परिणाम नहीं दे सकता है। (हालांकि, इस तथ्य पर सहमत नहीं हुआ जा सकता है, क्योंकि कई लोगों को अति उत्तम परिणाम प्राप्त होते देखा गया है।) आपको तीव्र सिर दर्द और आँखों में फोड़ा हो सकता है। आपका धन चोरी हो सकता है या आपको धन की हानि हो सकती है। आपको जहर से खतरा हो सकता है। आपमें शारीरिक सुख प्राप्त करने की कामना विकसित हो सकती है और आपके नये शत्रु बन सकते हैं।

### गुरु अन्तर्दशा
### (19:10:2008 - 07:08:2009)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। बृहस्पति आपकी कुण्डली में केन्द्र या त्रिकोण भाव में या उच्चस्थ या मित्र भाव में है, आप उत्तम बृहस्पति के सभी शुभ परिणामों का आनन्द प्राप्त करेंगे, जैसे सम्मान में बढ़ोत्तरी, अन्न के भंडार में वृद्धि, संतान का जन्म, कामनाओं की पूर्ति, उत्तम कपड़ों और आभूषणों की प्राप्ति, सरकार से भारी धन की प्राप्ति आदि। मंत्रणाओं में आपको उत्तम पद प्राप्त होगा। आप संतानों से भी धन प्राप्त करेंगे। आप सद्कृत्यों और उत्तम परम्परागत अनुपालनों को पूरा करेंगे। बृहस्पति सूर्य की महादशा में अपनी अन्तर्दशा के दौरान बहुत अशुभ परिणाम नहीं देगा। विभिन्न स्रोतों से धनागमन, ईश्वर की आराधना, साधुजनों, बड़े संबंधियों से आनन्द, कान और फेफड़ों के विकार, शत्रुओं का नाश होगा।

### शनि अन्तर्दशा
### (07:08:2009 - 20:07:2010)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। आपकी जन्मकुण्डली में शनि केन्द्र अथवा त्रिकोण भाव में स्थित है, शनि की इस अन्तर्दशा में आप अपने शत्रुओं का नाश करेंगे और शुभ समारोहों में भाग लेंगे। हालांकि, आपकी आय सीमित होगी और सुख कम हो सकते हैं। दूसरे शब्दों में, सूर्य और शनि के परस्पर शत्रु होने के कारण अन्तर्दशा के बहुत अशुभ होने की धारणा के बिल्कुल विपरीत, केन्द्र अथवा त्रिकोण भाव में स्थित शनि की अन्तर्दशा बहुत महत्वपूर्ण नहीं हो सकती है अर्थात जीवन सामान्य तरीके से चलेगा। आपकी जन्मकुण्डली में शनि सूर्य या लग्न से छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है, या उसके साथ उनका कोई संबंध है, आप तपेदिक, लकवा, फोड़ा, बुखार या मूत्र जनित रोगों से ग्रसित हो सकते हैं। सभी

कामों में बाधा आ सकती है। आप बुरे लोगों की संगति में पड़ सकते हैं, शत्रु आपकी धन हानि कर सकते हैं। दूरस्थ स्थानों की अप्रत्याशित और अनचाही यात्रायें आपके व्यय को बढ़ा सकती है। शनि की अन्तर्दशा के आरम्भ में आपको, आपके मित्रों और संबंधियों को अशुभताओं का सामना करना पड़ सकता है।

### बुध अन्तर्दशा
### (20:07:2010 - 26:05:2011)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। आपकी कुण्डली में बुध उच्चस्थ या अपने भाव या लग्न से केन्द्रीय भाव अथवा त्रिकोण भाव में है, इस दौरान आपको भूमि और सम्पत्ति का लाभ, अधिकार और शक्ति की प्राप्ति, विभिन्न कार्यों में उत्साह, वाहनों और उत्तम परिधानों का लाभ, जीवनसाथी और संतान से खुशियां प्राप्त होंगी। सूर्य की महादशा में बुध की अन्तर्दशा और उसमें बुध की ही प्रत्यंतर दशा के दौरान आपको मानसिक स्थिरता प्राप्त होगी और आपकी बौद्धिक क्षमता में वृद्धि होगी। आपमें गलत और सही का फर्क करने की क्षमता होगी, अतः आपके द्वारा लिये गये आर्थिक निर्णय सही होंगे। मौजूदा व्यापार या रोजगार में लाभ होगा। इस दशा के दौरान व्यापार का विस्तार और रोजगार या किसी अन्य क्षेत्र में सुधार सभी कुछ संभव होगा। आप सोना, रत्न और आभूषण खरीदेंगे। आपका जीवन बहुत सहज होगा।

### केतु अन्तर्दशा
### (26:05:2011 - 01:10:2011)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आप विभिन्न कारणों से भारी दुखों का सामना कर सकते हैं, आपको विभिन्न रोग और धन की हानि हो सकती हैं। सरकारी अधिकारी और संबंधी आपके कष्ट के कारण हो सकते हैं। आपकी कुण्डली में लग्न से केतु तीसरे, छठे, दसवें या ग्यारहवें भाव में है, आपको संतानों से खुशियों और आराम कामनाओं की पूर्ति, धन लाभ, उत्तम परिधान और गहने प्राप्त होंगे, आपके नाम और यश में वृद्धि होगी।

### शुक्र अन्तर्दशा
### (01:10:2011 - 01:10:2012)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र अपने या उच्चस्थ या केन्द्र या त्रिकोण या अपने मित्र के भाव में स्थित है, शुक्र की इस अन्तर्दशा में आप अपनी प्रियतम स्त्रियों के साथ आनन्द प्राप्त करेंगे, आपको धन का लाभ, विदेश यात्रा के अवसर, कुछ क्षेत्रों में सिद्धि प्राप्त होगी। आपका दृष्टिकोण आध्यात्मिक हो सकता है, आपकी वीरता और जीवनशक्ति में वृद्धि होगी, आप किसी काम को शुरू करने के उत्साहित रहेंगे, आपको बड़े समारोहों में शामिल होने के निमंत्रण प्राप्त होंगे। आप उत्तम परिधान और आभूषण प्राप्त करेंगे। दूसरे शब्दों में यह दशा आपके लिए अति उत्तम होगी। अन्तर्दशा के तीन भागों में से पहले भाग में आपको वाहनों की प्राप्ति होगी, दूसरे भाग में आप सभी प्रकार की खुशियां और सुख प्राप्त करेंगे तथा तीसरे भाग में आप अपने परिश्रम से अर्जित नाम और यश खो सकते हैं, मित्रों और संबंधियों के साथ आपका विवाद हो सकता है, आप गले की बीमारी, लकवा, शारीरिक पीड़ा का शिकार हो सकते

हैं। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य से शुक्र आठवें या बारहवें भाव में स्थित है, आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है या गंभीर रोग हो सकते हैं, जैसे गले सिर या गुदा की बीमारी, पेट में दर्द, ल्यूकोडर्मा आदि। आपको अपने निवास स्थान से दूर जाना पड़ सकता है, धन और कृषि की हानि हो सकती है, आपके जीवनसाथी और संतानों को कष्ट हो सकता है। इस दशा के दौरान आपको श्री रूद्रम् मंत्र का जाप करना चाहिए।

## चंद्र दशा

**(01:10:2012 - 01:10:2022)**

वर्तमान समय में आपकी चंद्रमा की महादशा चल रही है और चंद्रमा आपकी कुण्डली में पांचवें भाव में स्थित है। इस भाव में चंद्रमा की दशा के दौरान आपको अपनी संतानों से पूर्ण सुख प्राप्त होगा। एक पुत्र का जन्म हो सकता है। व्यापार या नौकरी में भी आपकी प्रगति होगी।

वर्तमान समय में आपकी चंद्रमा की महादशा चल रही है और चंद्रमा आपकी कुण्डली में कर्क राशि में स्थित है। चंद्रमा की अपनी दशा के दौरान, आपको जीवनसाथी का सुख मिलेगा, गुणी संतानों की प्राप्ति हो सकती है। आपको उत्तम धन का लाभ होगा, मुकद्मे में आपको सफलता मिलेगी, आपको अप्रत्याशित आय का खजाना प्राप्त होगा, आप प्रायः यात्रायें करेंगे, आपको मवेशियों के द्वारा समृद्धि प्राप्त होगी। विभिन्न ललित कलाओं और जंगल व पर्वतीय क्षेत्रों के भ्रमण में रूचि होगी। आपको गुदा की बीमारी हो सकती है।

### चंद्र अन्तर्दशा

**(01:10:2012 - 01:08:2013)**

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। यदि यह अन्तर्दशा विवाह की अवस्था के दौरान चलती है, और आप अविवाहित हैं, तो आपके विवाह की संभावना है। यदि पहले से विवाहित हैं, तो एक पुत्री का जन्म हो सकता है। आप किसी प्रियजन के विवाह समारोह में शामिल हो सकते हैं। दूसरे शब्दों में आपके भाई–बहनों का विवाह हो सकता है– यदि वे विवाह योग्य हैं। आपको नये परिधान प्राप्त होंगे। आपको बहुत ज्ञानी और संस्कारित लोगों के सम्पर्क में आने के बहुत सारे अवसर मिलेंगे। आपको जीवनसाथी और संतानों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। आप अपनी माता की अभिलाषाओं को पूरा करेंगे तथा साथ ही उनका पूर्ण प्रेम, स्नेह और ध्यान आपको मिलेगा। आपको संबंधियों और मित्रों से अवसरीय मदद मिलेगी। आपको चहुंमुखी संपन्नता तथा उत्तम नींद प्राप्त होगी।

### मंगल अन्तर्दशा

**(01:08:2013 - 02:03:2014)**

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। आपको पैतृक सम्पत्ति और धन की हानि हो सकती है। रक्त की अशुद्धता, व्यग्रता, कफ, आग, विद्युत और अन्य गर्म चीजों के कारण होने वाले विकारों से आप ग्रस्त हो सकते हैं। आप चोरों और शत्रुओं के कारण अपना धन गवाँ सकते हैं। आपमें धैर्य की कमी हो सकती है और आप हर स्तर पर चिड़चिड़े हो सकते हैं। एक समय पर आप सबसे संतुष्ट

व्यक्ति होंगे, जिसे सांसारिक सुखों की आवश्यकता नहीं होगी, लेकिन अचानक आपका दिमाग पलट सकता है और आप अपने कार्य क्षेत्र में असफल हो सकते हैं। आपक स्थानान्तराण हो सकता है या दंड अथवा गबन के आरोप के कारण आप पूर्व प्राप्त पद से हाथ धो सकते हैं।

### राहू अन्तर्दशा
### (02:03:2014 - 01:09:2015)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। आप अनजाने में कई बुरे और गलत काम कर सकते हैं तथा बाद में उसके लिये पछतावा होगा। लेकिन तब तक बहुत देर हो सकती है और सबको अपना शत्रु बना सकते हैं। हालांकि, चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा जो आगे आने वाली है, के दौरान विभिन्न चीजों के लिए आपके रवैये और व्यवहार में वास्तविक बदलाव आयेगा। आपके संबंधियों को समस्यायें हो सकती हैं और आपको उन पर धन खर्च करने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। आपको जलीय पदार्थों से विषाक्तता होने की संभावना हो सकती है। आप बुखार, अपच या गठिया रोग से ग्रसित हो सकते हैं। आपको आंधी, तूफान और तड़ित से खतरा हो सकता है। आपको मदिरा से सर्वथा दूर रहना चाहिए– जैसाकि यह एक जलीय पदार्थ है। चूंकि आपकी आय से व्यय अधिक हो सकता है, अतः आपको धन व्यय करते समय सावधानी बरतनी चाहिए।

### गुरु अन्तर्दशा
### (01:09:2015 - 31:12:2016)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा शुभ और उत्कृष्ट होगी। यदि बृहस्पति आपकी कुण्डली में शुभ नहीं भी है, तो भी आपको विषम परिणाम नहीं प्राप्त होंगे। आपमें राहु की अन्तर्दशा– जो पहले आयेगी– के दौरान सहिष्णुता की भावना का विकास होगा और आपको प्राप्त सीख बृहस्पति की अन्तर्दशा के दौरान पूरी तरह से आपको एक नया इंसान बनायेगी। आप धार्मिक सिद्धान्तों का पालन करेंगे और भिक्षा देंगे। आपकी सोच में परिपक्वता होगी और गलत–सही की पहचान करने की क्षमता होगी।

आपको उत्तम कपड़ों और आभूषड़ों को पहनने में अधिक रूचि होगी। आप उत्तम मित्रों की संगति का आनन्द प्राप्त करेंगे। अधिकतर लोग आपको पसन्द करेंगे। आपको सरकार से समर्थन मिलेगा। विभिन्न स्रोतों से आप आय प्राप्त करेंगे और संतानों के मामले में आप बहुत सुखी होंगे। आपकी संतानें भी आपको खुशियां प्रदान करेंगी। आपमें वाहन प्राप्त करने की चाह होगी, जो इस अन्तर्दशा के अन्त तक पूरी होगी।

### शनि अन्तर्दशा
### (31:12:2016 - 01:08:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए बहुत उत्तम नहीं हो सकती है। आपको अकथित परेशानियों का सामना करना पड़ सकता

है। आप संबंधियों के कारण दुख और खतरों का सामना कर सकते हैं। आप, आपका जीवनसाथी, संतानें, माता–पिता एक साथ कई रोगों से ग्रसित हो सकते हैं। आपका चिकित्सकीय खर्चा बढ़ सकता है। आप उपचार के विभिन्न तरीके अपना सकते हैं और धन बर्बाद कर सकते हैं। हालांकि, अन्तर्दशा के अन्त में आपको कोई ऐसा व्यक्ति मिल सकता है जो कुछ उपचार के तरीके बतायेगा और आप उनका प्रयोग आखिरी उपाय के रूप में करके परिणाम प्राप्त करेंगे।

बिना उपायों के प्रयोग के अगली बुध की अन्तर्दशा में सुधार होना तय है– जो कि सबसे उत्तम दशा होगी। परिस्थितियों के कारण आपको खुशियां प्राप्त होने में कठिनाई आ सकती है। आपको अपनी माता के स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए– जैसाकि यह अन्तर्दशा माता के लिए संकटकरी हो सकती है। आपको अपने परिवार के बड़ों या पारिवारिक देवता का शाप लग सकता है। आपका शरीर कमजोर हो सकता है और आपको अपने स्वास्थ्य में सुधार करने में बहुत परेशानी हो सकती है। डॉक्टर रोग का पता लगाने में असफल हो सकते हैं। अन्ततः आपको पता चल सकता है कि कोई अदृश्य ताकत आपके शरीर के अन्दर है। आपको सरकारी अधिकारी के क्रोध का सामना करना पड़ सकता है।

### बुध अन्तर्दशा
### (01:08:2018 - 31:12:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः धन प्राप्त करने के लिए यह सबसे उत्तम दशा है। आपको निरन्तर धन प्राप्त होगा। हालांकि, मात्रा आपके परिवार की पृष्ठभूमि और आपको प्राप्त पद के स्तर के अनुसार होगी। आपको सुन्दर परिधान, आभूषण तथा नये मवेशी प्राप्त होंगे। आप अपने सभी उपक्रमों में सफलता और विभिन्न तरीकों से लाभ की आशा कर सकते हैं। आपके नाम और यश में वृद्धि होगी तथा आपको समाज में उचित स्थान प्राप्त होगा। नये प्राप्त ज्ञान और शिक्षा से आप संपन्नता प्राप्त करेंगे। यदि आपकी कुण्डली में बुध कमजोर भी है, तो भी इस अन्तर्दशा के दौरान आपको बहुत परेशानी नहीं होगी।

### केतु अन्तर्दशा
### (31:12:2019 - 01:08:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। आप मानसिक तनाव से गुजर सकते हैं। आपके प्रियजनों को निराशा का सामना करना पड़ सकता है। आपको धन हानि हो सकती है। प्रतिकूल परिस्थितियों और वातावरण के साथ आपमें दूसरों को धोखा देने की प्रवृत्ति हो सकती है। पानी और जलीय चीजों से आपको खतरा हो सकता है। अतः आपको पानी से संबंधित गतिविधियों जैसे तैराकी, नदी, सागर या तालाब में स्नान आदि से दूर रहना चाहिए। द्रव रसायनों से संबंधित किसी व्यापार में आपको संलग्न नहीं होना चाहिए। हालांकि, आपको इसमें लाभ हो सकता है, लेकिन विस्फोट होने या जहर फैलने का इसमें खतरा हो सकता है।

### शुक्र अन्तर्दशा

**(01:08:2020 - 02:04:2022)**

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। आप नावों या जहाजों से यात्रायें करेंगे और सोना, पानी, रत्नों, महिलाओं और कृषि से संबंधित सामानों के व्यापार में संलग्न रहेंगे। आप महिलाओं के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने में गहरी रूचि लेंगे। संतान, मित्र और मवेशी प्राप्त करने के लिए यह अनुकूल दशा है। यदि आपकी कुण्डली में शुक्र बहुत बली नहीं है, तो भी विषम परिणाम नहीं मिलेंगे।

### रवि अन्तर्दशा
**(02:04:2022 - 01:10:2022)**

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। आप सरकारी अधिकारियों से समर्थन प्राप्त करने की आशा कर सकते हैं। आप अत्यधिक साहस और वीरता का प्रदर्शन करेंगे। समाज में आपको सम्मान मिलेगा। रोगों से मुक्ति मिलेगी। हालांकि, कभी–कभी आपको पित्त रस और वायु विकार हो सकते हैं। आपको दुर्घटना के कारण चोट लग सकती है। एक तरफ आपको उत्तम मात्रा में धन मिलेगा, लेकिन आप चोरी आदि के कारण उसको खो भी सकते हैं। आपकी कुण्डली में सूर्य अनुकूल नहीं है, आपको उष्ण रोग हो सकते हैं, शत्रुओं से परेशानी हो सकती है और आपको भारी दुख का सामना करना पड़ सकता है।

## मंगल दशा
**(01:10:2022 - 01:10:2029)**

वर्तमान समय में आपकी मंगल की महादशा चल रही है और मंगल आपकी कुण्डली में पांचवें भाव में स्थित है। मंगल की दशा के दौरान, आपको अपने सभी उपक्रमों में निराशा हो सकती है। अतः आपको किसी परियोजना में हाथ नहीं डालना चाहिए और साथ ही अपने मौजूदा व्यापार को सावधानी से चलाना चाहिए। किसी को दिया हुआ ऋण आपको वापस नहीं मिल सकता है। आपको व्यापार में उधारी देने का कार्य कदापि नहीं करना चाहिए। आपको चुगलखोरों और कमजोर दिमाग वाले लोगों से दूर रहना चाहिए, जैसाकि वे आपको अपने स्वार्थ के लिए पथभ्रष्ट कर सकते हैं। आप नशे और जुए के आदी हो सकते हैं। आप एक के बाद एक पाप कर्म कर सकते हैं। आपकी संतानों को खतरा हो सकता है। मंगल के पांचवें भाव में होने पर संतान प्राप्ति का योग नहीं हो सकता है। यदि संतान का योग हुआ भी, तो संतान रोगी प्रकृति की हो सकती है। आपको तीव्र और निरन्तर जुखाम हो सकता है, जिससे तपेदिक रोग हो सकता है। आपका घरेलू जीवन अव्यवस्थित और कलहपूर्ण हो सकता है। आपका झुकाव महिलाओं की तरफ हो सकता है, जिससे पहले से खराब घरेलू जीवन और मुश्किल में पड़ सकता है। आपको व्यावहारिक जीवन में केवल हताश होने के लिए अपने शारीरिक ताकत पर घमण्ड हो सकता है। मंगल की दशा के दौरान आपके पिता को भी परेशानी हो सकती है।

वर्तमान समय में आपकी मंगल की महादशा चल रही है और मंगल आपकी कुण्डली में कर्क राशि में स्थित है। मंगल की अपनी दशा के दौरान, कर्क राशि में स्थित होने पर वह नीच का होता है। कृषि वस्तुओं तथा बागों से आपकी आय होगी। यदि आप मशीनरी का काम करेंगे, तो काफी धन कमा सकते हैं, लेकिन मशीने चलाते समय

आपको सावधान रहना चाहिए। स्मरण रहे कि यह राशि मंगल की नीच राशि है। मंगल एक मछुआरे की तरह काम करता है, जो केवल मछली को फंसाने के लिए खाना फेंकता है। यह आपको दशा प्रारम्भ में उत्कृष्ट अवसर देगा, विशेषकर अपनी अन्तर्दशा के दौरान, और उसके बाद ब्याज समेत सब वापस ले सकता है। आपके शरीर के किसी एक या अधिक भागों की क्षति हो सकती है। आप अपने जीवनसाथी और संतानों से दूर रहने के कारण दुःखी हो सकते हैं। मेडिकल की परीक्षाओं में बैठने वाले विद्यार्थी सफलता प्राप्त करेंगे। आप गूढ़ता के कार्यों से लाभ की आशा कर सकते हैं।

**मंगल अन्तर्दशा**

**(01:10:2022 - 27:02:2023)**

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपकी कुण्डली में मंगल बली नहीं है, आप विभिन्न रोगों और रक्त की अशुद्धि से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको किसी हथियार से चोट लग सकती है। बहुधा आपका अपने सगे भाई–बहनों और संबंधियों के साथ विवाद हो सकता है। आप पराई स्त्रियों में रूचि ले सकते हैं। इस दशा के दौरान, आपका अपने भाइयों से अलगाव हो सकता है। आपका शत्रुओं के साथ झगड़ा हो सकता है। आप आपराधिक गतिविधियों में पड़ सकते हैं और भूमि एवं सम्पत्ति की हानि हो सकती है। आप प्रायः चोरों और सरकारी अधिकारियों के कारण मुश्किलों का सामना कर सकते हैं।

**राहू अन्तर्दशा**

**(27:02:2023 - 17:03:2024)**

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको हथियारों, शत्रुओं, चोरों और सरकारी अधिकारियों से खतरा हो सकता है। आपका अपने शत्रुओं के साथ अप्रत्याशित झगड़ा हो सकता है, जो आपको जीवन के हर क्षेत्र में नुकसान पहुँचाने की कोशिश कर सकते हैं। वे आपको विभिन्न आपराधिक गतिविधियों में फँसा सकते हैं। साथ ही पेट, नेत्र और सिर के रोग भी हो सकते हैं। इस अन्तर्दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य बहुत अधिक खराब हो सकता है। यदि जन्मकुण्डली में राहु अनुकूल भी है, तो भी दशा के दौरान बहुत शुभ परिणाम नहीं मिल सकते हैं। आर्थिक क्षेत्र में सुधार होगा, लेकिन आपको अन्य विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके सगे भाई–बहन आपके कट्टर शत्रु बन सकते हैं।

**गुरु अन्तर्दशा**

**(17:03:2024 - 21:02:2025)**

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा मंगल की महादशा में सबसे उत्तम होगी। आपमें स्वयं बलिष्ठ होने का अहसास होगा। आपका दिमाग शांत होगा। सभी प्रक्रियाएं सहज होंगी, कहीं किसी तरह की कोई बाधा या परेशानी नहीं होगी। आप हमेशा व्यस्त रहेंगे। आपको ज्ञानी और साधुजनों के साथ जुड़ने के अवसर मिलेंगे। आप तीर्थयात्रायें करेंगे और उत्तम

कार्यों को करेंगे। विभिन्न स्रोतों से आपको आय प्राप्त होगी। सरकारी अधिकारियों के साथ आपके उत्तम संबंध बनेंगे और आप उनसे लाभ प्राप्त करेंगे। आपको जीवनसाथी, संतानों और मित्रों की संगति का आनन्द प्राप्त होगा। आपको कान और कफ की समस्यायें हो सकती हैं।

### शनि अन्तर्दशा
### (21:02:2025 - 02:04:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपकी जीवनसाथी और संतानें आपको पसन्द नहीं कर सकती हैं। आपका अपने मित्रों और संबंधियों के साथ झगड़ा हो सकता है। आपकी जीवनसाथी और संतानें पीड़ित हो सकती हैं। आप जुए में धन बर्बाद कर सकते हैं, जिससे आप दुख और निर्धनता की कगार पर पहुँच सकते हैं। आप कई गलत काम करने के लिए प्रेरित हो सकते हैं, यदि आप ऐसा नहीं करना चाहेंगे, तो भी। आपको भयंकर रोग हो सकते हैं। अपने वर्तमान निवास स्थान को छोड़ने के लिए आपको बाध्य होना पड़ सकता है। यदि जन्मकुण्डली में शनि बली भी है, तो भी इस दशा के दौरान बहुत शुभ परिणाम नहीं मिल सकते हैं।

### बुध अन्तर्दशा
### (02:04:2026 - 30:03:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आप शत्रुओं के कारण मुश्किलों का सामना कर सकते हैं। परिस्थितियां आपको अपने अधीनस्थों के साथ झगड़ा करने को बाध्य कर सकती है। गलत बातें बोलने के कारण आपको अशुभ घटनाओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको चोट लग सकती है या आप आग से जल सकते हैं। आपको अपने जीवनसाथी और संतानों से अलग होना पड़ सकता है। आप खुशियों से वंचित हो सकते हैं। आपको मवेशियों और धन की हानि हो सकती है।

### केतु अन्तर्दशा
### (30:03:2027 - 26:08:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको विद्युत या अग्नि या हथियारों से कटने का खतरा हो सकता है। आप नौकरी में स्थानान्तरण या व्यापारिक यात्रा या तलाक या जीवनसाथी की मृत्यु के कारण जीवनसाथी से अलग हो सकते हैं। आपको अपने जीवनसाथी को इस दशा के दौरान उसके माता–पिता के घर या किसी लम्बी यात्रा पर भेजने की सलाह दी जाती है। इसके पीछे तर्क यह है कि जीवनसाथी से अलग होना आपकी नियति में है और आप उपर दी गई सलाह मानकर प्रभाव को मंद कर सकते हैं, अन्यथा तलाक या मृत्यु के रूप में यह गंभीर परिणाम के रूप में सामने आ सकता है। आपकी आय में बाधा आ सकती है और धन की हानि हो सकती है। आपको अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। यदि केतु बली है, तो समय–समय पर आपको कुछ शुभ परिणाम मिल सकते हैं, लेकिन इस अन्तर्दशा के पूर्ण होने से पहले जो भी आपने प्राप्त किया है, वह सब समाप्त हो जायेगा।

### शुक्र अन्तर्दशा
### (26:08:2027 - 25:10:2028)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपके दिमाग में बिना विचारे काम करने का एक प्रकार का डर घर कर सकता है। आप विदेश यात्रा पर जा सकते हैं। यह दशा आपके परिवार के लिए उत्तम नहीं हो सकती है। हालांकि, यदि कोई मुकदमा चल रहा है, तो उसका निर्णय अन्तर्दशा के दौरान होने पर आपको उसमें सफलता मिलेगी। आपको अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए– विशेषकर बांयी आँख का। आपको धन और सम्पत्ति की चोरी का खतरा हो सकता है। हालांकि, आपको जीवनसाथी से पूर्ण सुख मिलेगा, धन का लाभ होगा और पदोन्नति होगी।

### रवि अन्तर्दशा
### (25:10:2028 - 02:03:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। राजनीति से संबंध रखने वाले लोगों के लिए यह अन्तर्दशा सबसे उत्तम है। यदि आप इस अन्तर्दशा के दौरान चुनाव लड़ते हैं, तो आपको सफलता अवश्य मिलेगी। हालांकि, विरोधियों के साथ झगड़ा होने के कारण आपको चोट लगने की संभावना है। आप दूसरे की जमीन और सम्पत्ति हड़प सकते हैं। आपको आनन्द प्राप्त करने के बहुत सारे अवसर मिलेंगे। आपको शक्ति और अधिकार प्राप्त होंगे। वाहनों का सुख भी आपको प्राप्त होगा। बाद में आपको एक के बाद एक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको किलों, जंगलों और पर्वतीय क्षेत्रों में घूमने का शौक होगा। पिता और अन्य संबंधियों के साथ आपके संबंध आत्मीय नहीं हो सकते हैं। आपकी कुण्डली में सूर्य कमजोर है, आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। आपको ऐसा प्रतीत हो सकता है कि हर चीज आपके खिलाफ है।

### चंद्र अन्तर्दशा
### (02:03:2029 - 01:10:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको घरेलू वस्तुओं और आभूषणों की प्राप्ति होगी। आप मित्रों और संबंधियों से उत्तम सहयोग प्राप्त करेंगे तथा ऊँचे पदों पर आसीन होंगे। यह अन्र्दशा मध्यम रूप से उत्तम होगी।

## राहू दशा
### (01:10:2029 - 01:10:2047)

वर्तमान समय में आपकी राहु की महादशा चल रही है और राहु आपकी कुण्डली में चौथे भाव में स्थित है। राहु की दशा इस भाव में बहुत उत्तम होगी। चूंकि चौथा भाव माता का है, अतः उनका स्वास्थ्य आपके लिए चिन्ता का कारण हो सकता है। आपको विदेशों में रहने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। सभी से आपका झगड़ा हो सकता है। आपका संचित धन समाप्त हो सकता है और आप ऋण ले सकते हैं। धोखाधड़ी की भी संभावना हो सकती है।

वर्तमान समय में आपकी राहु की महादशा चल रही है और राहु आपकी कुण्डली में मिथुन राशि में स्थित है। राहु की अपनी दशा के दौरान, आपको दैवीय कृपा के साथ धन कमाने के प्रचुर अवसर प्राप्त होंगे। यदि आपने इन अवसरों का लाभ नहीं उठाया, तो पुनः ये अवसर आपको प्राप्त नहीं हो सकते हैं। इस दशा में आपको एक सुन्दर भविष्य की नींव रखनी चाहिए, ताकि आगे के जीवन में आप उसका आनन्द उठा सकें। आपके अन्तर्ज्ञान का कोई जोड़ नहीं होगा। आप ज्योतिषशास्त्र और अन्य प्राचीन शास्त्रों में नाम और यश कमायेंगे। स्त्रियों से संबंध होने के कारण आपको अपमान का सामना करना पड़ सकता है। कई लोगों के साथ अंतरंग संबंध बनाने के अवसर आपको मिल सकते हैं। लेकिन सावधान रहें, यदि आपने संबंध बनाये, तो जीवन भर आपको पछताना पड़ सकता है। आप सबके साथ सहयोग करेंगे और आपकी भक्ति की भावना आपको नाम और यश दिलायेगी।

### राहू अन्तर्दशा
### (01:10:2029 - 13:06:2032)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। आपको भोजन विषाक्तता और जल जनित रोग हो सकते हैं। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपके भाई या पिता या किसी नजदीकी संबंधी का स्वास्थ्य बहुत खराब हो सकता है। लम्बी बीमारी के कारण आपको धन हानि हो सकती है। आपको अपने जन्म स्थान को छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। आप इधर–उधर भटक सकते हैं। दूसरी महिलाओं के साथ आपके संबंध बन सकते हैं। आपको दूसरों के साथ व्यवहार में बहुत सावधान रहना चाहिए– जैसाकि वे लोग आपको धोखा दे सकते हैं। दुष्ट लोग आपको गंभीर रूप से मानसिक पीड़ा पहुँचा सकते हैं। आपके शरीर में चोट लग सकती है।

### गुरु अन्तर्दशा
### (13:06:2032 - 07:11:2034)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम होगी। आपको भरपूर खुशियां मिलेंगी। धार्मिक कार्यों को करने और विद्वान तथा साधुजनों से मिलने के आपको अवसर प्राप्त होंगे। सूर्य से संबंध होने पर आप शास्त्रों और अन्य प्राचीन तरीकों के अध्ययन में गहन रूचि लेंगे। आपको सुन्दर स्त्रियों के साथ घूमने का भी शौक होगा। आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। यदि आपकी कुण्डली में बृहस्पति बली नहीं है, तो भी आपको बहुत विषम परिणाम नहीं मिलेंगे।

### शनि अन्तर्दशा
### (07:11:2034 - 13:09:2037)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। आपका अपने जीवनसाथी, संतानों और सहोदरों के साथ झगड़ा हो सकता है। आपके भाई आपके शत्रु बन सकते हैं। रक्त विकार, वायु और पित्त रस के कारण आपको रोग हो सकते हैं। आपके शरीर में चोट लग सकती है। यदि घर में नौकर हैं, तो आवश्यकता के समय वे आपको छोड़ कर जा सकते हैं। यदि आप किसी ऊँचे पद पर हैं, या

व्यापार कर रहे हैं, जहां मजदूरों की आवश्यकता है, तो उनकी उचित संख्या में कमी हो सकती है। आपकी अवनति हो सकती है।

## बुध अन्तर्दशा
## (13:09:2037 - 01:04:2040)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। आपको संतानों से सुख और खुशियों प्राप्त होंगी। संबंधियों से आपके उत्तम संबंध बनेंगे। संतान की प्राप्ति हो सकती है। मित्रों के साथ आपके संबंध आनन्दायक और फलदायी होंगे। हालांकि, आपमें हीनता की भावना आ सकती है। आपके विचारों में स्पष्टता होगी।

## केतु अन्तर्दशा
## (01:04:2040 - 20:04:2041)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आप सिरदर्द, बुखार और शरीर में कंपकपी से ग्रस्त हो सकते हैं। आग और हथियारों से आपको खतरा हो सकता है। आपके शरीर में जहरीले फोड़े हो सकते हैं। आप और आपका परिवार दुखी हो सकता है। घर और व्यावसायिक क्षेत्र में आपको झगड़ों का सामना करना पड़ सकता है। आपकी कुण्डली में केतु पीड़ित है, आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में केतु शुभ है, तो भी इस अन्तर्दशा के दौरान आपको शुभ परिणाम नहीं मिल सकते हैं। हालांकि, ऐसा देखने में आया है, कि यदि राहु की अन्तर्दशा अपनी महादशा में उत्तम नहीं है, तो केतु की अन्तर्दशा उत्तम फल देगी। आपको महामृत्युंजय मंत्र का जाप करना चाहिए।

## शुक्र अन्तर्दशा
## (20:04:2041 - 19:04:2044)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान आपके विवाह की संभावना है। स्त्रियों के द्वारा आपको बहुत आनन्द प्राप्त होगा। आपको घरेलू सामान और आभूषणों की प्राप्ति होगी। आपको संगीत और नृत्य में रूचि उत्पन्न होगी। आप धन लाभ और जीवनसाथी से आनन्द प्राप्त करेंगे, लेकिन किसी प्रियजन के खोन की संभावना हो सकती है। आपको देवी दुर्गा और लक्ष्मी की आराधना करनी चाहिए।

## रवि अन्तर्दशा
## (19:04:2044 - 14:03:2045)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। आपको अधिकारियों से धमकी मिल सकती है। शत्रु आपके लिए बहुत परेशानी पैदा कर सकते हैं। आप नेत्र रोग से पीड़ित हो सकते हैं। आपको जहरीले प्रभाव, हथियारों से चोट और उपचार में भारी खर्चों का सामना करना पड़ सकता है। आपके जीवनसाथी और संतान विभिन्न रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको सूर्य मंत्र का जाप और सूर्य नमस्कार (उगते

और डूबते सूर्य के सामने साष्टांग दण्डवत) तथा अपने सामर्थ्य के अनुसार वस्तुओं का दान करना चाहिए।

### चंद्र अन्तर्दशा

### (14:03:2045 - 13:09:2046)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा मिश्रित परिणामों को दर्शायेगी। एक तरफ आपको अपने जीवनसाथी से कुछ निश्चित समय पर सुख मिलेगा और दूसरी तरफ आप अपने जीवनसाथी के साथ बेतुके मामलों में प्रायः झगड़ा करने को बाध्य हो सकते हैं। प्रेम और नफरत का साथ–साथ अनुभव होगा। आय की प्राप्ति होगी, लेकिन खर्च भी बढ़ सकते हैं। आपको मानसिक शांति का अभाव हो सकता है। अपने लोगों के साथ झगड़े के कारण आपको बहुत दुख का अनुभव हो सकता है। माता का स्वास्थ्य आपको परेशान कर सकता है। आपको मवेशियों और कृषि भूमि की हानि हो सकती है। आपको पानी से बहुत सावधान रहना चाहिए। आपको देवी दुर्गा को सफेद पुष्प अर्पित करने चाहिए।

### मंगल अन्तर्दशा

### (13:09:2046 - 01:10:2047)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। शत्रुओं, आग, हथियारों आदि के कारण आपको खतरा हो सकता है। सरकारी अधिकारी और चोर आपको मानसिक तनाव दे सकते हैं। आप विभिन्न रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं।

## गुरु दशा

### (01:10:2047 - 01:10:2063)

वर्तमान समय में आपकी बृहस्पति की महादशा चल रही है और बृहस्पति आपकी कुण्डली में आठवें भाव में स्थित है। बृहस्पति की दशा के दौरान आप पूर्ण एकाकी जीवन व्यतीत कर सकते हैं। बहुत युवा अवस्था से ही आप पिता से अलग हो सकते हैं। यदि युवावस्था में भी यह दशा विद्यमान रहती है, तो पिता से आपको कोई सुख नहीं मिल सकता है। बाद के जीवन में आप सन्यास की तरफ मुड़ सकते हैं। आपका स्वास्थ्य बहुत खराब हो सकता है। आप ह्रदय की समस्या, रक्त विषाक्तता, ट्यूमर, कान की परेशानी से ग्रस्त हो सकते हैं।

वर्तमान समय में आपकी बृहस्पति की महादशा चल रही है और बृहस्पति आपकी कुण्डली में तुला राशि में स्थित है। बृहस्पति की अपनी दशा के दौरान, आपकी बुद्धि भ्रष्ट हो सकती है। जीवनसाथी और संतानों से आपके झगड़े हो सकते हैं। आपकी किसी भी चीज में रूचि नहीं हो सकती है।

### गुरु अन्तर्दशा

### (01:10:2047 - 19:11:2049)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए बहुत उत्तम साबित होगी। आपको उचित कोटि का उत्तम भाग्य, भारी सम्मान और विकसित उत्कृष्ट गुण प्राप्त होंगे। आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आपको सरकार की तरफ से पहचान

मिल सकती है। विद्वान, उपदेशकों और दूसरे धर्मपरायण लोगों से आपको मिलने के अवसर प्राप्त होंगे। आपके उत्साह और शारीरिक जीवनशक्ति में निरन्तर बढ़ोत्तरी होगी। आपके शरीर और दिमाग दोनों में एक विशिष्ट प्रकार की शांति और सौम्यता विद्यमान होगी। आपके परिवार में कई वैवाहिक समारोह आयोजित होंगे। आपको पत्नी सुख और संतानों– विशेषकर पुत्रों– से खुशियां मिलेंगी। आपके सभी कार्य बहुत सहजता के साथ पूर्ण होंगे। आपकी आय में बढ़ोत्तरी होगी और कोष धन से पूर्ण रहेंगे। यदि बृहस्पति कमजोर भी है, तो भी आप इस अन्तर्दशा के दौरान कुछ लाभकारी परिणामों का आनन्द अवश्य ही उठायेंगे।

### शनि अन्तर्दशा
### (19:11:2049 - 01:06:2052)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। मलिन/चरित्रहीन औरतों के साथ संबंध रखने के कारण आपको विभिन्न प्रकार के यौन रोग हो सकते हैं। आपको नशे की लत लग सकती है। आपके परिवार के सदस्यों के बीच संबंध मधुर नहीं हो सकते हैं। हालांकि, उत्तम कार्यों के कारण आपको नाम और यश प्राप्त होगा। आपकी आय व्यय से कम होगी। आपके दिमाग में किसी प्रकार का भय व्याप्त हो सकता है। आप संतानों की असुरक्षा की भावना से ग्रस्त हो सकते हैं। आपकी कुण्डली में शनि की अनुकूल या प्रतिकूल चाहे जो भी प्रकृति हो, वह केवल अपने अन्तर्निहित गुण को ही प्रदर्शित करेगा। हालांकि, उसके किसी भी अशुभ प्रभाव को दशा का स्वामी बृहस्पति नियंत्रित करेगा।

### बुध अन्तर्दशा
### (01:06:2052 - 07:09:2054)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। आपको ईश्वरीय कृपा प्राप्त होगी। आप अपने उपक्रमों में आसानी से सफलता प्राप्त करेंगे। प्रतियोगिताओं में अगर भाग ले रहे हैं, तो आप उनमें अपनी सफलता का परचम लहरायेंगे। समग्र रूप से यह अन्तर्दशा आपके जीवनसाथी और संतान के लिए उत्तम होगी। मित्र आपकी मदद के लिए आगे आयेंगे। यदि आप हिन्दु हैं, तो आपको अपने कुटुम्ब के भगवान और अग्नि देवता की पूजा करनी चाहिए। आप उत्तम कार्यों को करने में रूचि लेंगे। आप सम्पन्न होंगे तथा आपको वाहनों का लाभ प्राप्त होगा। आप निरन्तर विदेशों की यात्रा करेंगे। आपको पानी से सावधान रहना चाहिए। आप सिर से संबंधित किसी रोग से पीड़ित हो सकते हैं।

### केतु अन्तर्दशा
### (07:09:2054 - 14:08:2055)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। आपको हथियारों से खतरा हो सकता है। आप शरीर में फोड़ों की समस्या से ग्रसित हो सकते हैं। आपको नौकरों के साथ गलतफहमी का शिकार होने और मानसिक रूप से व्यथित होने की संभावना है। आपके जीवनसाथी और संतानों को किसी तरह का कष्ट हो सकता है। कुण्डली में मौजूद अन्य प्रभाव के अनुसार आपका स्वास्थ्य खराब या बड़ों व मित्रों से अलगाव हो सकता है। आप दूरस्थ स्थानों की यात्रायें कर सकते हैं और आपको भारी तथा अपरिहार्य

खर्चों का सामना करना पड़ सकता है। आपको केतु के अशुभ प्रभाव से बचने के लिए महामृत्युंजय मंत्र का जाप करना चाहिए।

## शुक्र अन्तर्दशा
## (14:08:2055 - 14:04:2058)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आप धन संग्रह करेंगे तथा जीवनसाथी, संतान, संबंधियों और मित्रों से सुख एवं खुशियों प्राप्त करेंगे। आपके मवेशियों की संख्या, अनाज के भंडार और सामान्य संपन्नता में वृद्धि होगी। आप धार्मिक मामलों में गहरी रूचि लेंगे। आप ईश्वर के संबंध में जानने के उत्सुक होंगे तथा इसके लिए धर्मपरायण एवं साधुजनों पर निर्भर रहेंगे। कुछ हद तक आप अपने उद्देश्य में सफल होंगे, अर्थात आप कुछ वास्तविक उपदेशकों के सम्पर्क में आयेंगे, जिनसे आप और अधिक ज्ञान प्राप्त करने में सफल होंगे। हालांकि, दैवीय उपदेशक के छद्म वेश में छिपे हुए लोगों से आपको धोखा भी हो सकता है। आपके शत्रुओं की संख्या बढ़ सकती है और बिना किसी कारण के प्रायः झगड़े हो सकते हैं। आपको महिलाओं के कारण अपमान का सामना करना पड़ सकता है।

## रवि अन्तर्दशा
## (14:04:2058 - 31:01:2059)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान शत्रु पीछे हटेंगे। वे या तो अपनी गलती मानकर क्षमा मांग सकते हैं या हार कर भाग जायेंगे। आपकी शक्ति और अधिकार में बढ़ोत्तरी होगी और आपको सरकारी सम्मान प्राप्त होगा। आपको शाही समारोहों का आमंत्रण प्राप्त होगा। आपमें आत्मविश्वास की भावना का विकास होगा तथा आप साहसिक कार्यों को करके सफलता प्राप्त करेंगे। आप निरन्तर छोटी यात्रायें करेंगे एवं ज्ञान के कई नये क्षेत्रों को देखने और समझने के आपको अवसर मिलेंगे। आप अपने पहनावे में विशेष रूचि लेंगे, ताकि आप अधिक आकर्षक दिख सकें और अपने आस–पास के लोगों को आकर्षित कर सकें। हालांकि, आप अचानक अवनति का सामना कर सकते हैं और सरकारी अधिकारियों के द्वारा दंडित किये जा सकते हैं। यह भी हो सकता है कि आप कस्बे में जाकर बस जायें और सुख तथा विलास का आनन्द प्राप्त करें। आपकी कुण्डली में सूर्य कमजोर है, आपको सरकार और शत्रुओं के कारण परेशानियां उठानी पड़ सकती है और आप अक्खड़ व असभ्य व्यवहार के कारण भारी धन हानि का सामना कर सकते हैं। अतः आपको सूर्य मंत्र का जाप और सूर्य नमस्कार (उगते और डूबते सूर्य के सामने साष्टांग दण्डवत) करना चाहिए।

## चंद्र अन्तर्दशा
## (31:01:2059 - 01:06:2060)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। यह मुख्यतः आपके लिए आनन्द का समय है। आपको विभिन्न महिलाओं के साथ यौन सुख की प्राप्ति होगी या यदि आप शर्मीली प्रकृति के हैं, तो हो सकता है कि आप शारीरिक सुख ना प्राप्त कर सकें, लेकिन आपका रूझान ऐसे

कार्यों की तरफ हो सकता है। कुछ मामलों में ऐसा देखने में आया है कि अत्यधिक शर्मीले प्रकृति के लोग, जो स्वयं पहल नहीं कर सकते हैं, विपरीत लिंग के लोग जानबूझकर यौन सुख का आनन्द लेने वाली परिस्थितियां तैयार कर देते हैं।

शत्रु फिलहाल पीछे हट सकते हैं या आपके मित्र बन सकते हैं। यदि आप सरकारी नौकरी कर रहे हैं, तो आपको पदोन्नति के साथ कोई महत्वपूर्ण पद या विभाग मिल सकता है। आपके ज्ञान में वृद्धि होगी। विपरीत लिंग के लोगों के प्रति आपके झुकाव के बावजूद आप अपने जीवनसाथी तथा संतान से प्रेम करेंगे एवं उनका ख्याल रखेंगे। आप सदा उनके साथ रहना चाहेंगे। यदि चंद्रमा आपकी कुण्डली में कमजोर भी है, तो भी आप इस अन्तर्दशा के दौरान कुछ लाभकारी परिणामों का आनन्द उठायेंगे।

**मंगल अन्तर्दशा**
**(01:06:2060 - 08:05:2061)**

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए बहुत उत्तम साबित होगी। आप ना केवल मित्रों और संबंधियों से धन प्राप्त करेंगे, बल्कि शत्रुओं से भी धन प्राप्त करने में सक्षम होंगे। यदि आप सैन्य सेवा में हैं, तो कुछ मिशनों को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए पदोन्नति प्राप्त करेंगे। यदि किसी और क्षेत्र में नौकरी कर रहे हैं, तो भी आपको पदोन्नति, अधिकार और शक्ति प्राप्त हो सकती है। आप भूमि और भवन या कुछ भौतिक सम्पत्तियां प्राप्त करेंगे। विपरीत लिंग के लोगों के साथ मौज–मस्ती करने के तमाम अवसर आपको मिल सकते हैं। आपको धन लाभ होगा। आपको अपनी आँखों की उचित देखभाल करनी चाहिए– जैसाकि आपकी आँखों में चोट लगने की संभावना है। आपको तीव्र सिरदर्द, बवासीर या गुदा के आस–पास खुजली आदि की भी शिकायत होने की संभावना है। यह अन्तर्दशा आपके परिवार के बड़ों के लिए कुछ उत्तम नहीं हो सकती है। यदि मंगल पीड़ित है, तो उसके अशुभ प्रभाव को मंद करने के लिए और यदि शुभ है तो लाभकारी परिणामों में वृद्धि करने के लिए आपको भगवान कार्तिकेय की प्रशंसा में मंत्रों का जाप करना चाहिए।

**राहू अन्तर्दशा**
**(08:05:2061 - 01:10:2063)**

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। यह दशा आपके लिए मिश्रित परिणाम देने वाली होगी। जहां एक तरफ आपको अपने संबंधियों के कारण गंभीर मानसिक तनाव का सामना करना पड़ सकता है, वहीं दूसरी तरफ आपके रोजगार, व्यावसायिक भविष्य या व्यापार में भी सुधार होगा। आपको अचानक उतार–चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। अतः इस अन्तर्दशा को सबसे घुमावदार कहा जा सकता है। आपकी बहनों और परिवार के अन्य महिला सदस्यों को निराशा का सामना करना पड़ सकता है।

आप अपना निवास स्थान बदल सकते हैं। आपके जीवनसाथी और संतान के लिए यह दशा उत्तम नहीं है। शत्रु

आपसे बदला लेने के लिए अवसर की तलाश में हो सकते हैं। आपकी वस्तुएं चोरी हो सकती हैं। आपके प्रियजन आपसे दूरी बना सकते हैं। संभावित रोग जैसे चर्म रोग और पेट दर्द की शुरूआत हो सकती है या वह गंभीर रूप ले सकती है। यदि राहु बली भी है, तो भी आपको केवल मिश्रित फल प्राप्त होंगे।

# ज्योतिष सारिणी

| | SAMPLE | ज्योतिष सारिणी |
|---|---|---|
| जन्म दिनाकं | 21:12:1945 | 21:12:2016 |
| दिन | शुक्रवार | बुधवार |
| ज्योतिषिय वार | शुक्रवार | बुधवार |
| जन्म समय | 11:34:00 | 16:41:11 |
| जन्म स्थान | ranchi | ranchi |
| अक्षांश | 023:20:00N | 023:20:00N |
| रेखांश | 085:19:00E | 085:19:00E |
| यु./ग्रीष्म समय संस्कार | -00:00 | -00:00 |
| जी. एम. टी. समय | 006:03:00 | 011:11:10 |
| स्थानीय समय संस्कार | 000:11:15 hrs | 000:11:16 hrs |
| स्थानीय समय | 011:45:15 hrs | 016:52:27 hrs |
| सांपातिक काल | 017:43:03 hrs | 022:54:15 hrs |
| सूर्योदय | 06:28:24AM | 06:28:35AM |
| सूर्यास्त | 05:04:58PM | 05:05:12PM |

| | | |
|---|---|---|
| लग्न | मीन | मिथुन |
| लग्नाधिपति | गुरु | बुध |
| राशि (चन्द्रमा) | कर्क | कन्या |
| राशिपति | चंद्र | बुध |
| नक्षत्र | पुष्य | हस्ता |
| नक्षत्रपति | शनि | चंद्र |
| नक्षत्र चरण | 1 | 1 |
| पाया | रजत | लौह |
| ऋतु | हेमन्त | हेमन्त |
| मास | पौष कृष्ण | पौष कृष्ण |
| पक्ष | कृष्ण | कृष्ण |
| तिथि | तृतीया | अष्टमी |
| तिथि श्रेणी | जया | जया |
| तिथि पति | मंगल | राहू |
| करण | वनिज | कौलव |
| करण श्रेणी | चर | चर |
| करणपति | मनिभद्र | चन्द्र |
| सूर्य सिद्धान्त योग | इन्द्रय | सौभाग्य |
| तत्व | जल | अग्नि |
| तत्वाधिपति | शुक्र | मंगल |
| विहग | पिंगला | वायस |
| वेध | पूर्वाशाढ़ | शतभिशा |

# ग्रह स्थिती वर्षफल

**Varhphal Years: 71 (2016-2017) Varhphal Date: 21:12:2016, Time: 16:41Hrs**

| ग्रह | राशि | अंश | नक्षत्र | विशेष |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | मीन | 01:13 | पूर्वाभाद(4) | |
| सूर्य(ग्र.) | धनु | 05:55 | मूला (2) | मित्र राशि |
| चन्द्रमा | कर्क | 04:53 | पुष्य (1) | स्व राशि |
| मंगल(व.) | कर्क | 08:17 | पुष्य (2) | नीच राशि |
| बुध | वृश्चिक | 14:56 | अनुराधा (4) | सम राशि |
| बृहस्पति | तुला | 00:18 | चित्रा (3) | शत्रु राशि |
| शुक्र | वृश्चिक | 25:47 | ज्येष्ठा (3) | सम राशि |
| शनि(व.) | कर्क | 00:04 | पुनर्वसु (4) | शत्रु राशि |
| राहु(व.) | मिथुन | 06:56 | अरिद्रा (1) | मित्र राशि |
| केतु(व.) | धनु | 06:56 | मूला (3) | स्व नक्षत्र |
| हर्षल(व.) | वृष | 21:45 | रोहिणी (4) | ..... |
| नेपच्यून | कन्या | 15:24 | हस्ता (2) | ..... |
| प्लूटो(व.) | कर्क | 18:23 | अश्लेषा (1) | ..... |

| ग्रह | राशि | अंश | नक्षत्र | विशेष |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | मिथुन | 00:39 | पूर्वाभाद(3) | |
| सूर्य | धनु | 05:55 | मूला (2) | मित्र राशि |
| चन्द्रमा | कन्या | 10:15 | हस्ता (1) | स्व राशि |
| मंगल | कुंभ | 07:28 | शतभिषा (1) | सम राशि |
| बुध(व.) | धनु | 20:39 | पूर्वाषाढ़ (3) | सम राशि |
| बृहस्पति | कन्या | 25:48 | चित्रा (1) | शत्रु राशि |
| शुक्र | मकर | 21:44 | श्रवण (4) | मित्र राशि |
| शनि(अ.) | वृश्चि | 26:03 | ज्येष्ठा (3) | शत्रु राशि |
| राहु(व.) | सिंह | 12:41 | मघा (4) | शत्रु राशि |
| केतु(व.) | कुंभ | 12:41 | शतभिषा (2) | शत्रु राशि |
| हर्षल(व.) | मीन | 26:29 | रेवती (3) | .... |
| नेपच्यून(ग्र.) | कुंभ | 15:25 | शतभिषा (3) | .... |
| प्लूटो | धनु | 22:29 | पूर्वाषाढ़ (3) | .... |

## लग्न कुण्डली

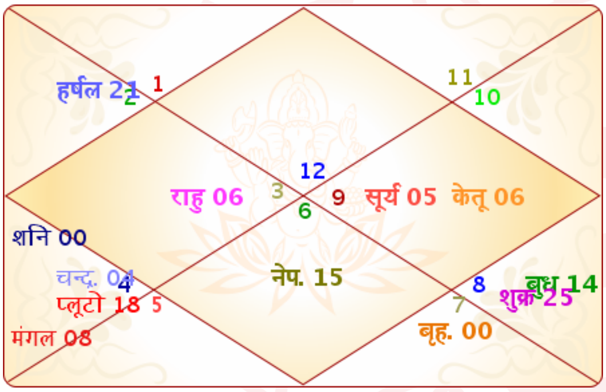


## चन्द्र कुण्डली

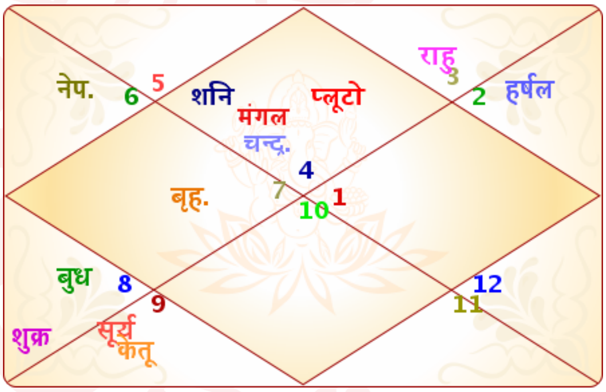


## लग्न कुण्डली ( वर्षफल )

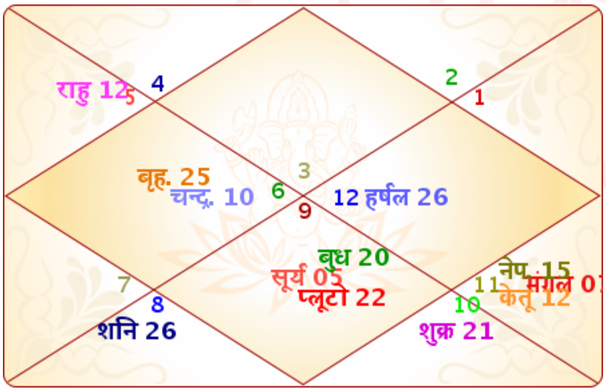


## चन्द्र कुण्डली ( वर्षफल )

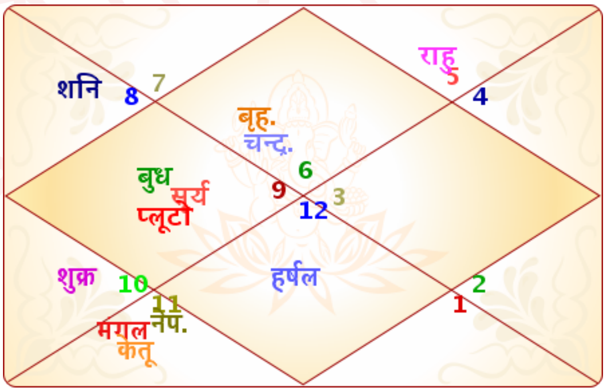

# द्वादश वर्ग कुण्डली

लग्न कुण्डली

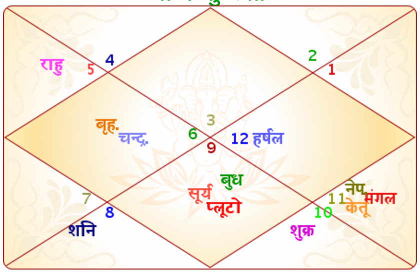

होरा कुण्डली

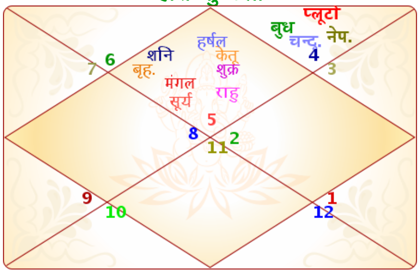

द्रेष्काण कुण्डली

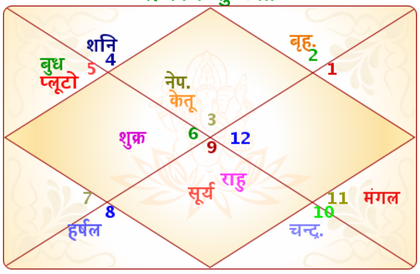

चतुर्थांश कुण्डली

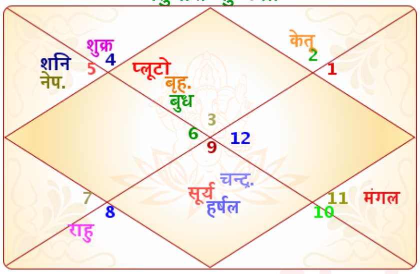

पंचमांश कुण्डली

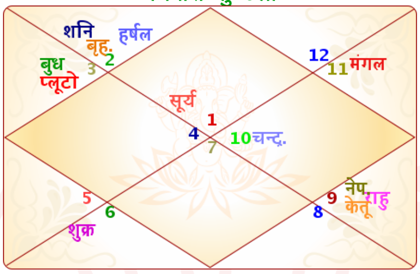

षष्टमांश कुण्डली

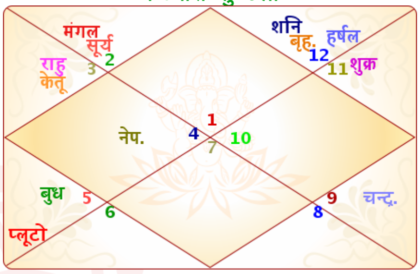

सप्तमांश कुण्डली

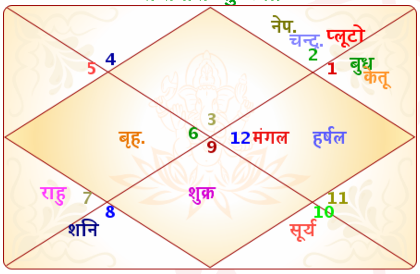

अष्टमांश कुण्डली

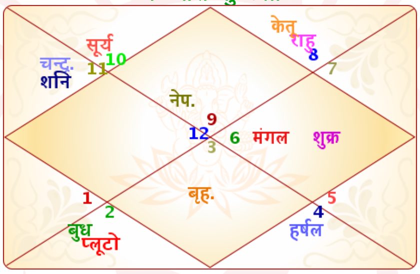

नवांश कुण्डली

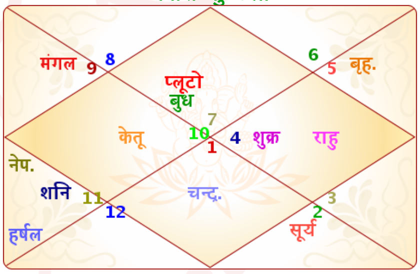

चर्तुविशांश कुण्डली

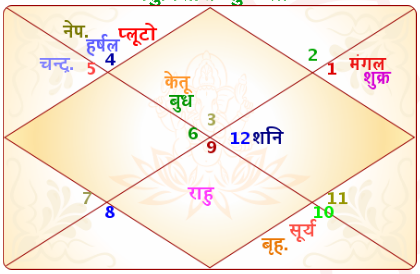

एकादशांश कुण्डली

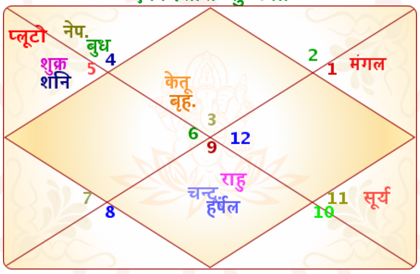

द्वादशांश कुण्डली

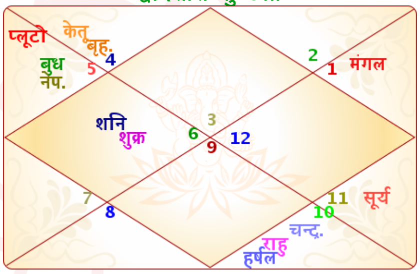

## वर्षफल कुण्डली में ग्रहों की दृष्टि

| | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहू | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रवि | .... | गु.शत्रु | गु.प्रेम | प्र.शत्रु | गु.शत्रु | सम | सम | प्र.प्रेम | गु.प्रेम |
| चंद्र | गु.शत्रु | .... | सम | गु.शत्रु | प्र.शत्रु | प्र.प्रेम | गु.प्रेम | सम | सम |
| मंगळ | गु.प्रेम | सम | .... | गु.प्रेम | सम | सम | गु.शत्रु | प्र.शत्रु | प्र.शत्रु |
| बुध | प्र.शत्रु | गु.शत्रु | गु.प्रेम | .... | गु.शत्रु | सम | सम | प्र.प्रेम | गु.प्रेम |
| गुरु | गु.शत्रु | प्र.शत्रु | सम | गु.शत्रु | .... | प्र.प्रेम | गु.प्रेम | सम | सम |
| शुक्र | सम | प्र.प्रेम | सम | सम | प्र.प्रेम | .... | गु.प्रेम | सम | सम |
| शनि | सम | गु.प्रेम | गु.शत्रु | सम | गु.प्रेम | गु.प्रेम | .... | गु.शत्रु | गु.शत्रु |
| राहू | प्र.प्रेम | सम | प्र.शत्रु | प्र.प्रेम | सम | सम | गु.शत्रु | .... | प्र.शत्रु |
| केतु | गु.प्रेम | सम | प्र.शत्रु | गु.प्रेम | सम | सम | गु.शत्रु | प्र.शत्रु | .... |

प्र.प्रेमः–प्रकट प्रेम दृष्टि ,गु.प्रेमः–गुप्त प्रेम दृष्टि ,प्र.शत्रुः–प्रकट शत्रु दृष्टि ,गु.शत्रुः–गुप्त शत्रु दृष्टि ,समः–सम दृष्टि ,

# वर्षफल कुण्डली में ग्रहों का बल

Varhphal Years: 71 (2016-2017) Varhphal Date: 21:12:2016, Time: 16:41Hrs

## पंचवर्गीय बल

| क्र0स0 | बल | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | क्षेत्र बल | 7.5 | 7.5 | 7.5 | 7.5 | 7.5 | 22.5 | 7.5 |
| 2 | उच्च बल | 6.21 | 5.86 | 18.95 | 9.37 | 11.02 | 12.75 | 15.99 |
| 3 | हद्दा बल | 3.75 | 11.25 | 7.5 | 15.0 | 7.5 | 15.0 | 15.0 |
| 4 | द्रेक्कन बल | 2.5 | 7.5 | 5.0 | 5.0 | 2.5 | 5.0 | 7.5 |
| 5 | नवांश बल | 2.5 | 2.5 | 2.5 | 2.5 | 1.25 | 3.75 | 5.0 |
| | योग | 5.62 | 8.65 | 10.36 | 9.84 | 7.44 | 14.75 | 12.75 |
| | तुलनात्मक बल | साधारण | साधारण | बलशाली | साधारण | साधारण | बलशाली | बलशाली |

## द्वादश वर्गीय बल

| क्र0स0 | बल | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | राशि बल | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | -1 | 0 |
| 2 | होरा बल | +2 | +2 | -1 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| 3 | द्रेक्कन बल | 0 | -1 | 0 | 0 | -1 | 0 | -1 |
| 4 | चतुर्थांश बल | 0 | 0 | 0 | +2 | 0 | -1 | 0 |
| 5 | पंचमाशं बल | -1 | -1 | 0 | +2 | -1 | 0 | -1 |
| 6 | षष्टाशं बल | 0 | 0 | 0 | 0 | +2 | -1 | -1 |
| 7 | सप्तमाशं बल | 0 | -1 | 0 | -1 | 0 | -1 | 0 |
| 8 | अष्टमाशं बल | 0 | -1 | -1 | 0 | 0 | 0 | +2 |
| 9 | नवाशं बल | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | -1 | +2 |
| 10 | दसाशं बल | 0 | 0 | +2 | +2 | -1 | 0 | -1 |
| 11 | एकादसाशं बल | 0 | 0 | +2 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| 12 | द्ववादशाशं बल | 0 | -1 | +2 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| | योग | +1 | -3 | +4 | +5 | -1 | -5 | 0 |
| | तुलनात्मक बल | साधारण | बुरा | अच्छा | बहुत अच्छा | सम | बहुत बुरा | सम |

## हर्ष बल

| क्र0स0 | बल | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | स्थान बल | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 |
| 2 | क्षेत्र बल | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 |
| 3 | ओज–युग्म बल | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 5.0 | 5.0 | 5.0 | 0.0 |
| 4 | दिवा–रात्रि बल | 5.0 | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 0.0 |
| | योग | 5 | 0 | 5 | 5 | 10 | 5 | 0 |
| | तुलनात्मक बल | अल्पबली | निर्बबली | अल्पबली | अल्पबली | मध्यबली | अल्पबली | निर्बबली |

# वर्षफल सहम

Varhphal Years: 71 (2016-2017) Varhphal Date: 21:12:2016, Time: 16:41Hrs

| क्र0स0 | सहम का नाम | राशि | अंश | सहम अधिपति | 11 भाव पति | 8 भाव पति |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | पुण्य सहम (भाग्य) | मीन | 004:59:17 | बृहस्पति | शनि | ... |
| 2 | विद्या सहम | कन्या | 026:20:11 | बुध | चन्द्रमा | ... |
| 3 | यश सहम | धनु | 021:28:55 | बृहस्पति | शुक्र | ... |
| 4 | मित्र सहम (मित्र) | सिहं | 012:34:06 | सूर्य | बुध | ... |
| 5 | महात्य सहम (महानता) | कक्र | 028:10:33 | चन्द्रमा | शुक्र | ... |
| 6 | आशा सहम (इच्छा) | मीन | 019:14:49 | बृहस्पति | शनि | ... |
| 7 | समर्थ सहम (पुरूषार्थ) | सिहं | 017:28:39 | सूर्य | बुध | ... |
| 8 | भ्रात्रि सहम (भाई) | मेष | 000:24:39 | मंगल | शनि | ... |
| 9 | गौरव सहम (सम्मान) | मकर | 021:28:55 | शनि | मंगल | ... |
| 10 | पितृ सहम (पिता) | वृष | 020:47:41 | शुक्र | बृहस्पति | ... |
| 11 | राजा सहम (अधिकार) | वृष | 020:47:41 | शुक्र | बृहस्पति | ... |
| 12 | मात्रि सहम (माता) | मकर | 019:09:59 | शनि | मंगल | ... |
| 13 | अपत्य सहम (संतान) | कक्र | 016:13:03 | चन्द्रमा | शुक्र | ... |
| 14 | जीव सहम (जीवन) | कन्या | 000:54:49 | बुध | चन्द्रमा | ... |
| 15 | कर्म सहम (कार्रवाई) | सिहं | 017:28:39 | सूर्य | बुध | ... |
| 16 | रोग सहम | कुम्भ | 021:04:19 | शनि | ... | बुध |
| 17 | काली सहम (कलह, संघर्ष) | मकर | 018:59:44 | शनि | ... | सूर्य |
| 18 | शास्त्र सहम (उच्च शिक्षा) | तुला | 020:24:29 | शुक्र | सूर्य | ... |
| 19 | बन्धु सहम (रिश्तेदार) | तुला | 011:04:08 | शुक्र | सूर्य | ... |
| 20 | निधन सहम | तुला | 016:52:45 | शुक्र | ... | शुक्र |
| 21 | परदेश सहम (विदेश) | सिहं | 026:52:48 | सूर्य | बुध | ... |
| 22 | धन सहम (धन) | मीन | 016:52:45 | बृहस्पति | शनि | ... |
| 23 | प्रदर सहम (परस्त्रीगमन) | सिहं | 016:29:02 | सूर्य | बुध | ... |
| 24 | वनिज सहम (धंधा) | कुम्भ | 020:15:20 | शनि | बृहस्पति | ... |
| 25 | कार्यसिद्धि सहम (सफलता) | कन्या | 015:56:25 | बुध | चन्द्रमा | ... |
| 26 | विवाह सहम | सिहं | 026:21:05 | सूर्य | बुध | ... |
| 27 | संताप सहम (दुःख) | कुम्भ | 012:15:34 | शनि | ... | बुध |
| 28 | श्रद्धा सहम (भक्ति) | वृष | 014:56:10 | शुक्र | बृहस्पति | ... |
| 29 | प्रिति सहम (प्यार) | मकर | 016:04:56 | शनि | मंगल | ... |
| 30 | जाड्य सहम (स्थाई रोग) | मेष | 002:04:29 | मंगल | ... | मंगल |
| 31 | ब्यापार सहम | कन्या | 012:04:39 | बुध | चन्द्रमा | ... |
| 32 | शत्रु सहम | कन्या | 012:04:39 | बुध | ... | मंगल |
| 33 | जलपत्तन सहम (विदेश यात्रा) | मकर | 019:36:10 | शनि | मंगल | ... |
| 34 | बंधन सहम (कारावास) | तुला | 009:35:28 | शुक्र | ... | शुक्र |
| 35 | अपघात सहम (आकस्मिक दुर्घटना) | मेष | 019:39:26 | मंगल | ... | मंगल |
| 36 | वित्तहानि सहम | तुला | 005:23:00 | शुक्र | ... | शुक्र |
| 37 | त्रिक स्फूट (दुर्घटना) | कक्र | 025:16:56 | चन्द्रमा | ... | शनि |
| 38 | घात स्थान (अनहोनी) | कन्या | 004:50:40 | बुध | ... | मंगल |

# त्रिपताकी चक्र

**Varhphal Years: 71 (2016-2017) Varhphal Date: 21:12:2016, Time: 16:41Hrs**

| क्र0स0 | राशि | ग्रह |
|---|---|---|
| 1 | 3 | |
| 2 | 4 | केतु |
| 3 | 5 | |
| 4 | 6 | |
| 5 | 7 | शनि |
| 6 | 8 | |
| 7 | 9 | मंगल |
| 8 | 10 | बृहस्पति, राहु |
| 9 | 11 | बुध, शुक्र |
| 10 | 12 | सूर्य, चन्द्रमा |
| 11 | 1 | |
| 12 | 2 | |

## त्रिपताकी चक्र में वेध

**लग्न** : सूर्य , चन्द्र , मंग.
**सूर्य** : सूर्य , चन्द्र , मंग. , चन्द्र , मंग.
**चन्द्रमा** : सूर्य , मंग.
**मंगल** : सूर्य , चन्द्र
**बुध** : गुरू , शुक्र , शनि , राहु , केतु
**बृहस्पति** : बुध , शुक्र , राहु
**शुक्र** : बुध , गुरू , शनि , राहु , केतु
**शनि** : बुध , शुक्र

## ग्रहों द्वारा चन्द्र वेध का फल

**सूर्य :**

आत्मविश्वास की कमी, बदनामी, वृथा अंहकार, दोषयुक्त आँखें, पिता को कठिनाई, मानसिक तनाव, चिड़चिड़ापन, उच्च ज्वर, पित्तजनित रोग तथा निराशायें।

**मंगल :**

शत्रुओं से भय, हथियार, रक्त अनियमितत, दुर्घटनायें, शरीर में दर्द और चोट, शीघ्र क्रोधित होना, लड़ाई–झगड़ा, संघर्ष, हिंसा, लेकिन साथ ही ज्ञान व धन की प्राप्ति भी।

**बुध :**

ज्ञान व बुद्धिमत्ता में वृद्धि, तीक्ष्ण बुद्धि, अच्छे लोगों की संगति और धन का लाभ। लेकिन यदि दूषित है, तो व्यक्ति उतावला व क्षुद्र दिमाग वाला होता है, परिवार की नाराजगी, तनाव और चिन्ताओं की प्राप्ति तथा शत्रुओं से भय।

**बृहस्पति :**

शांति और प्रसन्नता, सभ्य लोगों की संगति, तीर्थ यात्रा, धार्मिक कार्यों के प्रति रूझान, सामाजिक स्तर में उन्नति, धन का लाभ, उपक्रमों के सफलता, संतान का जन्म, और सामान्य समृद्धि।

**शुक्र :**

इच्छाओं की पूर्ति, इन्द्रिय सुख की प्राप्ति, धन–संपदा व शिक्षा की प्राप्ति, शत्रुओं पर विजय। लेकिन शारीरिक सुख के प्रति अत्यधिक लालसा होने के कारण मानसिक व्यग्रता, जल से भय और वातमय विकार।

**शनि :**

तुच्छ व निम्न स्तर के लोगों के साथ संगति, स्वार्थी, तानाशाही, गरीबी, वियोग, यौन विकृति, शारीरिक रोग, सर्दी व जुकाम के साथ–साथ वातमय विकार।

**राहु :**

गंभीर बीमारी/आशंका, मान–प्रतिष्ठा/धन की हानि, विदेशी स्रोतों से कठिनाईयां, उदासीन मन, डरपोक स्वभाव तथा अनेक प्रकार की कठिनाइयों से पीड़ित।

**केतु :**

अस्वस्थता, कमजोर पाचनशक्ति, अस्थिरता, आत्मिक व घुमन्तु प्रकृति, निराशा, चिन्तायें और दुख।

Varhphal Years: 71 (2016-2017) Varhphal Date: 21:12:2016, Time: 16:41Hrs

| मुद्दा योगिनी दशा | | | मुद्दा षोडशोत्तरी दशा | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दशा | अवधि | से | दशा | अवधि | से |
| मंगला (चन्द्रमा) | 0.0 y.0.0 m.10 d. | 21:12:2016 | मंगल | 0.0 y.1.0 m.8 d. | 21:12:2016 |
| पिंगला (सूर्य) | 0.0 y.0.0 m.20 d. | 31:12:2016 | गुरु | 0.0 y.1.0 m.11 d. | 28:01:2017 |
| धान्य (वृहस्पति) | 0.0 y.1.0 m.0 d. | 21:01:2017 | शनि | 0.0 y.1.0 m.14 d. | 10:03:2017 |
| भ्रमरि (मंगल) | 0.0 y.1.0 m.10 d. | 20:02:2017 | केतु | 0.0 y.1.0 m.17 d. | 23:04:2017 |
| भभद्रिका (बुध) | 0.0 y.1.0 m.21 d. | 02:04:2017 | चंद्र | 0.0 y.1.0 m.20 d. | 09:06:2017 |
| उल्का (शनि) | 0.0 y.2.0 m.0 d. | 22:05:2017 | बुध | 0.0 y.1.0 m.23 d. | 29:07:2017 |
| सिद्धा (शुक्र) | 0.0 y.2.0 m.11 d. | 22:07:2017 | शुक्र | 0.0 y.1.0 m.26 d. | 21:09:2017 |
| संकटा (शनि) | 0.0 y.2.0 m.20 d. | 01:10:2017 | रवि | 0.0 y.1.0 m.5 d. | 17:11:2017 |

## पत्ययनी दशा

| क्र0स0 | दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | लग्न | 0.0 y.0.0 m.10 d. | 21:12:2016 |
| 2 | रवि | 0.0 y.2.0 m.13 d. | 30:12:2016 |
| 3 | मंगल | 0.0 y.0.0 m.22 d. | 14:03:2017 |
| 4 | चंद्र | 0.0 y.1.0 m.9 d. | 05:04:2017 |
| 5 | बुध | 0.0 y.4.0 m.24 d. | 14:05:2017 |
| 6 | शुक्र | 0.0 y.0.0 m.16 d. | 07:10:2017 |
| 7 | गुरु | 0.0 y.1.0 m.27 d. | 22:10:2017 |
| 8 | शनि | 0.0 y.0.0 m.4 d. | 18:12:2017 |

## मुद्दा विंशोत्तरी दशा

| क्र0स0 | दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | गुरु | 0.0 y.1.0 m.19 d. | 21:12:2016 |
| 2 | शनि | 0.0 y.1.0 m.27 d. | 08:02:2017 |
| 3 | बुध | 0.0 y.1.0 m.21 d. | 07:04:2017 |
| 4 | केतु | 0.0 y.0.0 m.21 d. | 28:05:2017 |
| 5 | शुक्र | 0.0 y.2.0 m.0 d. | 19:06:2017 |
| 6 | रवि | 0.0 y.0.0 m.19 d. | 19:08:2017 |
| 7 | चंद्र | 0.0 y.1.0 m.0 d. | 06:09:2017 |
| 8 | मंगल | 0.0 y.0.0 m.21 d. | 06:10:2017 |
| 9 | राहू | 0.0 y.1.0 m.24 d. | 27:10:2017 |

## वर्ष जैमिनी चर दशा

| क्र0स0 | दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | मिथुन | 0.0 y.1.0 m.11 d. | 21:12:2016 |
| 2 | तुला | 0.0 y.0.0 m.13 d. | 31:01:2017 |
| 3 | कुंभ | 0.0 y.1.0 m.7 d. | 12:02:2017 |
| 4 | कर्क | 0.0 y.0.0 m.9 d. | 21:03:2017 |
| 5 | वृश्चिक | 0.0 y.1.0 m.7 d. | 29:03:2017 |
| 6 | मीन | 0.0 y.1.0 m.11 d. | 05:05:2017 |
| 7 | सिंह | 0.0 y.1.0 m.3 d. | 15:06:2017 |
| 8 | धनु | 0.0 y.1.0 m.7 d. | 18:07:2017 |
| 9 | मेष | 0.0 y.0.0 m.9 d. | 24:08:2017 |
| 10 | कन्या | 0.0 y.1.0 m.7 d. | 01:09:2017 |
| 11 | मकर | 0.0 y.1.0 m.11 d. | 08:10:2017 |
| 12 | वृष | 0.0 y.1.0 m.3 d. | 18:11:2017 |

# वर्षफल कुण्डली से महत्वपूर्ण भविष्यफल

Varhphal Years: 71 (2016-2017)  Varhphal Date: 21:12:2016, Time: 16:41Hrs

## (अष्टक चक्र, ढुढिंराजा पद्धति, वर्षेश्वर और मुन्था)

आपकी वर्षफल कुण्डली में, पूर्व भाग में शेष बचता है, जबकि उत्तर भाग में कोई शेष नहीं बचता है, अतः आपका आगामी समय प्रयासपूर्ण हो सकता है– विशेषकर वर्ष के उत्तरार्द्ध में। यदि आपकी कुण्डली में संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आप धन के अवरूद्ध हो जाने के कारण अथवा हानि होने के कारण असुविधाओं का सामना कर सकते हैं।

आपकी वर्षफल कुण्डली में, पूर्व–भाग व उत्तर–भाग दोनों में ही शेष नहीं बचता है, अतः संभवतः आपका आगामी समय बहुत व्यवधानकारी हो सकता है। सामान्यतः आपको अपने सभी मामलों में सावधान व सतक्र रहना चाहिए, साथ ही विवादों व झगड़ों से बचना चाहिए एवं अपने स्वास्थ्य का उचित ख्याल रखना चाहिए। आपको रोमांचक और अनुमानित निवेशों से दूर रहना चाहिए, क्योंकि ये वो संभावित स्रोत हैं जो कि भारी निराशा उत्तपन्न कर सकते हैं।

70ण्0 लण्11ण्0 उण्17 कण के आयु के आस–पास की अवधि आपके लिए अत्यंत कष्टदायक साबित हो सकती है। अतः आपको इस अवधि08रू12रू2016 के एक महीने आगे पीछे के दौरान सचेत रहना चाहिए एवं किसी प्रकार का जोखिम उठाने से बचना चाहिए, क्योंकि आपके चारों तरफ की सभी चीजें बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के अस्त–व्यस्त हो सकती हैं। किसी दुर्घटना का शिकार होने अथवा कुछ अशुभ घटनाओं के कारण परेशान होने की भी संभावनाएं हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, बुध वर्षेश्वर ग्रह है।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्षेश्वर एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है। परिणामस्वरूप आप भाग्यशाली होंगे। इस वर्ष के दौरान होने वाली घटनाएं बहुत सहज व सरल होंगी तथा आपको किसी अशुभ घटना अथवा अपने सामान्य मामलों में किसी आकस्मिक उतार–चढ़ाव का सामना नहीं करना पड़ेगा।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्षेश्वर बुध है। यदि आप शैक्षिक या बौद्धिक कार्यों से जुड़े हुए हैं तो आप अत्यंत उत्तम प्रगति करेंगे तथा परीक्षाओं और/या प्रतियोगिताओं में सफल होंगे। आपको सम्पन्नता का सूर्योदय प्राप्त होगा– यदि आपके व्यवसाय का संबंध व्यापार/वाणिज्य, प्रेस/छपाई, शिक्षण, परामर्श केन्द्र आदि से है तो। आप विद्वान व्यक्तियों से मिलेंगे एवं उनके साथ जीवन्त चर्चा करेंगे। आप अपने कुछ मौलिक लेखों के कारण सराहना व प्रशंसाा प्राप्त कर सकते हैं। वैज्ञानिक सूचनाओं, आधुनिक तकनीकी विकासों, कम्प्यूटर

प्रोग्रामिंग, गणित, तक्र, ज्योतिषशास्त्र आदि में भी आपकी रूचि बढ़ेगी।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था नौवें में स्थित है। अतः यह बहुत अनुकूल स्थिति है तथा आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। आपको अपने वरिष्ठों से प्रत्यक्ष समर्थन प्राप्त होगा एवं सरकारी स्रोतों से अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इस स्थिति को जिम्मेदारी प्रदान करने वाली कहा जाता है, अतः आप किसी प्रतिष्ठित पद पर आसीन होने की आशा कर सकते हैं। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, मनोबल ऊँचा होगा एवं खुशमिजाज रहेंगे। आपका धार्मिक रूझान और गहन होगा एवं आप तीर्थयात्रा करेंगे। आपके ज्ञान व बुद्धिमता में वृद्धि होगी एवं आप कुछ सामाजिक उत्थान व मानवीय कर्मों में संलग्न रहेंगे।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था–राशि शनि की राशि में स्थित है। किसी अशुभ ग्रह के साथ युति अथवा दृष्टि (ताजिक) के कारण राशि और इसके स्वामी दोनों ही पीड़ित हैं। आगामी वर्ष आपके लिए काफी समस्यात्मक हो सकता है। आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है एवं आपका घरेलू जीवन कदापि खुशहाल नहीं हो सकता है। आप अपने व्यवसाय में एक गंभीर आघात का सामना कर सकते हैं अथवा किन्हीं कारणों से व्यथित हो सकते हैं। कुछ ईर्ष्यालु लोग आपके लिए समस्याएं उत्पन्न करने का प्रयास कर सकते हैं, वे आपके साथ बुरा व्यवहार कर सकते हैं या कटु, कठोर अथवा यहां तक कि अपमानजनक शब्दों का प्रयोग कर सकते हैं। आप अपनी लोकप्रियता खो सकते हैं एवं आपकी विश्वसनीयता व सम्मान में भी कमी आ सकती है।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था–राशि का स्वामी वर्ष–लग्न से छठवें भाव में स्थित है एवं यह ग्रह उच्चस्थ अथवा अपनी राशि या अपने नक्षत्र में नहीं है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। इस वर्ष के दौरान आप बीमारी से पीड़ित हो सकते हैं, भारी व व्यर्थ के खर्चे हो सकते हैं, आपको हानि होने का भी खतरा हो सकता है। व्यवसाय के क्षेत्र में आप अस्थाई आघात का सामना कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आपकी विश्वसनीयता व सम्मान भी कुछ अजीब कारणों से दांव पर लग सकते हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था–राशि का स्वामी अस्त (सूर्य के निकट होने के कारण) है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। इस वर्ष के दौरान किसी समय आप बीमारी से पीड़ित हो सकते हैं, भारी व व्यर्थ के खर्चे हो सकते हैं, आपको हानि होने का भी खतरा हो सकता है। व्यवसाय के क्षेत्र में आप अस्थाई आघात का सामना कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आपकी विश्वसनीयता व सम्मान भी कुछ अजीब कारणों से दांव पर लग सकते हैं।

# वर्षफल सहम से भविष्यफल

**Varhphal Years: 71 (2016-2017) Varhphal Date: 21:12:2016, Time: 16:41Hrs**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, पुण्य–सहम एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रहों के साथ स्थित है या उनकी इस पर दृष्टि पड़ रही है, जबकि यह किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ ना तो स्थित है और ना ही ऐसे किसी ग्रह की इस पर दृष्टि पड़ रही है। यह एक अत्यंत अनुकूल योग है, जो कि आपको अनेक संदर्भों में भाग्यशाली बनाएगा। आप इस वर्ष एक से अधिक शुभ घटनाओं/समारोहों की आशा कर सकते हैं (जो आपके इस वर्ष के जन्मदिन से अगले वर्ष के जन्मदिन तक रहेगा।)– विशेषकर वर्ष के प्रारम्भ के आस–पास एवं वर्ष के अन्त के आस–पास।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, समर्थ सहम एकादशेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा एकादशेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 25:04:2017 और 18:08:2017 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ अनुकूल घटनाएं (इस विशेष सहम के अनुरूप) हो सकती हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, कर्म–सहम एकादशेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा एकादशेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 25:04:2017 और 18:08:2017 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ अनुकूल घटनाएं (इस विशेष सहम से संबंधित) हो सकती हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, व्यापार–सहम एकादशेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा एकादशेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 19:12:2017 और 23:12:2016 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ अनुकूल घटनाएं (इस विशेष सहम से संबंधित) हो सकती हैं।

# वर्षफल

**Varhphal Years: 71 (2016-2017) Varhphal Date: 21:12:2016, Time: 16:41Hrs**

## वर्षेश और अन्य कारकों का फल

आपका वर्षेश बुध इस वर्ष कमजोर स्थिति में है। अतः यह वर्ष आपके लिए अशुभ फलदायक साबित हो सकता है। इस वर्ष आपको अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए। आपको झूठ बोलने से बचना चाहिए, अन्यथा इससे आपको हानि हो सकती है। आपके स्वयं के वचनों के कारण आपके कार्यों में बाधा उत्पन्न हो सकती है एवं स्थिति बिगड़ सकती है। आपका अपने मित्रों व संबंधियों से विवाद हो सकता है तथा आपके शत्रु व उच्चाधिकारी आपके लिए परेशानियां उत्पन्न कर सकते हैं। आपको नेत्र, वक्षस्थल व गले से संबंधित गंभीर रोगों से पीड़ित होना पड़ सकता है। आपके व्यापार की स्थिति बदतर हो सकती है, जिससे आपको अपमानित होने तक कि स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। आप हर ओर से समस्याओं से जूझ सकते हैं। किन्तु आपके द्वारा कुछ धार्मिक कार्य होने की संभावनाएं हैं और आप अल्प मात्रा में धनार्जन भी कर सकते हैं।

इस वर्ष आपके वर्षेश बुध की सूर्य के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः यह वर्ष सामान्यतः आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। आपको दाम्पत्य सुख और संतान सुख की प्राप्ति होगी और पारिवारिक वातावरण सुखद व उत्सवपूर्ण रहेगा। आपकी स्थिति के अनुसार इस वर्ष आपको चौपाए पशु अथवा वाहन का सुख प्राप्त होगा। शिक्षा के क्षेत्र में आपको विशिष्टता प्राप्त हो सकती है एवं मान–सम्मान मिलेगा। कार्यक्षेत्र में आपका अधिकारी वर्ग आपसे प्रसन्न रहेगा। स्वर्ण आदि धन का आप संचय भी कर सकते हैं। आपको कोई आकस्मिक लाभ प्राप्त हो सकता है। आप किसी तीर्थ यात्रा पर जा सकते हैं। उत्तर दिशा की ओर की यात्रा लाभप्रद हो सकती है। पूर्व दिशा से कार्य में सफलता मिलेगी। आप ज्वर से पीड़ित हो सकते हैं। आपके शत्रु आपके लिए परेशानियां उत्पन्न करने का प्रयास कर सकते हैं।

इस वर्ष आपकी वर्षफल कुण्डली में वर्षेश सातवें भाव में उपस्थित है। अतः यह वर्ष आपके लिए अनुकूल फलप्रदायक है। आपका दाम्पत्य जीवन सुख शांतिपूर्वक व्यतीत होगा। इस वर्ष आप स्वयं के घर का सुख प्राप्त करेंगे। आप प्रसन्नचित्त रहेंगे। आपको अपने कार्यक्षेत्र में भी सम्मान प्राप्त होगा। आप कोई लाभकारी यात्रा भी करेंगे।

## जन्म लग्न का फल

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न की राशि आपकी वर्षकुण्डली में दसवें भाव में स्थित है। यह वर्ष आपके लिए अनुकूल फलदायक है। आपको अपने कार्यों में सफलता मिलेगी, व्यापार में लाभ एवं आर्थिक रूप से संपन्नता प्राप्त होगी। आपको प्राप्त होने वाले सम्मान एवं पदोन्नति के अवसर को अपने हाथ से जाने नहीं देना चाहिए।

## वर्षफल के योग

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश चौथे, सातवें या दसवें भाव में स्थित है और जिस भाव में स्थित है उसका स्वामी चौथे भाव में विराजमान है। यह एक अनुकूल योग है, जिसे तमाल योग कहा जाता है। इस योग के कारण आपको इस वर्ष वाहन सुख की प्राप्ति होगी, पदोन्नति एवं राज्याधिकार मिलेगा, शत्रुओं का नाश होगा तथा अच्छे लोगों से मित्रवत संबंध स्थापित होंगे।

## कुण्डली के भावों का उनके कारकत्व के अनुसार विश्लेषण

### लग्न भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश सातवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको अपने पेशे से लाभ होगा। आपकी आकांक्षाएं पूरी होंगी तथा आप प्रसन्नचित्त रहेंगे। आपको अपने जीवनसाथी से भी लाभ प्राप्त होगा।

आपकी वर्षकुण्डली में, चंद्रमा, बुध, बृहस्पति या शुक्र में से कोई दो ग्रह केन्द्र में स्थित हैं, दोनों में से कोई नीचस्थ अथवा अस्त नहीं है। यह योग सभी प्रकार के अरिष्टों को अवश्य समाप्त करेगा।

आपकी वर्षकुण्डली में, चंद्रमा लग्न से चौथे, छठे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है।

### द्वितीय भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में, द्वितीयेश चौथे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको मकान, दुकान, भवन आदि से किराये के रूप में लाभ प्राप्त होने की संभावना है, इसके अतिरिक्त भी कई प्रकार के लाभ प्राप्त हो सकते हैं। आपको कृषि संबंधी कार्यों से भी लाभ प्राप्त होंगे। आपको अपने मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा।

### तृतीय भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में, राहु तीसरे भाव में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए अनुकूल होगा। इस वर्ष आपका शरीर स्वस्थ्य एवं निरोग रहेगा। आपके पारिवारिक लोगों की उन्नति होगी। आप अपने शत्रुओं पर भारी पड़ेंगे एवं उनको परास्त करेंगे। अपने कार्यक्षेत्र में आपकी प्रगति होगी, आपके अधिकारों में वृद्धि होगी। आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ व समृद्ध होगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, तृतीयेश सातवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आप अपनी योग्यता से लाभार्जन करेंगे। अपने भ्रातृ–पक्ष से आपका संबंध मधुर रहेगा एवं सुख की प्राप्ति होगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश और तृतीयेश एक साथ सातवें भाव में स्थित हैं। इस वर्ष आपको अपने भाइयों से परेशानियां हो सकती हैं।

**चतुर्थ भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में चंद्रमा चौथे भाव में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए शुभ फलदायक होगा। आपको जीवनसाथी एवं सतान का सुख प्राप्त होगा एवं उनके साथ शांतिपूर्ण एवं मधुर संबंध रहेगा। धन–लाभ की प्राप्ति, भूमि–भवन संबंधि उन्नति एवं वाहन का सुख भी प्राप्त होने के योग हैं। आपके व्यवसाय की स्थिति उत्तम रहेगी, आपको कृषि कार्य से भी लाभ होगा एवं पशुधन की प्राप्ति भी हो सकती है।आपकी वर्षकुण्डली में बृहस्पति चौथे भाव में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए बहुत अनुकूल फलदायक होगा। इस वर्ष आप शिक्षा के क्षेत्र में उत्तम शिक्षा अर्जित करने के साथ–साथ सफलता भी प्राप्त कर सकते हैं। आपका पारिवारिक जीवन सुखमय एवं शांतिपूर्ण व्यतीत होगा तथा अपने परिवारजनों के साथ आपका संबंध अच्छा रहेगा। आपकी आर्थिक स्थिति में सुदृढ़ता आएगी। कार्यक्षेत्र में आप उन्नति करेंगे, आपकी मान–प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आय के नये माध्यम प्राप्त होंगे। कृषि संबंधी कार्यों से भी आपको लाभ की प्राप्ति होने के योग हैं। इस वर्ष आपको भूमि–भवन की प्राप्ति हो सकती है अर्थात आप कोई संपत्तिक्रय कर सकते हैं, साथ ही आप वाहन का सुख भी प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, चतुर्थेश सातवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको अपने जीवनसाथी का भरपूर सुख मिलेगा एवं आप सुखमय व शांतिपूर्ण जीवन का आनन्द लेंगे। आपको उत्तम व स्वादिष्ट भोजन का आनन्द भी मिलेगा। आप भूमि, भवन, जमीन आदि का सुख भी प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश की दृष्टि लग्न पर है अथवा लग्न में ही उपस्थित है, तथा उसका मित्र ग्रह चौथे भाव में उपस्थित है। इस वर्ष आपके जमीन–जायदाद में वृद्धि होने के योग हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, बृहस्पति और चंद्रमा केन्द्र में स्थित हैं अथवा बृहस्पति और शुक्र चौथे भाव में स्थित हैं। इस वर्ष आपको बहुत कठिन परिश्रम के बाद गड़े हुए धन की प्राप्ति होने की संभावना है।

आपकी वर्षकुण्डली में, मातृ सहम का स्वामी अस्त है। इस वर्ष आपके माता–पिता में अलगाव या मनमुटाव हो सकता है।

**पंचम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, पंचमेश आठवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको घर का सुख प्राप्त होगा तथा आप व्यवसाय से लाभ प्राप्त करेंगे। यदि पंचमेश की शुभ ग्रहों से युति या शुभ ग्रहों की इस पर दृष्टि है, तो आपको इस वर्ष संतान संबंधी शुभ फल की प्राप्ति होने के योग हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में बृहस्पति जिस राशि में स्थित है, वह राशि आपकी वर्षकुण्डली में लग्न या पाँचवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको पुत्र की प्राप्ति होगी। (अगर आप उम्र के उस दौर में हैं तो अन्यथा आपको अपने पुत्र

अथवा पुत्री के किसी कार्य से सम्मान मिलेगा)

**षष्टम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, शनि छठवें भाव में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। इस वर्ष आप शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ्य एवं निरोग रहेंगे। आपके शक्ति व सामर्थ्य में वृद्धि होगी। आपके धन–धान्य एवं सुख–वैभव में भी वृद्धि होने के योग हैं। यदि कोई कानूनी या पंचायती मामला है तो उसमें आपको सफलता मिलेगी। आपको अपने परिवारजनों का भरपूर स्नेह प्राप्त होगा। आप अच्छे लोगों की संगति में रहेंगे। आपके उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे।

आपकी वर्षकुण्डली में, षष्ठेश नौवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको अपने शत्रुओं से संबंधित मामले में यात्रा करनी पड़ सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र जिस राशि में स्थित है, वह राशि आपकी वर्षकुण्डली में छठे भाव में स्थित है तथा उसमें शनि विराजमान है। इस वर्ष आप काम–भावना की अधिकता होने के कारण दुखी रह सकते हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, नवमेश छठवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको यात्राओं में कष्ट होने की संभावना है।

**सप्तम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली मे सूर्य सातवें भाव में स्थित है। इसलिए इस वर्ष आपके जीवनसाथी को किसी प्रकार का कष्ट होने की संभावना है तथा आप भी शारीरिक रूप से अस्वस्थ रह सकते हैं। आपको नेत्र, सिर, वस्थि प्रदेश से संबंधित रोग हो सकते हैं। इस वर्ष आपको यात्रा में कष्ट एवं हानि होने की संभावना है, इसलिए सावधानी अपेक्षित है। किन्तु वाहन का सुख प्राप्त करने की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल है। आप अपनी स्थिति के अनुसार वाहन खरीद सकते हैं एवं उसका सुख प्राप्त कर सकते हैं।आपकी वर्षकुण्डली में बुध सातवें भाव में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए अनुकूल होगा। आपकी रूचि धार्मिक कार्यों में रहेगी एवं आप प्रसन्नचित्त रहेंगे। अपने जीवनसाथी से आपका संबंध मधुर रहेगा एवं आपको उनका भरपूर सुख व सहयोग मिलेगा। आप कोई यात्रा भी करेंगे, जो आपके लिए सुखद एवं लाभदायक भी होगी। आपको अपने सभी कार्यों में सफलता मिलेगी, आपके व्यापार–व्यवसाय की स्थिति उत्तम रहेगी तथा आपको वांछित लाभ की प्राप्ति भी होगी। आपकी मान–प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, सप्तमेश चौथे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपका अपने जीवनसाथी के साथ मधुर संबंध रहेगा एवं उनके साथ सुखद व शांतिपूर्ण समय का आनन्द लेंगे। आप धनोपार्जन करेंगे एवं अपने अभीष्ट कार्यों में सफलता भी प्राप्त करेंगे।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश सातवें या बारहवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको लड़ाई–झगड़े व विवाद में हार का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, सातवें और चौथे भाव में शुभ ग्रह उपस्थित हैं। इस वर्ष आपको लड़ाई, झगड़े, विवाद आदि में जीत हासिल होगी।

**अष्टम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, शुक्र आठवें भाव में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए अनुकूल नहीं हो सकता है। इस वर्ष आप मानसिक रूप से चिन्तित रह सकते हैं एवं आपका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रह सकता है। आपका पारिवारिक जीवन सुख–शांतिपूर्ण नहीं हो सकता है तथा अत्यधिक कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपने परिजनों से संबंधित चिन्ताएं रह सकती हैं। आप अत्यधिक क्रोध कर सकते हैं एवं प्रतिकूल परिस्थिति में मन विचलित हो सकता है। आपका अपने शत्रुओं से विवाद हो सकता है। आप यात्रायें भी कर सकते हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, अष्टमेश छठवें भाव में स्थित है तथा इसकी पाप ग्रहों के साथ युति या ऐसे ग्रहों की इस पर दृष्टि है। इसलिए इस वर्ष आपके शत्रुओं का पतन होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में बुध मंगल की राशि में है, जो कि वर्षकुण्डली में पंचाधिकारियों में से एक है। इस वर्ष आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है, आप रोगादि से ग्रसित रह सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में आठवें भाव का स्वामी, आपकी वर्षकुण्डली में आठवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको अतिशय शारीरिक कष्ट हो सकता है।

**नवम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में मंगल नौवें भाव में स्थित है। अतः इस वर्ष आपके धन लाभ में कमी आ सकती है। आपमें बौद्धिक विकार उत्पन्न हो सकते हैं एवं आपका मन अनैतिक कार्यो की तरफ आकर्षित हो सकता है। आपका मन बेचैन रह सकता है तथा आपका अपने मित्रों एवं स्वजनों से विवाद या वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। आपके वैभव व प्रतिष्ठा में कमी आने से आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है एवं आपके आन्तरिक स्वास्थ्य के साथ–साथ आपके बाह्य स्वरूप को भी प्रभावित कर सकती है। आपको ऐसी विपरीत परिस्थितियों में धैर्य से काम लेना चाहिए एवं इस बुरे समय को व्यतीत हो जाने देना चाहिए।आपकी वर्षकुण्डली में, केतु नौवें भाव में स्थित है। अतः इस वर्ष आपका बौद्धिक विकास होगा। आप धार्मिक कार्यो में रूचि लेंगे, तीर्थ स्थानों की यात्रा भी करेंगे, तथा आपके मन में त्याग की भावना उत्पन्न होगी। आपके यश में वृद्धि होगी एवं लोग आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे। धनोपार्जन के साधन प्राप्त होने के योग भी हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, नवमेश छठें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपका अपने जीवनसाथी व स्वजनों के साथ वाद–विवाद या विरोध भी उत्पन्न हो सकता है। आपके भाग्य वृद्धि के मार्ग में अवरोध उत्पन्न हो सकते हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, मुन्था नौवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपका भाग्योदय होगा।

**दशम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, दशमेश चौथे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको भूमि–भवन संबंधी लाभ हो सकते हैं। आपको घर, मकान आदि से किराये–भाड़े के रूप में आय प्राप्त हो सकती है। आप धन संग्रह करने में भी सक्षम होंगे।

आपकी वर्षकुण्डली में, सातवें या आठवें भाव में शुक्र उपस्थित है। इस वर्ष आपको पद की प्राप्ति या पदोन्नति हो सकती है।

**एकादश भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, एकादशेश नौवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आप अन्तर्देशीय स्थानों या विदेश यात्राओं से लाभ प्राप्त कर सकते हैं। आपको अपने स्वजनों से सुख व सहयोग की प्राप्ति हो सकती है एवं लोग आपके एहसानमंद रहेंगे।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश और वर्षेश सातवें या ग्यारहवें भाव में स्थित हैं। इस वर्ष आप व्यापार, व्यवसाय आदि से धनोपार्जन करेंगे।

**द्वादश भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, द्वादशेश आठवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आप अपने शत्रुओं से भयभीत रह सकते हैं एवं वे आपके लिए परेशानियां खड़ी कर सकते हैं, जिसके कारण आपको अत्यधिक धन व्यय करना पड़ सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, अष्टमेश छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है। यह वर्ष आपके लिए लाभप्रद नहीं हो सकता है।

# पत्ययनी दशाफल

**Varhphal Years: 71 (2016-2017) Varhphal Date: 21:12:2016, 16:41Hrs**

## लग्न दशा

**21:12:2016-29:12:2016**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, लग्नेश नीचस्थ या वक्री या अस्त या ग्रसित है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। लग्न दशा आपके लिए उत्तम अवधि नहीं हो सकती है। अतः आपको अपने सभी मामलों में सामान्यतः सावधान व सतक्र रहना चाहिए एवं अपने स्वास्थ्य का अधिक ध्यान रखना चाहिए। इस अवधि के दौरान किसी भी शुभ और महत्वपूर्ण कार्य की शुरूआत करना अथवा किसी लम्बी यात्रा के लिए प्रस्थान करना फलदायक नहीं हो सकता है। हालांकि आपके कार्यस्थल की स्थिति कुछ हद तक बिगड़ सकती है। यद्यपि सामान्य लोग आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे, फिर भी आपके वरिष्ठ/अधिकारी आपको दबाने का प्रयास कर सकते हैं एवं तक्रसंगत रूप से आपको मिलने वाला श्रेय किसी और को दे सकते हैं। या फिर आपको अन्यायपूर्वक बहुत छोटी अथवा बिना किसी गलती के दोषी ठहराया जा सकता है।

## रवि दशा

**30:12:2016-13:03:2017**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, सूर्य उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित नहीं है। समग्र रूप से यह एक उदासीन योग का निर्माण करता है। अतः सूर्य की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। हालांकि आपको अपने कार्यस्थल पर कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है एवं आप अपने किसी वरिष्ठ अथवा सहकर्मी के साथ मामूली असहमति अथवा गलतफहमी के कारण झुंझलाहट महसूस कर सकते हैं।

## मंगल दशा

**14:03:2017-04:04:2017**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मंगल उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते है। अतः मंगल की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। हालांकि आपको अपने कार्यस्थल पर कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। या फिर आप अपने सगे या चचेरे भाई या पड़ोसी के साथ संपत्ति–विवाद में फंस सकते हैं, जिसके कारण आप झुंझलाहट महसूस कर सकते हैं।

## चंद्र दशा

**05:04:2017-13:05:2017**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, सूर्य उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त भी नहीं है। अतः चंद्रमा की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/समारोह के होगी। हालांकि आप अपने घरेलू क्षेत्र में कुछ समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपके कुछ पारिवारिक–सदस्य क्रोधपूर्ण ढंग से बात व व्यवहार कर सकते हैं, जिसके कारण आप काफी चिड़चिड़े व अप्रसन्न

हो सकते हैं।

## बुध दशा

**14:05:2017-06:10:2017**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, बुध उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते है। अतः बुध की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। सामान्यतः आपके सभी मामलें भली भांति चलेंगे। आपके पेशे के क्षेत्र में चीजें बहुत सहजतापूर्ण ढंग से होंगी। अपने सगे–संबंधियों व मित्रों के साथ मिलने–जुलने के लिए आप कुछ खाली समय निकालने में सक्षम होंगे।

## शुक्र दशा

**07:10:2017-21:10:2017**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, शुक्र उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते है। अतः शुक्र की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। सामान्यतः आपके सभी मामलें भली भांति चलेंगे। आपके पेशे के क्षेत्र में चीजें बहुत सहजतापूर्ण ढंग से होंगी। अपने सगे–संबंधियों व मित्रों की संगति में बिताने के लिए आप कुछ खाली समय निकालने में सक्षम होंगे। आपका घरेलू जीवन आनन्दपूर्ण व सुखमय होगा।

## गुरु दशा

**22:10:2017-17:12:2017**

श्श इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, गुरु उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते है। अतः गुरु की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। सामान्यतः आपके सभी मामलें भली भांति चलेंगे। आपके पेशे के क्षेत्र में चीजें बहुत सहजतापूर्ण ढंग से होंगी। अपने सगे–संबंधियों व मित्रों की संगति में बिताने के लिए आप कुछ खाली समय निकालने में सक्षम होंगे।

## शनि दशा

**18:12:2017-20:12:2017**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, शनि नीचस्थ है या अस्त अथवा ग्रसित होने के कारण दूषित है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। शनि की दशा आपके लिए अच्छी अवधि नहीं हो सकती है। अतः आपको सावधान व सचेत रहना चाहिए एवं अपने स्वास्थ्य का उचित ध्यान रखना चाहिए। आपके कुछ पारिवारिक सदस्यों का बिगड़ता हुआ स्वास्थ्य आपको कुछ चिन्तित कर सकता है। अथवा धन के अवरूद्ध होने के कारण आप अपने वचनों को पूरा करने में बहुत कठिनाई महसूस कर सकते हैं। आप कई कारणों से दुखी हो सकते हैं एवं अप्रसन्न या व्यथित महसूस कर सकते हैं। अथवा आप दुख या निराशा से पीड़ित हो सकते हैं। इस अवधि के दौरान किसी भी महत्वपूर्ण कार्य की शुरूआत करना अथवा किसी लम्बी यात्रा के लिए प्रस्थान करना अधिक

फलदायक नहीं हो सकता है।

# ज्योतिष सारिणी

| | SAMPLE | ज्योतिष सारिणी |
|---|---|---|
| जन्म दिनाकं | 21:12:1945 | 21:12:2017 |
| दिन | शुक्रवार | वृहस्पतिवार |
| ज्योतिषिय वार | शुक्रवार | वृहस्पतिवार |
| जन्म समय | 11:34:00 | 22:42:47 |
| जन्म स्थान | ranchi | ranchi |
| अक्षांश | 023:20:00N | 023:20:00N |
| रेखांश | 085:19:00E | 085:19:00E |
| यु./ग्रीष्म समय संस्कार | -00:00 | -00:00 |
| जी. एम. टी. समय | 006:03:00 | 017:12:46 |
| स्थानीय समय संस्कार | 000:11:15 hrs | 000:11:16 hrs |
| स्थानीय समय | 011:45:15 hrs | 022:54:03 hrs |
| सांपातिक काल | 017:43:03 hrs | 028:55:53 hrs |
| सूर्योदय | 06:28:24AM | 06:28:29AM |
| सूर्यास्त | 05:04:58PM | 05:05:06PM |

| | | |
|---|---|---|
| लग्न | मीन | सिंह |
| लग्नाधिपति | गुरु | रवि |
| राशि (चन्द्रमा) | कर्क | मकर |
| राशिपति | चंद्र | शनि |
| नक्षत्र | पुष्य | श्रवण |
| नक्षत्रपति | शनि | चंद्र |
| नक्षत्र चरण | 1 | 1 |
| पाया | रजत | स्वर्ण |
| ऋतु | हेमन्त | हेमन्त |
| मास | पौष कृष्ण | पौष शुक्ल |
| पक्ष | कृष्ण | शुक्ल |
| तिथि | तृतीया | चतुर्थी |
| तिथि श्रेणी | जया | रिक्ता |
| तिथि पति | मंगल | बुध |
| करण | वनिज | वनिज |
| करण श्रेणी | चर | चर |
| करणपति | मनिभद्र | मनिभद्र |
| सूर्य सिद्धान्त योग | इन्द्रय | ब्याधात |
| तत्व | जल | वायु |
| तत्वाधिपति | शुक्र | शनि |
| विहग | पिंगला | कुक्कुट |
| वेध | पूर्वाशाढ़ | अरिद्रा |

# ग्रह स्थिती वर्षफल

**Varhphal Years: 72 (2017-2018) Varhphal Date: 21:12:2017, Time: 22:42Hrs**

| ग्रह | राशि | अंश | नक्षत्र | विशेष |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | मीन | 01:13 | पूर्वाभाद(4) | |
| सूर्य(ग्र.) | धनु | 05:55 | मूला (2) | मित्र राशि |
| चन्द्रमा | कर्क | 04:53 | पुष्य (1) | स्व राशि |
| मंगल(व.) | कर्क | 08:17 | पुष्य (2) | नीच राशि |
| बुध | वृश्चिक | 14:56 | अनुराधा (4) | सम राशि |
| बृहस्पति | तुला | 00:18 | चित्रा (3) | शत्रु राशि |
| शुक्र | वृश्चिक | 25:47 | ज्येष्ठा (3) | सम राशि |
| शनि(व.) | कर्क | 00:04 | पुनर्वसु (4) | शत्रु राशि |
| राहु(व.) | मिथुन | 06:56 | अरिद्रा (1) | मित्र राशि |
| केतु(व.) | धनु | 06:56 | मूला (3) | स्व नक्षत्र |
| हर्षल(व.) | वृष | 21:45 | रोहिणी (4) | ..... |
| नेपच्यून | कन्या | 15:24 | हस्ता (2) | ..... |
| प्लूटो(व.) | कर्क | 18:23 | अश्लेषा (1) | ..... |

| ग्रह | राशि | अंश | नक्षत्र | विशेष |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | सिंह | 21:12 | पूर्वाभाद(3) | |
| सूर्य | धनु | 05:55 | मूला (2) | मित्र राशि |
| चन्द्रमा | मकर | 13:10 | श्रवण (1) | स्व राशि |
| मंगल | तुला | 13:38 | स्वाति (3) | सम राशि |
| बुध(व.) | वृशि | 19:03 | ज्येष्ठा (1) | स्व राशि |
| बृहस्पति | तुला | 21:00 | विशाखा (1) | स्व राशि |
| शुक्र(अ.) | धनु | 01:28 | मूला (1) | सम राशि |
| शनि(अ.) | धनु | 06:04 | मूला (2) | सम राशि |
| राहु(व.) | कर्क | 23:20 | अश्लेषा (3) | शत्रु राशि |
| केतु(व.) | मकर | 23:20 | धनिष्ठा (1) | शत्रु राशि |
| हर्षल(व.)(अ.) | मेष | 00:31 | अश्विनी (1) | .... |
| नेपच्यून | कुंभ | 17:36 | शतभिषा (4) | .... |
| प्लूटो | धनु | 24:19 | पूर्वाषाढ़ (4) | .... |

लग्न कुण्डली

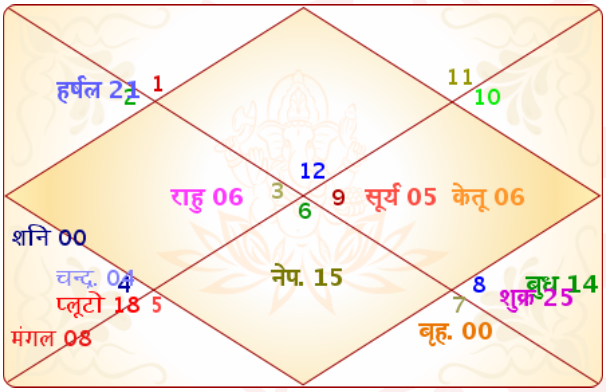


चन्द्र कुण्डली

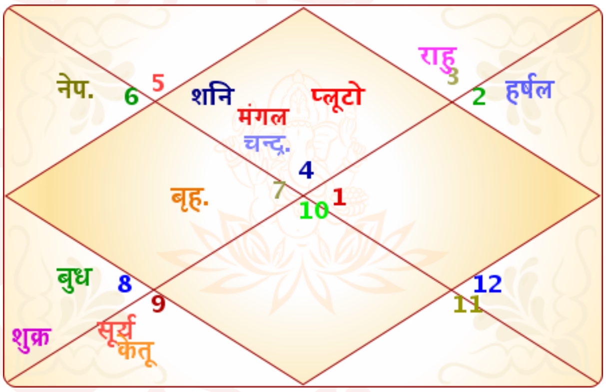


लग्न कुण्डली ( वर्षफल )

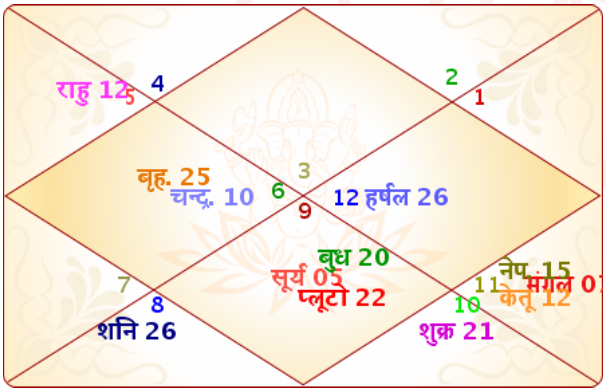


चन्द्र कुण्डली ( वर्षफल )

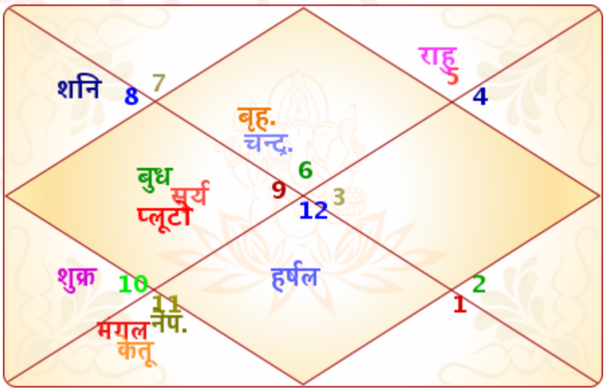

# द्वादश वर्ग कुण्डली

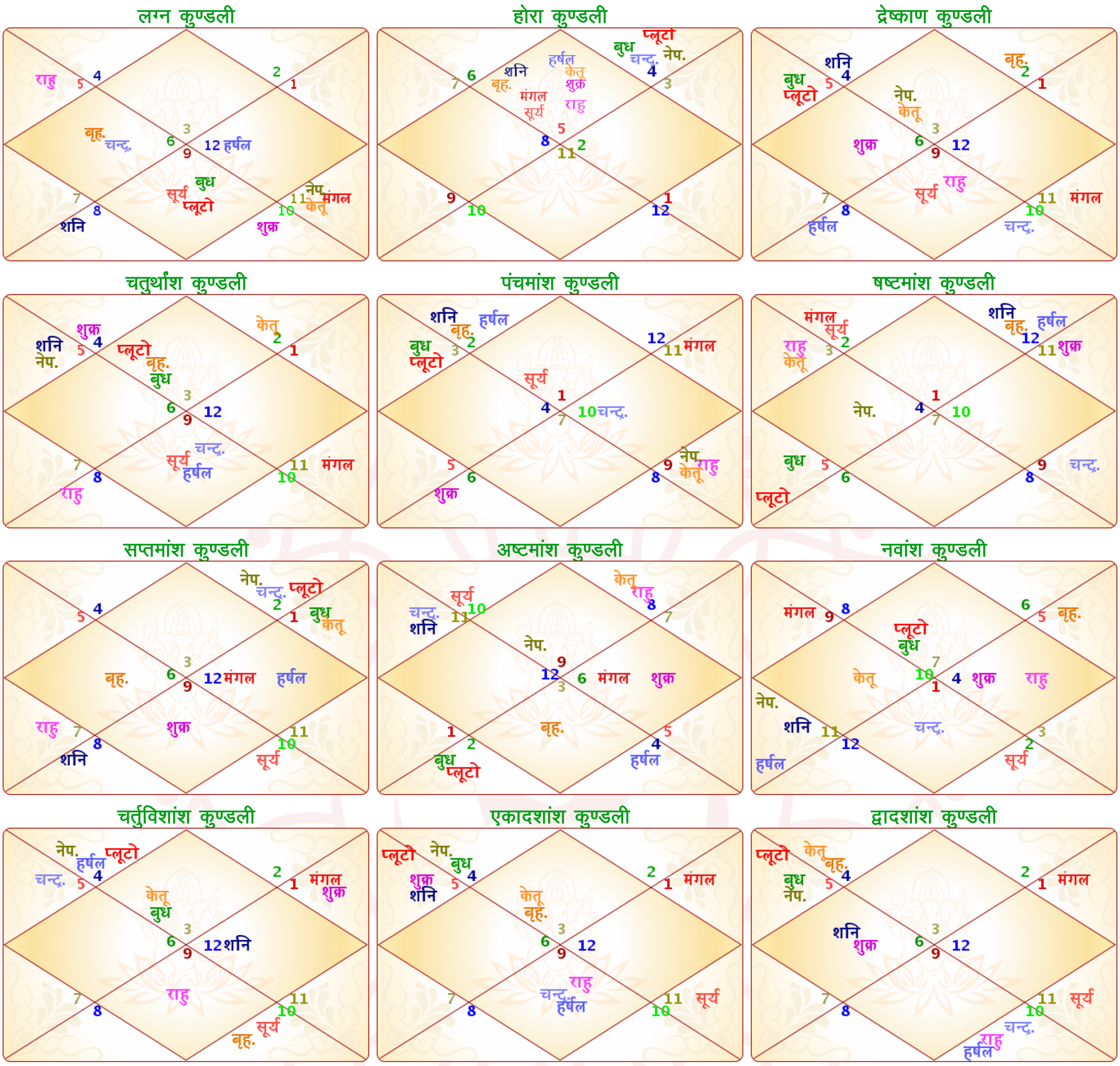


## वर्षफल कुण्डली में ग्रहों की दृष्टि

| | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहू | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रवि | .... | सम | गु.प्रेम | सम | गु.प्रेम | प्र.शत्रु | प्र.शत्रु | सम | सम |
| चंद्र | सम | .... | गु.शत्रु | गु.प्रेम | गु.शत्रु | सम | सम | प्र.शत्रु | प्र.शत्रु |
| मंगळ | गु.प्रेम | गु.शत्रु | .... | सम | प्र.शत्रु | गु.प्रेम | गु.प्रेम | गु.शत्रु | गु.शत्रु |
| बुध | सम | गु.प्रेम | सम | .... | सम | सम | सम | प्र.प्रेम | गु.प्रेम |
| गुरु | गु.प्रेम | गु.शत्रु | प्र.शत्रु | सम | .... | गु.प्रेम | गु.प्रेम | गु.शत्रु | गु.शत्रु |
| शुक्र | प्र.शत्रु | सम | गु.प्रेम | सम | गु.प्रेम | .... | प्र.शत्रु | सम | सम |
| शनि | प्र.शत्रु | सम | गु.प्रेम | सम | गु.प्रेम | प्र.शत्रु | .... | सम | सम |
| राहू | सम | प्र.शत्रु | गु.शत्रु | प्र.प्रेम | गु.शत्रु | सम | सम | .... | प्र.शत्रु |
| केतु | सम | प्र.शत्रु | गु.शत्रु | गु.प्रेम | गु.शत्रु | सम | सम | प्र.शत्रु | .... |

प्र.प्रेमः–प्रकट प्रेम दृष्टि ,गु.प्रेमः–गुप्त प्रेम दृष्टि ,प्र.शत्रुः–प्रकट शत्रु दृष्टि ,गु.शत्रुः–गुप्त शत्रु दृष्टि ,समः–सम दृष्टि ,

# वर्षफल कुण्डली में ग्रहों का बल

Varhphal Years: 72 (2017-2018) Varhphal Date: 21:12:2017, Time: 22:42Hrs

## पंचवर्गीय बल

| क्र0स0 | बल | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | क्षेत्र बल | 22.5 | 15.0 | 22.5 | 15.0 | 22.5 | 22.5 | 22.5 |
| 2 | उच्च बल | 6.21 | 7.8 | 8.4 | 12.88 | 8.22 | 7.16 | 14.88 |
| 3 | हद्दा बल | 11.25 | 3.75 | 7.5 | 7.5 | 11.25 | 11.25 | 11.25 |
| 4 | द्रेक्कन बल | 5.0 | 2.5 | 7.5 | 5.0 | 10.0 | 5.0 | 5.0 |
| 5 | नवांश बल | 1.25 | 1.25 | 3.75 | 2.5 | 1.25 | 3.75 | 1.25 |
| | योग | 11.55 | 7.58 | 12.41 | 10.72 | 13.3 | 12.41 | 13.72 |
| | तुलनात्मक बल | बलशाली | साधारण | बलशाली | बलशाली | बलशाली | बलशाली | बलशाली |

## द्वादश वर्गीय बल

| क्र0स0 | बल | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | राशि बल | -1 | 0 | -1 | 0 | -1 | -1 | -1 |
| 2 | होरा बल | +2 | +2 | -1 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| 3 | द्रेक्कन बल | -1 | 0 | -1 | 0 | 0 | -1 | -1 |
| 4 | चतुर्थाशं बल | -1 | 0 | -1 | 0 | 0 | -1 | -1 |
| 5 | पंचमाशं बल | -1 | 0 | 0 | +2 | 0 | -1 | +2 |
| 6 | षष्टाशं बल | 0 | 0 | 0 | 0 | -1 | -1 | 0 |
| 7 | सप्तमाशं बल | 0 | 0 | -1 | +2 | -1 | -1 | +2 |
| 8 | अष्टमाशं बल | 0 | +2 | 0 | 0 | 0 | -1 | +2 |
| 9 | नवाशं बल | 0 | 0 | -1 | 0 | 0 | -1 | 0 |
| 10 | दसाशं बल | 0 | 0 | -1 | 0 | -1 | -1 | +2 |
| 11 | एकादसाशं बल | 0 | 0 | 0 | 0 | -1 | -1 | +2 |
| 12 | द्ववादशाशं बल | 0 | -1 | 0 | +2 | 0 | -1 | +2 |
| | योग | -2 | +3 | -7 | +6 | -5 | -11 | +9 |
| | तुलनात्मक बल | सम | अच्छा | बहुत बुरा | बहुत अच्छा | बहुत बुरा | निकृष्ट | साधारण |

## हर्ष बल

| क्र0स0 | बल | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | स्थान बल | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 5.0 | 0.0 |
| 2 | क्षेत्र बल | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 |
| 3 | ओज–युग्म बल | 5.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 |
| 4 | दिवा–रात्रि बल | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 5.0 | 5.0 |
| | योग | 5 | 5 | 0 | 5 | 0 | 10 | 5 |
| | तुलनात्मक बल | अल्पबली | अल्पबली | निर्बबली | अल्पबली | निर्बबली | मध्यबली | अल्पबली |

# वर्षफल सहम

Varhphal Years: 72 (2017-2018) Varhphal Date: 21:12:2017, Time: 22:42Hrs

| क्र0स0 | सहम का नाम | राशि | अंश | सहम अधिपति | 11 भाव पति | 8 भाव पति |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | पुण्य सहम (भाग्य) | कर्क | 013:57:49 | चन्द्रमा | शुक्र | ... |
| 2 | विद्या सहम | तुला | 028:26:52 | शुक्र | सूर्य | ... |
| 3 | यश सहम | मिथुन | 014:09:15 | बुध | मंगल | ... |
| 4 | मित्र सहम (मित्र) | कन्या | 024:25:35 | बुध | चन्द्रमा | ... |
| 5 | महात्य सहम (महानता) | वृश्चिक | 020:52:45 | मंगल | बुध | ... |
| 6 | आशा सहम (इच्छा) | मिथुन | 028:46:07 | बुध | मंगल | ... |
| 7 | समर्थ सहम (पुरूषार्थ) | वृश्चिक | 013:29:44 | मंगल | बुध | ... |
| 8 | भ्रात्रि सहम (भाई) | कर्क | 006:08:49 | चन्द्रमा | शुक्र | ... |
| 9 | गौरव सहम (सम्मान) | मीन | 028:04:49 | बृहस्पति | शनि | ... |
| 10 | पितृ सहम (पिता) | सिहं | 021:03:30 | सूर्य | बुध | ... |
| 11 | राजा सहम (अधिकार) | सिहं | 021:03:30 | सूर्य | बुध | ... |
| 12 | मात्रि सहम (माता) | कर्क | 009:30:53 | चन्द्रमा | शुक्र | ... |
| 13 | अपत्य सहम (संतान) | धनु | 013:21:34 | बृहस्पति | शुक्र | ... |
| 14 | जीव सहम (जीवन) | कर्क | 006:08:49 | चन्द्रमा | शुक्र | ... |
| 15 | कर्म सहम (कार्रवाई) | तुला | 026:37:11 | शुक्र | सूर्य | ... |
| 16 | रोग सहम | मीन | 029:14:33 | बृहस्पति | ... | शुक्र |
| 17 | काली सहम (कलह, संघर्ष) | सिहं | 013:49:39 | सूर्य | ... | बृहस्पति |
| 18 | शास्त्र सहम (उच्च शिक्षा) | कुम्भ | 004:06:36 | शनि | बृहस्पति | ... |
| 19 | बन्धु सहम (रिश्तेदार) | वृश्चिक | 015:19:25 | मंगल | बुध | ... |
| 20 | निधन सहम | मिथुन | 013:11:42 | बुध | ... | शनि |
| 21 | परदेश सहम (विदेश) | कुम्भ | 013:41:22 | शनि | बृहस्पति | ... |
| 22 | धन सहम (धन) | वृश्चिक | 019:04:38 | मंगल | बुध | ... |
| 23 | प्रदर सहम (परस्त्रीगमन) | कन्या | 025:39:16 | बुध | चन्द्रमा | ... |
| 24 | वनिज सहम (धंधा) | मिथुन | 027:05:16 | बुध | मंगल | ... |
| 25 | कार्यसिद्धि सहम (सफलता) | तुला | 028:58:46 | शुक्र | सूर्य | ... |
| 26 | विवाह सहम | कन्या | 025:48:07 | बुध | चन्द्रमा | ... |
| 27 | संताप सहम (दुःख) | मीन | 028:16:28 | बृहस्पति | ... | शुक्र |
| 28 | श्रद्धा सहम (भक्ति) | कर्क | 003:21:53 | चन्द्रमा | शुक्र | ... |
| 29 | प्रिति सहम (प्यार) | मीन | 001:03:34 | बृहस्पति | शनि | ... |
| 30 | जाड्य सहम (स्थाई रोग) | कुम्भ | 011:29:18 | शनि | ... | बुध |
| 31 | ब्यापार सहम | मिथुन | 028:46:07 | बुध | मंगल | ... |
| 32 | शत्रु सहम | वृश्चिक | 013:38:35 | मंगल | ... | बुध |
| 33 | जलपत्तन सहम (विदेश यात्रा) | मकर | 012:15:48 | शनि | मंगल | ... |
| 34 | बंधन सहम (कारावास) | मकर | 013:18:59 | शनि | ... | सूर्य |
| 35 | अपघात सहम (आकस्मिक दुर्घटना) | मीन | 013:39:47 | बृहस्पति | ... | शुक्र |
| 36 | वित्तहानि सहम | कुम्भ | 013:11:42 | शनि | ... | बुध |
| 37 | त्रिक स्फूट (दुर्घटना) | वृष | 020:43:17 | शुक्र | ... | बृहस्पति |
| 38 | घात स्थान (अनहोनी) | मेष | 012:18:40 | मंगल | ... | मंगल |

# त्रिपताकी चक्र

**Varhphal Years: 72 (2017-2018) Varhphal Date: 21:12:2017, Time: 22:42Hrs**

| क्र0स0 | राशि | ग्रह |
|---|---|---|
| 1 | 5 | |
| 2 | 6 | |
| 3 | 7 | शनि |
| 4 | 8 | |
| 5 | 9 | मंगल |
| 6 | 10 | बृहस्पति, राहु |
| 7 | 11 | बुध, शुक्र |
| 8 | 12 | सूर्य, चन्द्रमा |
| 9 | 1 | |
| 10 | 2 | |
| 11 | 3 | |
| 12 | 4 | केतु |

## त्रिपताकी चक्र में वेध

**लग्न** : सूर्य , चन्द्र , शनि , केतु
**सूर्य** : सूर्य , चन्द्र , शनि , केतु , चन्द्र , शनि , केतु
**चन्द्रमा** : सूर्य , शनि , केतु
**मंगल** : गुरू , राहु , केतु
**बुध** : शुक्र
**बृहस्पति** : मंग. , राहु
**शुक्र** : बुध
**शनि** : सूर्य , चन्द्र

## ग्रहों द्वारा चन्द्र वेध का फल

**सूर्य :**

आत्मविश्वास की कमी, बदनामी, वृथा अंहकार, दोषयुक्त आँखें, पिता को कठिनाई, मानसिक तनाव, चिड़चिड़ापन, उच्च ज्वर, पित्तजनित रोग तथा निराशायें।

**मंगल :**

शत्रुओं से भय, हथियार, रक्त अनियमितत, दुर्घटनायें, शरीर में दर्द और चोट, शीघ्र क्रोधित होना, लड़ाई–झगड़ा, संघर्ष, हिंसा, लेकिन साथ ही ज्ञान व धन की प्राप्ति भी।

**बुध :**

ज्ञान व बुद्धिमत्ता में वृद्धि, तीक्ष्ण बुद्धि, अच्छे लोगों की संगति और धन का लाभ। लेकिन यदि दूषित है, तो व्यक्ति उतावला व क्षुद्र दिमाग वाला होता है, परिवार की नाराजगी, तनाव और चिन्ताओं की प्राप्ति तथा शत्रुओं से भय।

**बृहस्पति :**

शांति और प्रसन्नता, सभ्य लोगों की संगति, तीर्थ यात्रा, धार्मिक कार्यों के प्रति रूझान, सामाजिक स्तर में उन्नति, धन का लाभ, उपक्रमों के सफलता, संतान का जन्म, और सामान्य समृद्धि।

**शुक्र :**

इच्छाओं की पूर्ति, इन्द्रिय सुख की प्राप्ति, धन–संपदा व शिक्षा की प्राप्ति, शत्रुओं पर विजय। लेकिन शारीरिक सुख के प्रति अत्यधिक लालसा होने के कारण मानसिक व्यग्रता, जल से भय और वातमय विकार।

**शनि :**

तुच्छ व निम्न स्तर के लोगों के साथ संगति, स्वार्थी, तानाशाही, गरीबी, वियोग, यौन विकृति, शारीरिक रोग, सर्दी व जुकाम के साथ–साथ वातमय विकार।

**राहु :**

गंभीर बीमारी/आशंका, मान–प्रतिष्ठा/धन की हानि, विदेशी स्रोतों से कठिनाईयां, उदासीन मन, डरपोक स्वभाव तथा अनेक प्रकार की कठिनाइयों से पीड़ित।

**केतु :**

अस्वस्थता, कमजोर पाचनशक्ति, अस्थिरता, आत्मिक व घुमन्तु प्रकृति, निराशा, चिन्तायें और दुख।

Varhphal Years: 72 (2017-2018) Varhphal Date: 21:12:2017, Time: 22:42Hrs

| मुद्दा योगिनी दशा | | | मुद्दा षोडशोत्तरी दशा | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दशा | अवधि | से | दशा | अवधि | से |
| पिगंला (सूर्य) | 0.0 y.0.0 m.20 d. | 21:12:2017 | गुरु | 0.0 y.1.0 m.11 d. | 21:12:2017 |
| धान्य (वृहस्पति) | 0.0 y.1.0 m.0 d. | 11:01:2018 | शनि | 0.0 y.1.0 m.14 d. | 31:01:2018 |
| भ्रमरि (मंगल) | 0.0 y.1.0 m.10 d. | 10:02:2018 | केतु | 0.0 y.1.0 m.17 d. | 16:03:2018 |
| भभद्रिका (बुध) | 0.0 y.1.0 m.21 d. | 23:03:2018 | चंद्र | 0.0 y.1.0 m.20 d. | 03:05:2018 |
| उल्का (शनि) | 0.0 y.2.0 m.0 d. | 12:05:2018 | बुध | 0.0 y.1.0 m.23 d. | 22:06:2018 |
| सिद्धा (शुक्र) | 0.0 y.2.0 m.11 d. | 12:07:2018 | शुक्र | 0.0 y.1.0 m.26 d. | 14:08:2018 |
| संकटा (शनि) | 0.0 y.2.0 m.20 d. | 21:09:2018 | रवि | 0.0 y.1.0 m.5 d. | 10:10:2018 |
| मंगला (चन्द्रमा) | 0.0 y.0.0 m.10 d. | 11:12:2018 | मंगल | 0.0 y.1.0 m.8 d. | 14:11:2018 |

## पत्ययनी दशा

| क्र0स0 | दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | शुक्र | 0.0 y.0.0 m.26 d. | 21:12:2017 |
| 2 | रवि | 0.0 y.2.0 m.16 d. | 16:01:2018 |
| 3 | शनि | 0.0 y.0.0 m.3 d. | 02:04:2018 |
| 4 | चंद्र | 0.0 y.4.0 m.1 d. | 05:04:2018 |
| 5 | मंगल | 0.0 y.0.0 m.8 d. | 05:08:2018 |
| 6 | बुध | 0.0 y.3.0 m.2 d. | 13:08:2018 |
| 7 | गुरु | 0.0 y.1.0 m.4 d. | 14:11:2018 |
| 8 | लग्न | 0.0 y.0.0 m.4 d. | 18:12:2018 |

## मुद्दा विंशोत्तरी दशा

| क्र0स0 | दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | शनि | 0.0 y.1.0 m.27 d. | 21:12:2017 |
| 2 | बुध | 0.0 y.1.0 m.21 d. | 17:02:2018 |
| 3 | केतु | 0.0 y.0.0 m.21 d. | 10:04:2018 |
| 4 | शुक्र | 0.0 y.2.0 m.0 d. | 01:05:2018 |
| 5 | रवि | 0.0 y.0.0 m.19 d. | 01:07:2018 |
| 6 | चंद्र | 0.0 y.1.0 m.0 d. | 19:07:2018 |
| 7 | मंगल | 0.0 y.0.0 m.21 d. | 19:08:2018 |
| 8 | राहू | 0.0 y.1.0 m.24 d. | 09:09:2018 |
| 9 | गुरु | 0.0 y.1.0 m.19 d. | 03:11:2018 |

## वर्ष जैमिनी चर दशा

| क्र0स0 | दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | सिंह | 0.0 y.1.0 m.18 d. | 21:12:2017 |
| 2 | मकर | 0.0 y.0.0 m.6 d. | 07:02:2018 |
| 3 | मिथुन | 0.0 y.0.0 m.30 d. | 13:02:2018 |
| 4 | वृश्चिक | 0.0 y.0.0 m.6 d. | 15:03:2018 |
| 5 | मेष | 0.0 y.1.0 m.30 d. | 21:03:2018 |
| 6 | कन्या | 0.0 y.0.0 m.12 d. | 20:05:2018 |
| 7 | कुंभ | 0.0 y.0.0 m.12 d. | 01:06:2018 |
| 8 | कर्क | 0.0 y.1.0 m.30 d. | 13:06:2018 |
| 9 | धनु | 0.0 y.0.0 m.12 d. | 11:08:2018 |
| 10 | वृष | 0.0 y.0.0 m.30 d. | 23:08:2018 |
| 11 | तुला | 0.0 y.1.0 m.30 d. | 22:09:2018 |
| 12 | मीन | 0.0 y.0.0 m.30 d. | 21:11:2018 |

# वर्षफल कुण्डली से महत्वपूर्ण भविष्यफल

**Varhphal Years: 72 (2017-2018) Varhphal Date: 21:12:2017, Time: 22:42Hrs**

## (अष्टक चक्र, ढुढिंराजा पद्धति, वर्षेश्वर और मुन्था)

आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्तमान वर्ष के लिए अष्टक चक्र सूचकांक ग्रह शनि है। यह ग्रह पांचवें भाव में स्थित है। यदि आपकी वर्तमान आयु के लिए प्रासंगिक है तो इस वर्ष के दौरान आप किसी महाविद्यालय/पॉलिटेक्निक/संस्थान से एक शैक्षिक योग्यता (डिग्री या डिप्लोमा) प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्तमान वर्ष के लिए अष्टक चक्र सूचकांक ग्रह शनि है। यह ग्रह चंद्र–राशि से सप्तमेश है, जो कि लग्न से सातवें भाव पर दृष्टि डाल रहा है। यदि आपकी वर्तमान आयु के लिए प्रासंगिक है तो इस वर्ष के दौरान आप विवाह करने अथवा खुद का नया व्यापार (संभवतः सांझेदारी/सहभागिता के द्वारा) प्रारम्भ करने की उम्मीद कर सकते हैं।

आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्तमान वर्ष के लिए अष्टक चक्र सूचकांक ग्रह शनि है। यह ग्रह सप्तमेश है, जो कि चंद्र–राशि से सातवें भाव पर दृष्टि डाल रहा है। यदि आपकी वर्तमान आयु के लिए प्रासंगिक है तो इस वर्ष के दौरान आप आप विवाह करने अथवा खुद का नया व्यापार (संभवतः सांझेदारी/सहभागिता के द्वारा) प्रारम्भ करने की उम्मीद कर सकते हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, शनि वर्षेश्वर ग्रह है।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्षेश्वर एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह है। यह ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि में स्थित है। इसके अतिरिक्त इसे पंचवर्गीय बल द्वारा उत्तम शक्ति प्राप्त नहीं हो रही है। परिणामस्वरूप, इस वर्ष के दौरान होने वाली घटनाएं अधिक सहज व सरल नहीं हो सकती हैं। यदि आपकी वर्षफल कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अचानक किसी अशुभ घटना का सामना करना पड़ सकता है अथवा आपको आर्थिक मामलों में व्यापक उतार–चढ़ाव की अनुभूति हो सकती है।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्षेश्वर शनि है। अतः यह वर्ष आपके लिए कुछ–कुछ समस्यात्मक हो सकता है। आपका स्वास्थ्य अथवा मिजाज उत्तम नहीं रह सकता है। आप अपने व्यवसाय में एक अस्थाई आघात का सामना कर सकते हैं अथवा आप असफलता या निराशा के कारण अप्रसन्न हो सकते हैं। आपके कुछ नए परिचितों के कारण आपको दुख हो सकता है तथा प्रबल संभावना है कि वह व्यक्ति विपरीत लिंग का हो सकता है। सुखद पक्ष यह है कि आप एक नया लाभप्रद रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा नया व्यापार या कार्यशाला/कारखाना शुरू कर सकते हैं। किसी भिन्न समुदाय या धर्म तथा दूरस्थ स्थान से संबंधित या निवास

करने वाले किसी व्यक्ति के संपक्र में आ सकते हैं और उससे कोई अवसर प्राप्त कर सकते हैं। यद्यपि आपको कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता हो सकती है, फिर भी आपके पद और पारिश्रमिक में वृद्धि होगी तथा साथ ही आपका जीवन स्तर भी ऊँचा होगा।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था आठवें में है। यह काफी प्रतिकूल स्थिति है। अतः आपको बहुत सावधान व सतक्र रहना चाहिए। वर्ष का आगामी समय आपके लिए बहुत कष्टकारी साबित हो सकता है। आपके शत्रुओं की सतत गतिविधियां आपको निरन्तर तनाव में रख सकती हैं। आपको अपने वरिष्ठों व अधिकारियों से किसी प्रकार के विवाद में फंसने से बचना चाहिए, अन्यथा आप उनके क्रोध का शिकार हो सकते हैं। आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं रह सकता है एवं आपके पिता का गिरता हुआ स्वास्थ्य आपकी चिन्ता का कारण हो सकता है। झगड़े व गलतफहमियां तथा भारी मात्रा में व्यर्थ के खर्चे आपको चिन्तित कर सकते हैं। आप कुछ दूरस्थ स्थानों की यात्राएं भी कर सकते हैं, किन्तु संभवतः वो यात्राएं फलदायक नहीं हो सकती हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था–राशि गुरु की राशि में स्थित है। आगामी वर्ष आपके लिए अनुकूल है। आपके सभी प्रयास पर्याप्त रूप से फलदायक होंगे। आप अपने वरिष्ठों से प्रत्यक्ष समर्थन एवं अधिकारियों से अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्त करेंगे। आपके व्यवसाय में उत्तम प्रगति होगी एवं कुछ ज्ञानी और सदाचारी लोगों के साथ सम्पक्र बनेंगे। आपका धार्मिक रूझान गहन होगा एवं पवित्र स्थानों की यात्राएं कर सकते हैं। आप बच्चों के बहुत शौकीन हो सकते हैं एवं वे आपके लिए आनन्द का स्रोत बन सकते हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था–राशि का स्वामी जन्मकुण्डली में जिस राशि में स्थित है, वर्षफल कुण्डली में भी उसी राशि में स्थित है। इसलिए यह वर्ष महत्वपूर्ण और घटनाओं से भरा होगा। जैसाकि वर्षफल कुण्डली में मुन्था–राशि के स्वामी की किसी भी ग्रह के साथ युति है अथवा दृष्टि (ताजिक) संबंध नहीं है, इसलिए वर्ष के आरम्भ में एवं वर्ष के अन्त में भी कुछ अनुकूल अवसर या घटनाएं घटित होने की आशा है अर्थात इस वर्ष एक बार आपके जन्मदिन के कुछ दिनों के बाद एवं अगले वर्ष आपके जन्मदिन के कुछ दिनों से तुरन्त पहले।

# वर्षफल सहम से भविष्यफल

**Varhphal Years: 72 (2017-2018) Varhphal Date: 21:12:2017, Time: 22:42Hrs**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, यश सहम एकादशेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा एकादशेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन के द्वारा पता चलता है कि दो तिथियों 22रू04रू2018 और 22रू08रू2018 में से किसी एक या दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ अनुकूल घटनाएं (इस विशेष सहम के अनुरूप) हो सकती हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, महात्य सहम एकादशेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा एकादशेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 20:12:2018 और 23:12:2017 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ अनुकूल घटनाएं (इस विशेष सहम के अनुरूप) हो सकती हैं।

आपकी कुण्डली में एक ही ग्रह मंगल जन्मकुण्डली और वर्षफल कुण्डली में धन–सहम का स्वामी है। सहम का स्वामी एक या एक से अधिक शुभ ग्रहों के साथ जुड़ा हुआ है या उनकी इस पर दृष्टि पड़ रही है एवं यह किसी अशुभ ग्रह के साथ ना तो जुड़ा हुआ है और ना ही ऐसे किसी ग्रह की इस पर दृष्टि पड़ रही है। आप धन संबंधी मामलों में अत्यंत भाग्यशाली होंगे एवं आप जिस काम में भी हाथ डालेंगे, उसमें आपको अत्यंत सफलता और लाभ मिलेगा। आपके संचित धन, मूल्यवान एवं अनमोल वस्तुओं के संग्रह में विशेष वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त, आपके परिवार में एक शुभ समारोह आयोजित हो सकता है एवं आपका घर खुशियों के ठहाकों से गूंज उठेगा।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, धन–सहम एकादशेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा एकादशेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 21:12:2018 और 21:12:2017 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ अनुकूल घटनाएं (इस विशेष सहम से संबंधित) हो सकती हैं।

# वर्षफल

**Varhphal Years: 72 (2017-2018) Varhphal Date: 21:12:2017, Time: 22:42Hrs**

## वर्षेश और अन्य कारकों का फल

आपका वर्षेश शनि इस वर्ष मध्यम बली है। अतः यह वर्ष आपके लिए सामान्य रूप से फलदायक रहेगा। रोगादि के कारण आप स्वयं को शारीरिक रूप से अस्वस्थ महसूस कर सकते हैं। आप नेत्र, कण्ठ, छाती व पीठ से संबंधित किसी रोग के कारण पीड़ित हो सकते हैं। आपकी रूचि नौकरी और पशुओं में उत्पन्न होगी एवं आपको इनसे लाभ भी मिलेगा। आपको धूर्त, ठग व लूटेरों आदि से सावधान रहना चाहिए, क्योंकि इनसे आपको किसी प्रकार की हानि हो सकती है। छोटे व निम्न वर्ग के लोग आपको हानि पहुंचाने का निरंतर प्रयास कर सकते हैं। कार्यक्षेत्र में आपकी पदावनति भी हो सकती है।

इस वर्ष आपके वर्षेश शनि की सूर्य के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः यह वर्ष आपके लिए कष्टकारी हो सकता है। आपको अपने कार्यक्षेत्र अथवा राज्य पक्ष से भय की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। आपके जीवनसाथी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना है। आपको संतान संबंधी कष्ट भी हो सकता है। आपका अपने मित्रों से मतभेद उत्पन्न हो सकता है। आप गर्मी जनित रोग, ज्वर एवं अन्य रोगों से पीड़ित हो सकते हैं तथा अग्नि आदि ताप से भय हो सकता है। आप मानसिक रूप से चिन्तित रह सकते हैं। यात्राओं के दौरान शारीरिक अस्वस्थता के साथ–साथ धन हानि भी हो सकती है। आपको अपना निवास स्थान परिवर्तित करना पड़ सकता है।

इस वर्ष आपके वर्षेश शनि की शुक्र के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ रहेगा। इस वर्ष आपके सम्मान में वृद्धि होगी एवं आप एक अलग पहचान प्राप्त करेंगे। आप अपने जीवनसाथी व पारिवारिक जनों के साथ सुखमय व शान्तिपूर्ण समय व्यतीत करेंगे। आपकी संतानें उन्नति करेंगी। आपका अपने सगे–संबंधियों एवं मित्रों के साथ अच्छे सम्बन्ध रहेंगे एवं आपको उनसे भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। धन प्राप्ति के नए स्रोत मिलेंगे। राज्य पक्ष एवं कार्यक्षेत्र के अधिकारियों से आपका सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित होगा। अग्निकोण की दिशा में यात्रा करना आपके लिए लाभप्रद साबित होगा एवं कोई कार्य सिद्ध होगा। आप संभवतः कफ विकार से संबंधित रोगों से ग्रसित हो सकते हैं।

इस वर्ष आपकी वर्षफल कुण्डली में वर्षेश पांचवें भाव में उपस्थित है। अतः यह वर्ष आपके धार्मिक रूझान को दर्शा रहा है। आपमें धर्म के प्रति आस्था में वृद्धि होगी और स्वभाव में विनम्रता आएगी। अपने परिजनों के प्रति आपके मन में दया की भावना उत्पन्न होगी। आपमें उत्कृष्ट बुद्धि का विकास होगा एवं विद्वान व्यक्तियों से सम्पक्र और मित्रता बढ़ेगी।

## जन्म लग्न का फल

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न की राशि आपकी वर्षकुण्डली में आठवें भाव में स्थित है। अतः यह वर्ष आपके लिए अनुकूल नहीं हो सकता है। इस वर्ष धन हानि एवं व्यय में वृद्धि हो सकती है। रोगादि से पीड़ित हो सकते हैं तथा मानसिक कष्ट व दुखः भी हो सकता है। आप किसी दुर्घटना का सामना कर सकते हैं, इसलिए आपको सावधान रहना चाहिए। आपको अपने कार्यों में असफलता मिल सकती है तथा मान–सम्मान में कमी आ सकती है।

## वर्षफल के योग

आपकी वर्षकुण्डली में, शुक्र की राशि (7, 2) और बृहस्पति की राशि (9, 12) में राशि–परिवर्तन कर रहे हैं तथा शुक्र पणफर या चतुर्थ स्थान में स्थित है। अतः यह एक अनुकूल योग है, जिसे यमी योग कहा जाता है। इस योग के कारण आपको इस वर्ष दुगुना लाभ की प्राप्ति होगी।

## कुण्डली के भावों का उनके कारकत्व के अनुसार विश्लेषण

**लग्न भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश पांचवें भाव में स्थित है। यह वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। इस वर्ष आपको अपनी माता से धन–लाभ होने की संभावना है। आपको संतान का सुख भी प्राप्त होगा। आपके मन में ईश्वर के प्रति आस्था बनी रहेगी एवं उससे लाभ होगा।

आपकी वर्षकुण्डली में, केतु तीसरे, छठे या ग्यारहवें भाव में मकर या कुम्भ या मीन राशि में स्थित है। यह एक प्रबल अरिष्ट नाशक योग है।

आपकी वर्षकुण्डली में, चंद्रमा लग्न से चौथे, छठे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, चंद्रमा की वक्री ग्रह से मित्र दृष्टि संबंध है। इस वर्ष आपका तबादला हो सकता है।

**द्वितीय भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, द्वितीयेश चौथे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको मकान, दुकान, भवन आदि से किराये के रूप में लाभ प्राप्त होने की संभावना है, इसके अतिरिक्त भी कई प्रकार के लाभ प्राप्त हो सकते हैं। आपको कृषि संबंधी कार्यों से भी लाभ प्राप्त होंगे। आपको अपने मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा।

आपकी वर्षकुण्डली में गोचर का शनि दूसरे भाव पर दृष्टि डाल रहा है। इस वर्ष आपको व्यापार में हानि अथवा किसी प्रकार से धन हानि हो सकती है।

### तृतीय भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में मंगल तीसरे भाव में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए अनुकूल होगा। आप शारीरिक रूप से स्वस्थ्य रहेंगे। आपके अधिकार, मान–सम्मान व पराक्रम में वृद्धि होगी, अपने उच्चाधिकारियों से आपके संबंध अच्छे रहेंगे। आपके धन लाभ में वृद्धि होगी एवं मनोरथ सिद्ध होंगे। आपके घर–परिवार का वातावरण आनन्दमय रहेगा। आपके शत्रुओं का नाश होगा। किन्तु आपके भाई–बहनों– विशेषकर छोटे भाइयों– को इस वर्ष कष्ट हो सकता है।आपकी वर्षकुण्डली में बृहस्पति तीसरे भाव में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए बहुत शुभकारी होगा। आपकी सम्पत्ति, यश एवं पराक्रम में वृद्धि होगी तथा आपका रहन–सहन का स्तर उत्तम रहेगा। आपका अपने भाई–बहनों के साथ अच्छा संबंध होगा तथा आपके घर–परिवार में सुखमय एवं शांतिपूर्ण वातावरण रहेगा। आप अपने विवेक एवं उद्यम से पर्याप्त मात्रा में धनोपार्जन करने में सफल होंगे। आपके कार्यक्षेत्र में आपकी उन्नति होगी। आपके द्वारा किए गये प्रयासों में आपको सफलता मिलेगी एवं आपकी अभिलाषित इच्छाएं पूरी होंगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, तृतीयेश पांचवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको भ्रातृ–पक्ष से विशेष सुख–सुविधा प्राप्त हो सकती है। आपको उत्तम धन लाभ भी प्राप्त होने के योग हैं।

### चतुर्थ भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में बुध चौथे भाव में स्थित है। इसलिए सामान्यतः यह वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। आपका अपने जीवनसाथी से मधुर संबंध बना रहेगा तथा आप दोनों एक दूसरे के प्रति स्नेह एवं समर्पण के भाव से पूर्ण रहेंगे। आपको अपने मित्रों की संगति में आनन्द आएगा। इस वर्ष आपको वाहन का सुख प्राप्त होने की संभावना है, साथ ही आपके पशुधन में भी वृद्धि होगी। आपको उत्तम रोजगार की प्राप्ति होगी तथा आप पर्याप्त धनार्जन करेंगे।

आपकी वर्षकुण्डली में, चतुर्थेश तीसरे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको भूमि व भवन के संबंध में व्यय करना पड़ सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, शनि की सूर्य के साथ युति है। इस वर्ष आपको अपने पिता के हाथों अपमान व विरोध का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में शनि सूर्य की जन्मराशि में स्थित है। इस वर्ष आपका अपने पिता के साथ मनमुटाव व विवाद हो सकता है।

### पंचम् भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली मे सूर्य पाचवें भाव में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए अनुकूल नहीं है। इस वर्ष आपको आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपका अपने परिवार, मित्र, पुत्र, जीवनसाथी एवं

जाति के लोगों से कष्ट या विवाद हो सकता है। ऐसे में आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। अतः आपको विवेकपूर्वक इन स्थितियों से निपटने का प्रयास करना चाहिए एवं परिवार में शांति व सामंजस्य को बनाये रखना चाहिए।आपकी वर्षकुण्डली में, शुक्र पांचवें भाव में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए अनुकूल फलदायक होगा। यह वर्ष शिक्षा ग्रहण करने की दृष्टि से उत्तम है, अतः इस वर्ष आप किसी नये विषय का अध्ययन कर सकते हैं एवं पर्याप्त ज्ञान अर्जित कर सकते हैं। आपके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि होगी। आप अपने कार्यों को अधिक निपुणता से करने में सक्षम होंगे। आप किसी गूढ़ विषय पर शास्त्रार्थ अथवा विचार–विमर्श कर सकते हैं। आप अपने जीवनसाथी एवं संतान के साथ सुखमय एवं आनन्दपूर्ण समय व्यतीत करेंगे तथा आपको उनका भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। आपके शत्रुओं का नाश होगा एवं आप चिन्ता, भय, क्लेश आदि से मुक्त रहेंगे।आपकी वर्षकुण्डली में, शनि पांचवें भाव में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए अनुकूल नहीं हो सकता है। इस वर्ष आप वातजनिक रोगों के कारण सीने के दर्द आदि से पीड़ित रह सकते हैं। आपके जीवनसाथी एवं संतान को भी कष्ट रह सकता है। यदि आप एक विद्यार्थी हैं, तो आपकी शिक्षा में भी बाधायें उत्पन्न हो सकती हैं। आपके खर्चों में वृद्धि हो सकती है। आपके बंधु–बांधवों को भी किसी ना किसी प्रकार का कष्ट रह सकता है। आपकी मानसिक स्थिति ठीक ना होने से आप हीन भावना से ग्रसित हो सकते हैं एवं आपके मन में व्यर्थ के चिन्ता एवं डर का समावेश हो सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, पंचमेश तीसरे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपका बौद्धिक विकास होगा। आपका अपने बन्धु–बान्धवों से उत्तम संबंध रहेगा एवं उनसे सुख व सहयोग की प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त आपको संतान से संबंधी सुख व आनन्द की प्राप्ति भी होने की संभावना है।

आपकी वर्षकुण्डली में लग्नेश पाँचवें भाव (पुत्र भाव) में स्थित है। इस वर्ष आपको पुत्र की प्राप्ति होगी। (अगर आप उम्र के उस दौर में हैं तो अन्यथा आपको अपने पुत्र अथवा पुत्री के किसी कार्य से सम्मान मिलेगा)

**षष्टम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में चंद्रमा छठवें भाव में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए प्रतिकूल हो सकता है। आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है एवं आप वातजनित या श्लेष्मजनित रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। आपको किसी प्रकार की आकस्मिक या अप्रत्याशित हानि होने की संभावना है। आपका किसी से वाद–विवाद अथवा शत्रुता हो सकती है। आपका अपने बंधु–बांधवों से मनमुटाव या मतभेद हो सकते हैं। कार्य क्षेत्र में भी आपके अधिकारी वर्ग आपसे अप्रसन्न हो सकते हैं। अतः इन सभी मामलों में आपको सावधानी बरतनी चाहिए एवं स्थिति को बिगड़ने का अवसर नहीं देना चाहिए।आपकी वर्षकुण्डली में, केतु छठवें भाव में स्थित है। अतः इस वर्ष आपको सुन्दर जीवनसाथी की प्राप्ति होगी एवं जीवनसाथी का सुख भी प्राप्त होगा। आप सुन्दर भवन में निवास करेंगे तथा आपकी वांछित अभिलाषायें पूरी होंगी। आपकी बौद्धिक क्षमता में वृद्धि होगी एवं विरोधी आपके सामने टिक नहीं पाएंगे व आपकी विजय होगी। इसके लिए आपको सम्मानित भी किया जा सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, षष्ठेश पांचवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आप शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ्य एवं निरोग रहेंगे तथा अपने शत्रुओं का विनाश कर विजय हासिल करेंगे।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश और षष्ठेश दोनों एक ही साथ एक ही भाव में विराजमान हैं। इस वर्ष आप शारीरिक रूप से थोड़ा अस्वस्थ रह सकते हैं।

**सप्तम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, सप्तमेश पांचवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको पर्याप्त मात्रा में धन की प्राप्ति होगी, आपके स्वजन संतुष्ट रहेंगे तथा आप अपने शत्रुओं का नाश कर विजय हासिल करेंगे।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश और सप्तमेश की युति है। यदि आप विवाह योग्य हैं और अविवाहित हैं, तो इस वर्ष आपका विवाह हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली का सप्तमेश, आपकी वर्षकुण्डली में विवाह सहम का स्वामी है। यदि आप विवाह योग्य हैं और अविवाहित हैं, तो आपका इस वर्ष विवाह होने की संभावना है।

आपकी वर्षकुण्डली में, बृहस्पति युति अथवा दृष्टि से मुन्थेश के साथ संबद्ध है। यदि आप विवाह योग्य हैं और अविवाहित हैं, तो आपका इस वर्ष विवाह होने के प्रबल योग हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, विवाह सहम का स्वामी शुक्र की जन्म–राशि में केन्द्र या त्रिकोण में स्थित है। यदि आप विवाह योग्य हैं और अविवाहित हैं, तो आपका इस वर्ष विवाह होने के योग हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश और सप्तमेश परस्पर शत्रु हैं। इस वर्ष लड़ाई–झगड़े होने की संभावना बनी रह सकती है।

आपकी वर्षकुण्डली में, चौथे एवं सातवें भाव के बीच में शुभ ग्रह स्थित हैं। इस वर्ष आपके द्वारा की गई यात्रायें सिद्धिदायक व सफल होंगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, मंगल शुक्र की राशि में स्थित है। इस वर्ष आप पराई स्त्रियों की तरफ आकर्षित हो सकते हैं।

**अष्टम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, अष्टमेश तीसरे भाव में स्थित है तथा इसकी शुभ ग्रहों से युति या इस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि है। इस वर्ष आपका अपने भ्रातृ–पक्ष से अच्छे संबंध बने रहेंगे।

### नवम् भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में, नवमेश तीसरे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको अपने बन्धु–बान्धवों से सुख–सुविधा की प्राप्ति होने के योग हैं। आपका अपने उच्चाधिकारियों से अच्छे संबंध रहेंगे एवं उनसे भी आपको सहयोग व लाभ की प्राप्ति होगी, जो आपके लिए भाग्यवर्द्धक साबित होगा।

आपकी वर्षकुण्डली में, बृहस्पति शक्तिशाली स्थिति में तीसरे या नौवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आप पवित्र तीर्थ स्थानों की यात्रायें करेंगे।

आपकी वर्ष कुण्डली में, बृहस्पति के साथ मंगल स्थित है। इस वर्ष की यात्रायें अत्यंत उत्तम होंगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, चतुर्थेश और भाग्येश में युति अथवा दृष्टि संबंध है। इस वर्ष आपको जमीन–जायदाद आदि की प्राप्ति होने के प्रबल योग हैं।

### दशम् भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में, दशमेश पांचवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको अपनी माता से धन की प्राप्ति होने की संभावना है। साथ ही आपको पुत्र संबंधी सुख भी प्राप्त होने के योग हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, दशमेश पाँचवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आप प्रगति एवं लाभार्जन करेंगे।

### एकादश भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में, एकादशेश चौथे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको भूमि, कृषि संबंधी कार्यों आदि से लाभ प्राप्त होने की संभावना है। यदि एकादशेश की पाप ग्रहों के साथ युति है या ऐसे ग्रहों की उस पर दृष्टि है, तो आपको इस वर्ष अधिक कष्टों का सामना करना पड़ सकता है।

### द्वादश भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में, राहु बारहवें भाव में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए अनुकूल नहीं हो सकता है। इस वर्ष आपको स्थान परिवर्तन करना पड़ सकता है। आपके खर्चों में वृद्धि हो सकती है। आपका अपने उच्चाधिकारियों से मतभेद हो सकता है। आपके स्वजनों को कष्ट हो सकता है, तथा ऐसे में ये लोग आपके प्रति शत्रुता का भाव भी रख सकते हैं। वस्तुओं के गुम होने से हानि होने की भी संभावना है। व्यापार–व्यवसाय के क्षेत्र में हानि हो सकती है। यात्रा में भी कष्ट एवं हानि हो सकती है।

आपकी वर्षकुण्डली में, द्वादशेश छठवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपके अनावश्यक व्यय में कमी आएगी एवं

आपके लाभ में वृद्धि होगी। आप अपने शत्रुओं को परास्त कर विजय हासिल करेंगे।

# पत्ययनी दशाफल

Varhphal Years: 72 (2017-2018) Varhphal Date: 21:12:2017, 22:42Hrs

## शुक्र दशा

21:12:2017-15:01:2018

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, शुक्र नीचस्थ है या अस्त अथवा ग्रसित होने के कारण दूषित है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। शुक्र की दशा आपके लिए अच्छी अवधि नहीं हो सकती है। अतः आपको सावधान व सचेत रहना चाहिए एवं अपने स्वास्थ्य का उचित ध्यान रखना चाहिए। आपके कुछ पारिवारिक सदस्य– विशेषकर आपकी पत्नी– का बिगड़ता हुआ स्वास्थ्य आपको कुछ चिन्तित कर सकता है। अथाव धन के अवरूद्ध होने के कारण आप अपने वचनों को पूरा करने में कठिनाई का सामना कर सकते हैं। इस अवधि के दौरान किसी भी महत्वपूर्ण कार्य की शुरूआत करना अथवा किसी लम्बी यात्रा के लिए प्रस्थान करना अधिक फलदायक नहीं हो सकता है।

## रवि दशा

16:01:2018-01:04:2018

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, सूर्य उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित नहीं है। समग्र रूप से यह एक उदासीन योग का निर्माण करता है। अतः सूर्य की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। हालांकि आपको अपने कार्यस्थल पर कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है एवं आप अपने किसी वरिष्ठ अथवा सहकर्मी के साथ मामूली असहमति अथवा गलतफहमी के कारण झुंझलाहट महसूस कर सकते हैं।

## शनि दशा

02:04:2018-04:04:2018

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, शनि नीचस्थ है या अस्त अथवा ग्रसित होने के कारण दूषित है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। शनि की दशा आपके लिए अच्छी अवधि नहीं हो सकती है। अतः आपको सावधान व सचेत रहना चाहिए एवं अपने स्वास्थ्य का उचित ध्यान रखना चाहिए। आपके कुछ पारिवारिक सदस्यों का बिगड़ता हुआ स्वास्थ्य आपको कुछ चिन्तित कर सकता है। अथवा धन के अवरूद्ध होने के कारण आप अपने वचनों को पूरा करने में बहुत कठिनाई महसूस कर सकते हैं। आप कई कारणों से दुखी हो सकते हैं एवं अप्रसन्न या व्यथित महसूस कर सकते हैं। अथवा आप दुख या निराशा से पीड़ित हो सकते हैं। इस अवधि के दौरान किसी भी महत्वपूर्ण कार्य की शुरूआत करना अथवा किसी लम्बी यात्रा के लिए प्रस्थान करना अधिक फलदायक नहीं हो सकता है।

## चंद्र दशा

05:04:2018-04:08:2018

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, सूर्य उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त भी नहीं है। अतः चंद्रमा की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/समारोह के

होगी। हालांकि आप अपने घरेलू क्षेत्र में कुछ समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपके कुछ पारिवारिक–सदस्य क्रोधपूर्ण ढंग से बात व व्यवहार कर सकते हैं, जिसके कारण आप काफी चिड़चिड़े व अप्रसन्न हो सकते हैं।

## मंगल दशा

**05:08:2018-12:08:2018**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मंगल उपचय भाव (तीसरे या छठें या दसवें या ग्यारहवें) में स्थित है। यह नीचस्थ अथवा अस्त या ग्रसित होने के कारण दूषित नहीं है। वास्तव में यह एक अनुकूल योग है एवं सूर्य की दशा आपके लिए उपयोगी व लाभदायक साबित होगी। आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे एवं इस अवधि के दौरान कुछ विशेष उपलब्धि हासिल करेंगे। वरिष्ठ एवं सरकारी अधिकारी आपके प्रति अनुकूल होंगे एवं आपको उनसे समर्थन व लाभ प्राप्त हो सकता है।

## बुध दशा

**13:08:2018-13:11:2018**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, बुध उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते है। अतः बुध की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। सामान्यतः आपके सभी मामलें भली भांति चलेंगे। आपके पेशे के क्षेत्र में चीजें बहुत सहजतापूर्ण ढंग से होंगी। अपने सगे–संबंधियों व मित्रों के साथ मिलने–जुलने के लिए आप कुछ खाली समय निकालने में सक्षम होंगे।

## गुरु दशा

**14:11:2018-17:12:2018**

श्श इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, गुरु उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते है। अतः गुरु की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। सामान्यतः आपके सभी मामलें भली भांति चलेंगे। आपके पेशे के क्षेत्र में चीजें बहुत सहजतापूर्ण ढंग से होंगी। अपने सगे–संबंधियों व मित्रों की संगति में बिताने के लिए आप कुछ खाली समय निकालने में सक्षम होंगे।

## लग्न दशा

**18:12:2018-20:12:2018**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, लग्नेश उच्चस्थ अथवा अपनी राशि में अथवा नीचस्थ नहीं है। किन्तु यह वक्री या अस्त या ग्रसित नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते हैं। अतः लग्न की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना या अवसर के होगी। हालांकि आपके कार्यस्थल की स्थिति कुछ हद तक बिगड़ सकती है। यद्यपि सामान्य लोग आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे, फिर भी आपके वरिष्ठ/अधिकारी आपको दबाने का प्रयास कर सकते हैं एवं तक्रसंगत रूप से आपको मिलने वाला श्रेय किसी और को दे सकते हैं। या फिर आपको अन्यायपूर्वक बहुत छोटी अथवा बिना किसी गलती के दोषी ठहराया जा

सकता है।

# ज्योतिष सारिणी

| | SAMPLE | ज्योतिष सारिणी |
|---|---|---|
| जन्म दिनाकं | 21:12:1945 | 22:12:2018 |
| दिन | शुक्रवार | शनिवार |
| ज्योतिषिय वार | शुक्रवार | शुक्रवार |
| जन्म समय | 11:34:00 | 04:55:50 |
| जन्म स्थान | ranchi | ranchi |
| अक्षांश | 023:20:00N | 023:20:00N |
| रेखांश | 085:19:00E | 085:19:00E |
| यु./ग्रीष्म समय संस्कार | -00:00 | -00:00 |
| जी. एम. टी. समय | 006:03:00 | 023:25:49 |
| स्थानीय समय संस्कार | 000:11:15 hrs | 000:11:16 hrs |
| स्थानीय समय | 011:45:15 hrs | 005:07:05 hrs |
| सांपातिक काल | 017:43:03 hrs | 011:09:00 hrs |
| सूर्योदय | 06:28:24AM | 06:28:51AM |
| सूर्यास्त | 05:04:58PM | 05:05:27PM |

| | | |
|---|---|---|
| लग्न | मीन | वृश्चिक |
| लग्नाधिपति | गुरु | मंगल |
| राशि (चन्द्रमा) | कर्क | वृष |
| राशिपति | चंद्र | शुक्र |
| नक्षत्र | पुष्य | मृगशिरा |
| नक्षत्रपति | शनि | मंगल |
| नक्षत्र चरण | 1 | 1 |
| पाया | रजत | ताम्र |
| ऋतु | हेमन्त | हेमन्त |
| मास | पौष कृष्ण | अग्रहन शुक्ल |
| पक्ष | कृष्ण | शुक्ल |
| तिथि | तृतीया | पूर्णिमा |
| तिथि श्रेणी | जया | पूर्णा |
| तिथि पति | मंगल | शनि |
| करण | वनिज | विष्टी |
| करण श्रेणी | चर | चर |
| करणपति | मनिभद्र | यम |
| सूर्य सिद्धान्त योग | इन्द्रय | शुभ |
| तत्व | जल | पृथ्वी |
| तत्वाधिपति | शुक्र | बुध |
| विहग | पिंगला | भारधंक |
| वेध | पूर्वाशाढ़ | धनिष्ठा |

# ग्रह स्थिती वर्षफल

**Varhphal Years: 73 (2018-2019) Varhphal Date: 22:12:2018, Time: 04:55Hrs**

| ग्रह | राशि | अंश | नक्षत्र | विशेष |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | मीन | 01:13 | पूर्वाभाद(4) | |
| सूर्य(ग्र.) | धनु | 05:55 | मूला (2) | **मित्र राशि** |
| चन्द्रमा | कर्क | 04:53 | पुष्य (1) | **स्व राशि** |
| मंगल(व.) | कर्क | 08:17 | पुष्य (2) | **नीच राशि** |
| बुध | वृश्चिक | 14:56 | अनुराधा (4) | **सम राशि** |
| बृहस्पति | तुला | 00:18 | चित्रा (3) | **शत्रु राशि** |
| शुक्र | वृश्चिक | 25:47 | ज्येष्ठा (3) | **सम राशि** |
| शनि(व.) | कर्क | 00:04 | पुनर्वसु (4) | **शत्रु राशि** |
| राहु(व.) | मिथुन | 06:56 | अरिद्रा (1) | **मित्र राशि** |
| केतु(व.) | धनु | 06:56 | मूला (3) | **स्व नक्षत्र** |
| हर्षल(व.) | वृष | 21:45 | रोहिणी (4) | ..... |
| नेपच्यून | कन्या | 15:24 | हस्ता (2) | ..... |
| प्लूटो(व.) | कर्क | 18:23 | अश्लेषा (1) | ..... |

| ग्रह | राशि | अंश | नक्षत्र | विशेष |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | वृश्चि | 14:53 | पूर्वाभाद(4) | |
| सूर्य | धनु | 05:55 | मूला (2) | मित्र राशि |
| चन्द्रमा | वृष | 25:29 | मृगशिर (1) | उच्च राशि |
| मंगल | कुंभ | 29:06 | पूर्वाभाद (3) | सम राशि |
| बुध | वृश्चि | 15:46 | अनुराधा (4) | सम राशि |
| बृहस्पति | वृश्चि | 15:30 | अनुराधा (4) | मित्र राशि |
| शुक्र | तुला | 20:00 | विशाखा (1) | स्व राशि |
| शनि(अ.) | धनु | 16:04 | पूर्वाषाढ़ (1) | सम राशि |
| राहु(व.) | कर्क | 03:58 | पुष्य (1) | शत्रु राशि |
| केतु(व.) | मकर | 03:58 | उत्तरा (3) | शत्रु राशि |
| हर्षल(व.) | मेष | 04:35 | अश्विनी (2) | .... |
| नेपच्यून | कुंभ | 19:47 | शतभिषा (4) | .... |
| प्लूटो | धनु | 26:08 | पूर्वाषाढ़ (4) | .... |

## लग्न कुण्डली

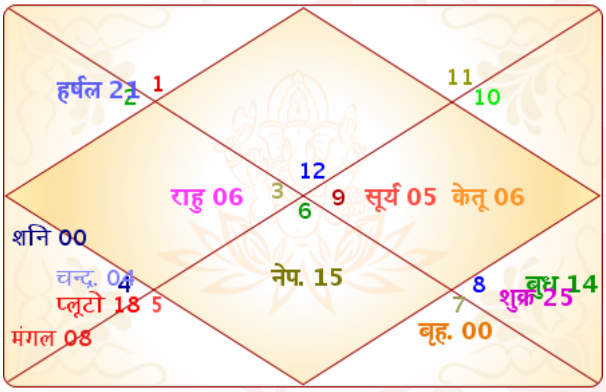


## चन्द्र कुण्डली

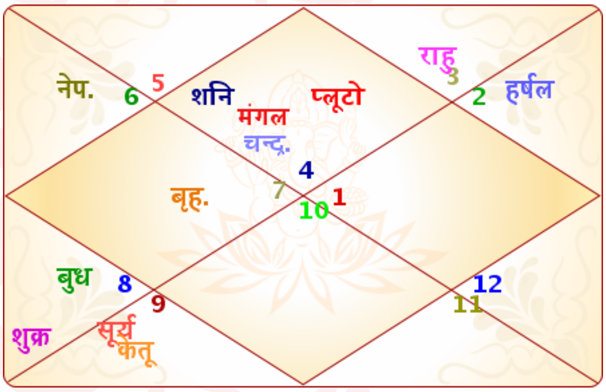


## लग्न कुण्डली ( वर्षफल )

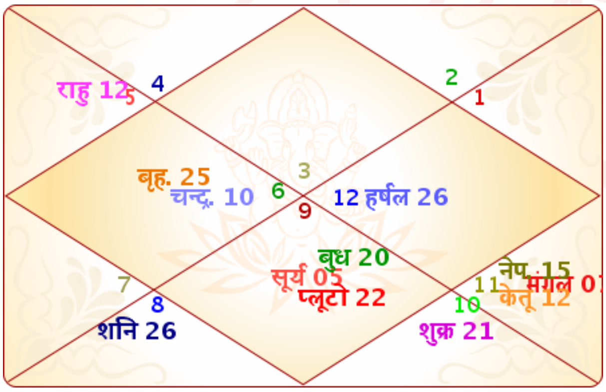


## चन्द्र कुण्डली ( वर्षफल )

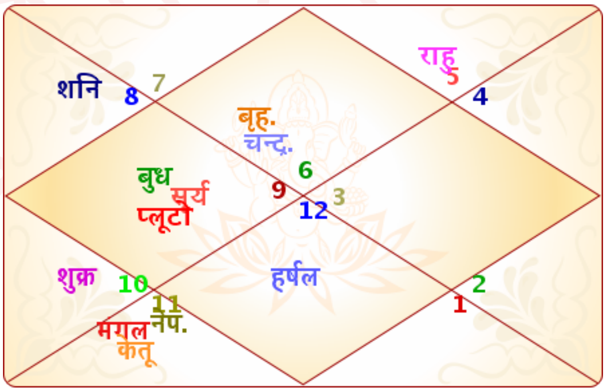

# द्वादश वर्ग कुण्डली

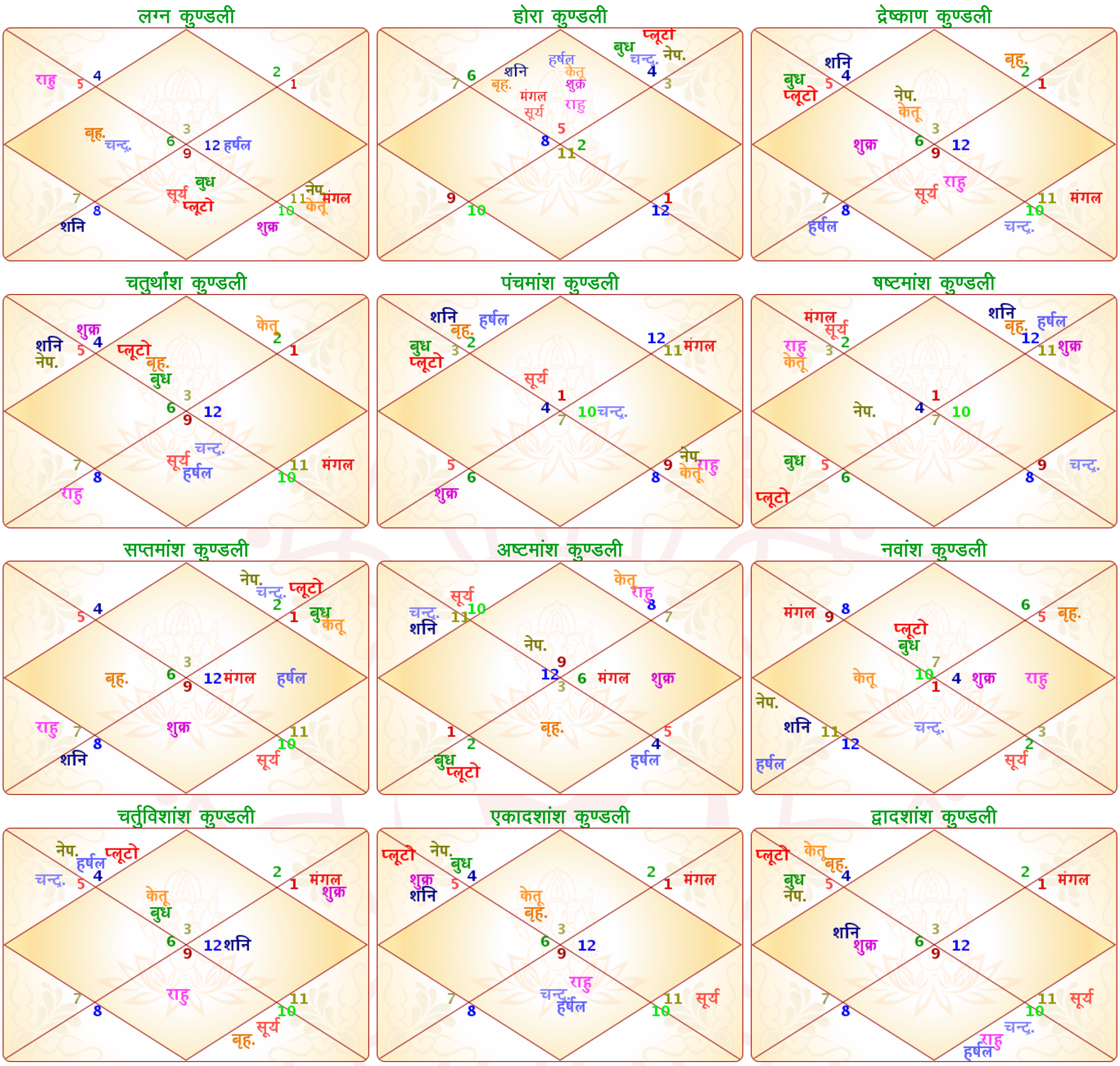


## वर्षफल कुण्डली में ग्रहों की दृष्टि

| | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहू | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रवि | .... | सम | गु.प्रेम | सम | सम | गु.प्रेम | प्र.शत्रु | सम | सम |
| चंद्र | सम | .... | गु.शत्रु | प्र.शत्रु | प्र.शत्रु | सम | सम | गु.प्रेम | प्र.प्रेम |
| मंगळ | गु.प्रेम | गु.शत्रु | .... | गु.शत्रु | गु.शत्रु | प्र.प्रेम | गु.प्रेम | सम | सम |
| बुध | सम | प्र.शत्रु | गु.शत्रु | .... | प्र.शत्रु | सम | सम | प्र.प्रेम | गु.प्रेम |
| गुरु | सम | प्र.शत्रु | गु.शत्रु | प्र.शत्रु | .... | सम | सम | प्र.प्रेम | गु.प्रेम |
| शुक्र | गु.प्रेम | सम | प्र.प्रेम | सम | सम | .... | गु.प्रेम | गु.शत्रु | गु.शत्रु |
| शनि | प्र.शत्रु | सम | गु.प्रेम | सम | सम | गु.प्रेम | .... | सम | सम |
| राहू | सम | गु.प्रेम | सम | प्र.प्रेम | प्र.प्रेम | गु.शत्रु | सम | .... | प्र.शत्रु |
| केतु | सम | प्र.प्रेम | सम | गु.प्रेम | गु.प्रेम | गु.शत्रु | सम | प्र.शत्रु | .... |

प्र.प्रेमः–प्रकट प्रेम दृष्टि ,गु.प्रेमः–गुप्त प्रेम दृष्टि ,प्र.शत्रुः–प्रकट शत्रु दृष्टि ,गु.शत्रुः–गुप्त शत्रु दृष्टि ,समः–सम दृष्टि ,

# वर्षफल कुण्डली में ग्रहों का बल

**Varhphal Years: 73 (2018-2019) Varhphal Date: 22:12:2018, Time: 04:55Hrs**

## पंचवर्गीय बल

| क्र0स0 | बल | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | क्षेत्र बल | 15.0 | 15.0 | 22.5 | 7.5 | 7.5 | 30.0 | 15.0 |
| 2 | उच्च बल | 6.21 | 17.5 | 16.54 | 13.25 | 5.5 | 2.56 | 13.77 |
| 3 | हद्दा बल | 7.5 | 7.5 | 11.25 | 15.0 | 3.75 | 7.5 | 11.25 |
| 4 | द्रेक्कन बल | 5.0 | 5.0 | 2.5 | 5.0 | 5.0 | 5.0 | 5.0 |
| 5 | नवांश बल | 3.75 | 2.5 | 1.25 | 1.25 | 1.25 | 3.75 | 1.25 |
| | योग | 9.37 | 11.88 | 13.51 | 10.5 | 5.75 | 12.2 | 11.57 |
| | तुलनात्मक बल | साधारण | बलशाली | बलशाली | बलशाली | साधारण | बलशाली | बलशाली |

## द्वादश वर्गीय बल

| क्र0स0 | बल | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | राशि बल | 0 | 0 | -1 | 0 | 0 | +2 | 0 |
| 2 | होरा बल | +2 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| 3 | द्रेक्कन बल | 0 | 0 | -1 | 0 | +2 | 0 | -1 |
| 4 | चतुर्थांश बल | 0 | 0 | +2 | 0 | 0 | -1 | 0 |
| 5 | पंचमाशं बल | -1 | 0 | -1 | 0 | +2 | 0 | 0 |
| 6 | षष्टाशं बल | -1 | 0 | 0 | 0 | 0 | -1 | 0 |
| 7 | सप्तमाशं बल | 0 | 0 | -1 | 0 | 0 | -1 | 0 |
| 8 | अष्टमाशं बल | 0 | 0 | 0 | 0 | +2 | 0 | -1 |
| 9 | नवाशं बल | -1 | 0 | 0 | 0 | 0 | -1 | 0 |
| 10 | दसाशं बल | 0 | 0 | +2 | 0 | +2 | -1 | -1 |
| 11 | एकादसाशं बल | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | +2 | -1 |
| 12 | द्वादशाशं बल | 0 | 0 | -1 | 0 | 0 | +2 | 0 |
| | योग | -1 | 0 | -1 | 0 | +8 | +1 | -4 |
| | तुलनात्मक बल | सम | सम | सम | सम | साधारण | साधारण | बुरा |

## हर्ष बल

| क्र0स0 | बल | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | स्थान बल | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 |
| 2 | क्षेत्र बल | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 5.0 | 0.0 |
| 3 | ओज–युग्म बल | 0.0 | 5.0 | 5.0 | 5.0 | 0.0 | 0.0 | 5.0 |
| 4 | दिवा–रात्रि बल | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 5.0 | 5.0 |
| | योग | 0 | 15 | 5 | 15 | 0 | 10 | 10 |
| | तुलनात्मक बल | निर्बबली | पर्णबली | अल्पबली | पर्णबली | निर्बबली | मध्यबली | मध्यबली |

# वर्षफल सहम

Varhphal Years: 73 (2018-2019)  Varhphal Date: 22:12:2018, Time: 04:55Hrs

| क्र0स0 | सहम का नाम | राशि | अंश | सहम अधिपति | 11 भाव पति | 8 भाव पति |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | पुण्य सहम (भाग्य) | वृष | 025:20:06 | शुक्र | बृहस्पति | ... |
| 2 | विद्या सहम | मिथुन | 004:27:34 | बुध | मंगल | ... |
| 3 | यश सहम | मिथुन | 024:43:18 | बुध | मंगल | ... |
| 4 | मित्र सहम (मित्र) | वृष | 029:49:58 | शुक्र | बृहस्पति | ... |
| 5 | महात्य सहम (महानता) | सिहं | 018:40:23 | सूर्य | बुध | ... |
| 6 | आशा सहम (इच्छा) | कुम्भ | 027:55:46 | शनि | बृहस्पति | ... |
| 7 | समर्थ सहम (पुरूषार्थ) | मीन | 028:29:52 | बृहस्पति | शनि | ... |
| 8 | भ्रात्रि सहम (भाई) | तुला | 014:19:43 | शुक्र | सूर्य | ... |
| 9 | गौरव सहम (सम्मान) | कक्र | 015:54:19 | चन्द्रमा | शुक्र | ... |
| 10 | पितृ सहम (पिता) | वृश्चिक | 004:44:42 | मंगल | बुध | ... |
| 11 | राजा सहम (अधिकार) | वृश्चिक | 004:44:42 | मंगल | बुध | ... |
| 12 | मात्रि सहम (माता) | वृष | 009:24:59 | शुक्र | बृहस्पति | ... |
| 13 | अपत्य सहम (संतान) | मिथुन | 024:52:33 | बुध | मंगल | ... |
| 14 | जीव सहम (जीवन) | तुला | 014:19:43 | शुक्र | सूर्य | ... |
| 15 | कर्म सहम (कार्रवाई) | सिहं | 001:33:26 | सूर्य | बुध | ... |
| 16 | रोग सहम | वृष | 004:18:19 | शुक्र | ... | बृहस्पति |
| 17 | काली सहम (कलह, संघर्ष) | मीन | 028:29:52 | बृहस्पति | ... | शुक्र |
| 18 | शास्त्र सहम (उच्च शिक्षा) | मकर | 016:20:22 | शनि | मंगल | ... |
| 19 | बन्धु सहम (रिश्तेदार) | मिथुन | 024:36:55 | बुध | मंगल | ... |
| 20 | निधन सहम | तुला | 023:06:46 | शुक्र | ... | शुक्र |
| 21 | परदेश सहम (विदेश) | कन्या | 020:44:12 | बुध | चन्द्रमा | ... |
| 22 | धन सहम (धन) | तुला | 013:08:03 | शुक्र | सूर्य | ... |
| 23 | प्रदर सहम (परस्त्रीगमन) | मकर | 000:48:57 | शनि | मंगल | ... |
| 24 | वनिज सहम (धंधा) | वृष | 005:10:45 | शुक्र | बृहस्पति | ... |
| 25 | कार्यसिद्धि सहम (सफलता) | वृष | 010:35:53 | शुक्र | बृहस्पति | ... |
| 26 | विवाह सहम | मकर | 010:58:04 | शनि | मंगल | ... |
| 27 | संताप सहम (दुःख) | तुला | 026:41:01 | शुक्र | ... | शुक्र |
| 28 | श्रद्धा सहम (भक्ति) | मीन | 024:00:00 | बृहस्पति | शनि | ... |
| 29 | प्रिति सहम (प्यार) | मेष | 023:53:34 | मंगल | शनि | ... |
| 30 | जाड्य सहम (स्थाई रोग) | कन्या | 002:44:19 | बुध | ... | मंगल |
| 31 | ब्यापार सहम | कुम्भ | 027:55:46 | शनि | बृहस्पति | ... |
| 32 | शत्रु सहम | कन्या | 001:51:54 | बुध | ... | मंगल |
| 33 | जलपत्तन सहम (विदेश यात्रा) | मेष | 015:58:34 | मंगल | शनि | ... |
| 34 | बंधन सहम (कारावास) | मिथुन | 005:38:28 | बुध | ... | शनि |
| 35 | अपघात सहम (आकस्मिक दुर्घटना) | कक्र | 026:44:05 | चन्द्रमा | ... | शनि |
| 36 | वित्तहानि सहम | धनु | 017:37:55 | बृहस्पति | ... | चन्द्रमा |
| 37 | त्रिक स्फूट (दुर्घटना) | वृष | 004:53:25 | शुक्र | ... | बृहस्पति |
| 38 | घात स्थान (अनहोनी) | कक्र | 029:04:41 | चन्द्रमा | ... | शनि |

# त्रिपताकी चक्र

**Varhphal Years: 73 (2018-2019) Varhphal Date: 22:12:2018, Time: 04:55Hrs**

| क्र0स0 | राशि | ग्रह |
|---|---|---|
| 1 | 8 | |
| 2 | 9 | मंगल |
| 3 | 10 | बृहस्पति, राहु |
| 4 | 11 | बुध, शुक्र |
| 5 | 12 | सूर्य, चन्द्रमा |
| 6 | 1 | |
| 7 | 2 | |
| 8 | 3 | |
| 9 | 4 | केतु |
| 10 | 5 | |
| 11 | 6 | |
| 12 | 7 | शनि |

## त्रिपताकी चक्र में वेध

**लग्न** : सूर्य , चन्द्र , शनि , केतु
**सूर्य** : सूर्य , चन्द्र , शनि , केतु , चन्द्र , शनि , केतु
**चन्द्रमा** : सूर्य , शनि , केतु
**मंगल** : गुरू , राहु , केतु
**बुध** : शुक्र
**बृहस्पति** : मंग. , राहु
**शुक्र** : बुध
**शनि** : सूर्य , चन्द्र

## ग्रहों द्वारा चन्द्र वेध का फल

**सूर्य :**

आत्मविश्वास की कमी, बदनामी, वृथा अंहकार, दोषयुक्त आँखें, पिता को कठिनाई, मानसिक तनाव, चिड़चिड़ापन, उच्च ज्वर, पित्तजनित रोग तथा निराशायें।

**मंगल :**

शत्रुओं से भय, हथियार, रक्त अनियमितत, दुर्घटनायें, शरीर में दर्द और चोट, शीघ्र क्रोधित होना, लड़ाई–झगड़ा, संघर्ष, हिंसा, लेकिन साथ ही ज्ञान व धन की प्राप्ति भी।

**बुध :**

ज्ञान व बुद्धिमत्ता में वृद्धि, तीक्ष्ण बुद्धि, अच्छे लोगों की संगति और धन का लाभ। लेकिन यदि दूषित है, तो व्यक्ति उतावला व क्षुद्र दिमाग वाला होता है, परिवार की नाराजगी, तनाव और चिन्ताओं की प्राप्ति तथा शत्रुओं से भय।

**बृहस्पति :**

शांति और प्रसन्नता, सभ्य लोगों की संगति, तीर्थ यात्रा, धार्मिक कार्यों के प्रति रूझान, सामाजिक स्तर में उन्नति, धन का लाभ, उपक्रमों के सफलता, संतान का जन्म, और सामान्य समृद्धि।

**शुक्र :**

इच्छाओं की पूर्ति, इन्द्रिय सुख की प्राप्ति, धन–संपदा व शिक्षा की प्राप्ति, शत्रुओं पर विजय। लेकिन शारीरिक सुख के प्रति अत्यधिक लालसा होने के कारण मानसिक व्यग्रता, जल से भय और वातमय विकार।

**शनि :**

तुच्छ व निम्न स्तर के लोगों के साथ संगति, स्वार्थी, तानाशाही, गरीबी, वियोग, यौन विकृति, शारीरिक रोग, सर्दी व जुकाम के साथ–साथ वातमय विकार।

**राहु :**

गंभीर बीमारी/आशंका, मान–प्रतिष्ठा/धन की हानि, विदेशी स्रोतों से कठिनाईयां, उदासीन मन, डरपोक स्वभाव तथा अनेक प्रकार की कठिनाइयों से पीड़ित।

**केतु :**

अस्वस्थता, कमजोर पाचनशक्ति, अस्थिरता, आत्मिक व घुमन्तु प्रकृति, निराशा, चिन्तायें और दुख।

**Varhphal Years: 73 (2018-2019) Varhphal Date: 22:12:2018, Time: 04:55Hrs**

| मुद्दा योगिनी दशा | | | मुद्दा षोडशोत्तरी दशा | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दशा | अवधि | से | दशा | अवधि | से |
| धान्य (वृहस्पति) | 0.0 y.1.0 m.0 d. | 21:12:2018 | शनि | 0.0 y.1.0 m.14 d. | 21:12:2018 |
| भ्रमरि (मंगल) | 0.0 y.1.0 m.10 d. | 20:01:2019 | केतु | 0.0 y.1.0 m.17 d. | 03:02:2019 |
| भभद्रिका (बुध) | 0.0 y.1.0 m.21 d. | 02:03:2019 | चंद्र | 0.0 y.1.0 m.20 d. | 22:03:2019 |
| उल्का (शनि) | 0.0 y.2.0 m.0 d. | 21:04:2019 | बुध | 0.0 y.1.0 m.23 d. | 11:05:2019 |
| सिद्धा (शुक्र) | 0.0 y.2.0 m.11 d. | 21:06:2019 | शुक्र | 0.0 y.1.0 m.26 d. | 04:07:2019 |
| संकटा (शनि) | 0.0 y.2.0 m.20 d. | 31:08:2019 | रवि | 0.0 y.1.0 m.5 d. | 29:08:2019 |
| मंगला (चन्द्रमा) | 0.0 y.0.0 m.10 d. | 20:11:2019 | मंगल | 0.0 y.1.0 m.8 d. | 03:10:2019 |
| पिगंला (सूर्य) | 0.0 y.0.0 m.20 d. | 30:11:2019 | गुरु | 0.0 y.1.0 m.11 d. | 10:11:2019 |

## पत्ययनी दशा

| क्र0स0 | दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | रवि | 0.0 y.2.0 m.14 d. | 21:12:2018 |
| 2 | लग्न | 0.0 y.3.0 m.21 d. | 05:03:2019 |
| 3 | गुरु | 0.0 y.0.0 m.8 d. | 25:06:2019 |
| 4 | बुध | 0.0 y.0.0 m.4 d. | 03:07:2019 |
| 5 | शनि | 0.0 y.0.0 m.4 d. | 06:07:2019 |
| 6 | शुक्र | 0.0 y.1.0 m.19 d. | 10:07:2019 |
| 7 | चंद्र | 0.0 y.2.0 m.8 d. | 29:08:2019 |
| 8 | मंगल | 0.0 y.1.0 m.15 d. | 05:11:2019 |

## मुद्दा विंशोत्तरी दशा

| क्र0स0 | दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | बुध | 0.0 y.1.0 m.21 d. | 21:12:2018 |
| 2 | केतु | 0.0 y.0.0 m.21 d. | 10:02:2019 |
| 3 | शुक्र | 0.0 y.2.0 m.0 d. | 04:03:2019 |
| 4 | रवि | 0.0 y.0.0 m.19 d. | 04:05:2019 |
| 5 | चंद्र | 0.0 y.1.0 m.0 d. | 22:05:2019 |
| 6 | मंगल | 0.0 y.0.0 m.21 d. | 21:06:2019 |
| 7 | राहू | 0.0 y.1.0 m.24 d. | 12:07:2019 |
| 8 | गुरु | 0.0 y.1.0 m.19 d. | 05:09:2019 |
| 9 | शनि | 0.0 y.1.0 m.27 d. | 24:10:2019 |

## वर्ष जैमिनी चर दशा

| क्र0स0 | दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | वृश्चिक | 0.0 y.1.0 m.13 d. | 21:12:2018 |
| 2 | मिथुन | 0.0 y.0.0 m.24 d. | 02:02:2019 |
| 3 | मकर | 0.0 y.0.0 m.5 d. | 25:02:2019 |
| 4 | सिंह | 0.0 y.1.0 m.8 d. | 02:03:2019 |
| 5 | मीन | 0.0 y.1.0 m.8 d. | 09:04:2019 |
| 6 | तुला | 0.0 y.1.0 m.27 d. | 17:05:2019 |
| 7 | वृष | 0.0 y.1.0 m.3 d. | 13:07:2019 |
| 8 | धनु | 0.0 y.1.0 m.22 d. | 15:08:2019 |
| 9 | कर्क | 0.0 y.1.0 m.17 d. | 06:10:2019 |
| 10 | कुंभ | 0.0 y.0.0 m.10 d. | 23:11:2019 |
| 11 | कन्या | 0.0 y.0.0 m.10 d. | 02:12:2019 |
| 12 | मेष | 0.0 y.0.0 m.10 d. | 12:12:2019 |

# वर्षफल कुण्डली से महत्वपूर्ण भविष्यफल

**Varhphal Years: 73 (2018-2019) Varhphal Date: 22:12:2018, Time: 04:55Hrs**

## (अष्टक चक्र, ढुढिंराजा पद्धति, वर्षेश्वर और मुन्था)

आपकी वर्षफल कुण्डली में, पूर्व भाग में शेष बचता है, जबकि उत्तर भाग में कोई शेष नहीं बचता है, अतः आपका आगामी समय प्रयासपूर्ण हो सकता है– विशेषकर वर्ष के उत्तरार्द्ध में। यदि आपकी कुण्डली में संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आप धन के अवरूद्ध हो जाने के कारण अथवा हानि होने के कारण असुविधाओं का सामना कर सकते हैं।

आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्तमान वर्ष के लिए अष्टक चक्र सूचकांक ग्रह बृहस्पति है। यह ग्रह दशमेश है। यदि आपकी वर्तमान आयु के लिए प्रासंगिक है तो इस वर्ष के दौरान आप कोई नया लाभप्रद रोजगार अथवा पदोन्नति प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मंगल वर्षेश्वर ग्रह है।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्षेश्वर एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह है। यह ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि में स्थित है। इसके अतिरिक्त इसे पंचवर्गीय बल द्वारा उत्तम शक्ति प्राप्त नहीं हो रही है। परिणामस्वरूप, इस वर्ष के दौरान होने वाली घटनाएं अधिक सहज व सरल नहीं हो सकती हैं। यदि आपकी वर्षफल कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अचानक किसी अशुभ घटना का सामना करना पड़ सकता है अथवा आपको आर्थिक मामलों में व्यापक उतार–चढ़ाव की अनुभूति हो सकती है।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्षेश्वर मंगल है। अतः यह आपको अपने सगे व चचेरे भाई–बहनों व पड़ोसियों आदि के संदर्भ में तथा उनसे प्राप्त होने वाली सहायता व समर्थन के मामलों में भाग्यशाली बनाएगा। आपको अधिकारियों से समर्थन व लाभ प्राप्त होगा तथा आपके मान व महत्व में वृद्धि होगी। यदि आप नए रोजगार की तलाश में हैं तो आप एक आकर्षक नया रोजगार प्राप्त करने में सफल होंगे। विवादों व प्रतिस्पर्द्धाओं के संदर्भ में आप विजेता बनकर उभरेंगे तथा आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। इसके अतिरिक्त आप भूमि–भवन, सम्पत्ति के किराया, मशीनों, रसायनों, अग्नि से संबंधित उपकरणों एवं पालतू मांसाहारी जानवरों से उत्तम लाभ प्राप्त करेंगे।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था छठवें में है। अतः यह काफी प्रतिकूल स्थिति है। वर्ष का आगामी समय आपके लिए कष्टकारी हो सकता है। आप स्वस्थ्य नहीं रह सकते हैं, शारीरिक पीड़ा से ग्रसित हो सकते हैं और आपके कुछ निकट संबंधी बीमार पड़ सकते हैं। आपके झगड़े एवं गलतफहमियां हो सकती हैं एवं आपके शत्रुओं की संख्या व शक्ति में वृद्धि हो सकती है। आपको अपने वरिष्ठों व अधिकारियों से किसी प्रकार के विवाद

में फंसने से बचना चाहिए। आप भारी मात्रा में व व्यर्थ के खर्चों के कारण चिन्तित हो सकते हैं, हानियां हो सकती हैं तथा कर्जदार भी हो सकते हैं। आपके नौकर या कर्मचारी आपके लिए समस्याएं पैदा कर सकते हैं अथवा आपको चोरों से कुछ भय हो सकता है।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था–राशि मंगल की राशि में स्थित है। आगामी वर्ष आपके लिए अनुकूल है। आप बहुत उर्जावान होंगे एवं अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे। आप अपने सभी वादों को पूरा करेंगे एवं आपकी विश्वसानीयता व सम्मान में वृद्धि होगी। आप अपने वरिष्ठों का ध्यान आकर्षित करेंगे एवं अधिकारियों की प्रशंसा अर्जित करेंगे। ऐसी प्रबल संभावना है कि आप एक अधिक प्रतिष्ठित पद प्राप्त कर सकते हैं। आपकी लोकप्रियता में वृद्धि होगी एवं सामान्यतः लोग आपके साथ सम्मानजनक व्यवहार करेंगे।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था–राशि का स्वामी वर्ष–लग्न से चौथे भाव में स्थित है एवं यह ग्रह उच्चस्थ अथवा अपनी राशि या अपने नक्षत्र में नहीं है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। इस वर्ष के दौरान आप बीमारी से पीड़ित हो सकते हैं, भारी व व्यर्थ के खर्चे हो सकते हैं, आपको हानि होने का भी खतरा हो सकता है। व्यवसाय के क्षेत्र में आप काफी अप्रत्याशित रूप से अस्थाई आघात का सामना कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आपकी विश्वसनीयता व सम्मान भी कुछ अजीब कारणों से दांव पर लग सकते हैं।

# वर्षफल सहम से भविष्यफल

**Varhphal Years: 73 (2018-2019) Varhphal Date: 22:12:2018, Time: 04:55Hrs**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, जलपत्तन–सहम एकादशेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा एकादशेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 22:08:2019 और 22:04:2019 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ अनुकूल घटनाएं (इस विशेष सहम से संबंधित) हो सकती हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, निधन–सहम अष्टमेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा अष्टमेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 19:12:2019 और 25:12:2018 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ प्रतिकूल घटनाएं (इस विशेष सहम से संबंधित) हो सकती हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, प्रदर–सहम एकादशेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा एकादशेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 19:02:2019 और 24:10:2019 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ यादगार घटनाएं (इस विशेष सहम से संबंधित) हो सकती हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, शत्रु–सहम अष्टमेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा अष्टमेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 19:06:2019 और 25:06:2019 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ प्रतिकूल घटनाएं (इस विशेष सहम से संबंधित) हो सकती हैं।

# वर्षफल

**Varhphal Years: 73 (2018-2019) Varhphal Date: 22:12:2018, Time: 04:55Hrs**

## वर्षेश और अन्य कारकों का फल

आपका वर्षेश मंगल इस वर्ष सामान्य रूप से बली है। अतः यह वर्ष आपके लिए सामान्य फलदायक होगा। इस वर्ष आपके लाभार्जन के मार्ग में कुछ बाधाएं उत्पन्न होंगी एवं अल्प मात्रा में लाभ प्राप्त होने की संभावना है। आप अत्यधिक क्रोधपूर्ण व्यवहार कर सकते हैं। आपका लोगों से और अधिकारी वर्ग से विवाद और हानि होने की संभावना है। शारीरिक रूप से रोगी होने के कारण कमजोरी महसूस कर सकते हैं। आपको फोड़े–फुंसी आदि से रूधिर स्राव अथवा लड़ाई–झगड़े में चोट या आघात भी लग सकता है। आपके मान–प्रतिष्ठा में कमी आ सकती है एवं धन व पराक्रम का ह्रास हो सकता है। आपका अपने जीवनसाथी व संतान से मतभेद या भ्रम उत्पन्न होने के कारण घर में वाद–विवाद की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

इस वर्ष आपके वर्षेश मंगल की शनि के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः यह वर्ष आपके लिए प्रतिकूल साबित हो सकता है। आपके मन में असंतोष और उदासीनता के भाव उत्पन्न हो सकते हैं। पश्चिम दिशा की ओर से कष्टप्रद या हानिप्रद बात हो सकती है। आपमें दुर्व्यसनी प्रवृत्तियां जागृत हो सकती हैं। किसी दुराचारी या नीच प्रकृति के व्यक्ति की संगति के कारण आपको हानि भी हो सकती है। इस वर्ष व्यर्थ के खर्चों में भी वृद्धि हो सकती है।

इस वर्ष आपकी वर्षफल कुण्डली में वर्षेश चतुर्थ भाव में उपस्थित है। अतः यह वर्ष आपके लिए सुख–सौभाग्य प्रदान करने वाला होगा। आपके मन में अपने गुरुजनों, परिवार जनों, वरिष्ठ व सम्माननीय लोगों के प्रति सम्मान की भावना उत्पन्न होगी। आपको अच्छे मित्रों की संगति प्राप्त होगी एवं उनसे सुख की प्राप्ति होगी, आपके शत्रु पराजित होंगे एवं आपकी विजय होगी। राज्य पक्ष व आपके कार्यक्षेत्र में आपके वरिष्ठ अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे एवं आपका सम्मान करेंगे। आपके परिवार की प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

## जन्म लग्न का फल

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न की राशि आपकी वर्षकुण्डली में पांचवें भाव में स्थित है। अतः इस वर्ष आपको अपने द्वारा किए गए सभी कार्यों में सफलता प्राप्त होगी, आपकी उद्यमशीलता बनी रहेगी, तथा यदि आप किसी परीक्षा में बैठ रहे हैं, तो आपको उसमें भी सफलता मिलेगी। आपके घर–परिवार में शुभ समारोहों का आयोजन हो सकता है एवं आपको संतान संबंधी सुख की भी प्राप्ति होने के योग हैं।

## कुण्डली के भावों का उनके कारकत्व के अनुसार विश्लेषण

**लग्न भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में बुध लग्न में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए बहुत अनुकूल होगा। इस वर्ष

जीवनसाथी से आपका संबंध मधुर रहेगा एवं जीवनसाथी का सुख मिलेगा। आपका बौद्धिक विकास होगा, नई चुनौतियों का दक्षतापूर्वक सामना करेंगे एवं अनेक नये कार्य संपन्न कर सकते हैं। आपके प्रताप, पराक्रम एवं सहनशीलता में वृद्धि होगी तथा स्वभाव में गंभीरता उत्पन्न होगी। आपके परिवार में प्रेमपूर्ण वातावरण होगा। धनोपार्जन के साधन प्राप्त होंगे एवं आप उन्नति की ओर अग्रसर होंगे। आप अपने विरोधियों एवं प्रतिद्वन्द्वियों को परास्त करेंगे तथा आपके मित्र भी बनेंगे। आपकी मान–प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपके उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे एवं आपको उनसे सराहना व समर्थन प्राप्त होगा।आपकी वर्षकुण्डली में बृहस्पति लग्न में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए बहुत शुभ फलप्रद होगा। आप शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ्य एवं निरोग रहेंगे। आपको अपने जीवनसाथी एवं संतान का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। आपके मित्र भी आपके प्रति सहयोगपूर्ण होंगे। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं, तो आपको अच्छी नौकरी मिलने की प्रबल संभावना है, यहां तक कि आपकी योग्यतानुसार आपको सरकारी नौकरी भी प्राप्त हो सकती है। यदि नौकरी में पहले से ही हैं, तो वांछित पदोन्नति प्राप्त हो सकती है। इस वर्ष आपकी बौद्धिक क्षमता उत्तम रहेगी एवं आपको अपने सभी कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। आपके व्यवसाय में उत्तम उन्नति होगी। आपको किसी बड़े कार्य में सफलता मिलेगी, जिससे आपको स्थाई लाभ प्राप्त होगा।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश चौथे भाव में स्थित है। यह वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। इस वर्ष आपका घरेलू जीवन सुखमय होगा, आपको उत्तम स्वादिष्ट भोजन प्राप्त होगा। अपने मित्रों के साथ आपका संबंध अच्छा रहेगा। आपको भूमि व भवन का सुख प्राप्त होने के भी योग हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में बृहस्पति केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित है एवं इसकी पाप ग्रहों के साथ युति या उनकी इस पर दृष्टि नहीं है, जबकि इसकी शुभ ग्रहों से युति या शुभ ग्रहों की इस पर दृष्टि है। यह सभी प्रकार के अरिष्टों का नाश करेगा।

आपकी वर्षकुण्डली में, जन्म लग्नेश, वर्ष लग्नेश और मुन्थेश केन्द्र–त्रिकोण या द्वितीय–एकादश में स्थित हैं। आपको धन–सम्पदा, सोना–चाँदी, वस्त्र–आभूषण, सुख–सुविधा आदि की प्राप्ति होगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, चंद्रमा, बुध, बृहस्पति या शुक्र में से कोई दो ग्रह केन्द्र में स्थित हैं, दोनों में से कोई नीचस्थ अथवा अस्त नहीं है। यह योग सभी प्रकार के अरिष्टों को अवश्य समाप्त करेगा।

आपकी वर्षकुण्डली में, केतु तीसरे, छठे या ग्यारहवें भाव में मकर या कुम्भ या मीन राशि में स्थित है। यह एक प्रबल अरिष्ट नाशक योग है।

आपकी वर्षकुण्डली में, चंद्रमा लग्न से चौथे, छठे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है।

### द्वितीय भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली मे सूर्य दूसरे भाव में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए अनुकूल नहीं है। आपके परिवार में असंतुष्टि के भाव उत्पन्न होने से प्रायः कलह–क्लेश हो सकते हैं। अतः आपको घर में शांति बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। आपके शत्रु भी आपके लिए परेशानियां खड़ी कर सकते हैं तथा आपका कोई नया शत्रु उत्पन्न हो सकता है, जो आपको हानि पहुंचाने का प्रयास कर सकता है। चोरी, आगजनी या गुम हो जाने से आपको धन की हानि हो सकती है, अतः पर्याप्त सावधानी बरतना चाहिए। इस वर्ष आपके नियोक्ता या राज्यपक्ष की ओर से कोई प्रतिकूल स्थिति उत्पन्न होने के कारण आपके विरूद्ध कार्यवाही की जा सकती है।आपकी वर्षकुण्डली में, शनि दूसरे भाव (धन–भाव)में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए अनुकूल नहीं हो सकता है। इस वर्ष आपकी आय में कमी हो सकती है, जबकि आपके खर्चों में वृद्धि होने की संभावना है। आप आकस्मिक यात्राएं कर सकते हैं, जो कि लाभप्रद नहीं हो सकती है। आप मुख एवं आंख सबंधी रोगों से पीड़ित हो सकते हैं तथा आपको किसी प्रकार से चोट लगने की भी संभावना है। आपका अपने स्वजनों से विरोध या विवाद हो सकता है एवं आप पर झूठे आरोप भी लगाये जा सकते हैं। इस वर्ष आप आर्थिक कमी की स्थिति का सामना कर सकते हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, द्वितीयेश लग्न में स्थित है। यह वर्ष आपके लिए शुभ फलप्रद रहेगा। इस वर्ष आपको अनेक प्रकार के सुखों की प्राप्ति होगी। आप सुविधापूर्ण एवं आनन्ददायक वस्तुएं प्राप्त करेंगे। आपका शरीर स्वस्थ्य एवं निरोग रहेगा। आपको उत्तम धन–लाभ की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य जिस राशि में विराजमान है, आपकी वर्षकुण्डली में उसी राशि में दूसरे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको प्रचुर धन की प्राप्ति होगी।

### तृतीय भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में, केतु तीसरे भाव में स्थित है। अतः इस वर्ष आपके कार्यक्षेत्र में सबके साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके शत्रु परास्त होंगे। आपको सुख–सुविधा की वस्तुओं की प्राप्ति होगी एवं आप विलासितापूर्ण जीवन का आनन्द लेंगे। आपकी सामाजिक मान–प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, तथा सामान्यतः लोग आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे। आपके व्यापार–व्यवसाय की स्थिति उत्तम एवं लाभप्रद रहेगी। आपके कुल की प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, तृतीयेश दूसरे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको प्रवास में कष्ट हो सकता है। आपकी यात्राएं भी कष्टकारी रह सकती हैं। आपको भाई–भगिनी संबंधी कष्ट होने की भी संभावना है।

### चतुर्थ भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में मंगल चौथे भाव में स्थित है। इसलिए, इस वर्ष आपकी माता को शारीरिक कष्ट हो सकता है। आपके मित्रों एवं स्वजनों से आपका विरोध व मतभेद हो सकता है। आपके परिवार में कलह–क्लेश रहने के

कारण अथवा किसी अन्य कारणवश आप मानसिक रूप से व्यथित हो सकते हैं। आगजनी से हानि हो सकती है। चौपाया पशु या वाहन से भी हानि होने की संभावना है। इस वर्ष आपको यात्रा में कष्ट हो सकता है। व्यवसाय या कृषि संबंधी कार्यों में लाभ की प्राप्ति अधिक नहीं हो सकती है।

आपकी वर्षकुण्डली में, चतुर्थेश दूसरे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपका अपने मित्रों से सुखद संबंध बने रहेंगे। आपको जमीन, जायदाद आदि का सुख प्राप्त होगा। आप उत्तम धनोपार्जन भी करेंगे।

आपकी वर्षकुण्डली में, बृहस्पति और चंद्रमा केन्द्र में स्थित हैं अथवा बृहस्पति और शुक्र चौथे भाव में स्थित हैं। इस वर्ष आपको बहुत कठिन परिश्रम के बाद गड़े हुए धन की प्राप्ति होने की संभावना है।

आपकी वर्षकुण्डली में, शनि की सूर्य के साथ युति है। इस वर्ष आपको अपने पिता के हाथों अपमान व विरोध का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में शनि सूर्य की जन्मराशि में स्थित है। इस वर्ष आपका अपने पिता के साथ मनमुटाव व विवाद हो सकता है।

**पंचम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, पंचमेश लग्न में स्थित है। इस वर्ष आपकी बौद्धिक क्षमता प्रखर होगी एवं आप अपनी इस क्षमता से अपनी कठिनाईयों का अन्त करने में सफल रहेंगे। आपको उत्तम धन लाभ भी प्राप्त होगा। साथ ही आपको संतान की प्राप्ति व संतान संबंधी सुख प्राप्त होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में बुध या शुक्र जिस राशि में स्थित हैं, वह राशि आपकी वर्षकुण्डली में लग्न में स्थित है। इस वर्ष आपको पुत्र रत्न की प्राप्ति होने के प्रबल योग हैं। (अगर आप उम्र के उस दौर में हैं तो अन्यथा आपको अपने पुत्र अथवा पुत्री के किसी कार्य से सम्मान मिलेगा)

**षष्टम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, षष्ठेश चौथे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको कृषि संबंधी कार्यों से कम लाभ होने की संभावना है। जबकि आपको वाहन का सुख प्राप्त होने के प्रबल योग हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश और षष्ठेश दोनों एक ही साथ एक ही भाव में विराजमान हैं। इस वर्ष आप शारीरिक रूप से थोड़ा अस्वस्थ रह सकते हैं।

**सप्तम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में चंद्रमा सातवें भाव में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। इस वर्ष आप

क्रय–विक्रय के माध्यम से लाभार्जन कर सकते हैं तथा श्वेत रंग की वस्तुओं का व्यापार आपके लिए लाभप्रद हो सकता है। आपकी आय के स्रोत बनेंगे, आपकी संपत्ति में वृद्धि होगी एवं आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी एवं आपके सहकर्मी भी आपको उचित सम्मान देंगे। आपको जीवनसाथी का सुख प्राप्त होगा।

आपकी वर्षकुण्डली में, सप्तमेश बारहवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपके जीवनसाथी को ट्यूमर/फोड़े आदि या अन्य रोगादि से शारीरिक रूप से पीड़ित रहना पड़ सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, बृहस्पति शुक्र की जन्म–राशि में केन्द्र या त्रिकोण में स्थित है। यदि आप विवाह योग्य हैं और अविवाहित हैं, तो इस वर्ष आपका विवाह होने की पूर्ण संभावना है।

**अष्टम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, अष्टमेश लग्न में स्थित है। यह वर्ष आपके लिए प्रतिकूल फलदायक साबित हो सकता है। इस वर्ष आप विभिन्न प्रकार की परेशानियों व कष्टों से घिरे रह सकते हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, वर्षेश मंगल के साथ स्थित है। इस वर्ष आप किसी मुकदमे में फंस सकते हैं।

**नवम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, राहु नौवें भाव में स्थित है। इसलिए, इस वर्ष आपका भाग्य आपके अधिक अनुकूल नहीं हो सकता है। आपका अपने पिता के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। आपको पशु अथवा वाहन से चोट लगने का भय है। यद्यपि इस वर्ष आपकी रूचि धार्मिक कार्यों में रहेगी, किन्तु साथ ही क्रूरता की भावना भी आपमें जागृत हो सकती है। आपकी पदावनति होने की भी संभावना है।

आपकी वर्षकुण्डली में, नवमेश सातवें भाव में स्थित है। यह वर्ष आपके लिए भाग्यवर्द्धक साबित होगा एवं आपके मन में संतुष्टि की भावना विकसित होगी। किन्तु यदि नवमेश की पाप ग्रहों के साथ युति है या पाप ग्रहों की इस पर दृष्टि है, तो आपका भाग्य कमजोर हो सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, मंगल वर्षेश है और केन्द्र में स्थित है। इस वर्ष आप दूरस्थ स्थानों की यात्रायें करेंगे।

**दशम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, दशमेश दूसरे भाव में स्थित है। इस वर्ष आप धनोपार्जन करेंगे एवं स्वयं के अर्जित धन से उत्तम भोजन व सुख–सुविधाओं का आनन्द प्राप्त करेंगे।

आपकी वर्षकुण्डली में, बृहस्पति या जन्म लग्नेश या वर्ष लग्नेश लग्न में स्थित है एवं इसकी शुभ ग्रह के साथ

युति है अथवा शुभ ग्रह की इस पर दृष्टि पड़ रही है। इस वर्ष आप बहुत प्रगति करेंगे।

आपकी वर्षकुण्डली में, राज्येश/दशमेश का चतुर्थेश से युति या दृष्टि संबंध है। इस वर्ष आपको जल मार्ग की यात्रा करनी पड़ सकती है।

**एकादश भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, एकादशेश लग्न में स्थित है। यह वर्ष आपके लिए सुखदायक रहेगा। इस वर्ष आपको वाहन या चौपाये पशु से संबंधी लाभ प्राप्त हो सकता है।

**द्वादश भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, शुक्र बारहवें भाव में स्थित है। इसलिए, इस वर्ष आपका अपने स्वजनों से वाद–विवाद व मनमुटाव हो सकता है। आप अच्छे कार्यों में अपना धन व्यय कर सकते हैं। आपको यात्राएं करनी पड़ सकती हैं, इन यात्राओं से यद्यपि आपके कार्य सफल होंगे, किन्तु हानि एवं कष्ट की भी संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, द्वादशेश बारहवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको कन्या संबंधी सुख की प्राप्ति होगी। आप वाहन का सुख भी प्राप्त कर सकते हैं। किन्तु आपके खर्चों में भी वृद्धि हो सकती है।

# पत्ययनी दशाफल

Varhphal Years: 73 (2018-2019) Varhphal Date: 22:12:2018, 04:55Hrs

## रवि दशा

21:12:2018-04:03:2019

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, सूर्य उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित नहीं है। समग्र रूप से यह एक उदासीन योग का निर्माण करता है। अतः सूर्य की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। हालांकि आपको अपने कार्यस्थल पर कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है एवं आप अपने किसी वरिष्ठ अथवा सहकर्मी के साथ मामूली असहमति अथवा गलतफहमी के कारण झुंझलाहट महसूस कर सकते हैं।

## लग्न दशा

05:03:2019-24:06:2019

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, लग्नेश उच्चस्थ अथवा अपनी राशि में अथवा नीचस्थ नहीं है। किन्तु यह वक्री या अस्त या ग्रसित नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते हैं। अतः लग्न की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना या अवसर के होगी। हालांकि आपके कार्यस्थल की स्थिति कुछ हद तक बिगड़ सकती है। यद्यपि सामान्य लोग आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे, फिर भी आपके वरिष्ठ/अधिकारी आपको दबाने का प्रयास कर सकते हैं एवं तक्रसंगत रूप से आपको मिलने वाला श्रेय किसी और को दे सकते हैं। या फिर आपको अन्यायपूर्वक बहुत छोटी अथवा बिना किसी गलती के दोषी ठहराया जा सकता है।

## गुरु दशा

25:06:2019-02:07:2019

श इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, गुरु उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते है। अतः गुरु की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। सामान्यतः आपके सभी मामलें भली भांति चलेंगे। आपके पेशे के क्षेत्र में चीजें बहुत सहजतापूर्ण ढंग से होंगी। अपने सगे–संबंधियों व मित्रों की संगति में बिताने के लिए आप कुछ खाली समय निकालने में सक्षम होंगे।

## बुध दशा

03:07:2019-05:07:2019

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, बुध उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते है। अतः बुध की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। सामान्यतः आपके सभी मामलें भली भांति चलेंगे। आपके पेशे के क्षेत्र में चीजें बहुत सहजतापूर्ण ढंग से होंगी। अपने सगे–संबंधियों व मित्रों के साथ मिलने–जुलने के लिए आप कुछ खाली समय निकालने में सक्षम होंगे।

## शनि दशा

**06:07:2019-09:07:2019**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, शनि नीचस्थ है या अस्त अथवा ग्रसित होने के कारण दूषित है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। शनि की दशा आपके लिए अच्छी अवधि नहीं हो सकती है। अतः आपको सावधान व सचेत रहना चाहिए एवं अपने स्वास्थ्य का उचित ध्यान रखना चाहिए। आपके कुछ पारिवारिक सदस्यों का बिगड़ता हुआ स्वास्थ्य आपको कुछ चिन्तित कर सकता है। अथवा धन के अवरूद्ध होने के कारण आप अपने वचनों को पूरा करने में बहुत कठिनाई महसूस कर सकते हैं। आप कई कारणों से दुखी हो सकते हैं एवं अप्रसन्न या व्यथित महसूस कर सकते हैं। अथवा आप दुख या निराशा से पीड़ित हो सकते हैं। इस अवधि के दौरान किसी भी महत्वपूर्ण कार्य की शुरूआत करना अथवा किसी लम्बी यात्रा के लिए प्रस्थान करना अधिक फलदायक नहीं हो सकता है।

## शुक्र दशा

**10:07:2019-28:08:2019**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, शुक्र उच्चस्थ अथवा अपनी राशि में स्थित है एवं यह अस्त या ग्रसित होने से दूषित नहीं है। शुक्र की दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। आपको अपने वरिष्ठों एवं अधिकारियों से लाभ व समर्थन प्राप्त होगा। आप उच्च पद वाले लोगों से मित्रता स्थापित करेंगे एवं आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। आपको सभी प्रकार से संतुष्टि प्राप्त होगी एवं एक विपरीत लिंग का व्यक्ति आपके लिए विशेष प्रसन्नता का स्रोत हो सकता है। आपकी आय एवं बहुमूल्य अधिग्रहण में वृद्धि होगी एवं आपका घरेलू जीवन बहुत आनन्दमय होगा। यदि आप व्यापारी हैं तो यह अवधि आपके लिए उपयोगी, सहजतापूर्ण व लाभदायक होगी।

## चंद्र दशा

**29:08:2019-04:11:2019**

इस वर्ष आपकी वर्षफल कुण्डली में, चंद्रमा उच्चस्थ या अपनी राशि में है एवं यह ग्रसित नहीं है। चंद्रमा की दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। आपकी आय एवं अर्जित लाभ में वृद्धि होगी एवं आपका घरेलू जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण होगा। आप आभूषण व कुछ सम्पत्ति खरीदने के लिए अच्छी रकम खर्च कर सकते हैं। आप अपने संबंधियों व मित्रों से मिलने के लिए कुछ छोटी यात्राएं कर सकते हैं। आप पिकनिक व भ्रमण का भी आनन्द प्राप्त कर सकते हैं।

## मंगल दशा

**05:11:2019-20:12:2019**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मंगल उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते है। अतः मंगल की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। हालांकि आपको अपने कार्यस्थल पर कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। या फिर आप अपने सगे या चचेरे भाई या पड़ोसी के साथ संपत्ति–विवाद में फंस सकते हैं, जिसके कारण आप झुंझलाहट महसूस कर सकते हैं।

# ज्योतिष सारिणी

| | SAMPLE | ज्योतिष सारिणी |
|---|---|---|
| जन्म दिनाकं | 21:12:1945 | 22:12:2019 |
| दिन | शुक्रवार | रविवार |
| ज्योतिषिय वार | शुक्रवार | रविवार |
| जन्म समय | 11:34:00 | 11:11:31 |
| जन्म स्थान | ranchi | ranchi |
| अक्षांश | 023:20:00N | 023:20:00N |
| रेखांश | 085:19:00E | 085:19:00E |
| यु./ग्रीष्म समय संस्कार | -00:00 | -00:00 |
| जी. एम. टी. समय | 006:03:00 | 005:41:31 |
| स्थानीय समय संस्कार | 000:11:15 hrs | 000:11:15 hrs |
| स्थानीय समय | 011:45:15 hrs | 011:22:46 hrs |
| सांपातिक काल | 017:43:03 hrs | 017:24:45 hrs |
| सूर्योदय | 06:28:24AM | 06:28:43AM |
| सूर्यास्त | 05:04:58PM | 05:05:19PM |

| | | |
|---|---|---|
| लग्न | मीन | कुंभ |
| लग्नाधिपति | गुरु | शनि |
| राशि (चन्द्रमा) | कर्क | तुला |
| राशिपति | चंद्र | शुक्र |
| नक्षत्र | पुष्य | स्वाति |
| नक्षत्रपति | शनि | राहू |
| नक्षत्र चरण | 1 | 3 |
| पाया | रजत | रजत |
| ऋतु | हेमन्त | हेमन्त |
| मास | पौष कृष्ण | पौष कृष्ण |
| पक्ष | कृष्ण | कृष्ण |
| तिथि | तृतीया | एकादशी |
| तिथि श्रेणी | जया | नन्दा |
| तिथि पति | मंगल | मंगल |
| करण | वनिज | बल्लव |
| करण श्रेणी | चर | चर |
| करणपति | मनिभद्र | व्रहमा |
| सूर्य सिद्धान्त योग | इन्द्रय | सुकर्मन |
| तत्व | जल | अग्नि |
| तत्वाधिपति | शुक्र | मंगल |
| विहग | पिंगला | वायस |
| वेध | पूर्वाशाढ़ | रोहिणी |

# ग्रह स्थिती वर्षफल

**Varhphal Years: 74 (2019-2020) Varhphal Date: 22:12:2019, Time: 11:11Hrs**

| ग्रह | राशि | अंश | नक्षत्र | विशेष |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | मीन | 01:13 | पूर्वाभाद(4) | |
| सूर्य(ग्र.) | धनु | 05:55 | मूला (2) | **मित्र राशि** |
| चन्द्रमा | कर्क | 04:53 | पुष्य (1) | **स्व राशि** |
| मंगल(व.) | कर्क | 08:17 | पुष्य (2) | **नीच राशि** |
| बुध | वृश्चिक | 14:56 | अनुराधा (4) | **सम राशि** |
| बृहस्पति | तुला | 00:18 | चित्रा (3) | **शत्रु राशि** |
| शुक्र | वृश्चिक | 25:47 | ज्येष्ठा (3) | **सम राशि** |
| शनि(व.) | कर्क | 00:04 | पुनर्वसु (4) | **शत्रु राशि** |
| राहु(व.) | मिथुन | 06:56 | अरिद्रा (1) | **मित्र राशि** |
| केतु(व.) | धनु | 06:56 | मूला (3) | **स्व नक्षत्र** |
| हर्षल(व.) | वृष | 21:45 | रोहिणी (4) | ..... |
| नेपच्यून | कन्या | 15:24 | हस्ता (2) | ..... |
| प्लूटो(व.) | कर्क | 18:23 | अश्लेषा (1) | ..... |

| ग्रह | राशि | अंश | नक्षत्र | विशेष |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | कुंभ | 24:05 | पूर्वाभाद(2) | |
| सूर्य | धनु | 05:55 | मूला (2) | मित्र राशि |
| चन्द्रमा | तुला | 15:39 | स्वाति (3) | सम राशि |
| मंगल | तुला | 27:42 | विशाखा (3) | सम राशि |
| बुध(अ.) | वृश्चि | 25:05 | ज्येष्ठा (3) | स्व राशि |
| बृहस्पति(अ.) | धनु | 10:17 | मूला (4) | स्व राशि |
| शुक्र | मकर | 08:16 | उत्तरा (4) | मित्र राशि |
| शनि | धनु | 26:08 | पूर्वाषाढ़ (4) | सम राशि |
| राहु(व.) | मिथुन | 14:37 | अरिद्रा (3) | मित्र राशि |
| केतु(व.) | धनु | 14:37 | पूर्वाषाढ़ (1) | सम राशि |
| हर्षल(व.) | मेष | 08:41 | अश्विनी (3) | .... |
| नेपच्यून | कुंभ | 21:58 | पूर्वाभाद (1) | .... |
| प्लूटो | धनु | 27:56 | उत्तरा (1) | .... |

## लग्न कुण्डली

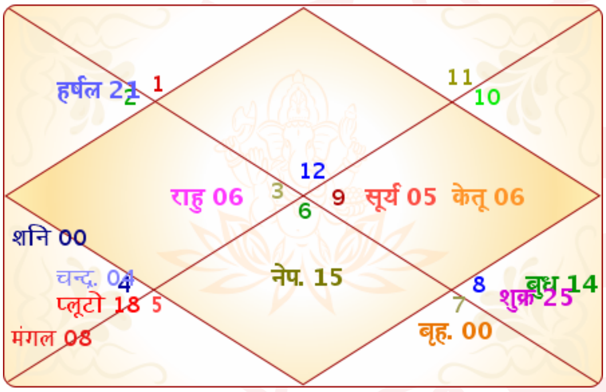


## चन्द्र कुण्डली

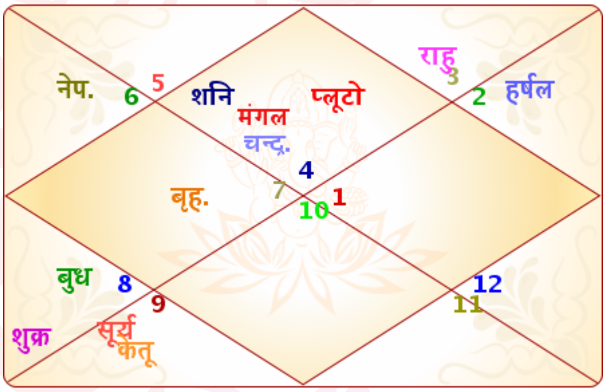


## लग्न कुण्डली ( वर्षफल )

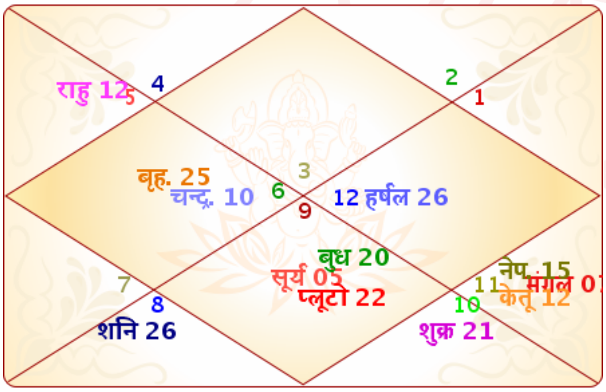


## चन्द्र कुण्डली ( वर्षफल )

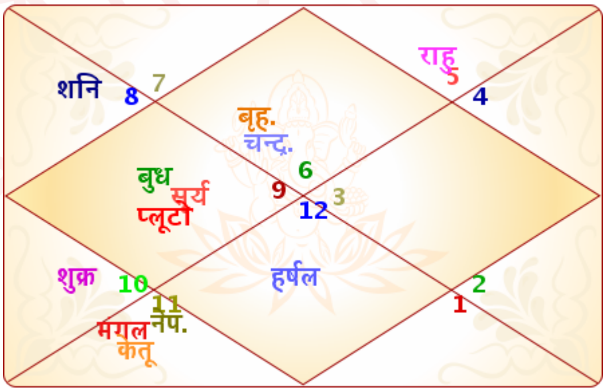

# द्वादश वर्ग कुण्डली

## लग्न कुण्डली

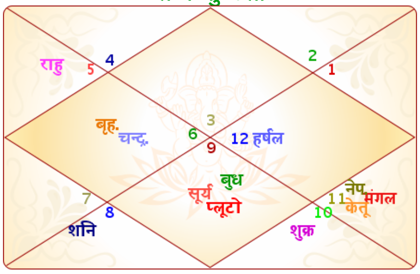


## होरा कुण्डली

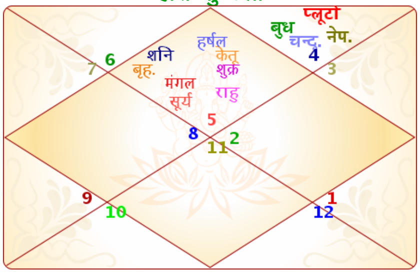


## द्रेष्काण कुण्डली

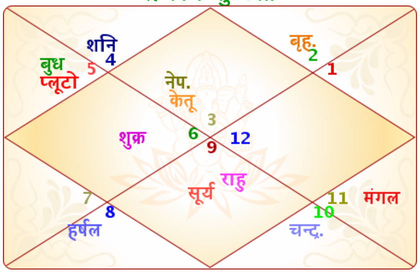


## चतुर्थांश कुण्डली

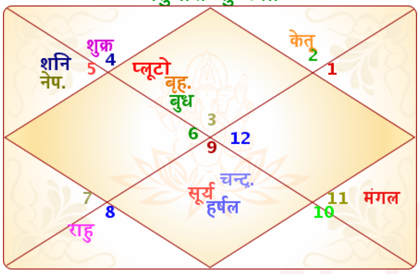


## पंचमांश कुण्डली

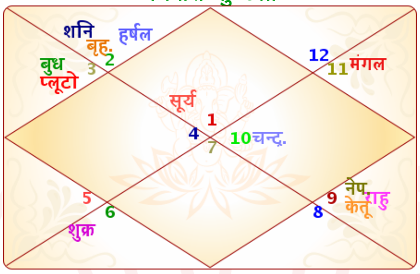


## षष्टमांश कुण्डली

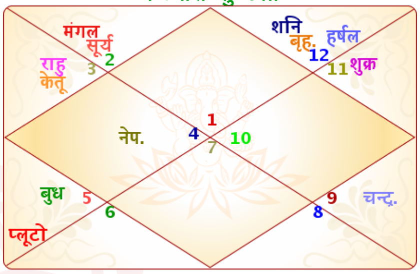


## सप्तमांश कुण्डली

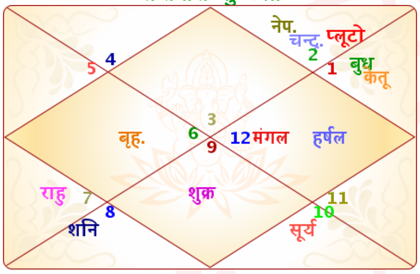


## अष्टमांश कुण्डली

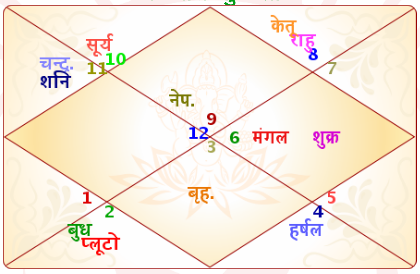


## नवांश कुण्डली

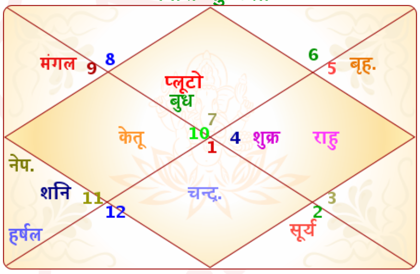


## चर्तुविशांश कुण्डली

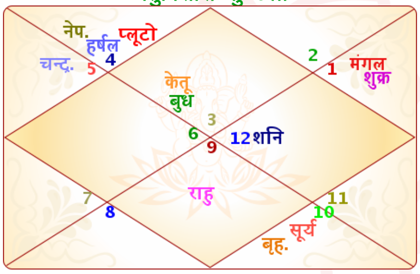


## एकादशांश कुण्डली

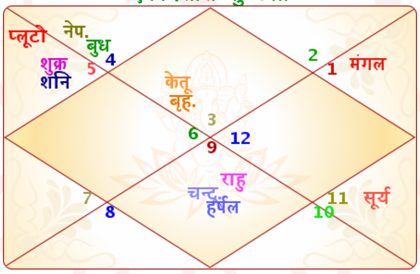


## द्वादशांश कुण्डली

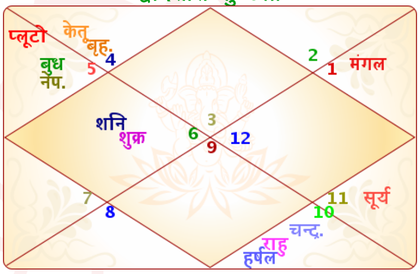


## वर्षफल कुण्डली में ग्रहों की दृष्टि

| | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहू | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रवि | .... | गु.प्रेम | गु.प्रेम | सम | प्र.शत्रु | सम | प्र.शत्रु | प्र.शत्रु | प्र.शत्रु |
| चंद्र | गु.प्रेम | .... | प्र.शत्रु | सम | गु.प्रेम | गु.शत्रु | गु.प्रेम | प्र.प्रेम | गु.प्रेम |
| मंगळ | गु.प्रेम | प्र.शत्रु | .... | सम | गु.प्रेम | गु.शत्रु | गु.प्रेम | प्र.प्रेम | गु.प्रेम |
| बुध | सम | सम | सम | .... | सम | गु.प्रेम | सम | सम | सम |
| गुरु | प्र.शत्रु | गु.प्रेम | गु.प्रेम | सम | .... | सम | प्र.शत्रु | प्र.शत्रु | प्र.शत्रु |
| शुक्र | सम | गु.शत्रु | गु.शत्रु | गु.प्रेम | सम | .... | सम | सम | सम |
| शनि | प्र.शत्रु | गु.प्रेम | गु.प्रेम | सम | प्र.शत्रु | सम | .... | प्र.शत्रु | प्र.शत्रु |
| राहू | प्र.शत्रु | प्र.प्रेम | प्र.प्रेम | सम | प्र.शत्रु | सम | प्र.शत्रु | .... | प्र.शत्रु |
| केतु | प्र.शत्रु | गु.प्रेम | गु.प्रेम | सम | प्र.शत्रु | सम | प्र.शत्रु | प्र.शत्रु | .... |

प्र.प्रेमः–प्रकट प्रेम दृष्टि ,गु.प्रेमः–गुप्त प्रेम दृष्टि ,प्र.शत्रुः–प्रकट शत्रु दृष्टि ,गु.शत्रुः–गुप्त शत्रु दृष्टि ,समः–सम दृष्टि ,

# वर्षफल कुण्डली में ग्रहों का बल

Varhphal Years: 74 (2019-2020) Varhphal Date: 22:12:2019, Time: 11:11Hrs

## पंचवर्गीय बल

| क्र0स0 | बल | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | क्षेत्र बल | 7.5 | 7.5 | 7.5 | 15.0 | 30.0 | 15.0 | 7.5 |
| 2 | उच्च बल | 6.21 | 1.93 | 9.97 | 12.21 | 2.75 | 11.25 | 12.65 |
| 3 | हद्दा बल | 3.75 | 11.25 | 3.75 | 7.5 | 15.0 | 7.5 | 15.0 |
| 4 | द्रेक्कन बल | 5.0 | 7.5 | 7.5 | 7.5 | 7.5 | 5.0 | 10.0 |
| 5 | नवांश बल | 2.5 | 3.75 | 2.5 | 2.5 | 3.75 | 2.5 | 3.75 |
| | योग | 6.24 | 7.98 | 7.8 | 11.18 | 14.75 | 10.31 | 12.22 |
| | तुलनात्मक बल | साधारण | साधारण | साधारण | बलशाली | बलशाली | बलशाली | बलशाली |

## द्वादश वर्गीय बल

| क्र0स0 | बल | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | राशि बल | 0 | 0 | 0 | 0 | +2 | 0 | 0 |
| 2 | होरा बल | +2 | +2 | 0 | 0 | 0 | 0 | -1 |
| 3 | द्रेक्कन बल | 0 | -1 | 0 | 0 | -1 | 0 | 0 |
| 4 | चतुर्थाशं बल | 0 | 0 | 0 | 0 | +2 | 0 | 0 |
| 5 | पंचमाशं बल | -1 | -1 | 0 | -1 | 0 | 0 | 0 |
| 6 | षष्टाशं बल | 0 | +2 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| 7 | सप्तमाशं बल | 0 | -1 | +2 | -1 | 0 | 0 | 0 |
| 8 | अष्टमाशं बल | 0 | -1 | +2 | 0 | 0 | -1 | 0 |
| 9 | नवाशं बल | 0 | -1 | 0 | 0 | -1 | 0 | -1 |
| 10 | दसाशं बल | 0 | -1 | 0 | 0 | +2 | 0 | 0 |
| 11 | एकादसाशं बल | 0 | -1 | -1 | 0 | +2 | 0 | 0 |
| 12 | द्ववादशाशं बल | 0 | 0 | 0 | +2 | -1 | 0 | 0 |
| | योग | +1 | -3 | +3 | 0 | +5 | -1 | -2 |
| | तुलनात्मक बल | साधारण | बुरा | अच्छा | सम | बहुत अच्छा | सम | सम |

## हर्ष बल

| क्र0स0 | बल | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | स्थान बल | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 0.0 |
| 2 | क्षेत्र बल | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 0.0 |
| 3 | ओज–युग्म बल | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 |
| 4 | दिवा–रात्रि बल | 5.0 | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 0.0 |
| | योग | 5 | 5 | 5 | 0 | 15 | 0 | 0 |
| | तुलनात्मक बल | अल्पबली | अल्पबली | अल्पबली | निर्बबली | पर्णबली | निर्बबली | निर्बबली |

# वर्षफल सहम

Varhphal Years: 74 (2019-2020) Varhphal Date: 22:12:2019, Time: 11:11Hrs

| क्र0स0 | सहम का नाम | राशि | अंश | सहम अधिपति | 11 भाव पति | 8 भाव पति |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | पुण्य सहम (भाग्य) | मकर | 003:50:06 | शनि | मंगल | ... |
| 2 | विद्या सहम | वृष | 014:21:22 | शुक्र | बृहस्पति | ... |
| 3 | यश सहम | कुम्भ | 000:31:59 | शनि | बृहस्पति | ... |
| 4 | मित्र सहम (मित्र) | धनु | 014:44:07 | बृहस्पति | शुक्र | ... |
| 5 | महात्य सहम (महानता) | मिथुन | 000:13:38 | बुध | मंगल | ... |
| 6 | आशा सहम (इच्छा) | वृष | 022:31:41 | शुक्र | बृहस्पति | ... |
| 7 | समर्थ सहम (पुरूषार्थ) | धनु | 025:39:47 | बृहस्पति | शुक्र | ... |
| 8 | भ्रात्रि सहम (भाई) | कुम्भ | 008:14:56 | शनि | बृहस्पति | ... |
| 9 | गौरव सहम (सम्मान) | मीन | 000:32:59 | बृहस्पति | शनि | ... |
| 10 | पितृ सहम (पिता) | मेष | 014:18:17 | मंगल | शनि | ... |
| 11 | राजा सहम (अधिकार) | मेष | 014:18:17 | मंगल | शनि | ... |
| 12 | मात्रि सहम (माता) | धनु | 001:28:51 | बृहस्पति | शुक्र | ... |
| 13 | अपत्य सहम (संतान) | वृष | 018:43:07 | शुक्र | बृहस्पति | ... |
| 14 | जीव सहम (जीवन) | मेष | 009:56:32 | मंगल | शनि | ... |
| 15 | कर्म सहम (कार्रवाई) | मकर | 026:42:39 | शनि | मंगल | ... |
| 16 | रोग सहम | कक्र | 002:31:30 | चन्द्रमा | ... | शनि |
| 17 | काली सहम (कलह, संघर्ष) | वृष | 006:40:53 | शुक्र | ... | बृहस्पति |
| 18 | शास्त्र सहम (उच्च शिक्षा) | वृश्चिक | 009:14:29 | मंगल | बुध | ... |
| 19 | बन्धु सहम (रिश्तेदार) | वृष | 003:31:02 | शुक्र | बृहस्पति | ... |
| 20 | निधन सहम | कुम्भ | 003:45:00 | शनि | ... | बुध |
| 21 | परदेश सहम (विदेश) | धनु | 012:21:37 | बृहस्पति | शुक्र | ... |
| 22 | धन सहम (धन) | मिथुन | 009:07:37 | बुध | मंगल | ... |
| 23 | प्रदर सहम (परस्त्रीगमन) | मेष | 026:27:00 | मंगल | शनि | ... |
| 24 | वनिज सहम (धंधा) | मकर | 014:40:25 | शनि | मंगल | ... |
| 25 | कार्यसिद्वि सहम (सफलता) | कुम्भ | 000:29:54 | शनि | बृहस्पति | ... |
| 26 | विवाह सहम | मेष | 006:14:26 | मंगल | शनि | ... |
| 27 | संताप सहम (दुःख) | वृश्चिक | 005:47:26 | मंगल | ... | बुध |
| 28 | श्रद्धा सहम (भक्ति) | मिथुन | 004:40:23 | बुध | मंगल | ... |
| 29 | प्रिति सहम (प्यार) | धनु | 029:30:06 | बृहस्पति | शुक्र | ... |
| 30 | जाड्य सहम (स्थाई रोग) | कन्या | 026:39:20 | बुध | ... | मंगल |
| 31 | ब्यापार सहम | धनु | 025:39:47 | बृहस्पति | शुक्र | ... |
| 32 | शत्रु सहम | धनु | 025:39:47 | बृहस्पति | ... | चन्द्रमा |
| 33 | जलपत्तन सहम (विदेश यात्रा) | कन्या | 012:57:34 | बुध | चन्द्रमा | ... |
| 34 | बंधन सहम (कारावास) | मेष | 001:47:41 | मंगल | ... | मंगल |
| 35 | अपघात सहम (आकस्मिक दुर्घटना) | मकर | 021:42:46 | शनि | ... | सूर्य |
| 36 | वित्तहानि सहम | मेष | 023:16:49 | मंगल | ... | मंगल |
| 37 | त्रिक स्फूट (दुर्घटना) | मीन | 006:53:26 | बृहस्पति | ... | शुक्र |
| 38 | घात स्थान (अनहोनी) | कुम्भ | 029:00:57 | शनि | ... | बुध |

# त्रिपताकी चक्र

**Varhphal Years: 74 (2019-2020) Varhphal Date: 22:12:2019, Time: 11:11Hrs**

| क्र0स0 | राशि | ग्रह |
|---|---|---|
| 1 | 11 | बुध, शुक्र |
| 2 | 12 | सूर्य, चन्द्रमा |
| 3 | 1 | |
| 4 | 2 | |
| 5 | 3 | |
| 6 | 4 | केतु |
| 7 | 5 | |
| 8 | 6 | |
| 9 | 7 | शनि |
| 10 | 8 | |
| 11 | 9 | मंगल |
| 12 | 10 | बृहस्पति, राहु |

## त्रिपताकी चक्र में वेध

**लग्न** : सूर्य , चन्द्र , शनि , केतु
**सूर्य** : सूर्य , चन्द्र , शनि , केतु , चन्द्र , शनि , केतु
**चन्द्रमा** : सूर्य , शनि , केतु
**मंगल** : गुरू , राहु , केतु
**बुध** : शुक्र
**बृहस्पति** : मंग. , राहु
**शुक्र** : बुध
**शनि** : सूर्य , चन्द्र

## ग्रहों द्वारा चन्द्र वेध का फल

**सूर्य :**

आत्मविश्वास की कमी, बदनामी, वृथा अंहकार, दोषयुक्त आँखें, पिता को कठिनाई, मानसिक तनाव, चिड़चिड़ापन, उच्च ज्वर, पित्तजनित रोग तथा निराशायें।

**मंगल :**

शत्रुओं से भय, हथियार, रक्त अनियमितत, दुर्घटनायें, शरीर में दर्द और चोट, शीघ्र क्रोधित होना, लड़ाई–झगड़ा, संघर्ष, हिंसा, लेकिन साथ ही ज्ञान व धन की प्राप्ति भी।

**बुध :**

ज्ञान व बुद्धिमत्ता में वृद्धि, तीक्ष्ण बुद्धि, अच्छे लोगों की संगति और धन का लाभ। लेकिन यदि दूषित है, तो व्यक्ति उतावला व क्षुद्र दिमाग वाला होता है, परिवार की नाराजगी, तनाव और चिन्ताओं की प्राप्ति तथा शत्रुओं से भय।

**बृहस्पति :**

शांति और प्रसन्नता, सभ्य लोगों की संगति, तीर्थ यात्रा, धार्मिक कार्यों के प्रति रूझान, सामाजिक स्तर में उन्नति, धन का लाभ, उपक्रमों के सफलता, संतान का जन्म, और सामान्य समृद्धि।

**शुक्र :**

इच्छाओं की पूर्ति, इन्द्रिय सुख की प्राप्ति, धन–संपदा व शिक्षा की प्राप्ति, शत्रुओं पर विजय। लेकिन शारीरिक सुख के प्रति अत्यधिक लालसा होने के कारण मानसिक व्यग्रता, जल से भय और वातमय विकार।

**शनि :**

तुच्छ व निम्न स्तर के लोगों के साथ संगति, स्वार्थी, तानाशाही, गरीबी, वियोग, यौन विकृति, शारीरिक रोग, सर्दी व जुकाम के साथ–साथ वातमय विकार।

**राहु :**

गंभीर बीमारी/आशंका, मान–प्रतिष्ठा/धन की हानि, विदेशी स्रोतों से कठिनाईयां, उदासीन मन, डरपोक स्वभाव तथा अनेक प्रकार की कठिनाइयों से पीड़ित।

**केतु :**

अस्वस्थता, कमजोर पाचनशक्ति, अस्थिरता, आत्मिक व घुमन्तु प्रकृति, निराशा, चिन्तायें और दुख।

**Varhphal Years: 74 (2019-2020)  Varhphal Date: 22:12:2019, Time: 11:11Hrs**

| मुद्दा योगिनी दशा | | | मुद्दा षोडशोत्तरी दशा | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दशा | अवधि | से | दशा | अवधि | से |
| भ्रमरि (मंगल) | 0.0 y.1.0 m.10 d. | 21:12:2019 | केतु | 0.0 y.1.0 m.17 d. | 21:12:2019 |
| भभद्रिका (बुध) | 0.0 y.1.0 m.21 d. | 31:01:2020 | चंद्र | 0.0 y.1.0 m.20 d. | 06:02:2020 |
| उल्का (शनि) | 0.0 y.2.0 m.0 d. | 21:03:2020 | बुध | 0.0 y.1.0 m.23 d. | 28:03:2020 |
| सिद्धा (शुक्र) | 0.0 y.2.0 m.11 d. | 21:05:2020 | शुक्र | 0.0 y.1.0 m.26 d. | 20:05:2020 |
| संकटा (शनि) | 0.0 y.2.0 m.20 d. | 01:08:2020 | रवि | 0.0 y.1.0 m.5 d. | 16:07:2020 |
| मंगला (चन्द्रमा) | 0.0 y.0.0 m.10 d. | 21:10:2020 | मंगल | 0.0 y.1.0 m.8 d. | 20:08:2020 |
| पिगंला (सूर्य) | 0.0 y.0.0 m.20 d. | 31:10:2020 | गुरु | 0.0 y.1.0 m.11 d. | 27:09:2020 |
| धान्य (वृहस्पति) | 0.0 y.1.0 m.0 d. | 20:11:2020 | रवि | 0.0 y.1.0 m.5 d. | 07:11:2020 |

## पत्ययनी दशा

| क्र0स0 | दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | रवि | 0.0 y.2.0 m.18 d. | 21:12:2019 |
| 2 | शुक्र | 0.0 y.1.0 m.1 d. | 08:03:2020 |
| 3 | गुरु | 0.0 y.0.0 m.27 d. | 08:04:2020 |
| 4 | चंद्र | 0.0 y.2.0 m.10 d. | 05:05:2020 |
| 5 | लग्न | 0.0 y.3.0 m.20 d. | 15:07:2020 |
| 6 | बुध | 0.0 y.0.0 m.13 d. | 03:11:2020 |
| 7 | शनि | 0.0 y.0.0 m.14 d. | 16:11:2020 |
| 8 | मंगल | 0.0 y.0.0 m.21 d. | 30:11:2020 |

## मुद्दा विंशोत्तरी दशा

| क्र0स0 | दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | केतु | 0.0 y.0.0 m.21 d. | 21:12:2019 |
| 2 | शुक्र | 0.0 y.2.0 m.0 d. | 11:01:2020 |
| 3 | रवि | 0.0 y.0.0 m.19 d. | 12:03:2020 |
| 4 | चंद्र | 0.0 y.1.0 m.0 d. | 31:03:2020 |
| 5 | मंगल | 0.0 y.0.0 m.21 d. | 30:04:2020 |
| 6 | राहू | 0.0 y.1.0 m.24 d. | 21:05:2020 |
| 7 | गुरु | 0.0 y.1.0 m.19 d. | 15:07:2020 |
| 8 | शनि | 0.0 y.1.0 m.27 d. | 02:09:2020 |
| 9 | बुध | 0.0 y.1.0 m.21 d. | 30:10:2020 |

## वर्ष जैमिनी चर दशा

| क्र0स0 | दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | कुंभ | 0.0 y.0.0 m.12 d. | 21:12:2019 |
| 2 | कर्क | 0.0 y.1.0 m.21 d. | 01:01:2020 |
| 3 | धनु | 0.0 y.2.0 m.8 d. | 22:02:2020 |
| 4 | वृष | 0.0 y.1.0 m.15 d. | 01:05:2020 |
| 5 | तुला | 0.0 y.0.0 m.17 d. | 15:06:2020 |
| 6 | मीन | 0.0 y.0.0 m.17 d. | 02:07:2020 |
| 7 | सिंह | 0.0 y.1.0 m.15 d. | 20:07:2020 |
| 8 | मकर | 0.0 y.0.0 m.6 d. | 03:09:2020 |
| 9 | मिथुन | 0.0 y.0.0 m.29 d. | 09:09:2020 |
| 10 | वृश्चिक | 0.0 y.0.0 m.6 d. | 08:10:2020 |
| 11 | मेष | 0.0 y.1.0 m.27 d. | 13:10:2020 |
| 12 | कन्या | 0.0 y.0.0 m.12 d. | 10:12:2020 |

# वर्षफल कुण्डली से महत्वपूर्ण भविष्यफल

**Varhphal Years: 74 (2019-2020) Varhphal Date: 22:12:2019, Time: 11:11Hrs**

## (अष्टक चक्र, ढुढिंराजा पद्धति, वर्षेश्वर और मुन्था)

आपकी वर्षफल कुण्डली में, पूर्व भाग में शेष बचता है, जबकि उत्तर भाग में कोई शेष नहीं बचता है, अतः आपका आगामी समय प्रयासपूर्ण हो सकता है– विशेषकर वर्ष के उत्तरार्द्ध में। यदि आपकी कुण्डली में संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आप धन के अवरूद्ध हो जाने के कारण अथवा हानि होने के कारण असुविधाओं का सामना कर सकते हैं।

आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्तमान वर्ष के लिए अष्टक चक्र सूचकांक ग्रह मंगल है। यह ग्रह पांचवें भाव में स्थित है। यदि आपकी वर्तमान आयु के लिए प्रासंगिक है तो इस वर्ष के दौरान आप किसी महाविद्यालय/पॉलिटेक्निक/संस्थान से एक शैक्षिक योग्यता (डिग्री या डिप्लोमा) प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्तमान वर्ष के लिए अष्टक चक्र सूचकांक ग्रह मंगल है। यह ग्रह नवमेश है, जो कि पांचवें भाव में स्थित है। यदि आपकी वर्तमान आयु के लिए प्रासंगिक है तो इस वर्ष के दौरान आप किसी विश्वविद्यालय/प्रतिष्ठित संस्थान से (संभवतः एक व्यवहार परक विषय में )उच्च शिक्षा या व्यावसायिक शैक्षिक योग्यता प्राप्त कर सकते हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, बृहस्पति वर्षेश्वर ग्रह है।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, जन्मकुण्डली का लग्नेश वर्षेश्वर है, जबकि यह ग्रह किसी त्रिक–भाव अर्थात छठें/आठवें/बारहवें में स्थित नहीं है। अतः यह एक अनुकूल योग है और आप कई मामलों में उल्लेखनीय रूप से भाग्यशाली होंगे। इस वर्ष के दौरान आपको कुछ विशेष उपलब्धियां प्राप्त हो सकती हैं। या फिर अथवा साथ ही, आपके परिवार में कुछ शुभ समारोह आयोजित हो सकते हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्षेश्वर एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है। परिणामस्वरूप आप भाग्यशाली होंगे। इस वर्ष के दौरान होने वाली घटनाएं बहुत सहज व सरल होंगी तथा आपको किसी अशुभ घटना अथवा अपने सामान्य मामलों में किसी आकस्मिक उतार–चढ़ाव का सामना नहीं करना पड़ेगा।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्षेश्वर वृहस्पति है। आपकी सम्पन्नता के सूर्य का उदय होगा और किस्मत आप पर अपने वरदानों की बौछार प्रचूर व पर्याप्त मात्रा में करेगी। आपको अधिकारियों से लाभ व सम्मान प्राप्त होगा– इनमें से कुछ के साथ आप सौहार्दपूर्ण संबंध अथवा घनिष्ठ मित्रता स्थापित कर सकते हैं। आपका घरेलू जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण होगा तथा धार्मिक रूझान गहन होगा। विवाह अथवा संतान के जन्म से आपके

परिवार में एक और सदस्य की वृद्धि हो सकती है। पवित्र धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन में आपकी रूचि में वृद्धि हो सकती है तथा आप धर्मार्थ गतिविधियों और मानवीय कर्मों में सक्रियता से भाग ले सकते हैं, जिसके लिए आपकी प्रशंसा हो सकती है।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था चौथे भाव में है। अतः यह काफी प्रतिकूल स्थिति है। आपका आगामी समय कष्टमय हो सकता है। इसलिए आपको सोच–समझ कर धैर्यपूर्वक रहना चाहिए और इस कष्टकारी तुफान को गुजर जाने देना चाहिए। आप स्वस्थ्य नहीं रह सकते हैं एवं आपकी माता का गिरता स्वास्थ्य आपके लिए कुछ चिन्ता का कारण बन सकता है। आपके कार्यस्थल की घटनाएं आपको चिन्तित कर सकती है एवं आपको अपना पद और/स्तर खोने का भय हो सकता है। इसके अतिरिक्त रिश्तेदारों, मित्रों या सहयोगियों के साथ विवादों में वृद्धि होने के कारण आप बहुत व्यथित महसूस कर सकते हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था–राशि शुक्र की राशि में स्थित है। आगामी वर्ष आपके लिए अनुकूल है। आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे एवं अधिकारियों व कुलीन पृष्ठभूमि की कुछ महिलाओं से भी से समर्थन व लाभ प्राप्त करेंगे। आपके व्यवसाय में प्रगति होगी एवं पद व प्रतिष्ठा वाले लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। यदि आप कलात्मक कार्यों में संलग्न हैं तो सार्थक प्रगति करेंगे। आपका विपरीत लिंग के लोगों के साथ अधिक आत्मीय संबंध होंगे एवं आपकी सामाजिक लोकप्रियता में वृद्धि होगी।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था–राशि का स्वामी वर्ष–लग्न से बारहवें भाव में स्थित है एवं यह ग्रह उच्चस्थ अथवा अपनी राशि या अपने नक्षत्र में नहीं है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। इस वर्ष के दौरान आप बीमारी से पीड़ित हो सकते हैं, भारी व व्यर्थ के खर्चे हो सकते हैं, आपको हानि होने का भी खतरा हो सकता है। व्यवसाय के क्षेत्र में आप अस्थाई आघात का सामना कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आपकी विश्वसनीयता व सम्मान भी कुछ अजीब कारणों से दांव पर लग सकते हैं।

# वर्षफल सहम से भविष्यफल

**Varhphal Years: 74 (2019-2020) Varhphal Date: 22:12:2019, Time: 11:11Hrs**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, प्रदर–सहम एकादशेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा एकादशेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 22:08:2020 और 22:04:2020 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ यादगार घटनाएं (इस विशेष सहम से संबंधित) हो सकती हैं।

# वर्षफल

**Varhphal Years: 74 (2019-2020) Varhphal Date: 22:12:2019, Time: 11:11Hrs**

## वर्षेश और अन्य कारकों का फल

आपका वर्षेश गुरु इस वर्ष मध्यम बली है। अतः यह वर्ष आपके लिए अल्प मात्रा में शुभ फल प्रदान करेगा। इस वर्ष आपका स्थानान्तरण हो सकता है। आपके मान–सम्मान में कमी आ सकती है। शारीरिक रूप से आप कमजोर व अस्वस्थ्य हो सकते हैं। आपकी रूचि किसी वैज्ञानिक विषय में होगी एवं आपके ज्ञान में वृद्धि होगी। आपका अपने सगे–संबंधियों या अन्य लोगों से विवाद हो सकता है। आपके शत्रुओं में वृद्धि हो सकती है एवं कुछ नए शत्रु भी बन सकते हैं। व्यर्थ के व्यय से धन हानि की भी संभावनाएं हैं।

इस वर्ष आपके वर्षेश गुरु की सूर्य के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि पड़ रही है। इस वर्ष आपको पूर्व दिशा की यात्रा से हानि होने की संभावना है। आपके घर–परिवार का वातावरण क्लेशपूर्ण हो सकता है। लाभ की मात्रा में कमी होने के योग हैं एवं धन हानि व व्यर्थ के व्यय अधिक हो सकते हैं। आपको अपने शत्रुओं से सावधान रहना चाहिए, क्योंकि वे आपका अहित करने का प्रयास कर सकते हैं। आप किसी तीर्थ यात्रा पर भी जा सकते हैं। आपका अपने मित्रों के साथ उत्तम संबंध रहेंगे। राजनीति के क्षेत्र में आप बहुत ख्याति अर्जित करेंगे। आपके तेज में वृद्धि होने से आपके कार्य साहस के साथ सम्पादित होंगे। आप सिर दर्द, नेत्र संबंधी विकार, ज्वर आदि से पीड़ित रह सकते हैं। आपको चोर, लुटेरों, ठगों आदि से सावधान रहना चाहिए।

इस वर्ष आपके वर्षेश गुरु की शनि के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः यह वर्ष आपके लिए प्रतिकूल साबित हो सकता है। आप वात विकार, फोड़े–फुन्सी, घाव आदि से पीड़ित हो सकते हैं। आपको दुर्व्यसनों से बचने का प्रयास करना चाहिए, क्योंकि इनसे आपको हानि होगी। इस वर्ष आपको कलंकित करने का प्रयास किया जा सकता है, जिससे आपके मान–सम्मान को हानि पहुंच सकती है। आपको अपना स्थान भी परिवर्तित करना पड़ सकता है। नीच या दुष्ट प्रकृति के व्यक्तियों से दूर रहना चाहिए, क्योंकि ऐसे व्यक्तियों से हानि के योग हैं। आपके लिए पश्चिम दिशा की ओर यात्रा करना चिंताजनक हो सकता है। चौपायों आदि से दुर्घटना आदि का खतरा हो सकता है। आप काले रंग की वस्तुओं का व्यापार करके लाभ कमा सकते हैं। अपने मित्रों के साथ आपके संबंध अच्छे रहेंगे।

इस वर्ष आपके वर्षेश गुरु की राहु के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः यह वर्ष आपके लिए प्रतिकूल रहेगा। आपके जीवनसाथी को तपेदिक आदि जैसी दीर्घकालिक रोग से ग्रसित होने की संभावना है। आपके मित्रों, परिचितों के द्वारा भी कोई परेशानी हो सकती है। आपके कार्यक्षेत्र में पदावनति होने के आसार हैं। आप किसी फौजदारी मामले के कारण बंधन की स्थिति का सामना कर सकते हैं। दक्षिण दिशा की यात्रा आपके लिए चिंताजनक हो सकती है। किसी सज्जन व प्रिय से वियोग होने के कारण आप बहुत व्यथित हो सकते हैं।

इस वर्ष आपके वर्षेश गुरु की केतु के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः यह वर्ष आपके लिए प्रतिकूल रहेगा। इस वर्ष आप किसी बड़ी बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं। विवेक की क्षीणता से आपकी अज्ञानता में वृद्धि हो सकती है। आपको अपनी संतान या सगे संबंधियों के कारण स्थान का परित्याग करना पड़ सकता है। आपकी रूचि भ्रमण की ओर जागृत हो सकती है। आप अगम्य या दुर्गम स्थानों पर जा सकते हैं, जहां आपकी इच्छा अखाद्य वस्तुओं के भक्षण करने की भी हो सकती है, किन्तु आपको ऐसी इच्छाओं का परित्याग करना चाहिए। आपको नीच या दुष्ट प्रकृति के लोगों की संगति के कारण चिन्ताजनक एवं अपमानजनक स्थिति का सामना करना पड़ सकता है।

इस वर्ष आपकी वर्षफल कुण्डली में वर्षेश ग्यारहवें भाव में उपस्थित है। अतः यह वर्ष आपके लिए सुख–समृद्धि लाएगा। आपके शारीरिक सौन्दर्य में वृद्धि होने के साथ–साथ आपमें अनेक सद्‌गुणों का समावेश होगा। आपके मन से लोभ की भावना का ह्रास होगा एवं विचारशीलता के गुणों में वृद्धि होगी। आपको वाहन का सुख प्राप्त होने की काफी संभावना है। इसके अतिरिक्त आपको पर्याप्त मात्रा में धन–सम्पदा की प्राप्ति होगी एवं आप सुन्दर व मुल्यवान वस्त्र व आभूषण आदि भी प्राप्त करेंगे।

## जन्म लग्न का फल

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न की राशि आपकी वर्षकुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है। अतः इस वर्ष आपको धन संपत्ति की प्राप्ति होगी तथा धनोपार्जन के उत्तम स्रोत भी प्राप्त होंगे। किन्तु आपको सावधान रहना चाहिए, जैसाकि इस वर्ष आप रोगादि से पीड़ित हो सकते हैं एवं दुर्घटना का सामना भी कर सकते हैं।

## वर्षफल के योग

आपकी वर्षकुण्डली में, छठे, नौवें, ग्यारहवें और बारहवें भाव में पाप ग्रह स्थित हैं अथवा बारहवें भाव से केन्द्र में जन्मलग्नपति और वर्षेश्वर स्थित हैं। अतः यह एक अत्यंत अनुकूल योग है, जिसे तेगी योग कहा जाता है। इस योग के कारण, इस वर्ष आपको सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति होगी, आपके शत्रुओं का विनाश होगा तथा राज्य से मान–सम्मान की प्राप्ति भी हो सकती है।

## कुण्डली के भावों का उनके कारकत्व के अनुसार विश्लेषण

### लग्न भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश पांचवें भाव में स्थित है। यह वर्ष आपके लिए अनुकूल है। इस वर्ष आपको अनेक प्रकार के लाभ की प्राप्ति होगी। आपको अपने पिता से सहयोग मिलेगा तथा उनसे संबंधित लाभ होगा। आपको संपत्ति का लाभ भी प्राप्त होने के योग हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, जन्मराशि का स्वामी शक्तिशाली स्थिति में है। यह आपके लिए भाग्यवर्द्धक साबित होगा।

**द्वितीय भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, द्वितीयेश ग्यारहवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आप अनाज, फल, आदि के व्यापार से अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त भी आपको धनोपार्जन के अनेक साधन प्राप्त हो सकते हैं।

**तृतीय भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, तृतीयेश नौवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको अपने जीवनसाथी का सुख प्राप्त होगा एवं आप उनके साथ सुखद समय का आनन्द लेंगे। आपकी रूचि धार्मिक कार्यों के साथ–साथ तीर्थयात्रा करने में भी रहेगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, सूर्य अशुभ ग्रहों के साथ स्थित है अथवा उस पर पापी ग्रहों की दृष्टि पड़ रही है। आपका अपने भाइयों से क्लेश हो सकता है एवं आपके भाई आपको धोखा दे सकते हैं।

**चतुर्थ भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, चतुर्थेश बारहवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपके घरेलू खर्चों में वृद्धि हो सकती है। साथ ही आपकी भूमि, खेत आदि में वृद्धि होगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, मातृ सहम का स्वामी अस्त है। इस वर्ष आपके माता–पिता में अलगाव या मनमुटाव हो सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, शनि की सूर्य के साथ युति है। इस वर्ष आपको अपने पिता के हाथों अपमान व विरोध का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में शनि सूर्य की जन्मराशि में स्थित है। इस वर्ष आपका अपने पिता के साथ मनमुटाव व विवाद हो सकता है।

**पंचम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, राहु पांचवें भाव में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए अनुकूल नहीं हो सकता है। यदि आप विद्यार्थी हैं, तो आपको इस वर्ष शिक्षा के क्षेत्र में बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है एवं आपका मन आशंकित रह सकता है। आपकी बौद्धिक क्षमता मन्द हो सकती है, तथा आपको उचित निर्णय लेने में कठिनाई हो सकती है। इस वर्ष आपकी संतान संबंधी कार्यों में अवरोध एवं परेशानियां आ सकती हैं। आपका

किसी निम्न स्तर के व्यक्ति के साथ वाद–विवाद या झगड़ा हो सकता है, इसलिए आपको सावधान रहना चाहिए। इस वर्ष आपके आर्थिक लाभ में भी बाधाएं व समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, पंचमेश दसवें भाव में स्थित है। यह वर्ष आपकी संतान की सुख–सुविधा के लिए प्रतिकूल साबित हो सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति और शुक्र में से कोई एक वर्षेश होकर पाँचवें या ग्यारहवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको पुत्र की प्राप्ति होगी। (अगर आप उम्र के उस दौर में हैं तो अन्यथा आपको अपने पुत्र अथवा पुत्री के किसी कार्य से सम्मान मिलेगा)

आपकी वर्षकुण्डली में, बृहस्पति वर्षेश होकर पाँचवें या ग्यारहवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको पुत्र संतान की प्राप्ति होगी एवं संतानों से सुख मिलेगा। (अगर आप उम्र के उस दौर में हैं तो अन्यथा आपको अपने पुत्र अथवा पुत्री के किसी कार्य से सम्मान मिलेगा)

**षष्टम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, षष्ठेश नौवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको अपने शत्रुओं से संबंधित मामले में यात्रा करनी पड़ सकती है।

**सप्तम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, सप्तमेश ग्यारहवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपका अपने जीवनसाथी से अच्छे संबंध रहेंगे, और आपको उनसे सुख की प्राप्ति होगी। आपको धनोपार्जन के साधनों की भी प्राप्ति होगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश और सप्तमेश की युति है। यदि आप विवाह योग्य हैं और अविवाहित हैं, तो इस वर्ष आपका विवाह हो सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश और सप्तमेश परस्पर शत्रु हैं। इस वर्ष लड़ाई–झगड़े होने की संभावना बनी रह सकती है।

**अष्टम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, अष्टमेश दसवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको सावधान व सतर्क रहना चाहिए, क्योंकि आपको किसी प्रकार के आघात का सामना करना पड़ सकता है। इसके अतिरिक्त आपके कार्यों में बाधायें उत्पन्न हो सकती हैं।

## नवम् भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में चंद्रमा नौवें भाव में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए अनुकूल फलदायक रहेगा। इस वर्ष आपका बौद्धिक विकास होगा, धन–संपत्ति की वृद्धि के अवसर बनेंगे। धर्म के प्रति आस्था में वृद्धि होगी तथा धार्मिक क्रियाओं में भाग लेंगे। आपको अपने व्यवसाय एवं कार्यक्षेत्र से लाभ प्राप्त होंगे। आप अच्छे एवं योग्य कार्यों में संलग्न रहेंगे, आपकी वांछित इच्छायें पूर्ण होंगी तथा धन–धान्य व मान–सम्मान में भी वृद्धि होगी। आपको अपनी यात्राओं से लाभ प्राप्त होगा। आपके घर–परिवार का वातावरण सुखमय एवं शांतिपूर्ण रहेगा।आपकी वर्षकुण्डली में मंगल नौवें भाव में स्थित है। अतः इस वर्ष आपके धन लाभ में कमी आ सकती है। आपमें बौद्धिक विकार उत्पन्न हो सकते हैं एवं आपका मन अनैतिक कार्यों की तरफ आकर्षित हो सकता है। आपका मन बेचैन रह सकता है तथा आपका अपने मित्रों एवं स्वजनों से विवाद या वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। आपके वैभव व प्रतिष्ठा में कमी आने से आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है एवं आपके आन्तरिक स्वास्थ्य के साथ–साथ आपके बाह्य स्वरूप को भी प्रभावित कर सकती है। आपको ऐसी विपरीत परिस्थितियों में धैर्य से काम लेना चाहिए एवं इस बुरे समय को व्यतीत हो जाने देना चाहिए।

आपकी वर्षकुण्डली में, नवमेश बारहवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आप अस्वस्थ एवं व्याकुल रह सकते हैं। आपको दण्ड आदि के द्वारा कष्ट संभव है। आपके खर्चों में वृद्धि हो सकती है।

आपकी वर्षकुण्डली में, चतुर्थेश और भाग्येश में युति अथवा दृष्टि संबंध है। इस वर्ष आपको जमीन–जायदाद आदि की प्राप्ति होने के प्रबल योग हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, मंगल नौवें भाव में बृहस्पति की जन्म राशि में स्थित है। इस वर्ष आपको यात्रा में अतिशय शारीरिक कष्ट हो सकता है।

## दशम् भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में बुध दसवें भाव में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए बहुत अनुकूल होगा। आप शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ्य एवं निरोग रहेंगे एवं आपकी कान्ति बढ़ेगी। इस वर्ष यदि आप प्रयत्न करेंगे, तो आपको भूमि–भवन की प्राप्ति अवश्य होगी। आपको अपने परिजनों से सुख, स्नेह, सम्मान एवं सहयोग प्राप्त होगा। आपके व्यापार–व्यवसाय में वृद्धि होगी एवं धनार्जन में भी पर्याप्त वृद्धि होगी। अपने उच्चाधिकारियों से भी आपका संबंध अच्छा रहेगा एवं उनसे आपको लाभ व सहयोग मिलेगा, जिससे आपकी उन्नति की संभावना भी बनेगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, दशमेश नौवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको प्रवास से धन की प्राप्ति होगी। आपके दूरस्थ स्थान या विदेश जाने की भी संभावना है। आपको यात्रा से लाभ होगा। आप धार्मिक कार्यों में संलग्न रहेंगे।

आपकी वर्षकुण्डली में, वर्षेश या लग्नेश उच्चस्थ, स्वगृही या मूल त्रिकोण राशि में स्थित है। इस वर्ष आपकी

उन्नति की संभावनायें प्रबल होंगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, राज्येश/दशमेश का चतुर्थेश से युति या दृष्टि संबंध है। इस वर्ष आपको जल मार्ग की यात्रा करनी पड़ सकती है।

आपकी वर्षकुण्डली में, दशमेश आठवें भाव में स्थित है या अष्टमेश दसवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको राजदण्ड का भय हो सकता है।

**एकादश भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली मे सूर्य ग्यारहवें भाव में स्थित है। इसलिए, इस वर्ष आपका भाग्य आपका साथ देगा एवं आपको अपने कार्यों में वांछित सफलता मिलेगी। आप शारीरिक रूप से स्वस्थ्य रहेंगे एवं पुराने रोगों से मुक्ति मिल सकती है। आपके पराक्रम में वृद्धि होगी एवं आपके शत्रुओं का नाश होगा। इस वर्ष वाहन का सुख भी प्राप्त हो सकता है। आप प्रसन्नचित एवं उत्साह से पूर्ण रहेंगे। अपने अधिकारियों से आपके संबंध अच्छे रहेंगे। आपको धन लाभ के स्रोत प्राप्त होंगे।आपकी वर्षकुण्डली में बृहस्पति ग्यारहवें भाव में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए बहुत शुभकारी होगा। इस वर्ष यदि परिस्थितियां अनुकूल हुईं, तो आपको संतान सुख की प्राप्ति होने की प्रबल संभावना है अर्थात आपको पुत्र संतान की प्राप्ति हो सकती है या संतान से संबंधित कोई शुभ कार्य हो सकता है, जिसकी खुशी आपके परिवार में धूम–धाम से मनायी जाएगी। आपका अपने भाइयों से अच्छे संबंध रहेंगे एवं भाइयों का सुख मिलेगा। इस वर्ष आपको वाहन का सुख प्राप्त हो सकता है। आपकी मान–प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपको धन–वैभव की प्राप्ति होगी। आपकी वर्षकुण्डली में, शनि ग्यारहवें भाव (लाभ–भाव) में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। इस वर्ष आप शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ्य एवं निरोग रहेंगे, किन्तु आपके बड़े भाई एवं परिजनों को शारीरिक कष्ट हो सकता है। आपके पराक्रम एवं यश में वृद्धि होगी तथा आपकी ख्याति चारो ओर फैलेगी। लोग आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे। इस वर्ष आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है। आपकी पदोन्नति होगी। आपको यात्राओं से भी लाभ प्राप्त होने के योग हैं। आपके धैर्य में वृद्धि होगी तथा आपके विरोधी परास्त होंगे। आपकी वर्षकुण्डली में, केतु ग्यारहवें भाव में स्थित है। अतः इस वर्ष आपको अपने जीवनसाथी का सुख प्राप्त होगा। आप नए व भव्य भवन का सुख भी प्राप्त कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आपको सुन्दर वस्त्र, आभूषण, वाहन आदि का सुख भी प्राप्त होने के योग हैं। आपकी यात्रा लाभप्रद रहेगी। व्यापार में आपको सफलता मिलेगी एवं आपकी आय में भी वृद्धि होगी। आपको मान–प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।हालांकि, इस वर्ष आप किसी को धोखा देकर या छल से लाभ प्राप्त करने का मन बना सकते हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, एकादशेश ग्यारहवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आप अपने जीवनसाथी के साथ सुखद व आनन्दमय समय व्यतीत करेंगे। आपके लाभार्जन में वृद्धि होगी। ज्ञानी व विद्वान लोगों के संपक्र में आ सकते हैं या उनसे मित्रवत संबंध स्थापित हो सकते हैं। आपका मन प्रसन्नचित्त रहेगा।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश और वर्षेश सातवें या ग्यारहवें भाव में स्थित हैं। इस वर्ष आप व्यापार, व्यवसाय

आदि से धनोपार्जन करेंगे।

आपकी वर्षकुण्डली में, ग्यारहवें भाव (लाभ भाव) में पाप ग्रह स्थित हैं। इस वर्ष आपको व्यापार में हानि हो सकती है।

**द्वादश भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, शुक्र बारहवें भाव में स्थित है। इसलिए, इस वर्ष आपका अपने स्वजनों से वाद–विवाद व मनमुटाव हो सकता है। आप अच्छे कार्यों में अपना धन व्यय कर सकते हैं। आपको यात्राएं करनी पड़ सकती हैं, इन यात्राओं से यद्यपि आपके कार्य सफल होंगे, किन्तु हानि एवं कष्ट की भी संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, द्वादशेश ग्यारहवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको अपने पितृ–पक्ष के लोगों जैसे चाचा, ताऊ आदि के द्वारा लाभ प्राप्त होने की संभावना रह सकती है। आपके व्यय में भी वृद्धि हो सकती है।

# पत्ययनी दशाफल

Varhphal Years: 74 (2019-2020) Varhphal Date: 22:12:2019, 11:11Hrs

## रवि दशा

21:12:2019-07:03:2020

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, सूर्य उपचय भाव (तीसरे या छठें या दसवें या ग्यारहवें) में स्थित है। यह नीचस्थ अथवा राहु (या केतु) के निकट स्थित नहीं है। यह एक अनुकूल योग है एवं सूर्य की दशा आपके लिए उपयोगी व लाभदायक साबित होगी। आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे एवं इस अवधि के दौरान कुछ विशेष उपलब्धि हासिल करेंगे। वरिष्ठ अधिकारी एवं सरकारी कर्मचारी आपके प्रति अनुकूल होंगे एवं आपको उनसे समर्थन व लाभ प्राप्त हो सकता है।

## शुक्र दशा

08:03:2020-07:04:2020

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, शुक्र उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते है। अतः शुक्र की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। सामान्यतः आपके सभी मामलें भली भांति चलेंगे। आपके पेशे के क्षेत्र में चीजें बहुत सहजतापूर्ण ढंग से होंगी। अपने सगे–संबंधियों व मित्रों की संगति में बिताने के लिए आप कुछ खाली समय निकालने में सक्षम होंगे। आपका घरेलू जीवन आनन्दपूर्ण व सुखमय होगा।

## गुरु दशा

08:04:2020-04:05:2020

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, गुरु उच्चस्थ या अपनी राशि में स्थित है, किन्तु यह अस्त अथवा ग्रसित होने के कारण दूषित है। अतः गुरु की दशा के दौरान आप कुछ मामूली समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपको अपने स्वास्थ्य का उचित ध्यान रखना चाहिए। या फिर आपकी एक संतान का बिगड़ता स्वास्थ्य आपको कुछ चिन्तित कर सकता है। यदि आप नौकरी में हैं तो आप अपने कार्यस्थल पर कुछ बाधाओं का सामना कर सकते हैं। यदि आप व्यापार में हैं तो परिस्थितियों में प्रतिकूल परिवर्तन के कारण आपको मंदी की अवस्था से गुजरना पड़ सकता हैं, जिससे आप कुछ–कुछ चिन्तित रह सकते हैं।

## चंद्र दशा

05:05:2020-14:07:2020

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, सूर्य उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त भी नहीं है। अतः चंद्रमा की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/समारोह के होगी। हालांकि आप अपने घरेलू क्षेत्र में कुछ समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपके कुछ पारिवारिक–सदस्य क्रोधपूर्ण ढंग से बात व व्यवहार कर सकते हैं, जिसके कारण आप काफी चिड़चिड़े व अप्रसन्न हो सकते हैं।

## लग्न दशा

**15:07:2020-02:11:2020**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, लग्नेश उच्चस्थ अथवा अपनी राशि में अथवा नीचस्थ नहीं है। किन्तु यह वक्री या अस्त या ग्रसित नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते हैं। अतः लग्न की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना या अवसर के होगी। हालांकि आपके कार्यस्थल की स्थिति कुछ हद तक बिगड़ सकती है। यद्यपि सामान्य लोग आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे, फिर भी आपके वरिष्ठ/अधिकारी आपको दबाने का प्रयास कर सकते हैं एवं तक्रसंगत रूप से आपको मिलने वाला श्रेय किसी और को दे सकते हैं। या फिर आपको अन्यायपूर्वक बहुत छोटी अथवा बिना किसी गलती के दोषी ठहराया जा सकता है।

## बुध दशा

**03:11:2020-15:11:2020**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, बुध नीचस्थ है या अस्त अथवा ग्रसित होने के कारण दूषित है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। बुध की दशा आपके लिए अच्छी अवधि नहीं हो सकती है। अतः आपको सावधान व सचेत रहना चाहिए एवं अपने स्वास्थ्य का उचित ध्यान रखना चाहिए। आप कफमय एवं वातमय रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। इस अवधि के दौरान किसी भी महत्वपूर्ण कार्य की शुरूआत अथवा किसी लम्बी यात्रा के लिए प्रस्थान करना अधिक फलदायक नहीं हो सकता है। आपके कार्यस्थल की स्थिति कुछ–कुछ बिगड़ सकती है एवं अपने किसी सहकर्मी से विवाद होने के कारण आप चिड़चिड़े हो सकते हैं।

## शनि दशा

**16:11:2020-29:11:2020**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, शनि उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते है। अतः शनि की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। सामान्यतः आपके सभी मामलें भली भांति चलेंगे। आपके पेशे के क्षेत्र में चीजें बहुत सहजतापूर्ण ढंग से होंगी। संभवतः आप उद्योगों या खानों के लोगों के साथ संबंध स्थापित कर सकते हैं। आपका घरेलू जीवन आनन्दपूर्ण व सुखमय होगा।

## मंगल दशा

**30:11:2020-20:12:2020**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मंगल उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते है। अतः मंगल की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। हालांकि आपको अपने कार्यस्थल पर कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। या फिर आप अपने सगे या चचेरे भाई या पड़ोसी के साथ संपत्ति–विवाद में फंस सकते हैं, जिसके कारण आप झुंझलाहट महसूस कर सकते हैं।

# ज्योतिष सारिणी

| | SAMPLE | ज्योतिष सारिणी |
|---|---|---|
| जन्म दिनाकं | 21:12:1945 | 21:12:2020 |
| दिन | शुक्रवार | सोमवार |
| ज्योतिषिय वार | शुक्रवार | सोमवार |
| जन्म समय | 11:34:00 | 17:14:25 |
| जन्म स्थान | ranchi | ranchi |
| अक्षांश | 023:20:00N | 023:20:00N |
| रेखांश | 085:19:00E | 085:19:00E |
| यु./ग्रीष्म समय संस्कार | -00:00 | -00:00 |
| जी. एम. टी. समय | 006:03:00 | 011:44:25 |
| स्थानीय समय संस्कार | 000:11:15 hrs | 000:11:16 hrs |
| स्थानीय समय | 011:45:15 hrs | 017:25:41 hrs |
| सांपातिक काल | 017:43:03 hrs | 023:27:42 hrs |
| सूर्योदय | 06:28:24AM | 06:28:37AM |
| सूर्यास्त | 05:04:58PM | 05:05:12PM |

| | | |
|---|---|---|
| लग्न | मीन | मिथुन |
| लग्नाधिपति | गुरु | बुध |
| राशि (चन्द्रमा) | कर्क | मीन |
| राशिपति | चंद्र | गुरु |
| नक्षत्र | पुष्य | पूर्वाभाद्र |
| नक्षत्रपति | शनि | गुरु |
| नक्षत्र चरण | 1 | 4 |
| पाया | रजत | ताम्र |
| ऋतु | हेमन्त | हेमन्त |
| मास | पौष कृष्ण | अग्रहन शुक्ल |
| पक्ष | कृष्ण | शुक्ल |
| तिथि | तृतीया | अष्टमी |
| तिथि श्रेणी | जया | जया |
| तिथि पति | मंगल | राहू |
| करण | वनिज | विष्टी |
| करण श्रेणी | चर | चर |
| करणपति | मनिभद्र | यम |
| सूर्य सिद्धान्त योग | इन्द्रय | ब्यतिपात |
| तत्व | जल | आकाश |
| तत्वाधिपति | शुक्र | गुरु |
| विहग | पिंगला | मयुर |
| वेध | पूर्वाशाढ़ | उत्तरफाल्गुनी |

# ग्रह स्थिती वर्षफल

**Varhphal Years: 75 (2020-2021) Varhphal Date: 21:12:2020, Time: 17:14Hrs**

| ग्रह | राशि | अंश | नक्षत्र | विशेष |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | मीन | 01:13 | पूर्वाभाद(4) | |
| सूर्य(ग्र.) | धनु | 05:55 | मूला (2) | **मित्र राशि** |
| चन्द्रमा | कर्क | 04:53 | पुष्य (1) | **स्व राशि** |
| मंगल(व.) | कर्क | 08:17 | पुष्य (2) | **नीच राशि** |
| बुध | वृश्चिक | 14:56 | अनुराधा (4) | **सम राशि** |
| बृहस्पति | तुला | 00:18 | चित्रा (3) | **शत्रु राशि** |
| शुक्र | वृश्चिक | 25:47 | ज्येष्ठा (3) | **सम राशि** |
| शनि(व.) | कर्क | 00:04 | पुनर्वसु (4) | **शत्रु राशि** |
| राहु(व.) | मिथुन | 06:56 | अरिद्रा (1) | **मित्र राशि** |
| केतु(व.) | धनु | 06:56 | मूला (3) | **स्व नक्षत्र** |
| हर्षल(व.) | वृष | 21:45 | रोहिणी (4) | ..... |
| नेपच्यून | कन्या | 15:24 | हस्ता (2) | ..... |
| प्लूटो(व.) | कर्क | 18:23 | अश्लेषा (1) | ..... |

| ग्रह | राशि | अंश | नक्षत्र | विशेष |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | मिथुन | 08:19 | पूर्वाभाद(1) | |
| सूर्य | धनु | 05:55 | मूला (2) | मित्र राशि |
| चन्द्रमा | मीन | 00:23 | पूर्वाभाद (4) | सम राशि |
| मंगल | मीन | 28:57 | रेवती (4) | मित्र राशि |
| बुध(अ.) | धनु | 06:41 | मूला (3) | सम राशि |
| बृहस्पति | मकर | 06:16 | उत्तरा (3) | नीच राशि |
| शुक्र | वृश्चि | 13:06 | अनुराधा (3) | सम राशि |
| शनि | मकर | 06:18 | उत्तरा (3) | स्व राशि |
| राहु(व.) | वृष | 25:16 | मृगशिर (1) | उच्च राशि |
| केतु(व.) | वृश्चि | 25:16 | ज्येष्ठा (3) | उच्च राशि |
| हर्षल(व.) | मेष | 12:49 | अश्विनी (4) | .... |
| नेपच्यून | कुंभ | 24:09 | पूर्वाभाद (2) | .... |
| प्लूटो | धनु | 29:42 | उत्तरा (1) | .... |

## लग्न कुण्डली

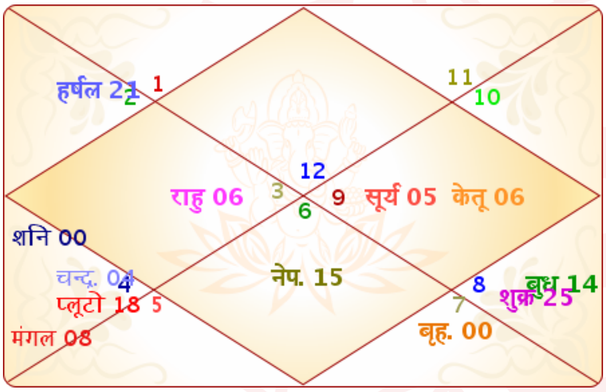


## चन्द्र कुण्डली

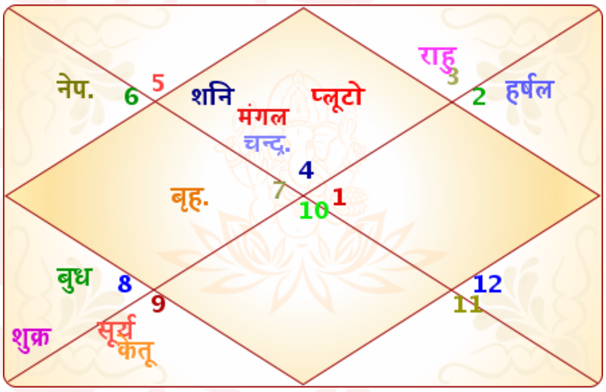


## लग्न कुण्डली ( वर्षफल )

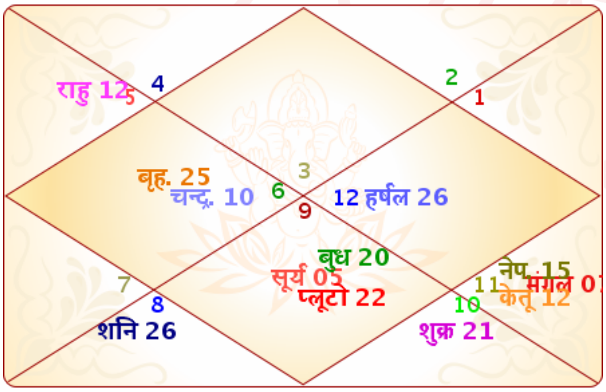


## चन्द्र कुण्डली ( वर्षफल )

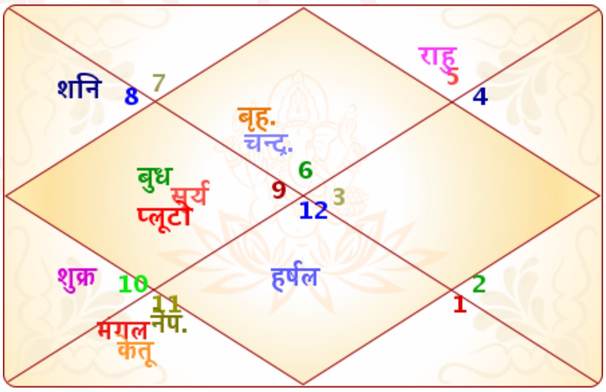

# द्वादश वर्ग कुण्डली

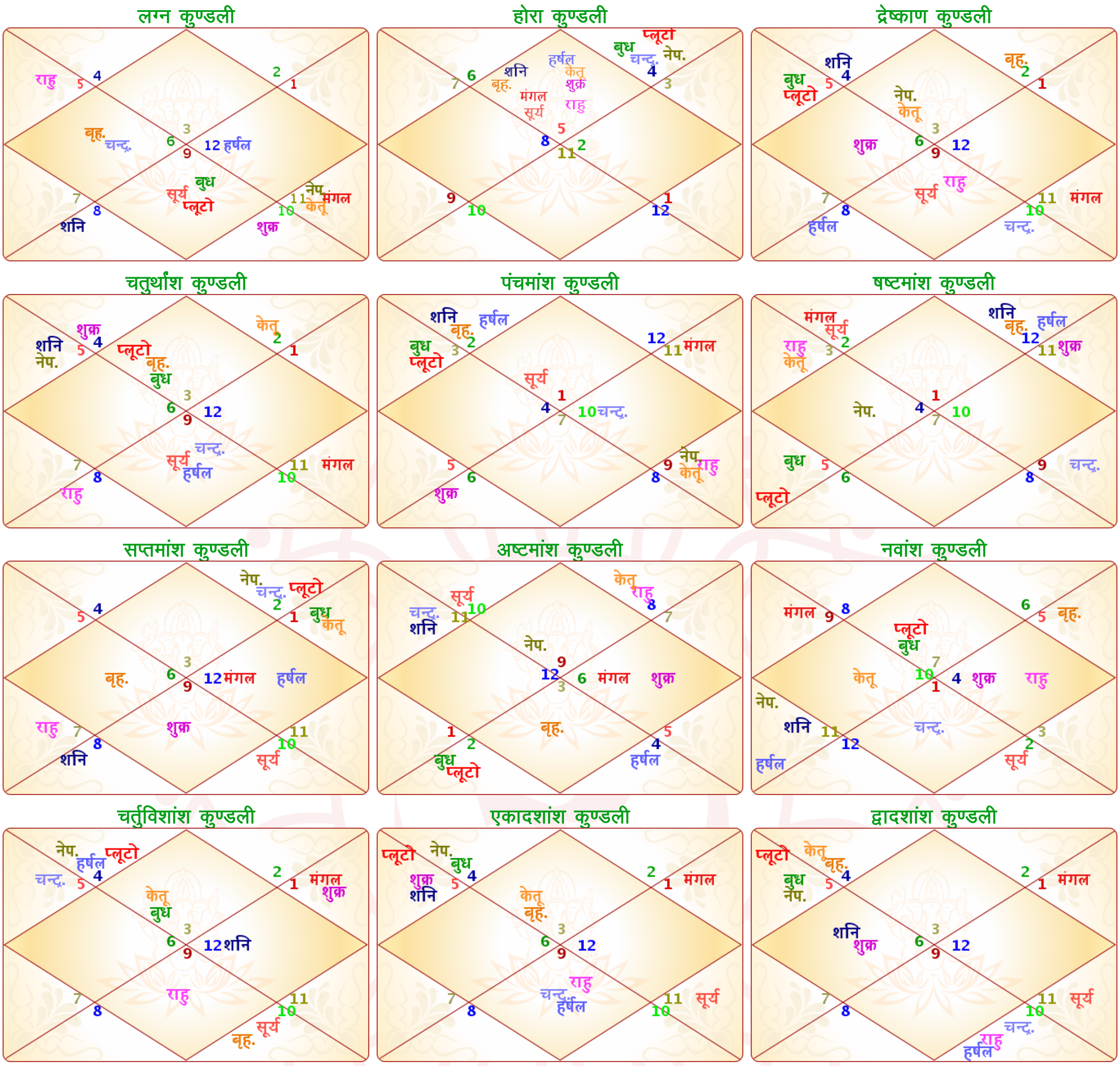


## वर्षफल कुण्डली में ग्रहों की दृष्टि

| | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहू | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रवि | .... | गु.शत्रु | गु.शत्रु | प्र.शत्रु | सम | सम | सम | सम | सम |
| चंद्र | गु.शत्रु | .... | प्र.शत्रु | गु.शत्रु | गु.प्रेम | प्र.प्रेम | गु.प्रेम | गु.प्रेम | प्र.प्रेम |
| मंगळ | गु.शत्रु | प्र.शत्रु | .... | गु.शत्रु | गु.प्रेम | प्र.प्रेम | गु.प्रेम | गु.प्रेम | प्र.प्रेम |
| बुध | प्र.शत्रु | गु.शत्रु | गु.शत्रु | .... | सम | सम | सम | सम | सम |
| गुरु | सम | गु.प्रेम | गु.प्रेम | सम | .... | गु.प्रेम | प्र.शत्रु | प्र.प्रेम | गु.प्रेम |
| शुक्र | सम | प्र.प्रेम | प्र.प्रेम | सम | गु.प्रेम | .... | गु.प्रेम | प्र.शत्रु | प्र.शत्रु |
| शनि | सम | गु.प्रेम | गु.प्रेम | सम | प्र.शत्रु | गु.प्रेम | .... | प्र.प्रेम | गु.प्रेम |
| राहू | सम | गु.प्रेम | गु.प्रेम | सम | प्र.प्रेम | प्र.शत्रु | प्र.प्रेम | .... | प्र.शत्रु |
| केतु | सम | प्र.प्रेम | प्र.प्रेम | सम | गु.प्रेम | प्र.शत्रु | गु.प्रेम | प्र.शत्रु | .... |

प्र.प्रेमः–प्रकट प्रेम दृष्टि ,गु.प्रेमः–गुप्त प्रेम दृष्टि ,प्र.शत्रुः–प्रकट शत्रु दृष्टि ,गु.शत्रुः–गुप्त शत्रु दृष्टि ,समः–सम दृष्टि ,

# वर्षफल कुण्डली में ग्रहों का बल

Varhphal Years: 75 (2020-2021) Varhphal Date: 21:12:2020, Time: 17:14Hrs

## पंचवर्गीय बल

| क्र0स0 | बल | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | क्षेत्र बल | 15.0 | 22.5 | 22.5 | 15.0 | 7.5 | 22.5 | 30.0 |
| 2 | उच्च बल | 6.21 | 13.04 | 13.23 | 10.92 | 0.14 | 5.12 | 11.52 |
| 3 | हद्दा बल | 7.5 | 11.25 | 11.25 | 7.5 | 7.5 | 7.5 | 7.5 |
| 4 | द्रेक्कन बल | 2.5 | 7.5 | 10.0 | 10.0 | 10.0 | 5.0 | 2.5 |
| 5 | नवांश बल | 2.5 | 5.0 | 3.75 | 5.0 | 1.25 | 5.0 | 5.0 |
| | योग | 8.43 | 14.82 | 15.18 | 12.11 | 6.6 | 11.28 | 14.13 |
| | तुलनात्मक बल | साधारण | बलशाली | पूर्णबली | बलशाली | साधारण | बलशाली | बलशाली |

## द्वादश वर्गीय बल

| क्र0स0 | बल | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | राशि बल | 0 | -1 | -1 | 0 | 0 | -1 | +2 |
| 2 | होरा बल | +2 | +2 | 0 | 0 | -1 | -1 | -1 |
| 3 | द्रेक्कन बल | 0 | -1 | +2 | 0 | 0 | -1 | +2 |
| 4 | चतुर्थांश बल | 0 | -1 | -1 | 0 | 0 | -1 | +2 |
| 5 | पंचमाशं बल | 0 | 0 | -1 | 0 | 0 | -1 | +2 |
| 6 | षष्टाशं बल | 0 | -1 | -1 | 0 | -1 | -1 | -1 |
| 7 | सप्तमाशं बल | 0 | 0 | -1 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| 8 | अष्टमाशं बल | 0 | -1 | 0 | 0 | -1 | -1 | -1 |
| 9 | नवाशं बल | 0 | +2 | -1 | +2 | 0 | +2 | +2 |
| 10 | दसाशं बल | 0 | 0 | 0 | 0 | -1 | -1 | -1 |
| 11 | एकादसाशं बल | 0 | -1 | -1 | 0 | +2 | -1 | 0 |
| 12 | द्ववादशाशं बल | 0 | -1 | -1 | 0 | +2 | -1 | 0 |
| | योग | +2 | -3 | -6 | +2 | 0 | -8 | +6 |
| | तुलनात्मक बल | साधारण | बुरा | बहुत बुरा | साधारण | सम | निकृष्ट | बहुत अच्छा |

## हर्ष बल

| क्र0स0 | बल | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | स्थान बल | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 |
| 2 | क्षेत्र बल | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 5.0 |
| 3 | ओज–युग्म बल | 0.0 | 0.0 | 5.0 | 5.0 | 0.0 | 0.0 | 5.0 |
| 4 | दिवा–रात्रि बल | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 5.0 | 5.0 |
| | योग | 0 | 5 | 5 | 10 | 0 | 5 | 15 |
| | तुलनात्मक बल | निर्बबली | अल्पबली | अल्पबली | मध्यबली | निर्बबली | अल्पबली | पर्णबली |

# वर्षफल सहम

**Varhphal Years: 75 (2020-2021) Varhphal Date: 21:12:2020, Time: 17:14Hrs**

| क्र0स0 | सहम का नाम | राशि | अंश | सहम अधिपति | 11 भाव पति | 8 भाव पति |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | पुण्य सहम (भाग्य) | मीन | 013:51:38 | बृहस्पति | शनि | ... |
| 2 | विद्या सहम | तुला | 002:46:38 | शुक्र | सूर्य | ... |
| 3 | यश सहम | कन्या | 015:53:58 | बुध | चन्द्रमा | ... |
| 4 | मित्र सहम (मित्र) | कुम्भ | 020:41:36 | शनि | बृहस्पति | ... |
| 5 | महात्य सहम (महानता) | कक्र | 023:25:19 | चन्द्रमा | शुक्र | ... |
| 6 | आशा सहम (इच्छा) | तुला | 000:58:18 | शुक्र | सूर्य | ... |
| 7 | समर्थ सहम (पुरूषार्थ) | कुम्भ | 016:02:36 | शनि | बृहस्पति | ... |
| 8 | भ्रात्रि सहम (भाई) | मिथुन | 008:17:17 | बुध | मंगल | ... |
| 9 | गौरव सहम (सम्मान) | मीन | 000:00:55 | बृहस्पति | शनि | ... |
| 10 | पितृ सहम (पिता) | वृष | 007:56:05 | शुक्र | बृहस्पति | ... |
| 11 | राजा सहम (अधिकार) | वृष | 007:56:05 | शुक्र | बृहस्पति | ... |
| 12 | मात्रि सहम (माता) | कुम्भ | 021:01:48 | शनि | बृहस्पति | ... |
| 13 | अपत्य सहम (संतान) | कन्या | 002:25:27 | बुध | चन्द्रमा | ... |
| 14 | जीव सहम (जीवन) | मिथुन | 008:17:17 | बुध | मंगल | ... |
| 15 | कर्म सहम (कार्रवाई) | कुम्भ | 016:02:36 | शनि | बृहस्पति | ... |
| 16 | रोग सहम | कन्या | 016:15:10 | बुध | ... | मंगल |
| 17 | काली सहम (कलह, संघर्ष) | तुला | 001:00:09 | शुक्र | ... | शुक्र |
| 18 | शास्त्र सहम (उच्च शिक्षा) | मकर | 006:43:07 | शनि | मंगल | ... |
| 19 | बन्धु सहम (रिश्तेदार) | तुला | 002:00:58 | शुक्र | सूर्य | ... |
| 20 | निधन सहम | कन्या | 004:08:17 | बुध | ... | मंगल |
| 21 | परदेश सहम (विदेश) | वृष | 013:49:01 | शुक्र | बृहस्पति | ... |
| 22 | धन सहम (धन) | मीन | 004:08:17 | बृहस्पति | शनि | ... |
| 23 | प्रदर सहम (परस्त्रीगमन) | सिहं | 001:07:58 | सूर्य | बुध | ... |
| 24 | वनिज सहम (धंधा) | मीन | 014:37:18 | बृहस्पति | शनि | ... |
| 25 | कार्यसिद्धि सहम (सफलता) | वृश्चिक | 012:12:21 | मंगल | बुध | ... |
| 26 | विवाह सहम | कन्या | 001:31:01 | बुध | चन्द्रमा | ... |
| 27 | संताप सहम (दुःख) | मकर | 028:38:25 | शनि | ... | सूर्य |
| 28 | श्रद्धा सहम (भक्ति) | वृश्चिक | 024:10:11 | मंगल | बुध | ... |
| 29 | प्रिति सहम (प्यार) | कन्या | 015:27:39 | बुध | चन्द्रमा | ... |
| 30 | जाड्य सहम (स्थाई रोग) | कन्या | 014:02:07 | बुध | ... | मंगल |
| 31 | ब्यापार सहम | तुला | 000:58:18 | शुक्र | सूर्य | ... |
| 32 | शत्रु सहम | मीन | 015:39:58 | बृहस्पति | ... | शुक्र |
| 33 | जलपत्तन सहम (विदेश यात्रा) | धनु | 029:37:48 | बृहस्पति | शुक्र | ... |
| 34 | बंधन सहम (कारावास) | मेष | 000:46:09 | मंगल | ... | मंगल |
| 35 | अपघात सहम (आकस्मिक दुर्घटना) | तुला | 002:43:00 | शुक्र | ... | शुक्र |
| 36 | वित्तहानि सहम | धनु | 016:51:57 | बृहस्पति | ... | चन्द्रमा |
| 37 | त्रिक स्फूट (दुर्घटना) | सिहं | 018:23:16 | सूर्य | ... | बृहस्पति |
| 38 | घात स्थान (अनहोनी) | कक्र | 001:44:24 | चन्द्रमा | ... | शनि |

# त्रिपताकी चक्र

**Varhphal Years: 75 (2020-2021) Varhphal Date: 21:12:2020, Time: 17:14Hrs**

| क्र0स0 | राशि | ग्रह |
|---|---|---|
| 1 | 3 | |
| 2 | 4 | केतु |
| 3 | 5 | |
| 4 | 6 | |
| 5 | 7 | शनि |
| 6 | 8 | |
| 7 | 9 | मंगल |
| 8 | 10 | बृहस्पति, राहु |
| 9 | 11 | बुध, शुक्र |
| 10 | 12 | सूर्य, चन्द्रमा |
| 11 | 1 | |
| 12 | 2 | |

## त्रिपताकी चक्र में वेध

**लग्न** : सूर्य , चन्द्र , मंग.

**सूर्य** : सूर्य , चन्द्र , मंग. , चन्द्र , मंग.

**चन्द्रमा** : सूर्य , मंग.

**मंगल** : सूर्य , चन्द्र

**बुध** : गुरू , शुक्र , शनि , राहु , केतु

**बृहस्पति** : बुध , शुक्र , राहु

**शुक्र** : बुध , गुरू , शनि , राहु , केतु

**शनि** : बुध , शुक्र

## ग्रहों द्वारा चन्द्र वेध का फल

**सूर्य :**

आत्मविश्वास की कमी, बदनामी, वृथा अंहकार, दोषयुक्त आँखें, पिता को कठिनाई, मानसिक तनाव, चिड़चिड़ापन, उच्च ज्वर, पित्तजनित रोग तथा निराशायें।

**मंगल :**

शत्रुओं से भय, हथियार, रक्त अनियमितत, दुर्घटनायें, शरीर में दर्द और चोट, शीघ्र क्रोधित होना, लड़ाई–झगड़ा, संघर्ष, हिंसा, लेकिन साथ ही ज्ञान व धन की प्राप्ति भी।

**बुध :**

ज्ञान व बुद्धिमत्ता में वृद्धि, तीक्ष्ण बुद्धि, अच्छे लोगों की संगति और धन का लाभ। लेकिन यदि दूषित है, तो व्यक्ति उतावला व क्षुद्र दिमाग वाला होता है, परिवार की नाराजगी, तनाव और चिन्ताओं की प्राप्ति तथा शत्रुओं से भय।

**बृहस्पति :**

शांति और प्रसन्नता, सभ्य लोगों की संगति, तीर्थ यात्रा, धार्मिक कार्यों के प्रति रूझान, सामाजिक स्तर में उन्नति, धन का लाभ, उपक्रमों के सफलता, संतान का जन्म, और सामान्य समृद्धि।

**शुक्र :**

इच्छाओं की पूर्ति, इन्द्रिय सुख की प्राप्ति, धन–संपदा व शिक्षा की प्राप्ति, शत्रुओं पर विजय। लेकिन शारीरिक सुख के प्रति अत्यधिक लालसा होने के कारण मानसिक व्यग्रता, जल से भय और वातमय विकार।

**शनि :**

तुच्छ व निम्न स्तर के लोगों के साथ संगति, स्वार्थी, तानाशाही, गरीबी, वियोग, यौन विकृति, शारीरिक रोग, सर्दी व जुकाम के साथ–साथ वातमय विकार।

**राहु :**

गंभीर बीमारी/आशंका, मान–प्रतिष्ठा/धन की हानि, विदेशी स्रोतों से कठिनाईयां, उदासीन मन, डरपोक स्वभाव तथा अनेक प्रकार की कठिनाइयों से पीड़ित।

**केतु :**

अस्वस्थता, कमजोर पाचनशक्ति, अस्थिरता, आत्मिक व घुमन्तु प्रकृति, निराशा, चिन्तायें और दुख।

Varhphal Years: 75 (2020-2021) Varhphal Date: 21:12:2020, Time: 17:14Hrs

| मुद्दा योगिनी दशा | | | मुद्दा षोडशोत्तरी दशा | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दशा | अवधि | से | दशा | अवधि | से |
| भभद्रिका (बुध) | 0.0 y.1.0 m.21 d. | 21:12:2020 | चंद्र | 0.0 y.1.0 m.20 d. | 21:12:2020 |
| उल्का (शनि) | 0.0 y.2.0 m.0 d. | 10:02:2021 | बुध | 0.0 y.1.0 m.23 d. | 10:02:2021 |
| सिद्धा (शुक्र) | 0.0 y.2.0 m.11 d. | 12:04:2021 | शुक्र | 0.0 y.1.0 m.26 d. | 04:04:2021 |
| संकटा (शनि) | 0.0 y.2.0 m.20 d. | 22:06:2021 | रवि | 0.0 y.1.0 m.5 d. | 31:05:2021 |
| मंगला (चन्द्रमा) | 0.0 y.0.0 m.10 d. | 11:09:2021 | मंगल | 0.0 y.1.0 m.8 d. | 04:07:2021 |
| पिगंला (सूर्य) | 0.0 y.0.0 m.20 d. | 21:09:2021 | गुरु | 0.0 y.1.0 m.11 d. | 11:08:2021 |
| धान्य (वृहस्पति) | 0.0 y.1.0 m.0 d. | 11:10:2021 | रवि | 0.0 y.1.0 m.5 d. | 21:09:2021 |
| भ्रमरि (मंगल) | 0.0 y.1.0 m.10 d. | 11:11:2021 | मंगल | 0.0 y.1.0 m.8 d. | 26:10:2021 |

## पत्ययनी दशा

| क्र0स0 | दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | चंद्र | 0.0 y.0.0 m.5 d. | 21:12:2020 |
| 2 | रवि | 0.0 y.2.0 m.9 d. | 26:12:2020 |
| 3 | गुरु | 0.0 y.0.0 m.5 d. | 06:03:2021 |
| 4 | शनि | 0.0 y.0.0 m.1 d. | 10:03:2021 |
| 5 | बुध | 0.0 y.0.0 m.5 d. | 11:03:2021 |
| 6 | लग्न | 0.0 y.0.0 m.21 d. | 16:03:2021 |
| 7 | शुक्र | 0.0 y.2.0 m.0 d. | 05:04:2021 |
| 8 | मंगल | 0.0 y.6.0 m.18 d. | 04:06:2021 |

## मुद्दा विंशोत्तरी दशा

| क्र0स0 | दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | शुक्र | 0.0 y.2.0 m.0 d. | 21:12:2020 |
| 2 | रवि | 0.0 y.0.0 m.19 d. | 20:02:2021 |
| 3 | चंद्र | 0.0 y.1.0 m.0 d. | 10:03:2021 |
| 4 | मंगल | 0.0 y.0.0 m.21 d. | 10:04:2021 |
| 5 | राहू | 0.0 y.1.0 m.24 d. | 01:05:2021 |
| 6 | गुरु | 0.0 y.1.0 m.19 d. | 25:06:2021 |
| 7 | शनि | 0.0 y.1.0 m.27 d. | 12:08:2021 |
| 8 | बुध | 0.0 y.1.0 m.21 d. | 09:10:2021 |
| 9 | केतु | 0.0 y.0.0 m.21 d. | 30:11:2021 |

## वर्ष जैमिनी चर दशा

| क्र0स0 | दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | मिथुन | 0.0 y.1.0 m.8 d. | 21:12:2020 |
| 2 | तुला | 0.0 y.0.0 m.4 d. | 28:01:2021 |
| 3 | कुंभ | 0.0 y.1.0 m.12 d. | 01:02:2021 |
| 4 | कर्क | 0.0 y.1.0 m.1 d. | 16:03:2021 |
| 5 | वृश्चिक | 0.0 y.0.0 m.16 d. | 15:04:2021 |
| 6 | मीन | 0.0 y.1.0 m.8 d. | 01:05:2021 |
| 7 | सिंह | 0.0 y.1.0 m.1 d. | 08:06:2021 |
| 8 | धनु | 0.0 y.0.0 m.4 d. | 09:07:2021 |
| 9 | मेष | 0.0 y.1.0 m.12 d. | 13:07:2021 |
| 10 | कन्या | 0.0 y.1.0 m.5 d. | 24:08:2021 |
| 11 | मकर | 0.0 y.1.0 m.16 d. | 28:09:2021 |
| 12 | वृष | 0.0 y.1.0 m.8 d. | 13:11:2021 |

# वर्षफल कुण्डली से महत्वपूर्ण भविष्यफल

**Varhphal Years: 75 (2020-2021) Varhphal Date: 21:12:2020, Time: 17:14Hrs**

## (अष्टक चक्र, ढुढिंराजा पद्धति, वर्षेश्वर और मुन्था)

आपकी वर्षफल कुण्डली में, पूर्व भाग में शेष बचता है, जबकि उत्तर भाग में कोई शेष नहीं बचता है, अतः आपका आगामी समय प्रयासपूर्ण हो सकता है– विशेषकर वर्ष के उत्तरार्द्ध में। यदि आपकी कुण्डली में संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आप धन के अवरूद्ध हो जाने के कारण अथवा हानि होने के कारण असुविधाओं का सामना कर सकते हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, बुध वर्षेश्वर ग्रह है।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्षेश्वर एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है। परिणामस्वरूप आप भाग्यशाली होंगे। इस वर्ष के दौरान होने वाली घटनाएं बहुत सहज व सरल होंगी तथा आपको किसी अशुभ घटना अथवा अपने सामान्य मामलों में किसी आकस्मिक उतार–चढ़ाव का सामना नहीं करना पड़ेगा।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्षेश्वर बुध है। यदि आप शैक्षिक या बौद्धिक कार्यों से जुड़े हुए हैं तो आप अत्यंत उत्तम प्रगति करेंगे तथा परीक्षाओं और/या प्रतियोगिताओं में सफल होंगे। आपको सम्पन्नता का सूर्योदय प्राप्त होगा– यदि आपके व्यवसाय का संबंध व्यापार/वाणिज्य, प्रेस/छपाई, शिक्षण, परामर्श केन्द्र आदि से है तो। आप विद्वान व्यक्तियों से मिलेंगे एवं उनके साथ जीवन्त चर्चा करेंगे। आप अपने कुछ मौलिक लेखों के कारण सराहना व प्रशंसाा प्राप्त कर सकते हैं। वैज्ञानिक सूचनाओं, आधुनिक तकनीकी विकासों, कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग, गणित, तक्र, ज्योतिषशास्त्र आदि में भी आपकी रूचि बढ़ेगी।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था लग्न में स्थित है। अतः यह एक अनुकूल स्थिति है तथा आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, शैक्षिक और बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे, व्यवसाय/व्यापार में विशेष रूप से सुधार होगा, अपने सभी विरोधियों पर विजय प्राप्त करेंगे एवं चहुंमुखी समृद्धि का आनन्द प्राप्त करेंगे। आपकी आय में वास्तविक वृद्धि होगी एवं सामाजिक स्तर ऊँचा उठेगा। आप कुछ मूल्यवान उपकरणों को प्राप्त कर सकते हैं, जो कि आपकी जीवन–शैली को भव्यता प्रदान करेंगे।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था राहु के निकट है। यह एक अत्यंत अनुकूल योग है और आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। आपको बिना आपकी बारी के ही पदोन्नति प्राप्त हो सकती है अथवा एक नया लाभप्रद रोजगार प्राप्त हो सकता है। आपका सामाजिक स्तर ऊँचा उठेगा एवं आपके मित्रों के दायरे में वृद्धि होगी। आप फैशनदार वस्त्रों एवं नीजि श्रृंगार की वस्तुओं पर अत्यधिक धन खर्च करेंगे। आप एक नया आकर्षक

वाहन भी प्राप्त कर सकते हैं। आप आनन्द व लाभ के लिए अपनी रूचि के स्थानों की यात्राएं कर सकते हैं। आपका समय वास्तव में आनन्दपूर्ण होगा एवं आप आरामदायक व आधुनिकतापूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था–राशि बुध की राशि में स्थित है। आगामी वर्ष आपके लिए अनुकूल है। आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे एवं अपने वरिष्ठों से समर्थन व लाभ प्राप्त करेंगे। आपके व्यवसाय में प्रगति होगी एवं अनेक ज्ञानी लोगों के साथ सम्पक्र बनेंगे। यदि आप शैक्षिक अथवा बौद्धिक कार्यों में संलग्न हैं तो सार्थक प्रगति करेंगे। अपनी महत्वपूर्ण उपलब्धियों से आप अनेक लोगों को आकर्षित करने में सक्षम होंगे। आपकी लोकप्रियता में वृद्धि होगी एवं सामान्यतः लोग आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था–राशि का स्वामी अस्त (सूर्य के निकट होने के कारण) है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। इस वर्ष के दौरान किसी समय आप बीमारी से पीड़ित हो सकते हैं, भारी व व्यर्थ के खर्चे हो सकते हैं, आपको हानि होने का भी खतरा हो सकता है। व्यवसाय के क्षेत्र में आप अस्थाई आघात का सामना कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आपकी विश्वसनीयता व सम्मान भी कुछ अजीब कारणों से दांव पर लग सकते हैं।

# वर्षफल सहम से भविष्यफल

**Varhphal Years: 75 (2020-2021) Varhphal Date: 21:12:2020, Time: 17:14Hrs**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, पुण्य–सहम एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रहों के साथ स्थित है, जबकि एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की इस पर दृष्टि पड़ रही है। इस वर्ष के दौरान आपको मिश्रित परिणामों की अनुभूति होगी एवं लाभदायक प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक होंगे। वर्ष के आरम्भ में किसी समय एक शुभ घटना/समारोह हो सकता है, जबकि वर्ष के अन्त के आस–पास किसी समय एक प्रतिकूल घटना घट सकती है।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, विद्या सहम एकादशेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा एकादशेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन के द्वारा पता चलता है कि दो तिथियों 23रू02रू2021 और 18रू10रू2021 में से किसी एक या दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ अनुकूल घटनाएं (इस विशेष सहम के अनुरूप) हो सकती हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, पितृ–सहम एकादशेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा एकादशेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 20:08:2021 और 24:04:2021 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ अनुकूल घटनाएं (इस विशेष सहम से संबंधित) हो सकती हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, राजा–सहम एकादशेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा एकादशेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 20:08:2021 और 24:04:2021 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ अनुकूल घटनाएं (इस विशेष सहम से संबंधित) हो सकती हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, अपत्य–सहम एकादशेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा एकादशेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 20:06:2021 और 24:06:2021 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ अनुकूल घटनाएं (इस विशेष सहम से संबंधित) हो सकती हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, धन–सहम एकादशेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा एकादशेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 24:10:2021 और 18:02:2021 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ अनुकूल घटनाएं (इस विशेष सहम से संबंधित) हो सकती हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, विवाह–सहम एकादशेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा एकादशेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 21:06:2021 और 23:06:2021 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ अनुकूल घटनाएं (इस विशेष सहम से संबंधित) हो सकती हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, बंधन–सहम अष्टमेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा अष्टमेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों19:12:2021 और 23:12:2020 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ प्रतिकूल घटनाएं (इस विशेष सहम से संबंधित) हो सकती हैं।

# वर्षफल

**Varhphal Years: 75 (2020-2021) Varhphal Date: 21:12:2020, Time: 17:14Hrs**

## वर्षेश और अन्य कारकों का फल

आपका वर्षेश बुध इस वर्ष मध्यम बली है। अतः यह वर्ष आपके लिए सामान्य फलदायक रहेगा। इस वर्ष आपकी रूचि धर्म संबंधी कार्यों में होने से मान–सम्मान की प्राप्ति होगी। आपको संतान सुख की प्राप्ति होगी और मित्रों के साथ भी आत्मीय संबंध होंगे। किन्तु आपका अपने जीवनसाथी के साथ विवाद हो सकता है एवं आपके शत्रु आपको परेशान कर सकते हैं। इस वर्ष आप शारीरिक और मानसिक रूप से कभी–कभी पीड़ित रह सकते हैं। पशुपालन से प्राप्त होने वाले लाभ व आय में कमी हो सकती है। व्यय में वृद्धि होगी। व्यापार में मंदी रहेगी। यदि आप नौकरी कर रहे हैं तो आपके अधिकारी वर्ग से आपका मनमुटाव या हानि हो सकती है। आपको अपनी वाणी पर संयम रखना चाहिए, क्योंकि इसके कारण आपको परेशानी हो सकती है।

इस वर्ष आपके वर्षेश बुध की सूर्य के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः यह वर्ष सामान्यतः आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। आपको दाम्पत्य सुख और संतान सुख की प्राप्ति होगी और पारिवारिक वातावरण सुखद व उत्सवपूर्ण रहेगा। आपकी स्थिति के अनुसार इस वर्ष आपको चौपाए पशु अथवा वाहन का सुख प्राप्त होगा। शिक्षा के क्षेत्र में आपको विशिष्टता प्राप्त हो सकती है एवं मान–सम्मान मिलेगा। कार्यक्षेत्र में आपका अधिकारी वर्ग आपसे प्रसन्न रहेगा। स्वर्ण आदि धन का आप संचय भी कर सकते हैं। आपको कोई आकस्मिक लाभ प्राप्त हो सकता है। आप किसी तीर्थ यात्रा पर जा सकते हैं। उत्तर दिशा की ओर की यात्रा लाभप्रद हो सकती है। पूर्व दिशा से कार्य में सफलता मिलेगी। आप ज्वर से पीड़ित हो सकते हैं। आपके शत्रु आपके लिए परेशानियां उत्पन्न करने का प्रयास कर सकते हैं।

इस वर्ष आपकी वर्षफल कुण्डली में वर्षेश सातवें भाव में उपस्थित है। अतः यह वर्ष आपके लिए अनुकूल फलप्रदायक है। आपका दाम्पत्य जीवन सुख शांतिपूर्वक व्यतीत होगा। इस वर्ष आप स्वयं के घर का सुख प्राप्त करेंगे। आप प्रसन्नचित्त रहेंगे। आपको अपने कार्यक्षेत्र में भी सम्मान प्राप्त होगा। आप कोई लाभकारी यात्रा भी करेंगे।

## जन्म लग्न का फल

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न की राशि आपकी वर्षकुण्डली में दसवें भाव में स्थित है। यह वर्ष आपके लिए अनुकूल फलदायक है। आपको अपने कार्यों में सफलता मिलेगी, व्यापार में लाभ एवं आर्थिक रूप से संपन्नता प्राप्त होगी। आपको प्राप्त होने वाले सम्मान एवं पदोन्नति के अवसर को अपने हाथ से जाने नहीं देना चाहिए।

## कुण्डली के भावों का उनके कारकत्व के अनुसार विश्लेषण

**लग्न भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश सातवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको अपने पेशे से लाभ होगा। आपकी आकांक्षाएं पूरी होंगी तथा आप प्रसन्नचित्त रहेंगे। आपको अपने जीवनसाथी से भी लाभ प्राप्त होगा।

**द्वितीय भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, द्वितीयेश दसवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपके लिए आपके जन्म स्थान की अपेक्षा अन्य स्थान अधिक लाभ प्रदान करने वाला साबित होगा। आप नौकरी या सेवा द्वारा अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में गोचर का शनि दूसरे भाव पर दृष्टि डाल रहा है। इस वर्ष आपको व्यापार में हानि अथवा किसी प्रकार से धन हानि हो सकती है।

आपकी वर्षकुण्डली में, बृहस्पति दूसरे या आठवें में अशुभ ग्रहों के साथ युत है। इस वर्ष आपको राज दण्ड का भय हो सकता है।

**तृतीय भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, तृतीयेश सातवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आप अपनी योग्यता से लाभार्जन करेंगे। अपने भ्रातृ–पक्ष से आपका संबंध मधुर रहेगा एवं सुख की प्राप्ति होगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश और तृतीयेश एक साथ सातवें भाव में स्थित हैं। इस वर्ष आपको अपने भाइयों से परेशानियां हो सकती हैं।

**चतुर्थ भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, चतुर्थेश सातवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको अपने जीवनसाथी का भरपूर सुख मिलेगा एवं आप सुखमय व शांतिपूर्ण जीवन का आनन्द लेंगे। आपको उत्तम व स्वादिष्ट भोजन का आनन्द भी मिलेगा। आप भूमि, भवन, जमीन आदि का सुख भी प्राप्त कर सकते हैं।

**पंचम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, पंचमेश छठवें भाव में स्थित है। यह वर्ष आपकी संतान के लिए लाभप्रद हो सकता है, किन्तु आपके मन में अपनी संतान के प्रति विरोध भाव उत्पन्न होने की संभावना है।

आपकी जन्मकुण्डली में बृहस्पति जिस राशि में स्थित है, वह राशि आपकी वर्षकुण्डली में लग्न या पाँचवें भाव में

स्थित है। इस वर्ष आपको पुत्र की प्राप्ति होगी। (अगर आप उम्र के उस दौर में हैं तो अन्यथा आपको अपने पुत्र अथवा पुत्री के किसी कार्य से सम्मान मिलेगा)

**षष्टम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, शुक्र छठवें भाव में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए अनुकूल नहीं हो सकता है। इस वर्ष आपको पारिवारिक सुख कम ही प्राप्त हो सकेगा। आपका अपने परिजनों से विवाद या विरोध हो सकता है तथा घर–परिवार में दुख व कष्ट भी संभव है। आपमें अनैतिक बुद्धि का विकास हो सकता है तथा आप अनुचित कार्यों को करने की ओर अग्रसर हो सकते हैं। आपके अनुचित व्यवहार या कार्यों से आपके मित्रों के मन में भी आपके प्रति प्रतिकूल भावना उत्पन्न हो सकती है, तथा मित्र भी शत्रु बन सकते हैं। इस वर्ष आप गर्मी व ज्वर आदि से पीड़ित रह सकते हैं। आपके खर्चों में अत्यधिक वृद्धि होने से आपको आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ सकता है।आपकी वर्षकुण्डली में, केतु छठवें भाव में स्थित है। अतः इस वर्ष आपको सुन्दर जीवनसाथी की प्राप्ति होगी एवं जीवनसाथी का सुख भी प्राप्त होगा। आप सुन्दर भवन में निवास करेंगे तथा आपकी वांछित अभिलाषायें पूरी होंगी। आपकी बौद्धिक क्षमता में वृद्धि होगी एवं विरोधी आपके सामने टिक नहीं पाएंगे व आपकी विजय होगी। इसके लिए आपको सम्मानित भी किया जा सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, षष्ठेश दसवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपके शरीर में ट्यूमर या फोड़ा होने की संभावना है। आपको संतान संबंधी सुख प्राप्त होगा। आपकी आर्थिक स्थिति पहले की भांति बनी रहेगी। आपके शत्रु की स्थिति में भी कोई परिवर्तन नहीं होगा।

आपकी जन्मकुण्डली का लग्नेश वर्षकुण्डली में कमजोर है तथा मुन्थेश वर्षकुण्डली में छठे भाव में स्थित है। इस वर्ष आप विभिन्न प्रकार के रोगों से पीड़ित हो सकते हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, मुन्थेश तथा लग्नेश अशुभ ग्रहों से घिरे हुए हैं। इस वर्ष आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है।

**सप्तम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली मे सूर्य सातवें भाव में स्थित है। इसलिए इस वर्ष आपके जीवनसाथी को किसी प्रकार का कष्ट होने की संभावना है तथा आप भी शारीरिक रूप से अस्वस्थ रह सकते हैं। आपको नेत्र, सिर, वस्थि प्रदेश से संबंधित रोग हो सकते हैं। इस वर्ष आपको यात्रा में कष्ट एवं हानि होने की संभावना है, इसलिए सावधानी अपेक्षित है। किन्तु वाहन का सुख प्राप्त करने की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल है। आप अपनी स्थिति के अनुसार वाहन खरीद सकते हैं एवं उसका सुख प्राप्त कर सकते हैं।आपकी वर्षकुण्डली में बुध सातवें भाव में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए अनुकूल होगा। आपकी रूचि धार्मिक कार्यों में रहेगी एवं आप प्रसन्नचित्त रहेंगे। अपने जीवनसाथी से आपका संबंध मधुर रहेगा एवं आपको उनका भरपूर सुख व सहयोग मिलेगा। आप कोई यात्रा भी करेंगे, जो आपके लिए सुखद एवं लाभदायक भी होगी। आपको अपने सभी कार्यों में सफलता मिलेगी,

आपके व्यापार–व्यवसाय की स्थिति उत्तम रहेगी तथा आपको वांछित लाभ की प्राप्ति भी होगी। आपकी मान–प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, सप्तमेश आठवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपका अपने जीवनसाथी के साथ कलह–क्लेश रह सकता है। आप विभिन्न प्रकार की परेशानियों के कारण मानसिक रूप से व्यथित व अशांत रह सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली का सप्तमेश, वर्षकुण्डली का मुन्थेश तथा वर्षेश एक साथ सातवें या दसवें भाव में विराजमान हैं। इस वर्ष आपका विवाह हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली का सप्तमेश, आपकी वर्षकुण्डली में विवाह सहम का स्वामी है। यदि आप विवाह योग्य हैं और अविवाहित हैं, तो आपका इस वर्ष विवाह होने की संभावना है।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश सातवें या बारहवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको लड़ाई–झगड़े व विवाद में हार का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, सप्तमेश नीचस्थ है। इस वर्ष आप बाजारू औरतों में आसक्त हो सकते हैं।

**अष्टम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में बृहस्पति आठवें भाव में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए अनुकूल नहीं हो सकता है। आपकी बौद्धिक क्षमता का ह्रास होने के कारण आपको निर्णय लेने में कठिनाई अनुभव हो सकती है। आपकी धार्मिक आस्था में कमी आ सकती है, किन्तु आपको ऐसा होने नहीं देना चाहिए, क्योंकि आपके पुण्य कर्मों का प्रभाव कम होने से आपकी परेशानियों में वृद्धि हो सकती है। आपका अपने मित्रों से मतभेद व विरोध हो सकता है। शत्रु आपके लिए परेशानियां उत्पन्न करने का प्रयास कर सकते हैं। आप किसी दूरस्थ स्थान अथवा विदेश की यात्रा भी कर सकते हैं। आपका अपने सगे–संबंधियों से वियोग हो सकता है।आपकी वर्षकुण्डली में, शनि आठवें भाव में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए अनुकूल नहीं हो सकता है। इस वर्ष आपको शिक्षा के क्षेत्र में बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके परिवारजनों को रोगादि के कारण कष्ट हो सकता है। आपके अनावश्यक व्यय में वृद्धि हो सकती है। आपको अपनी आजीविका के लिए अपने निवास स्थान से दूर जाना पड़ सकता है। किसी कारणवश आपको अपने लोगों से दूर रहना पड़ सकता है एवं बदनामी की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। इस वर्ष आपकी पदावनति हो सकती है। आप रोगादि से पीड़ित रह सकते हैं तथा शारीरिक अस्वस्थता के साथ–साथ मानसिक चिन्ता व व्याकुलता से भी ग्रसित रह सकते हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, अष्टमेश आठवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आप पर आने वाले किसी संकट का समाधान होगा। आपकी आयु में वृद्धि होगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, जन्म लग्नेश वर्षकुण्डली में आठवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको कष्ट होने की

संभावना है तथा विरोधियों से खतरा हो सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश अस्त है। आपका इस वर्ष महिलाओं के साथ विवाद हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में बुध मंगल की राशि में है, जो कि वर्षकुण्डली में पंचाधिकारियों में से एक है। इस वर्ष आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है, आप रोगादि से ग्रसित रह सकते हैं।

**नवम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, नवमेश आठवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपका भाग्य कमजोर साबित हो सकता है एवं आपको अपने भाग्य का साथ नहीं मिल सकता है। यदि नवमेश की आठवें भाव में गुरु के साथ युति है या गुरु की दृष्टि है, तो इस वर्ष आपके खर्चों में अधिकता हो सकती है।

आपकी वर्षकुण्डली में, मंगल वर्षेश है और केन्द्र में स्थित है। इस वर्ष आप दूरस्थ स्थानों की यात्रायें करेंगे।

**दशम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में चंद्रमा दसवें भाव में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए अनुकूल फलदायक रहेगा। आपको सभी प्रकार की सुख–सुविधा के साधनों की प्राप्ति होगी। आपका अपने जीवनसाथी, संतान एवं मित्रों के साथ मधुर संबंध रहेगा तथा उनके साथ सुखमय एवं आनन्दपूर्ण समय व्यतीत होगा। शत्रु आपके लिए परेशानियां खड़ी करने में सफल नहीं हो सकेंगे। आपका व्यापार–व्यवसाय लाभप्रद स्थिति में रहेगा, आप उन्नति करेंगे तथा आपकी मान–प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।आपकी वर्षकुण्डली में मंगल दसवें भाव में स्थित है। इसलिए, इस वर्ष आपको अनुकूल फल प्राप्त होंगे। भाग्य आपका साथ देगा, आपके व्यवसाय की स्थिति उत्तम रहेगी। कोई बड़ा कार्य संपन्न होगा, जिससे आपकी उन्नति होगी। आप कोई नया व्यापार भी प्रारम्भ कर सकते हैं। उच्चाधिकारियों के साथ अच्छे संबंध एवं उनसे आपको सहयोग एवं आर्थिक लाभ की प्राप्ति होगी। आपको पदोन्नति प्राप्त होगी एवं आपके अधिकारों में भी वृद्धि होने के योग हैं।आपके पशुधन में वृद्धि होगी। आपकी मान–प्रतिष्ठा एवं यश में भी वृद्धि होगी। लोग आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे। आपका शरीर निरोग एवं स्वस्थ रहेगा एवं सुखों की प्राप्ति होगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, दशमेश आठवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आप मानसिक रूप से अशांत व व्यथित रह सकते हैं। आपके मन में अपने सामर्थ्यहीन होने का भाव उत्पन्न हो सकता है। आपके कर्म की हानि हो सकती है।

आपकी वर्षकुण्डली में, दशमेश आठवें भाव में स्थित है या अष्टमेश दसवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको राजदण्ड का भय हो सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, चंद्रमा की शनि के साथ दसवें भाव में युति है अथवा दसवें भाव में स्थित चंद्रमा पर शनि की दृष्टि पड़ रही है। इस वर्ष आपके सभी कार्यों में विघ्न उत्पन्न हो सकता है एवं कार्य असफल हो सकते हैं।

**एकादश भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, एकादशेश दसवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको उत्तम एवं स्वादिष्ट भोजन का आनन्द प्राप्त होगा। आपको सुगंधित पदार्थों, शिल्प व विद्या आदि के द्वारा लाभ प्राप्त होने की संभावना है।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश और वर्षेश सातवें या ग्यारहवें भाव में स्थित हैं। इस वर्ष आप व्यापार, व्यवसाय आदि से धनोपार्जन करेंगे।

**द्वादश भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, राहु बारहवें भाव में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए अनुकूल नहीं हो सकता है। इस वर्ष आपको स्थान परिवर्तन करना पड़ सकता है। आपके खर्चों में वृद्धि हो सकती है। आपका अपने उच्चाधिकारियों से मतभेद हो सकता है। आपके स्वजनों को कष्ट हो सकता है, तथा ऐसे में ये लोग आपके प्रति शत्रुता का भाव भी रख सकते हैं। वस्तुओं के गुम होने से हानि होने की भी संभावना है। व्यापार–व्यवसाय के क्षेत्र में हानि हो सकती है। यात्रा में भी कष्ट एवं हानि हो सकती है।

आपकी वर्षकुण्डली में, द्वादशेश छठवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपके अनावश्यक व्यय में कमी आएगी एवं आपके लाभ में वृद्धि होगी। आप अपने शत्रुओं को परास्त कर विजय हासिल करेंगे।

आपकी वर्षकुण्डली में, अष्टमेश छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है। यह वर्ष आपके लिए लाभप्रद नहीं हो सकता है।

# पत्ययनी दशाफल

Varhphal Years: 75 (2020-2021) Varhphal Date: 21:12:2020, 17:14Hrs

## चंद्र दशा

21:12:2020-25:12:2020

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, सूर्य उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त भी नहीं है। अतः चंद्रमा की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/समारोह के होगी। हालांकि आप अपने घरेलू क्षेत्र में कुछ समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपके कुछ पारिवारिक–सदस्य क्रोधपूर्ण ढंग से बात व व्यवहार कर सकते हैं, जिसके कारण आप काफी चिड़चिड़े व अप्रसन्न हो सकते हैं।

## रवि दशा

26:12:2020-05:03:2021

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, सूर्य उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित नहीं है। समग्र रूप से यह एक उदासीन योग का निर्माण करता है। अतः सूर्य की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। हालांकि आपको अपने कार्यस्थल पर कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है एवं आप अपने किसी वरिष्ठ अथवा सहकर्मी के साथ मामूली असहमति अथवा गलतफहमी के कारण झुंझलाहट महसूस कर सकते हैं।

## गुरु दशा

06:03:2021-09:03:2021

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, गुरु नीचस्थ है या अस्त अथवा ग्रसित होने के कारण दूषित है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। गुरु की दशा आपके लिए अच्छी अवधि नहीं हो सकती है। अतः आपको सावधान व सचेत रहना चाहिए एवं अपने स्वास्थ्य का उचित ध्यान रखना चाहिए। आपके कुछ पारिवारिक सदस्य– विशेषकर आपकी संतान– संभवतः कफमय रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। अथाव आर्थिक परेशानी के कारण आप अपने वचनों को पूरा करने में कठिनाई का सामना कर सकते हैं। इस अवधि के दौरान किसी भी महत्वपूर्ण कार्य की शुरूआत करना अथवा किसी लम्बी यात्रा के लिए प्रस्थान करना अधिक फलदायक नहीं हो सकता है।

## शनि दशा

10:03:2021-10:03:2021

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, शनि उच्चस्थ अथवा अपनी राशि में स्थित है एवं यह अस्त या ग्रसित होने से दूषित नहीं है। शनि की दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। आपको नए परिचितों एवं विदेशी स्रोतों से लाभ व समर्थन प्राप्त होगा। आपका परिचय कुछ दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों के साथ हो सकता है, जिसके कारण आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। आपकी आय में वृद्धि होगी एवं आपके स्तर में सुधार होगा। आपमें संतोष की भावना विकसित होगी, किन्तु अपने प्रयुक्त किए जाने वाले साधनों/उपायों पर आपको नजर रखना चाहिए। साथी आपको सावधान व सतक्र रहना चाहिए, क्योंकि आपके किसी दुर्घटना का सामना करने और/या

वातमय रोगों से पीड़ित होने का खतरा है।

## बुध दशा

**11:03:2021-15:03:2021**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, बुध नीचस्थ है या अस्त अथवा ग्रसित होने के कारण दूषित है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। बुध की दशा आपके लिए अच्छी अवधि नहीं हो सकती है। अतः आपको सावधान व सचेत रहना चाहिए एवं अपने स्वास्थ्य का उचित ध्यान रखना चाहिए। आप कफमय एवं वातमय रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। इस अवधि के दौरान किसी भी महत्वपूर्ण कार्य की शुरूआत अथवा किसी लम्बी यात्रा के लिए प्रस्थान करना अधिक फलदायक नहीं हो सकता है। आपके कार्यस्थल की स्थिति कुछ–कुछ बिगड़ सकती है एवं अपने किसी सहकर्मी से विवाद होने के कारण आप चिड़चिड़े हो सकते हैं।

## लग्न दशा

**16:03:2021-04:04:2021**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, लग्नेश नीचस्थ या वक्री या अस्त या ग्रसित है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। लग्न दशा आपके लिए उत्तम अवधि नहीं हो सकती है। अतः आपको अपने सभी मामलों में सामान्यतः सावधान व सतर्क रहना चाहिए एवं अपने स्वास्थ्य का अधिक ध्यान रखना चाहिए। इस अवधि के दौरान किसी भी शुभ और महत्वपूर्ण कार्य की शुरूआत करना अथवा किसी लम्बी यात्रा के लिए प्रस्थान करना फलदायक नहीं हो सकता है। हालांकि आपके कार्यस्थल की स्थिति कुछ हद तक बिगड़ सकती है। यद्यपि सामान्य लोग आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे, फिर भी आपके वरिष्ठ/अधिकारी आपको दबाने का प्रयास कर सकते हैं एवं तर्कसंगत रूप से आपको मिलने वाला श्रेय किसी और को दे सकते हैं। या फिर आपको अन्यायपूर्वक बहुत छोटी अथवा बिना किसी गलती के दोषी ठहराया जा सकता है।

## शुक्र दशा

**05:04:2021-03:06:2021**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, शुक्र उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते है। अतः शुक्र की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। सामान्यतः आपके सभी मामलें भली भांति चलेंगे। आपके पेशे के क्षेत्र में चीजें बहुत सहजतापूर्ण ढंग से होंगी। अपने सगे–संबंधियों व मित्रों की संगति में बिताने के लिए आप कुछ खाली समय निकालने में सक्षम होंगे। आपका घरेलू जीवन आनन्दपूर्ण व सुखमय होगा।

## मंगल दशा

**04:06:2021-20:12:2021**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मंगल उपचय भाव (तीसरे या छठें या दसवें या ग्यारहवें) में स्थित है। यह नीचस्थ अथवा अस्त या ग्रसित होने के कारण दूषित नहीं है। वास्तव में यह एक अनुकूल योग है एवं सूर्य की दशा आपके लिए उपयोगी व लाभदायक साबित होगी। आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे एवं इस अवधि

के दौरान कुछ विशेष उपलब्धि हासिल करेंगे। वरिष्ठ एवं सरकारी अधिकारी आपके प्रति अनुकूल होंगे एवं आपको उनसे समर्थन व लाभ प्राप्त हो सकता है।

# ज्योतिष सारिणी

| | SAMPLE | ज्योतिष सारिणी |
|---|---|---|
| जन्म दिनाकं | 21:12:1945 | 21:12:2021 |
| दिन | शुक्रवार | मंगलवार |
| ज्योतिषिय वार | शुक्रवार | मंगलवार |
| जन्म समय | 11:34:00 | 23:32:00 |
| जन्म स्थान | ranchi | ranchi |
| अक्षांश | 023:20:00N | 023:20:00N |
| रेखांश | 085:19:00E | 085:19:00E |
| यु./ग्रीष्म समय संस्कार | -00:00 | -00:00 |
| जी. एम. टी. समय | 006:03:00 | 018:02:00 |
| स्थानीय समय संस्कार | 000:11:15 hrs | 000:11:16 hrs |
| स्थानीय समय | 011:45:15 hrs | 023:43:16 hrs |
| सांपातिक काल | 017:43:03 hrs | 005:45:21 hrs |
| सूर्योदय | 06:28:24AM | 06:28:28AM |
| सूर्यास्त | 05:04:58PM | 05:05:03PM |

| | | |
|---|---|---|
| लग्न | मीन | कन्या |
| लग्नाधिपति | गुरु | बुध |
| राशि (चन्द्रमा) | कर्क | कर्क |
| राशिपति | चंद्र | चंद्र |
| नक्षत्र | पुष्य | पुष्य |
| नक्षत्रपति | शनि | शनि |
| नक्षत्र चरण | 1 | 1 |
| पाया | रजत | स्वर्ण |
| ऋतु | हेमन्त | हेमन्त |
| मास | पौष कृष्ण | पौष कृष्ण |
| पक्ष | कृष्ण | कृष्ण |
| तिथि | तृतीया | तृतीया |
| तिथि श्रेणी | जया | जया |
| तिथि पति | मंगल | मंगल |
| करण | वनिज | वनिज |
| करण श्रेणी | चर | चर |
| करणपति | मनिभद्र | मनिभद्र |
| सूर्य सिद्धान्त योग | इन्द्रय | इन्द्रय |
| तत्व | जल | जल |
| तत्वाधिपति | शुक्र | शुक्र |
| विहग | पिंगला | पिंगला |
| वेध | पूर्वाशाढ़ | पूर्वाशाढ़ |

# ग्रह स्थिती वर्षफल

**Varhphal Years: 76 (2021-2022) Varhphal Date: 21:12:2021, Time: 23:32Hrs**

| ग्रह | राशि | अंश | नक्षत्र | विशेष |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | मीन | 01:13 | पूर्वाभाद(4) | |
| सूर्य(ग्र.) | धनु | 05:55 | मूला (2) | **मित्र राशि** |
| चन्द्रमा | कर्क | 04:53 | पुष्य (1) | **स्व राशि** |
| मंगल(व.) | कर्क | 08:17 | पुष्य (2) | **नीच राशि** |
| बुध | वृश्चिक | 14:56 | अनुराधा (4) | **सम राशि** |
| बृहस्पति | तुला | 00:18 | चित्रा (3) | **शत्रु राशि** |
| शुक्र | वृश्चिक | 25:47 | ज्येष्ठा (3) | **सम राशि** |
| शनि(व.) | कर्क | 00:04 | पुनर्वसु (4) | **शत्रु राशि** |
| राहु(व.) | मिथुन | 06:56 | अरिद्रा (1) | **मित्र राशि** |
| केतु(व.) | धनु | 06:56 | मूला (3) | **स्व नक्षत्र** |
| हर्षल(व.) | वृष | 21:45 | रोहिणी (4) | ..... |
| नेपच्यून | कन्या | 15:24 | हस्ता (2) | ..... |
| प्लूटो(व.) | कर्क | 18:23 | अश्लेषा (1) | ..... |

| ग्रह | राशि | अंश | नक्षत्र | विशेष |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | कन्या | 02:28 | पूर्वाभाद(2) | |
| सूर्य | धनु | 05:55 | मूला (2) | मित्र राशि |
| चन्द्रमा | कर्क | 03:53 | पुष्य (1) | स्व राशि |
| मंगल | वृशि | 11:41 | अनुराधा (3) | स्व राशि |
| बुध(अ.) | धनु | 18:25 | पूर्वाषाढ़ (2) | सम राशि |
| बृहस्पति | कुंभ | 04:28 | धनिष्ठा (4) | सम राशि |
| शुक्र(व.) | मकर | 02:13 | उत्तरा (2) | मित्र राशि |
| शनि | मकर | 16:40 | श्रवण (3) | स्व राशि |
| राहु(व.) | वृष | 05:54 | कृतिका (3) | उच्च राशि |
| केतु(व.) | वृशि | 05:54 | अनुराधा (1) | उच्च राशि |
| हर्षल(व.) | मेष | 16:59 | भरणी (2) | .... |
| नेपच्यून | कुंभ | 26:21 | पूर्वाभाद (2) | .... |
| प्लूटो | मकर | 01:27 | उत्तरा (2) | .... |

## लग्न कुण्डली

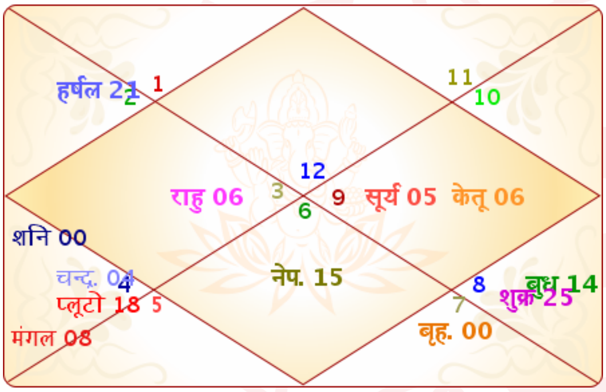


## चन्द्र कुण्डली

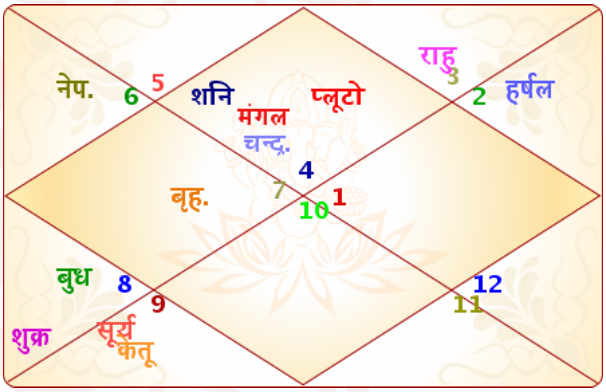


## लग्न कुण्डली ( वर्षफल )

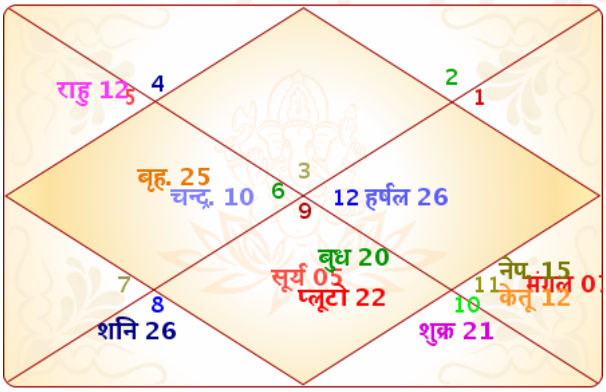


## चन्द्र कुण्डली ( वर्षफल )

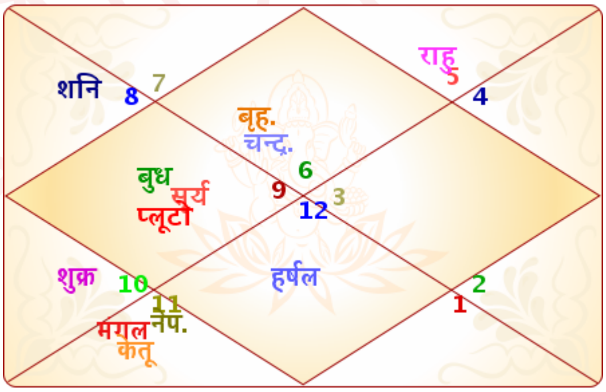

# द्वादश वर्ग कुण्डली

लग्न कुण्डली

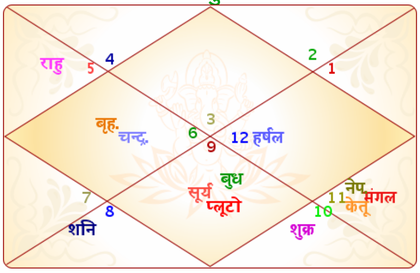


होरा कुण्डली

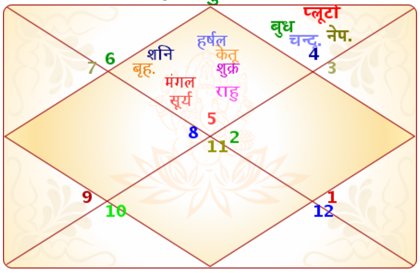


द्रेष्काण कुण्डली

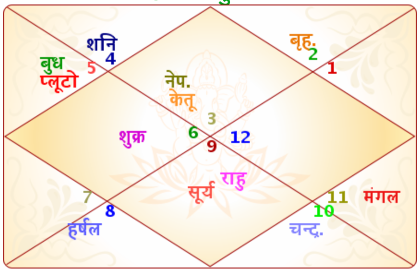


चतुर्थांश कुण्डली

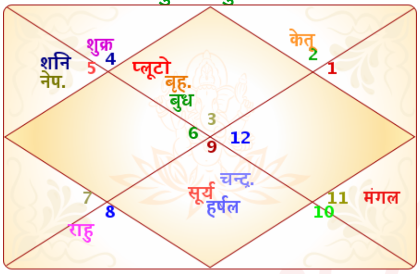


पंचमांश कुण्डली

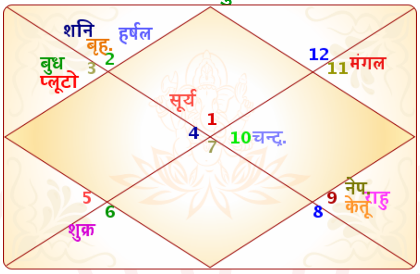


षष्टमांश कुण्डली

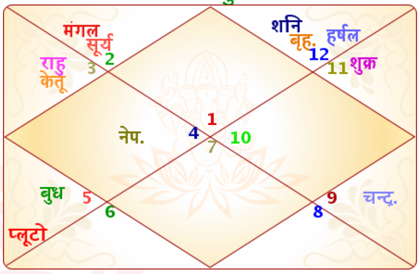


सप्तमांश कुण्डली

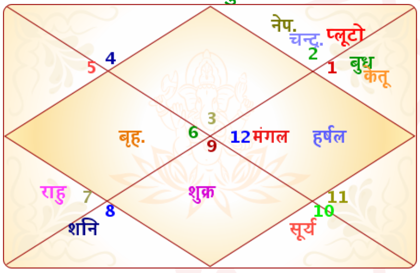


अष्टमांश कुण्डली

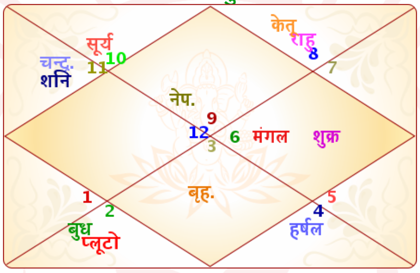


नवांश कुण्डली

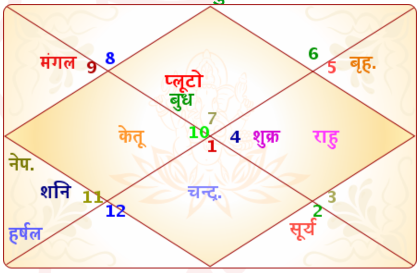


चर्तुविशांश कुण्डली

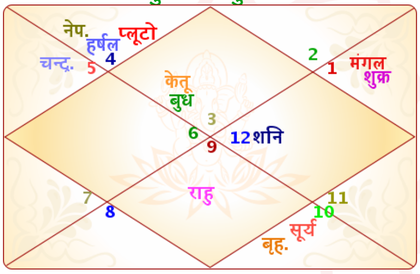


एकादशांश कुण्डली

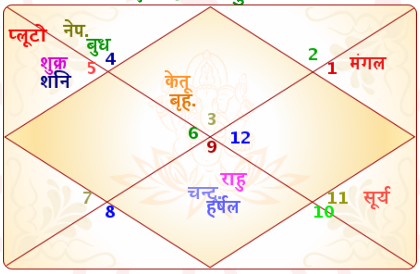


द्वादशांश कुण्डली

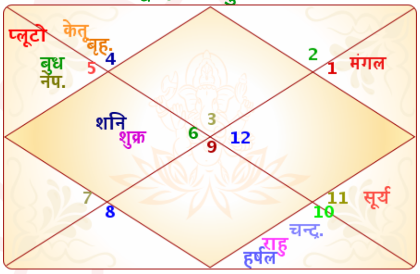


## वर्षफल कुण्डली में ग्रहों की दृष्टि

| | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहू | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रवि | .... | सम | सम | प्र.शत्रु | गु.प्रेम | सम | सम | सम | सम |
| चंद्र | सम | .... | प्र.प्रेम | सम | सम | प्र.शत्रु | प्र.शत्रु | गु.प्रेम | प्र.प्रेम |
| मंगळ | सम | प्र.प्रेम | .... | सम | गु.शत्रु | गु.प्रेम | गु.प्रेम | प्र.शत्रु | प्र.शत्रु |
| बुध | प्र.शत्रु | सम | सम | .... | गु.प्रेम | सम | सम | सम | सम |
| गुरु | गु.प्रेम | सम | गु.शत्रु | गु.प्रेम | .... | सम | सम | गु.शत्रु | गु.शत्रु |
| शुक्र | सम | प्र.शत्रु | गु.प्रेम | सम | सम | .... | प्र.शत्रु | प्र.प्रेम | गु.प्रेम |
| शनि | सम | प्र.शत्रु | गु.प्रेम | सम | सम | प्र.शत्रु | .... | प्र.प्रेम | गु.प्रेम |
| राहू | सम | गु.प्रेम | प्र.शत्रु | सम | गु.शत्रु | प्र.प्रेम | प्र.प्रेम | .... | प्र.शत्रु |
| केतु | सम | प्र.प्रेम | प्र.शत्रु | सम | गु.शत्रु | गु.प्रेम | गु.प्रेम | प्र.शत्रु | .... |

प्र.प्रेमः–प्रकट प्रेम दृष्टि ,गु.प्रेमः–गुप्त प्रेम दृष्टि ,प्र.शत्रुः–प्रकट शत्रु दृष्टि ,गु.शत्रुः–गुप्त शत्रु दृष्टि ,समः–सम दृष्टि ,

# वर्षफल कुण्डली में ग्रहों का बल

Varhphal Years: 76 (2021-2022) Varhphal Date: 21:12:2021, Time: 23:32Hrs

## पंचवर्गीय बल

| क्र0स0 | बल | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | क्षेत्र बल | 22.5 | 30.0 | 30.0 | 22.5 | 15.0 | 7.5 | 30.0 |
| 2 | उच्च बल | 6.21 | 13.23 | 11.52 | 9.62 | 3.27 | 10.58 | 10.37 |
| 3 | हद्दा बल | 11.25 | 11.25 | 7.5 | 15.0 | 11.25 | 7.5 | 3.75 |
| 4 | द्रेक्कन बल | 2.5 | 2.5 | 5.0 | 5.0 | 5.0 | 5.0 | 7.5 |
| 5 | नवांश बल | 2.5 | 2.5 | 3.75 | 5.0 | 1.25 | 1.25 | 2.5 |
| | योग | 11.24 | 14.87 | 14.44 | 14.28 | 8.94 | 7.96 | 13.53 |
| | तुलनात्मक बल | बलशाली | बलशाली | बलशाली | बलशाली | साधारण | साधारण | बलशाली |

## द्वादश वर्गीय बल

| क्र0स0 | बल | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | राशि बल | -1 | +2 | +2 | -1 | 0 | 0 | +2 |
| 2 | होरा बल | +2 | +2 | -1 | 0 | -1 | 0 | 0 |
| 3 | द्रेक्कन बल | -1 | +2 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| 4 | चतुर्थांश बल | -1 | +2 | -1 | +2 | 0 | 0 | 0 |
| 5 | पंचमाशं बल | 0 | -1 | -1 | +2 | 0 | -1 | 0 |
| 6 | षष्टाशं बल | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | +2 | +2 |
| 7 | सप्तमाशं बल | 0 | 0 | -1 | 0 | +2 | 0 | 0 |
| 8 | अष्टमाशं बल | 0 | 0 | +2 | 0 | -1 | -1 | 0 |
| 9 | नवाशं बल | 0 | 0 | -1 | +2 | 0 | 0 | 0 |
| 10 | दसाशं बल | 0 | -1 | -1 | +2 | +2 | 0 | +2 |
| 11 | एकादसाशं बल | 0 | 0 | 0 | +2 | +2 | 0 | 0 |
| 12 | द्वादशाशं बल | 0 | 0 | 0 | 0 | +2 | 0 | 0 |
| | योग | -1 | +6 | -2 | +9 | +6 | 0 | +6 |
| | तुलनात्मक बल | सम | बहुत अच्छा | सम | साधारण | बहुत अच्छा | सम | बहुत अच्छा |

## हर्ष बल

| क्र0स0 | बल | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | स्थान बल | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 5.0 | 0.0 |
| 2 | क्षेत्र बल | 0.0 | 5.0 | 5.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 5.0 |
| 3 | ओज–युग्म बल | 5.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 0.0 |
| 4 | दिवा–रात्रि बल | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 5.0 | 5.0 |
| | योग | 5 | 10 | 5 | 5 | 5 | 10 | 10 |
| | तुलनात्मक बल | अल्पबली | मध्यबली | अल्पबली | अल्पबली | अल्पबली | मध्यबली | मध्यबली |

# वर्षफल सहम

Varhphal Years: 76 (2021-2022) Varhphal Date: 21:12:2021, Time: 23:32Hrs

| क्र0स0 | सहम का नाम | राशि | अंश | सहम अधिपति | 11 भाव पति | 8 भाव पति |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | पुण्य सहम (भाग्य) | कुम्भ | 004:30:27 | शनि | बृहस्पति | ... |
| 2 | विद्या सहम | वृष | 000:26:47 | शुक्र | बृहस्पति | ... |
| 3 | यश सहम | तुला | 002:30:48 | शुक्र | सूर्य | ... |
| 4 | मित्र सहम (मित्र) | कुम्भ | 002:15:23 | शनि | बृहस्पति | ... |
| 5 | महात्य सहम (महानता) | मिथुन | 009:39:29 | बुध | मंगल | ... |
| 6 | आशा सहम (इच्छा) | मिथुन | 027:29:30 | बुध | मंगल | ... |
| 7 | समर्थ सहम (पुरूषार्थ) | वृश्चिक | 009:13:08 | मंगल | बुध | ... |
| 8 | भ्रात्रि सहम (भाई) | तुला | 020:16:27 | शुक्र | सूर्य | ... |
| 9 | गौरव सहम (सम्मान) | मिथुन | 005:21:07 | बुध | मंगल | ... |
| 10 | पितृ सहम (पिता) | कर्क | 021:43:48 | चन्द्रमा | शुक्र | ... |
| 11 | राजा सहम (अधिकार) | कर्क | 021:43:48 | चन्द्रमा | शुक्र | ... |
| 12 | मात्रि सहम (माता) | मीन | 000:48:03 | बृहस्पति | शनि | ... |
| 13 | अपत्य सहम (संतान) | मीन | 001:54:08 | बृहस्पति | शनि | ... |
| 14 | जीव सहम (जीवन) | तुला | 020:16:27 | शुक्र | सूर्य | ... |
| 15 | कर्म सहम (कार्रवाई) | वृश्चिक | 009:13:08 | मंगल | बुध | ... |
| 16 | रोग सहम | वृश्चिक | 001:03:27 | मंगल | ... | बुध |
| 17 | काली सहम (कलह, संघर्ष) | मिथुन | 009:41:40 | बुध | ... | शनि |
| 18 | शास्त्र सहम (उच्च शिक्षा) | धनु | 000:37:59 | बृहस्पति | शुक्र | ... |
| 19 | बन्धु सहम (रिश्तेदार) | मेष | 017:56:34 | मंगल | शनि | ... |
| 20 | निधन सहम | मकर | 003:53:45 | शनि | ... | सूर्य |
| 21 | परदेश सहम (विदेश) | वृष | 002:13:09 | शुक्र | बृहस्पति | ... |
| 22 | धन सहम (धन) | मकर | 002:13:11 | शनि | मंगल | ... |
| 23 | प्रदर सहम (परस्त्रीगमन) | सिहं | 006:11:01 | सूर्य | बुध | ... |
| 24 | वनिज सहम (धंधा) | कुम्भ | 017:00:39 | शनि | बृहस्पति | ... |
| 25 | कार्यसिद्धि सहम (सफलता) | मकर | 016:40:25 | शनि | मंगल | ... |
| 26 | विवाह सहम | तुला | 016:55:49 | शुक्र | सूर्य | ... |
| 27 | संताप सहम (दुःख) | सिहं | 019:42:00 | सूर्य | ... | बृहस्पति |
| 28 | श्रद्धा सहम (भक्ति) | कर्क | 011:56:43 | चन्द्रमा | शुक्र | ... |
| 29 | प्रिति सहम (प्यार) | धनु | 006:21:05 | बृहस्पति | शुक्र | ... |
| 30 | जाड्य सहम (स्थाई रोग) | मीन | 023:24:56 | बृहस्पति | ... | शुक्र |
| 31 | ब्यापार सहम | मिथुन | 027:29:30 | बुध | मंगल | ... |
| 32 | शत्रु सहम | धनु | 007:27:43 | बृहस्पति | ... | चन्द्रमा |
| 33 | जलपत्तन सहम (विदेश यात्रा) | मीन | 004:09:02 | बृहस्पति | शनि | ... |
| 34 | बंधन सहम (कारावास) | सिहं | 014:38:35 | सूर्य | ... | बृहस्पति |
| 35 | अपघात सहम (आकस्मिक दुर्घटना) | मेष | 011:41:17 | मंगल | ... | मंगल |
| 36 | वित्तहानि सहम | मकर | 005:55:34 | शनि | ... | सूर्य |
| 37 | त्रिक स्फूट (दुर्घटना) | तुला | 021:30:42 | शुक्र | ... | शुक्र |
| 38 | घात स्थान (अनहोनी) | मकर | 016:06:57 | शनि | ... | सूर्य |

# त्रिपताकी चक्र

Varhphal Years: 76 (2021-2022) Varhphal Date: 21:12:2021, Time: 23:32Hrs

| क्र0स0 | राशि | ग्रह |
|---|---|---|
| 1 | 6 | |
| 2 | 7 | शनि |
| 3 | 8 | |
| 4 | 9 | मंगल |
| 5 | 10 | बृहस्पति, राहु |
| 6 | 11 | बुध, शुक्र |
| 7 | 12 | सूर्य, चन्द्रमा |
| 8 | 1 | |
| 9 | 2 | |
| 10 | 3 | |
| 11 | 4 | केतु |
| 12 | 5 | |

## त्रिपताकी चक्र में वेध

**लग्न** : सूर्य , चन्द्र , मंग.
**सूर्य** : सूर्य , चन्द्र , मंग. , चन्द्र , मंग.
**चन्द्रमा** : सूर्य , मंग.
**मंगल** : सूर्य , चन्द्र
**बुध** : गुरू , शुक्र , शनि , राहु , केतु
**बृहस्पति** : बुध , शुक्र , राहु
**शुक्र** : बुध , गुरू , शनि , राहु , केतु
**शनि** : बुध , शुक्र

## ग्रहों द्वारा चन्द्र वेध का फल

**सूर्य :**

आत्मविश्वास की कमी, बदनामी, वृथा अंहकार, दोषयुक्त आँखें, पिता को कठिनाई, मानसिक तनाव, चिड़चिड़ापन, उच्च ज्वर, पित्तजनित रोग तथा निराशायें।

**मंगल :**

शत्रुओं से भय, हथियार, रक्त अनियमितत, दुर्घटनायें, शरीर में दर्द और चोट, शीघ्र क्रोधित होना, लड़ाई–झगड़ा, संघर्ष, हिंसा, लेकिन साथ ही ज्ञान व धन की प्राप्ति भी।

**बुध :**

ज्ञान व बुद्धिमत्ता में वृद्धि, तीक्ष्ण बुद्धि, अच्छे लोगों की संगति और धन का लाभ। लेकिन यदि दूषित है, तो व्यक्ति उतावला व क्षुद्र दिमाग वाला होता है, परिवार की नाराजगी, तनाव और चिन्ताओं की प्राप्ति तथा शत्रुओं से भय।

**बृहस्पति :**

शांति और प्रसन्नता, सभ्य लोगों की संगति, तीर्थ यात्रा, धार्मिक कार्यों के प्रति रूझान, सामाजिक स्तर में उन्नति, धन का लाभ, उपक्रमों के सफलता, संतान का जन्म, और सामान्य समृद्धि।

**शुक्र :**

इच्छाओं की पूर्ति, इन्द्रिय सुख की प्राप्ति, धन–संपदा व शिक्षा की प्राप्ति, शत्रुओं पर विजय। लेकिन शारीरिक सुख के प्रति अत्यधिक लालसा होने के कारण मानसिक व्यग्रता, जल से भय और वातमय विकार।

**शनि :**

तुच्छ व निम्न स्तर के लोगों के साथ संगति, स्वार्थी, तानाशाही, गरीबी, वियोग, यौन विकृति, शारीरिक रोग, सर्दी व जुकाम के साथ–साथ वातमय विकार।

**राहु :**

गंभीर बीमारी/आशंका, मान–प्रतिष्ठा/धन की हानि, विदेशी स्रोतों से कठिनाईयां, उदासीन मन, डरपोक स्वभाव तथा अनेक प्रकार की कठिनाइयों से पीड़ित।

**केतु :**

अस्वस्थता, कमजोर पाचनशक्ति, अस्थिरता, आत्मिक व घुमन्तु प्रकृति, निराशा, चिन्तायें और दुख।

**Varhphal Years: 76 (2021-2022) Varhphal Date: 21:12:2021, Time: 23:32Hrs**

| मुद्दा योगिनी दशा | | | मुद्दा षोडशोत्तरी दशा | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दशा | अवधि | से | दशा | अवधि | से |
| उल्का (शनि) | 0.0 y.2.0 m.0 d. | 21:12:2021 | बुध | 0.0 y.1.0 m.23 d. | 21:12:2021 |
| सिद्धा (शुक्र) | 0.0 y.2.0 m.11 d. | 20:02:2022 | शुक्र | 0.0 y.1.0 m.26 d. | 13:02:2022 |
| संकटा (शनि) | 0.0 y.2.0 m.20 d. | 02:05:2022 | रवि | 0.0 y.1.0 m.5 d. | 11:04:2022 |
| मंगला (चन्द्रमा) | 0.0 y.0.0 m.10 d. | 22:07:2022 | मंगल | 0.0 y.1.0 m.8 d. | 15:05:2022 |
| पिगंला (सूर्य) | 0.0 y.0.0 m.20 d. | 02:08:2022 | गुरु | 0.0 y.1.0 m.11 d. | 22:06:2022 |
| धान्य (वृहस्पति) | 0.0 y.1.0 m.0 d. | 22:08:2022 | रवि | 0.0 y.1.0 m.5 d. | 02:08:2022 |
| भ्रमरि (मंगल) | 0.0 y.1.0 m.10 d. | 21:09:2022 | मंगल | 0.0 y.1.0 m.8 d. | 05:09:2022 |
| भभद्रिका (बुध) | 0.0 y.1.0 m.21 d. | 01:11:2022 | गुरु | 0.0 y.1.0 m.11 d. | 13:10:2022 |

## पत्ययनी दशा

| क्र0स0 | दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | शुक्र | 0.0 y.1.0 m.14 d. | 21:12:2021 |
| 2 | लग्न | 0.0 y.0.0 m.6 d. | 03:02:2022 |
| 3 | चंद्र | 0.0 y.0.0 m.28 d. | 09:02:2022 |
| 4 | गुरु | 0.0 y.0.0 m.12 d. | 09:03:2022 |
| 5 | रवि | 0.0 y.0.0 m.29 d. | 20:03:2022 |
| 6 | मंगल | 0.0 y.3.0 m.23 d. | 18:04:2022 |
| 7 | शनि | 0.0 y.3.0 m.8 d. | 10:08:2022 |
| 8 | बुध | 0.0 y.1.0 m.5 d. | 17:11:2022 |

## मुद्दा विंशोत्तरी दशा

| क्र0स0 | दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | रवि | 0.0 y.0.0 m.19 d. | 21:12:2021 |
| 2 | चंद्र | 0.0 y.1.0 m.0 d. | 09:01:2022 |
| 3 | मंगल | 0.0 y.0.0 m.21 d. | 08:02:2022 |
| 4 | राहू | 0.0 y.1.0 m.24 d. | 01:03:2022 |
| 5 | गुरु | 0.0 y.1.0 m.19 d. | 25:04:2022 |
| 6 | शनि | 0.0 y.1.0 m.27 d. | 13:06:2022 |
| 7 | बुध | 0.0 y.1.0 m.21 d. | 10:08:2022 |
| 8 | केतु | 0.0 y.0.0 m.21 d. | 30:09:2022 |
| 9 | शुक्र | 0.0 y.2.0 m.0 d. | 22:10:2022 |

## वर्ष जैमिनी चर दशा

| क्र0स0 | दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | कन्या | 0.0 y.1.0 m.2 d. | 21:12:2021 |
| 2 | वृष | 0.0 y.0.0 m.28 d. | 22:01:2022 |
| 3 | मकर | 0.0 y.1.0 m.12 d. | 19:02:2022 |
| 4 | सिंह | 0.0 y.0.0 m.28 d. | 03:04:2022 |
| 5 | मेष | 0.0 y.0.0 m.25 d. | 01:05:2022 |
| 6 | धनु | 0.0 y.1.0 m.5 d. | 26:05:2022 |
| 7 | कर्क | 0.0 y.1.0 m.12 d. | 30:06:2022 |
| 8 | मीन | 0.0 y.0.0 m.4 d. | 12:08:2022 |
| 9 | वृश्चिक | 0.0 y.1.0 m.12 d. | 15:08:2022 |
| 10 | मिथुन | 0.0 y.1.0 m.5 d. | 27:09:2022 |
| 11 | कुंभ | 0.0 y.1.0 m.9 d. | 01:11:2022 |
| 12 | तुला | 0.0 y.0.0 m.11 d. | 10:12:2022 |

# वर्षफल कुण्डली से महत्वपूर्ण भविष्यफल

Varhphal Years: 76 (2021-2022) Varhphal Date: 21:12:2021, Time: 23:32Hrs

## (अष्टक चक्र, ढुढिंराजा पद्धति, वर्षेश्वर और मुन्था)

आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्तमान वर्ष के लिए अष्टक चक्र सूचकांक ग्रह शुक्र है। यह ग्रह चंद्र–राशि से दशमेश है, जो कि लग्न से दसवें भाव में स्थित है। यदि आपकी वर्तमान आयु के लिए प्रासंगिक है तो इस वर्ष के दौरान आप कोई नया लाभप्रद रोजगार अथवा पदोन्नति प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, चन्द्रमा वर्षेश्वर ग्रह है।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्षेश्वर ग्रह अपनी राशि में स्थित है। यह ना तो अस्त है और ना ही ग्रसित है। यह एक अनुकूल संकेत है तथा आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्षेश्वर चंद्र है। अतः यह आपको आपके सभी मामलों में भाग्यशाली बनाएगा। आप अत्यंत लोकप्रिय होंगे तथा पद व अधिकार वाले व्यक्तियों से मित्रता स्थापित करेंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में सम्पन्न होंगे, आपकी आय व संचित धन में वृद्धि होगी एवं कुछ नई परिसम्पत्तियां प्राप्त करेंगे। आपका घरेलू जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण होगा। विवाह होने से अथवा संतान का जन्म से आपके परिवार के सदस्यों की संख्या में वृद्धि होगी। आपका घर के प्रति आकर्षण और अधिक होगा, फिर भी आप लाभ व आनन्द के लिए वर्ष के दौरान किसी समय एक लम्बी यात्रा कर सकते हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था ग्यारहवें में है। जैसाकि यह एक अत्यंत प्रशंसनीय स्थिति है, इसलिए आप कई मामलों में अत्यंत भाग्यशाली होंगे, जो कि सबको प्रसन्न करेगा। आपकी गतिविधियां बहुत जीवंत होंगी एवं आपकी आय हर समय से अधिक होगी। आप जिस भी कार्य को हाथ लगाएंगे उससे सोना बरसेगा अर्थात अत्यधिक सफलता मिलेगी। आपकी सभी अभिलाषित इच्छाएं पूरी होंगी एवं आपकी कुछ महात्वकांक्षाएं फलीभूत होंगी। आप अपने वरिष्ठों से प्रत्यक्ष समर्थन एवं सरकारी स्रोतों भी से अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्त करेंगे। हालांकि आपकी माता का बिगड़ता हुआ स्वास्थ्य आपको कुछ चिन्तित कर सकता है।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था–राशि चंद्रमा की राशि कर्क में स्थित है। किसी अशुभ ग्रह के साथ युति अथवा दृष्टि (ताजिक) के कारण राशि और इसके स्वामी दोनों ही पीड़ित हैं। आगामी वर्ष आपके लिए काफी समस्यात्मक हो सकता है। आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है एवं आपका घरेलू जीवन कदापि खुशहाल नहीं हो सकता है। आप अपने व्यवसाय में एक अस्थाई आघात का सामना कर सकते हैं अथवा किन्हीं कारणों से व्यथित हो सकते हैं। विवाहित महिलाओं की आपके प्रति प्रतिकूल भावना हो सकती है, वे आपके साथ बुरा

व्यवहार कर सकती हैं या कटु, कठोर अथवा यहां तक कि अपमानजनक शब्दों का प्रयोग कर सकती हैं। आप अपनी लोकप्रियता खो सकते हैं एवं आपकी विश्वसनीयता व सम्मान में भी कमी आ सकती है।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था–राशि का स्वामी जन्मकुण्डली में जिस राशि में स्थित है, वर्षफल कुण्डली में भी उसी राशि में स्थित है। इसलिए यह वर्ष महत्वपूर्ण और घटनाओं से भरा होगा। जैसाकि वर्षफल कुण्डली में मुन्था–राशि के स्वामी की एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रहों के साथ युति है अथवा दृष्टि (ताजिक) संबंध है, जबकि किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ इसकी युति अथवा दृष्टि (ताजिक) संबंध नहीं है, इसलिए वर्ष के आरम्भ में एवं वर्ष के अन्त में भी कुछ शुभ अवसर या घटनाएं घटित होने की आशा है अर्थात इस वर्ष आपके जन्मदिन के कुछ दिनों के बाद एवं अगले वर्ष आपके जन्मदिन के कुछ दिनों से तुरन्त पहले।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था–राशि का स्वामी जन्मकुण्डली में जिस राशि में स्थित है, वर्षफल कुण्डली में भी उसी राशि में स्थित है। इसलिए यह वर्ष महत्वपूर्ण और घटनाओं से भरा होगा। जैसाकि वर्षफल कुण्डली में मुन्था–राशि के स्वामी की किसी भी ग्रह के साथ युति है अथवा दृष्टि (ताजिक) संबंध नहीं है, इसलिए वर्ष के आरम्भ में एवं वर्ष के अन्त में भी कुछ अनुकूल अवसर या घटनाएं घटित होने की आशा है अर्थात इस वर्ष एक बार आपके जन्मदिन के कुछ दिनों के बाद एवं अगले वर्ष आपके जन्मदिन के कुछ दिनों से तुरन्त पहले।

# वर्षफल सहम से भविष्यफल

**Varhphal Years: 76 (2021-2022) Varhphal Date: 21:12:2021, Time: 23:32Hrs**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, पुण्य सहम एकादशेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा एकादशेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन के द्वारा पता चलता है कि दो तिथियों 21रू12रू2022 और 22रू12रू2021 में से किसी एक या दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ अनुकूल घटनाएं (इस विशेष सहम के अनुरूप) हो सकती हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, पुण्य–सहम एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रहों के साथ स्थित है, जबकि एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की इस पर दृष्टि पड़ रही है। इस वर्ष के दौरान आपको मिश्रित परिणामों की अनुभूति होगी एवं लाभदायक प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक होंगे। वर्ष के आरम्भ में किसी समय एक शुभ घटना/समारोह हो सकता है, जबकि वर्ष के अन्त के आस–पास किसी समय एक प्रतिकूल घटना घट सकती है।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मित्र सहम एकादशेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा एकादशेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 24:12:2021 और 19:12:2022 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ अनुकूल घटनाएं (इस विशेष सहम के अनुरूप) हो सकती हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, अपघात–सहम अष्टमेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा अष्टमेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 22:07:2022 और 23:05:2022 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ प्रतिकूल घटनाएं (इस विशेष सहम से संबंधित) हो सकती हैं।

# वर्षफल

**Varhphal Years: 76 (2021-2022) Varhphal Date: 21:12:2021, Time: 23:32Hrs**

## वर्षेश और अन्य कारकों का फल

आपका वर्षेश चंद्रमा इस वर्ष सामान्य रूप से बली है। अतः यह वर्ष आपके लिए अधिक अनूकल नहीं रहेगा। आपके दाम्पत्य सुख में कमी आ सकती है। आपकी माता को भी कष्ट हो सकता है। आपको शारीरिक अस्वस्थता की अनुभूति हो सकती है। आपके अपने कार्यक्षेत्र में या राज पक्ष के उच्चाधिकारियों से संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है। इस वर्ष आपको धन के अत्यधिक व्यय के कारण हानि हो सकती है। भूमि भवन आदि की भी हानि होने की संभावनाएं हैं। आपका अपने मित्रों के साथ भी संबंधों में मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। आपका स्थानान्तरण होने की संभावना है।

इस वर्ष आपके वर्षेश चन्द्रमा की शुक्र के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। यदि आप अविवाहित हैं तो आपके विवाह के उत्तम संभावनाएं हैं। यदि आप विवाहित हैं तो आपका अपने जीवनसाथी के साथ मधुर व सहयोगपूर्ण संबंध रहेगा एवं आपको दाम्पत्य सुख की प्राप्ति होगी। आपको सुन्दर कन्या संतान की प्राप्ति भी हो सकती है। अग्निकोण से लाभ प्राप्त हो सकता है या कार्य सिद्ध हो सकता है। आपको श्वेत वस्तुओं के व्यापार से लाभ प्राप्त हो सकता है। आप रेशमी वस्तुओं या रेशम के व्यापार से भी लाभ अर्जित कर सकते हैं। आपको मोती आदि जैसे सफेद रत्नों के आभूषणों की प्राप्ति हो सकती है। आपको सुख–सुविधाओं के साधनों के साथ–साथ उत्तम भोजन, सुन्दर वस्त्र, सुगन्धित द्रव्यों आदि की प्राप्ति होगी। आपमें भक्ति की भावना जागृत होगी, सत्पुरुषों की संगति में रहने का अवसर प्राप्त होगा एवं आप परमात्मा की भक्ति में लीन रहेंगे।

इस वर्ष आपके वर्षेश चन्द्रमा की शनि के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः यह वर्ष आपके लिए प्रतिकूल साबित हो सकता है। इस वर्ष आपके शरीर के किसी भाग में कोई स्थाई विकार भी रह सकता है। रक्त अशुद्धि के कारण आपको दाद–खाज जैसे चर्म रोग भी हो सकते हैं। आपकी बुद्धि में विकार आने से आपकी आसक्ति दुर्व्यसनों में अधिक हो सकती है। आपकी आय व लाभ में कमी आ सकती है एवं आपके खर्चों में वृद्धि हो सकती है। आपको अपने कार्यक्षेत्र में या राज पक्ष से मतभेद व समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। इस वर्ष आपका मन व्याकुल तथा भय व संशय से भरा हुआ हो सकता है। आपका अपने परिजनों से विवाद या वियोग हो सकता है। आपको पश्चिम दिशा से अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है।

इस वर्ष आपकी वर्षफल कुण्डली में वर्षेश ग्यारहवें भाव में उपस्थित है। अतः यह वर्ष आपके लिए सुख–समृद्धि लाएगा। आपके शारीरिक सौन्दर्य में वृद्धि होने के साथ–साथ आपमें अनेक सद्‌गुणों का समावेश होगा। आपके मन से लोभ की भावना का ह्रास होगा एवं विचारशीलता के गुणों में वृद्धि होगी। आपको वाहन का सुख प्राप्त होने की काफी संभावना है। इसके अतिरिक्त आपको पर्याप्त मात्रा में धन–सम्पदा की प्राप्ति होगी एवं आप सुन्दर

व मुल्यवान वस्त्र व आभूषण आदि भी प्राप्त करेंगे।

## जन्म लग्न का फल

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न की राशि आपकी वर्षकुण्डली में सातवें भाव में स्थित है। अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ फलदायक होगा। आपके घर–परिवार में शुभ समारोहों का आयोजन हो सकता है। आपको अपने कार्यों में वांछित सफलता प्राप्त होगी।

## कुण्डली के भावों का उनके कारकत्व के अनुसार विश्लेषण

### लग्न भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश चौथे भाव में स्थित है। यह वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। इस वर्ष आपका घरेलू जीवन सुखमय होगा, आपको उत्तम स्वादिष्ट भोजन प्राप्त होगा। अपने मित्रों के साथ आपका संबंध अच्छा रहेगा। आपको भूमि व भवन का सुख प्राप्त होने के भी योग हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश सूर्य के साथ स्थित है तथा मुन्थेश पर शनि की दृष्टि है। इस वर्ष आपको अत्यधिक कष्ट हो सकता है।

### द्वितीय भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में, द्वितीयेश पांचवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको अपनी संतान के द्वारा लाभ प्राप्त होने की संभावना है, एवं आपको अपने लेखन कार्य से भी लाभ प्राप्त होने के योग हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में गोचर का शनि दूसरे भाव पर दृष्टि डाल रहा है। इस वर्ष आपको व्यापार में हानि अथवा किसी प्रकार से धन हानि हो सकती है।

### तृतीय भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में मंगल तीसरे भाव में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए अनुकूल होगा। आप शारीरिक रूप से स्वस्थ्य रहेंगे। आपके अधिकार, मान–सम्मान व पराक्रम में वृद्धि होगी, अपने उच्चाधिकारियों से आपके संबंध अच्छे रहेंगे। आपके धन लाभ में वृद्धि होगी एवं मनोरथ सिद्ध होंगे। आपके घर–परिवार का वातावरण आनन्दमय रहेगा। आपके शत्रुओं का नाश होगा। किन्तु आपके भाई–बहनों– विशेषकर छोटे भाइयों– को इस वर्ष कष्ट हो सकता है।आपकी वर्षकुण्डली में, केतु तीसरे भाव में स्थित है। अतः इस वर्ष आपके कार्यक्षेत्र में सबके साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके शत्रु परास्त होंगे। आपको सुख–सुविधा की वस्तुओं की प्राप्ति होगी एवं आप विलासितापूर्ण जीवन का आनन्द लेंगे। आपकी सामाजिक मान–प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, तथा सामान्यतः लोग आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे। आपके व्यापार–व्यवसाय की स्थिति उत्तम एवं लाभप्रद रहेगी। आपके कुल

की प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, तृतीयेश तीसरे भाव में स्थित है। इस वर्ष आप अपने जीवनसाथी के साथ सुखमय जीवन का आनन्द लेंगे। आपका अपने भाई–बहनों से भी अच्छे संबंध रहेंगे। आपकी रूचि संगीत में हो सकती है एवं आप इसका आनन्द लेंगे।

**चतुर्थ भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली मे सूर्य चौथे भाव में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए अनुकूल नहीं है। इस वर्ष आपका स्थानान्तरण हो सकता है। आपको उच्चाधिकारियों या राज्य पक्ष की ओर से परेशानी हो सकती है। आप शारीरिक रूप से कमजोर हो सकते हैं। यात्रा के दौरान कष्ट हो सकता है। वाहन चलाते समय आपको उचित सावधानी रखनी चाहिए। आपका अपने परिजनों से मतभेद व विरोध हो सकता है तथा आपके मित्र भी मददगार नहीं हो सकते हैं या उनसे मनमुटाव हो सकता है।आपकी वर्षकुण्डली में बुध चौथे भाव में स्थित है। इसलिए सामान्यतः यह वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। आपका अपने जीवनसाथी से मधुर संबंध बना रहेगा तथा आप दोनों एक दूसरे के प्रति स्नेह एवं समर्पण के भाव से पूर्ण रहेंगे। आपको अपने मित्रों की संगति में आनन्द आएगा। इस वर्ष आपको वाहन का सुख प्राप्त होने की संभावना है, साथ ही आपके पशुधन में भी वृद्धि होगी। आपको उत्तम रोजगार की प्राप्ति होगी तथा आप पर्याप्त धनार्जन करेंगे।

आपकी वर्षकुण्डली में, चतुर्थेश छठवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपका अपने बन्धुजनों से विवाद या विरोध संभव है। आपको भूमि व भवन से संबंधित व्यय भी करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा जिस राशि में स्थित है, वर्षकुण्डली में भी उसी राशि में है। इस वर्ष आपकी माता को कष्ट हो सकता है।

**पंचम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, शुक्र पांचवें भाव में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए अनुकूल फलदायक होगा। यह वर्ष शिक्षा ग्रहण करने की दृष्टि से उत्तम है, अतः इस वर्ष आप किसी नये विषय का अध्ययन कर सकते हैं एवं पर्याप्त ज्ञान अर्जित कर सकते हैं। आपके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि होगी। आप अपने कार्यों को अधिक निपुणता से करने में सक्षम होंगे। आप किसी गूढ़ विषय पर शास्त्रार्थ अथवा विचार–विमर्श कर सकते हैं। आप अपने जीवनसाथी एवं संतान के साथ सुखमय एवं आनन्दपूर्ण समय व्यतीत करेंगे तथा आपको उनका भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। आपके शत्रुओं का नाश होगा एवं आप चिन्ता, भय, क्लेश आदि से मुक्त रहेंगे।आपकी वर्षकुण्डली में, शनि पांचवें भाव में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए अनुकूल नहीं हो सकता है। इस वर्ष आप वातजनिक रोगों के कारण सीने के दर्द आदि से पीड़ित रह सकते हैं। आपके जीवनसाथी एवं संतान को भी कष्ट रह सकता है। यदि आप एक विद्यार्थी हैं, तो आपकी शिक्षा में भी बाधायें उत्पन्न हो सकती हैं। आपके खर्चों में वृद्धि हो सकती है। आपके बंधु–बांधवों को भी किसी ना किसी प्रकार का कष्ट रह सकता है। आपकी मानसिक स्थिति ठीक ना होने से आप हीन भावना से ग्रसित हो सकते हैं एवं आपके मन में व्यर्थ के चिन्ता एवं डर का समावेश

हो सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, पंचमेश पांचवें भाव में स्थित है तथा इसकी किसी पाप ग्रह के साथ युति है या ऐसे ग्रह की इस पर दृष्टि है, इसलिए आपको इस वर्ष धनोपार्जन में कठिनाइयों व अवरोधों का सामना करना पड़ सकता है। इसके अतिरिक्त संतान संबंधी क्लेश या परेशानी होने की भी संभावना है।

आपकी वर्षकुण्डली में लग्नेश और पंचमेश दोनों स्त्री–ग्रह होकर केन्द्र–त्रिकोण में स्थित हैं। इस वर्ष आपको कन्या संतान की प्राप्ति हो सकती है। यदि ये सम राशि तथा सम नवांश में हैं, तो आपको इस वर्ष अवश्य ही कन्या संतान की प्राप्ति होगी। (अगर आप उम्र के उस दौर में हैं तो अन्यथा आपको अपने पुत्र अथवा पुत्री के किसी कार्य से सम्मान मिलेगा)

**षष्टम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में बृहस्पति छठवें भाव में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए अनुकूल नहीं हो सकता है। इस वर्ष आपके जीवनसाथी को किसी प्रकार का शारीरिक कष्ट हो सकता है। आपका अपने स्वजनों से विरोध या विवाद हो सकता है। आपके शत्रुओं की वृद्धि हो सकती है। आपकी शक्ति का ह्रास हो सकता है। आपके शत्रुओं के कारण या किसी अन्य कारणवश आपके व्यर्थ के खर्चों में वृद्धि हो सकती है। आप अनेक प्रकार की चिन्ताओं से ग्रसित होने के कारण मानसिक रूप से व्यथित हो सकते हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, षष्ठेश पांचवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आप शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ्य एवं निरोग रहेंगे तथा अपने शत्रुओं का विनाश कर विजय हासिल करेंगे।

**सप्तम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, सप्तमेश छठवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपके जीवनसाथी को रोगादि के कारण शारीरिक कष्ट हो सकता है। इसके अतिरिक्त आपका उनसे विवाद या मतमुटाव रह सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, मंगल बली होकर शुक्र की जन्म–राशि में स्थित है। यदि आप विवाह योग्य हैं और अविवाहित हैं, तो इस वर्ष आपके विवाह के शुभ एवं प्रबल योग हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, मंगल और शनि शक्तिशाली हैं। इस वर्ष प्रायः आपका किसी से लड़ाई–झगड़ा हो सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, चौथे एवं सातवें भाव के बीच में शुभ ग्रह स्थित हैं। इस वर्ष आपके द्वारा की गई यात्रायें सिद्धिदायक व सफल होंगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश और सप्तमेश पर पापी ग्रहों की दृष्टि नहीं पड़ रही है। इस वर्ष आपकी कोई वस्तु खोएगी नहीं, बल्कि आप उसे कहीं रखकर भूल सकते हैं, जो पुनः आपको वापस मिल जायेगी।

**अष्टम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, अष्टमेश तीसरे भाव में स्थित है तथा इसकी शुभ ग्रहों से युति या इस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि है। इस वर्ष आपका अपने भ्रातृ–पक्ष से अच्छे संबंध बने रहेंगे।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश अस्त है। आपका इस वर्ष महिलाओं के साथ विवाद हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में बुध मंगल की राशि में है, जो कि वर्षकुण्डली में पंचाधिकारियों में से एक है। इस वर्ष आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है, आप रोगादि से ग्रसित रह सकते हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, चंद्रमा मंगल की जन्म–राशि में है तथा पंचाधिकारियों में से एक है। इस वर्ष आप रोगादि से पीड़ित हो सकते हैं एवं अपने वरिष्ठों से आपको अप्रत्यक्ष कठिनाइयां झेलनी पड़ सकती हैं।

**नवम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, राहु नौवें भाव में स्थित है। इसलिए, इस वर्ष आपका भाग्य आपके अधिक अनुकूल नहीं हो सकता है। आपका अपने पिता के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। आपको पशु अथवा वाहन से चोट लगने का भय है। यद्यपि इस वर्ष आपकी रूचि धार्मिक कार्यों में रहेगी, किन्तु साथ ही क्रूरता की भावना भी आपमें जागृत हो सकती है। आपकी पदावनति होने की भी संभावना है।

आपकी वर्षकुण्डली में, नवमेश पांचवें भाव में स्थित है। अतः यद्यपि इस वर्ष आपका अपने परिजनों से विरोध या विवाद का सामना करना पड़ सकता है, किन्तु आपको पुत्र संबंधी सुख एवं पुत्र से लाभ प्राप्त होने की भी संभावना है।

**दशम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, दशमेश चौथे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको भूमि–भवन संबंधी लाभ हो सकते हैं। आपको घर, मकान आदि से किराये–भाड़े के रूप में आय प्राप्त हो सकती है। आप धन संग्रह करने में भी सक्षम होंगे।

आपकी वर्षकुण्डली में, वर्षेश या लग्नेश उच्चस्थ, स्वगृही या मूल त्रिकोण राशि में स्थित है। इस वर्ष आपकी उन्नति की संभावनायें प्रबल होंगी।

**एकादश भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में चंद्रमा ग्यारहवें भाव में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। आपकी बौद्धिक क्षमता और विकसित होगी, धनोपार्जन करने के साधन प्राप्त होंगे, अपने कार्यक्षेत्र में अपने उच्चाधिकारियों से सहयोग एवं लाभ की प्राप्ति हो सकती है। इस वर्ष आपको श्वेत वस्तुओं की प्राप्ति होगी, वस्त्र एवं श्वेत रंग के वस्तुओं के व्यापार से उत्तम लाभ प्राप्त हो सकता है। आपको अनेक प्रकार के सुखों की प्राप्ति होगी एवं विभिन्न माध्यमों से लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इस वर्ष आपको अच्छे वस्त्रों एवं वाहन का सुख भी प्राप्त होने के योग हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, एकादशेश ग्यारहवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आप अपने जीवनसाथी के साथ सुखद व आनन्दमय समय व्यतीत करेंगे। आपके लाभार्जन में वृद्धि होगी। ज्ञानी व विद्वान लोगों के संपक्र में आ सकते हैं या उनसे मित्रवत संबंध स्थापित हो सकते हैं। आपका मन प्रसन्नचित्त रहेगा।

आपकी वर्षकुण्डली में, वर्षेश ग्यारहवें भाव में शुभ ग्रहों के साथ स्थित है या शुभ ग्रहों की इस पर दृष्टि पड़ रही है। इस वर्ष आपको अध्ययन संबंधी कार्यों से लाभ की प्राप्ति होगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, मुन्था या मुन्थेश ग्यारहवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आप शिक्षा एवं बौद्धिक कार्यों में उपलब्धियां प्राप्त करेंगे।

**द्वादश भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, द्वादशेश चौथे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको कृषि से संबंधित कार्यों से लाभ होगा एवं आपके धन खर्च में भी वृद्धि होगी।

# पत्ययनी दशाफल

Varhphal Years: 76 (2021-2022) Varhphal Date: 21:12:2021, 23:32Hrs

## शुक्र दशा

21:12:2021-02:02:2022

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, शुक्र उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते है। अतः शुक्र की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। सामान्यतः आपके सभी मामलें भली भांति चलेंगे। आपके पेशे के क्षेत्र में चीजें बहुत सहजतापूर्ण ढंग से होंगी। अपने सगे–संबंधियों व मित्रों की संगति में बिताने के लिए आप कुछ खाली समय निकालने में सक्षम होंगे। आपका घरेलू जीवन आनन्दपूर्ण व सुखमय होगा।

## लग्न दशा

03:02:2022-08:02:2022

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, लग्नेश नीचस्थ या वक्री या अस्त या ग्रसित है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। लग्न दशा आपके लिए उत्तम अवधि नहीं हो सकती है। अतः आपको अपने सभी मामलों में सामान्यतः सावधान व सतक्र रहना चाहिए एवं अपने स्वास्थ्य का अधिक ध्यान रखना चाहिए। इस अवधि के दौरान किसी भी शुभ और महत्वपूर्ण कार्य की शुरूआत करना अथवा किसी लम्बी यात्रा के लिए प्रस्थान करना फलदायक नहीं हो सकता है। हालांकि आपके कार्यस्थल की स्थिति कुछ हद तक बिगड़ सकती है। यद्यपि सामान्य लोग आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे, फिर भी आपके वरिष्ठ/अधिकारी आपको दबाने का प्रयास कर सकते हैं एवं तक्रसंगत रूप से आपको मिलने वाला श्रेय किसी और को दे सकते हैं। या फिर आपको अन्यायपूर्वक बहुत छोटी अथवा बिना किसी गलती के दोषी ठहराया जा सकता है।

## चंद्र दशा

09:02:2022-08:03:2022

इस वर्ष आपकी वर्षफल कुण्डली में, चंद्रमा उच्चस्थ या अपनी राशि में है एवं यह ग्रसित नहीं है। चंद्रमा की दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। आपकी आय एवं अर्जित लाभ में वृद्धि होगी एवं आपका घरेलू जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण होगा। आप आभूषण व कुछ सम्पत्ति खरीदने के लिए अच्छी रकम खर्च कर सकते हैं। आप अपने संबंधियों व मित्रों से मिलने के लिए कुछ छोटी यात्राएं कर सकते हैं। आप पिकनिक व भ्रमण का भी आनन्द प्राप्त कर सकते हैं।

## गुरु दशा

09:03:2022-19:03:2022

श्श इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, गुरु उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते है। अतः गुरु की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। सामान्यतः आपके सभी मामलें भली भांति

चलेंगे। आपके पेशे के क्षेत्र में चीजें बहुत सहजतापूर्ण ढंग से होंगी। अपने सगे–संबंधियों व मित्रों की संगति में बिताने के लिए आप कुछ खाली समय निकालने में सक्षम होंगे।

## रवि दशा

**20:03:2022-17:04:2022**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, सूर्य उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित नहीं है। समग्र रूप से यह एक उदासीन योग का निर्माण करता है। अतः सूर्य की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। हालांकि आपको अपने कार्यस्थल पर कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है एवं आप अपने किसी वरिष्ठ अथवा सहकर्मी के साथ मामूली असहमति अथवा गलतफहमी के कारण झुंझलाहट महसूस कर सकते हैं।

## मंगल दशा

**18:04:2022-09:08:2022**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मंगल उपचय भाव (तीसरे या छठें या दसवें या ग्यारहवें) में स्थित है। यह नीचस्थ अथवा अस्त या ग्रसित होने के कारण दूषित नहीं है। वास्तव में यह एक अनुकूल योग है एवं सूर्य की दशा आपके लिए उपयोगी व लाभदायक साबित होगी। आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे एवं इस अवधि के दौरान कुछ विशेष उपलब्धि हासिल करेंगे। वरिष्ठ एवं सरकारी अधिकारी आपके प्रति अनुकूल होंगे एवं आपको उनसे समर्थन व लाभ प्राप्त हो सकता है।

## शनि दशा

**10:08:2022-16:11:2022**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, शनि उच्चस्थ अथवा अपनी राशि में स्थित है एवं यह अस्त या ग्रसित होने से दूषित नहीं है। शनि की दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। आपको नऐ परिचितों एवं विदेशी स्रोतों से लाभ व समर्थन प्राप्त होगा। आपका परिचय कुछ दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों के साथ हो सकता है, जिसके कारण आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। आपकी आय में वृद्धि होगी एवं आपके स्तर में सुधार होगा। आपमें संतोष की भावना विकसित होगी, किन्तु अपने प्रयुक्त किए जाने वाले साधनों/उपायों पर आपको नजर रखना चाहिए। साथी आपको सावधान व सतक्र रहना चाहिए, क्योंकि आपके किसी दुर्घटना का सामना करने और/या वातमय रोगों से पीड़ित होने का खतरा है।

## बुध दशा

**17:11:2022-20:12:2022**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, बुध नीचस्थ है या अस्त अथवा ग्रसित होने के कारण दूषित है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। बुध की दशा आपके लिए अच्छी अवधि नहीं हो सकती है। अतः आपको सावधान व सचेत रहना चाहिए एवं अपने स्वास्थ्य का उचित ध्यान रखना चाहिए। आप कफमय एवं वातमय रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। इस अवधि के दौरान किसी भी महत्वपूर्ण कार्य की शुरूआत अथवा किसी लम्बी यात्रा के लिए प्रस्थान करना अधिक फलदायक नहीं हो सकता है। आपके कार्यस्थल की स्थिति कुछ–कुछ बिगड़ सकती है एवं अपने

किसी सहकर्मी से विवाद होने के कारण आप चिड़चिड़े हो सकते हैं।

# ज्योतिष सारिणी

| | SAMPLE | ज्योतिष सारिणी |
|---|---|---|
| जन्म दिनाकं | 21:12:1945 | 22:12:2022 |
| दिन | शुक्रवार | वृहस्पतिवार |
| ज्योतिषिय वार | शुक्रवार | बुधवार |
| जन्म समय | 11:34:00 | 05:41:50 |
| जन्म स्थान | ranchi | ranchi |
| अक्षांश | 023:20:00N | 023:20:00N |
| रेखांश | 085:19:00E | 085:19:00E |
| यु./ग्रीष्म समय संस्कार | -00:00 | -00:00 |
| जी. एम. टी. समय | 006:03:00 | 000:11:50 |
| स्थानीय समय संस्कार | 000:11:15 hrs | 000:11:16 hrs |
| स्थानीय समय | 011:45:15 hrs | 005:53:06 hrs |
| सांपातिक काल | 017:43:03 hrs | 011:55:15 hrs |
| सूर्योदय | 06:28:24AM | 06:28:50AM |
| सूर्यास्त | 05:04:58PM | 05:05:26PM |

| | | |
|---|---|---|
| लग्न | मीन | वृश्चिक |
| लग्नाधिपति | गुरु | मंगल |
| राशि (चन्द्रमा) | कर्क | वृश्चिक |
| राशिपति | चंद्र | मंगल |
| नक्षत्र | पुष्य | अनुराधा |
| नक्षत्रपति | शनि | शनि |
| नक्षत्र चरण | 1 | 4 |
| पाया | रजत | स्वर्ण |
| ऋतु | हेमन्त | हेमन्त |
| मास | पौष कृष्ण | पौष कृष्ण |
| पक्ष | कृष्ण | कृष्ण |
| तिथि | तृतीया | चतुर्दशी |
| तिथि श्रेणी | जया | रिक्ता |
| तिथि पति | मंगल | शुक्र |
| करण | वनिज | विष्टी |
| करण श्रेणी | चर | चर |
| करणपति | मनिभद्र | यम |
| सूर्य सिद्धान्त योग | इन्द्रय | शूल |
| तत्व | जल | अग्नि |
| तत्वाधिपति | शुक्र | मंगल |
| विहग | पिंगला | वायस |
| वेध | पूर्वाशाढ़ | भरणी |

# ग्रह स्थिती वर्षफल

**Varhphal Years: 77 (2022-2023) Varhphal Date: 22:12:2022, Time: 05:41Hrs**

| ग्रह | राशि | अंश | नक्षत्र | विशेष |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | मीन | 01:13 | पूर्वाभाद(4) | |
| सूर्य(ग्र.) | धनु | 05:55 | मूला (2) | **मित्र राशि** |
| चन्द्रमा | कर्क | 04:53 | पुष्य (1) | **स्व राशि** |
| मंगल(व.) | कर्क | 08:17 | पुष्य (2) | **नीच राशि** |
| बुध | वृश्चिक | 14:56 | अनुराधा (4) | **सम राशि** |
| बृहस्पति | तुला | 00:18 | चित्रा (3) | **शत्रु राशि** |
| शुक्र | वृश्चिक | 25:47 | ज्येष्ठा (3) | **सम राशि** |
| शनि(व.) | कर्क | 00:04 | पुनर्वसु (4) | **शत्रु राशि** |
| राहु(व.) | मिथुन | 06:56 | अरिद्रा (1) | **मित्र राशि** |
| केतु(व.) | धनु | 06:56 | मूला (3) | **स्व नक्षत्र** |
| हर्षल(व.) | वृष | 21:45 | रोहिणी (4) | ..... |
| नेपच्यून | कन्या | 15:24 | हस्ता (2) | ..... |
| प्लूटो(व.) | कर्क | 18:23 | अश्लेषा (1) | ..... |

| ग्रह | राशि | अंश | नक्षत्र | विशेष |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | वृश्चि | 25:01 | पूर्वाभाद(3) | |
| सूर्य | धनु | 05:55 | मूला (2) | मित्र राशि |
| चन्द्रमा | वृश्चि | 16:08 | अनुराधा (4) | नीच राशि |
| मंगल(व.) | वृष | 17:08 | रोहिणी (3) | सम राशि |
| बुध | धनु | 26:00 | पूर्वाषाढ़ (4) | सम राशि |
| बृहस्पति | मीन | 05:57 | उत्तरभाद्र (1) | स्व राशि |
| शुक्र | धनु | 20:41 | पूर्वाषाढ़ (3) | स्व राशि |
| शनि | मकर | 27:17 | धनिष्ठा (2) | स्व राशि |
| राहु(व.) | मेष | 16:33 | भरणी (1) | शत्रु राशि |
| केतु(व.) | तुला | 16:33 | स्वाति (3) | शत्रु राशि |
| हर्षल(व.) | मेष | 21:11 | भरणी (3) | .... |
| नेपच्यून | कुंभ | 28:33 | पूर्वाभाद (3) | .... |
| प्लूटो | मकर | 03:10 | उत्तरा (2) | .... |

## लग्न कुण्डली

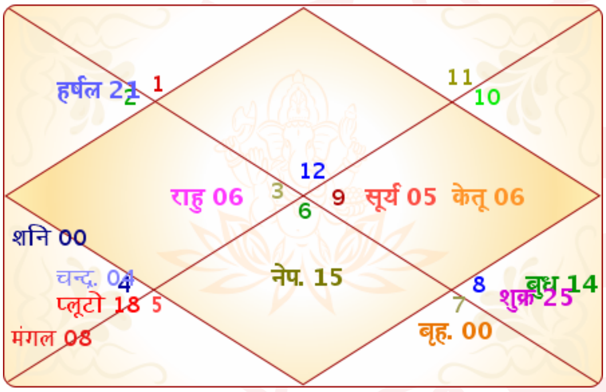


## चन्द्र कुण्डली

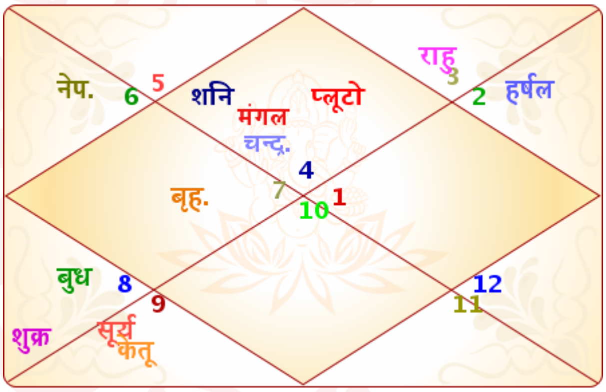


## लग्न कुण्डली ( वर्षफल )

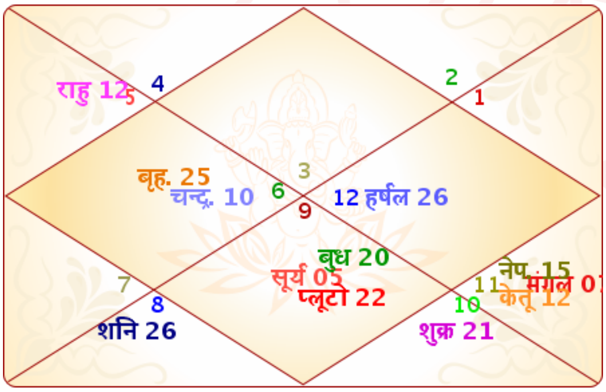


## चन्द्र कुण्डली ( वर्षफल )

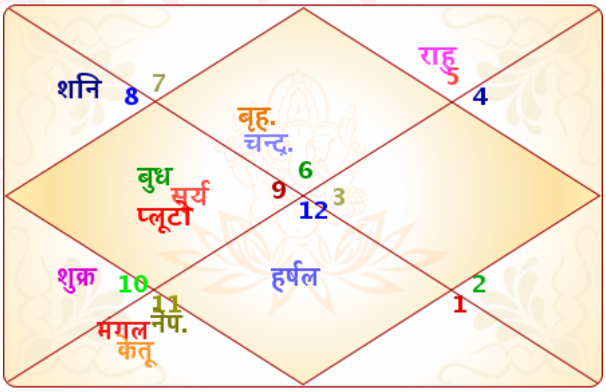

# द्वादश वर्ग कुण्डली

लग्न कुण्डली

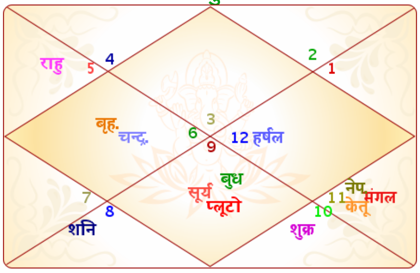


होरा कुण्डली

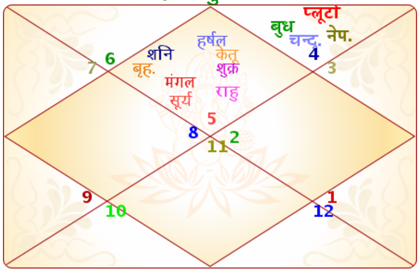


द्रेष्काण कुण्डली

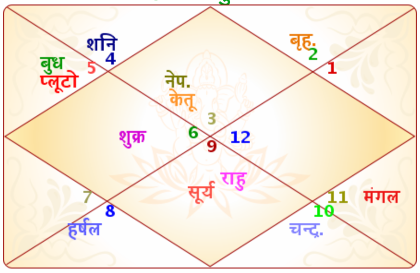


चतुर्थांश कुण्डली

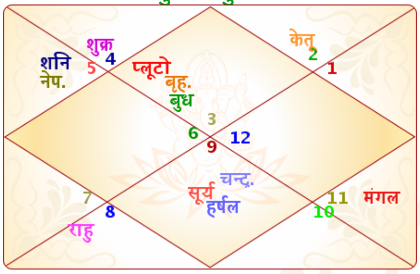


पंचमांश कुण्डली

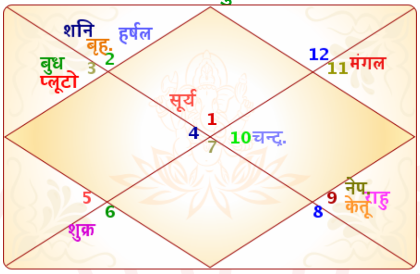


षष्टमांश कुण्डली

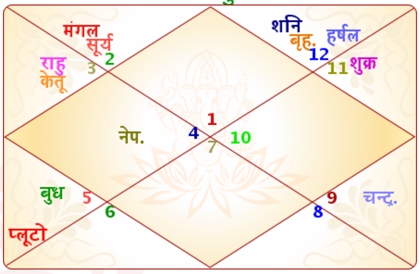


सप्तमांश कुण्डली

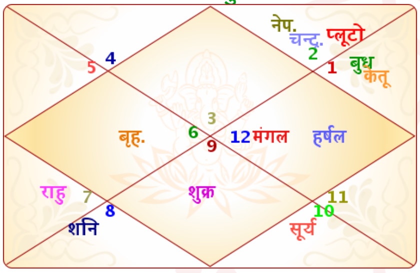


अष्टमांश कुण्डली

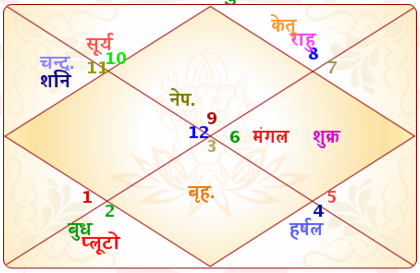


नवांश कुण्डली

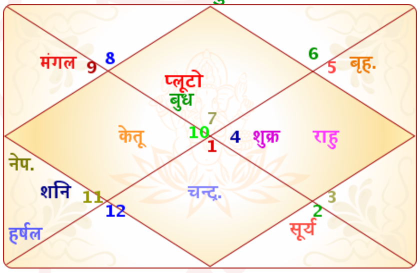


चर्तुविशांश कुण्डली

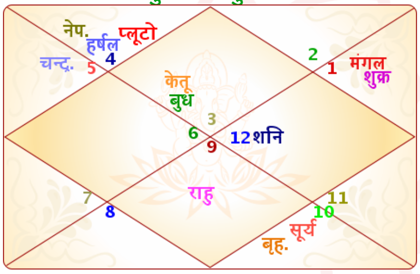


एकादशांश कुण्डली

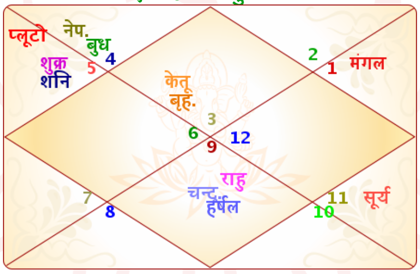


द्वादशांश कुण्डली

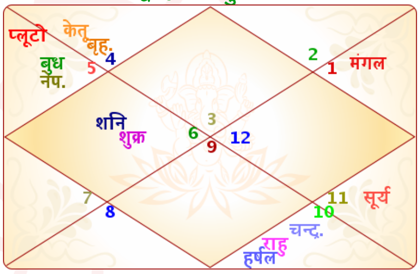


## वर्षफल कुण्डली में ग्रहों की दृष्टि

| | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहू | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रवि | .... | सम | सम | प्र.शत्रु | गु.शत्रु | प्र.शत्रु | सम | प्र.प्रेम | गु.प्रेम |
| चंद्र | सम | .... | प्र.शत्रु | सम | प्र.प्रेम | सम | गु.प्रेम | सम | सम |
| मंगळ | सम | प्र.शत्रु | .... | सम | गु.प्रेम | सम | प्र.प्रेम | सम | सम |
| बुध | प्र.शत्रु | सम | सम | .... | गु.शत्रु | प्र.शत्रु | सम | प्र.प्रेम | गु.प्रेम |
| गुरु | गु.शत्रु | प्र.प्रेम | गु.प्रेम | गु.शत्रु | .... | गु.शत्रु | गु.प्रेम | सम | सम |
| शुक्र | प्र.शत्रु | सम | सम | प्र.शत्रु | गु.शत्रु | .... | सम | प्र.प्रेम | गु.प्रेम |
| शनि | सम | गु.प्रेम | प्र.प्रेम | सम | गु.प्रेम | सम | .... | गु.शत्रु | गु.शत्रु |
| राहू | प्र.प्रेम | सम | सम | प्र.प्रेम | सम | प्र.प्रेम | गु.शत्रु | .... | प्र.शत्रु |
| केतु | गु.प्रेम | सम | सम | गु.प्रेम | सम | गु.प्रेम | गु.शत्रु | प्र.शत्रु | .... |

प्र.प्रेमः–प्रकट प्रेम दृष्टि ,गु.प्रेमः–गुप्त प्रेम दृष्टि ,प्र.शत्रुः–प्रकट शत्रु दृष्टि ,गु.शत्रुः–गुप्त शत्रु दृष्टि ,समः–सम दृष्टि ,

# वर्षफल कुण्डली में ग्रहों का बल

Varhphal Years: 77 (2022-2023) Varhphal Date: 22:12:2022, Time: 05:41Hrs

## पंचवर्गीय बल

| क्र0स0 | बल | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | क्षेत्र बल | 7.5 | 7.5 | 15.0 | 7.5 | 30.0 | 7.5 | 30.0 |
| 2 | उच्च बल | 6.21 | 1.46 | 7.87 | 8.78 | 6.77 | 9.3 | 9.19 |
| 3 | हद्दा बल | 3.75 | 7.5 | 11.25 | 7.5 | 3.75 | 3.75 | 11.25 |
| 4 | द्रेक्कन बल | 2.5 | 5.0 | 2.5 | 5.0 | 7.5 | 5.0 | 5.0 |
| 5 | नवांश बल | 1.25 | 1.25 | 2.5 | 2.5 | 1.25 | 5.0 | 2.5 |
| | योग | 5.3 | 5.68 | 9.78 | 7.82 | 12.32 | 7.64 | 14.48 |
| | तुलनात्मक बल | साधारण | साधारण | साधारण | साधारण | बलशाली | साधारण | बलशाली |

## द्वादश वर्गीय बल

| क्र0स0 | बल | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | राशि बल | 0 | 0 | 0 | 0 | +2 | 0 | +2 |
| 2 | होरा बल | +2 | 0 | 0 | 0 | -1 | 0 | 0 |
| 3 | द्रेक्कन बल | 0 | -1 | 0 | 0 | +2 | 0 | 0 |
| 4 | चतुर्थाशं बल | 0 | 0 | +2 | +2 | +2 | 0 | 0 |
| 5 | पंचमाशं बल | 0 | -1 | -1 | 0 | -1 | 0 | 0 |
| 6 | षष्टाशं बल | 0 | -1 | -1 | +2 | -1 | 0 | -1 |
| 7 | सप्तमाशं बल | 0 | 0 | -1 | +2 | 0 | 0 | +2 |
| 8 | अष्टमाशं बल | 0 | -1 | -1 | +2 | -1 | +2 | -1 |
| 9 | नवाशं बल | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | +2 | 0 |
| 10 | दसाशं बल | 0 | -1 | 0 | 0 | +2 | 0 | 0 |
| 11 | एकादसाशं बल | 0 | 0 | +2 | +2 | 0 | 0 | -1 |
| 12 | द्वादशाशं बल | 0 | 0 | +2 | 0 | 0 | 0 | -1 |
| | योग | +2 | -5 | +2 | +10 | +4 | +4 | 0 |
| | तुलनात्मक बल | साधारण | बहुत बुरा | साधारण | साधारण | अच्छा | अच्छा | सम |

## हर्ष बल

| क्र0स0 | बल | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | स्थान बल | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 |
| 2 | क्षेत्र बल | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 5.0 |
| 3 | ओज–युग्म बल | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 5.0 | 5.0 | 5.0 | 5.0 |
| 4 | दिवा–रात्रि बल | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 5.0 | 5.0 |
| | योग | 0 | 10 | 0 | 10 | 10 | 10 | 15 |
| | तुलनात्मक बल | निर्बबली | मध्यबली | निर्बबली | मध्यबली | मध्यबली | मध्यबली | पर्णबली |

# वर्षफल सहम

Varhphal Years: 77 (2022-2023) Varhphal Date: 22:12:2022, Time: 05:41Hrs

| क्र0स0 | सहम का नाम | राशि | अंश | सहम अधिपति | 11 भाव पति | 8 भाव पति |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | पुण्य सहम (भाग्य) | धनु | 014:48:45 | बृहस्पति | शुक्र | ... |
| 2 | विद्या सहम | धनु | 005:15:00 | बृहस्पति | शुक्र | ... |
| 3 | यश सहम | कन्या | 003:53:33 | बुध | चन्द्रमा | ... |
| 4 | मित्र सहम (मित्र) | कन्या | 029:32:40 | बुध | चन्द्रमा | ... |
| 5 | महात्य सहम (महानता) | वृष | 027:22:00 | शुक्र | बृहस्पति | ... |
| 6 | आशा सहम (इच्छा) | मेष | 014:53:03 | मंगल | शनि | ... |
| 7 | समर्थ सहम (पुरूषार्थ) | मीन | 006:13:40 | बृहस्पति | शनि | ... |
| 8 | भ्रात्रि सहम (भाई) | कुम्भ | 003:41:16 | शनि | बृहस्पति | ... |
| 9 | गौरव सहम (सम्मान) | कन्या | 016:07:14 | बुध | चन्द्रमा | ... |
| 10 | पितृ सहम (पिता) | तुला | 003:39:47 | शुक्र | सूर्य | ... |
| 11 | राजा सहम (अधिकार) | तुला | 003:39:47 | शुक्र | सूर्य | ... |
| 12 | मात्रि सहम (माता) | धनु | 029:34:09 | बृहस्पति | शुक्र | ... |
| 13 | अपत्य सहम (संतान) | कन्या | 005:13:31 | बुध | चन्द्रमा | ... |
| 14 | जीव सहम (जीवन) | कुम्भ | 003:41:16 | शनि | बृहस्पति | ... |
| 15 | कर्म सहम (कार्रवाई) | कर्क | 003:53:09 | चन्द्रमा | शुक्र | ... |
| 16 | रोग सहम | धनु | 003:55:02 | बृहस्पति | ... | चन्द्रमा |
| 17 | काली सहम (कलह, संघर्ष) | मीन | 006:13:40 | बृहस्पति | ... | शुक्र |
| 18 | शास्त्र सहम (उच्च शिक्षा) | वृश्चिक | 017:20:45 | मंगल | बुध | ... |
| 19 | बन्धु सहम (रिश्तेदार) | वृश्चिक | 015:10:28 | मंगल | बुध | ... |
| 20 | निधन सहम | वृष | 012:58:45 | शुक्र | ... | बृहस्पति |
| 21 | परदेश सहम (विदेश) | मेष | 009:48:46 | मंगल | शनि | ... |
| 22 | धन सहम (धन) | मीन | 002:47:07 | बृहस्पति | शनि | ... |
| 23 | प्रदर सहम (परस्त्रीगमन) | वृश्चिक | 010:15:29 | मंगल | बुध | ... |
| 24 | वनिज सहम (धंधा) | मकर | 004:53:18 | शनि | मंगल | ... |
| 25 | कार्यसिद्धि सहम (सफलता) | कर्क | 028:17:51 | चन्द्रमा | शुक्र | ... |
| 26 | विवाह सहम | कुम्भ | 001:38:35 | शनि | बृहस्पति | ... |
| 27 | संताप सहम (दुःख) | मीन | 017:02:53 | बृहस्पति | ... | शुक्र |
| 28 | श्रद्धा सहम (भक्ति) | वृष | 021:29:46 | शुक्र | बृहस्पति | ... |
| 29 | प्रिति सहम (प्यार) | धनु | 022:29:53 | बृहस्पति | शुक्र | ... |
| 30 | जाड्य सहम (स्थाई रोग) | कन्या | 006:08:58 | बुध | ... | मंगल |
| 31 | ब्यापार सहम | मेष | 014:53:03 | मंगल | शनि | ... |
| 32 | शत्रु सहम | सिहं | 005:10:42 | सूर्य | ... | बृहस्पति |
| 33 | जलपत्तन सहम (विदेश यात्रा) | मिथुन | 007:19:35 | बुध | मंगल | ... |
| 34 | बंधन सहम (कारावास) | कुम्भ | 007:30:50 | शनि | ... | बुध |
| 35 | अपघात सहम (आकस्मिक दुर्घटना) | तुला | 013:58:54 | शुक्र | ... | शुक्र |
| 36 | वित्तहानि सहम | मकर | 017:31:01 | शनि | ... | सूर्य |
| 37 | त्रिक स्फूट (दुर्घटना) | वृश्चिक | 003:50:02 | मंगल | ... | बुध |
| 38 | घात स्थान (अनहोनी) | मिथुन | 023:29:07 | बुध | ... | शनि |

# त्रिपताकी चक्र

**Varhphal Years: 77 (2022-2023) Varhphal Date: 22:12:2022, Time: 05:41Hrs**

| क्र0स0 | राशि | ग्रह |
|---|---|---|
| 1 | 8 | |
| 2 | 9 | मंगल |
| 3 | 10 | बृहस्पति, राहु |
| 4 | 11 | बुध, शुक्र |
| 5 | 12 | सूर्य, चन्द्रमा |
| 6 | 1 | |
| 7 | 2 | |
| 8 | 3 | |
| 9 | 4 | केतु |
| 10 | 5 | |
| 11 | 6 | |
| 12 | 7 | शनि |

## त्रिपताकी चक्र में वेध

**लग्न** : सूर्य , चन्द्र , शनि , केतु

**सूर्य** : सूर्य , चन्द्र , शनि , केतु , चन्द्र , शनि , केतु

**चन्द्रमा** : सूर्य , शनि , केतु

**मंगल** : गुरू , राहु , केतु

**बुध** : शुक्र

**बृहस्पति** : मंग. , राहु

**शुक्र** : बुध

**शनि** : सूर्य , चन्द्र

## ग्रहों द्वारा चन्द्र वेध का फल

**सूर्य :**

आत्मविश्वास की कमी, बदनामी, वृथा अंहकार, दोषयुक्त आँखें, पिता को कठिनाई, मानसिक तनाव, चिड़चिड़ापन, उच्च ज्वर, पित्तजनित रोग तथा निराशायें।

**मंगल :**

शत्रुओं से भय, हथियार, रक्त अनियमितत, दुर्घटनायें, शरीर में दर्द और चोट, शीघ्र क्रोधित होना, लड़ाई–झगड़ा, संघर्ष, हिंसा, लेकिन साथ ही ज्ञान व धन की प्राप्ति भी।

**बुध :**

ज्ञान व बुद्धिमत्ता में वृद्धि, तीक्ष्ण बुद्धि, अच्छे लोगों की संगति और धन का लाभ। लेकिन यदि दूषित है, तो व्यक्ति उतावला व क्षुद्र दिमाग वाला होता है, परिवार की नाराजगी, तनाव और चिन्ताओं की प्राप्ति तथा शत्रुओं से भय।

**बृहस्पति :**

शांति और प्रसन्नता, सभ्य लोगों की संगति, तीर्थ यात्रा, धार्मिक कार्यों के प्रति रूझान, सामाजिक स्तर में उन्नति, धन का लाभ, उपक्रमों के सफलता, संतान का जन्म, और सामान्य समृद्धि।

**शुक्र :**

इच्छाओं की पूर्ति, इन्द्रिय सुख की प्राप्ति, धन–संपदा व शिक्षा की प्राप्ति, शत्रुओं पर विजय। लेकिन शारीरिक सुख के प्रति अत्यधिक लालसा होने के कारण मानसिक व्यग्रता, जल से भय और वातमय विकार।

**शनि :**

तुच्छ व निम्न स्तर के लोगों के साथ संगति, स्वार्थी, तानाशाही, गरीबी, वियोग, यौन विकृति, शारीरिक रोग, सर्दी व जुकाम के साथ–साथ वातमय विकार।

**राहु :**

गंभीर बीमारी/आशंका, मान–प्रतिष्ठा/धन की हानि, विदेशी स्रोतों से कठिनाईयां, उदासीन मन, डरपोक स्वभाव तथा अनेक प्रकार की कठिनाइयों से पीड़ित।

**केतु :**

अस्वस्थता, कमजोर पाचनशक्ति, अस्थिरता, आत्मिक व घुमन्तु प्रकृति, निराशा, चिन्तायें और दुख।

Varhphal Years: 77 (2022-2023) Varhphal Date: 22:12:2022, Time: 05:41Hrs

| मुद्दा योगिनी दशा | | | मुद्दा षोडशोत्तरी दशा | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दशा | अवधि | से | दशा | अवधि | से |
| सिद्धा (शुक्र) | 0.0 y.2.0 m.11 d. | 21:12:2022 | शुक्र | 0.0 y.1.0 m.26 d. | 21:12:2022 |
| संकटा (शनि) | 0.0 y.2.0 m.20 d. | 02:03:2023 | रवि | 0.0 y.1.0 m.5 d. | 15:02:2023 |
| मंगला (चन्द्रमा) | 0.0 y.0.0 m.10 d. | 22:05:2023 | मंगल | 0.0 y.1.0 m.8 d. | 22:03:2023 |
| पिगंला (सूर्य) | 0.0 y.0.0 m.20 d. | 01:06:2023 | गुरु | 0.0 y.1.0 m.11 d. | 29:04:2023 |
| धान्य (वृहस्पति) | 0.0 y.1.0 m.0 d. | 21:06:2023 | रवि | 0.0 y.1.0 m.5 d. | 09:06:2023 |
| भ्रमरि (मंगल) | 0.0 y.1.0 m.10 d. | 22:07:2023 | मंगल | 0.0 y.1.0 m.8 d. | 13:07:2023 |
| भभद्रिका (बुध) | 0.0 y.1.0 m.21 d. | 31:08:2023 | गुरु | 0.0 y.1.0 m.11 d. | 20:08:2023 |
| उल्का (शनि) | 0.0 y.2.0 m.0 d. | 21:10:2023 | शनि | 0.0 y.1.0 m.14 d. | 30:09:2023 |

## पत्ययनी दशा

| क्र0स0 | दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | रवि | 0.0 y.2.0 m.19 d. | 21:12:2022 |
| 2 | गुरु | 0.0 y.0.0 m.1 d. | 10:03:2023 |
| 3 | चंद्र | 0.0 y.4.0 m.15 d. | 10:03:2023 |
| 4 | मंगल | 0.0 y.0.0 m.14 d. | 25:07:2023 |
| 5 | शुक्र | 0.0 y.1.0 m.17 d. | 07:08:2023 |
| 6 | लग्न | 0.0 y.1.0 m.28 d. | 23:09:2023 |
| 7 | बुध | 0.0 y.0.0 m.13 d. | 20:11:2023 |
| 8 | शनि | 0.0 y.0.0 m.18 d. | 03:12:2023 |

## मुद्दा विंशोत्तरी दशा

| क्र0स0 | दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | चंद्र | 0.0 y.1.0 m.0 d. | 21:12:2022 |
| 2 | मंगल | 0.0 y.0.0 m.21 d. | 20:01:2023 |
| 3 | राहू | 0.0 y.1.0 m.24 d. | 10:02:2023 |
| 4 | गुरु | 0.0 y.1.0 m.19 d. | 06:04:2023 |
| 5 | शनि | 0.0 y.1.0 m.27 d. | 25:05:2023 |
| 6 | बुध | 0.0 y.1.0 m.21 d. | 22:07:2023 |
| 7 | केतु | 0.0 y.0.0 m.21 d. | 11:09:2023 |
| 8 | शुक्र | 0.0 y.2.0 m.0 d. | 03:10:2023 |
| 9 | रवि | 0.0 y.0.0 m.19 d. | 02:12:2023 |

## वर्ष जैमिनी चर दशा

| क्र0स0 | दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | वृश्चिक | 0.0 y.0.0 m.24 d. | 21:12:2022 |
| 2 | मिथुन | 0.0 y.1.0 m.10 d. | 14:01:2023 |
| 3 | मकर | 0.0 y.1.0 m.18 d. | 23:02:2023 |
| 4 | सिंह | 0.0 y.1.0 m.2 d. | 12:04:2023 |
| 5 | मीन | 0.0 y.1.0 m.18 d. | 14:05:2023 |
| 6 | तुला | 0.0 y.1.0 m.10 d. | 02:07:2023 |
| 7 | वृष | 0.0 y.0.0 m.20 d. | 11:08:2023 |
| 8 | धनु | 0.0 y.0.0 m.12 d. | 31:08:2023 |
| 9 | कर्क | 0.0 y.0.0 m.16 d. | 12:09:2023 |
| 10 | कुंभ | 0.0 y.1.0 m.14 d. | 28:09:2023 |
| 11 | कन्या | 0.0 y.1.0 m.6 d. | 11:11:2023 |
| 12 | मेष | 0.0 y.0.0 m.4 d. | 17:12:2023 |

# वर्षफल कुण्डली से महत्वपूर्ण भविष्यफल

**Varhphal Years: 77 (2022-2023) Varhphal Date: 22:12:2022, Time: 05:41Hrs**

## (अष्टक चक्र, ढुढिंराजा पद्धति, वर्षेश्वर और मुन्था)

आपकी वर्षफल कुण्डली में, पूर्व भाग में शेष बचता है, जबकि उत्तर भाग में कोई शेष नहीं बचता है, अतः आपका आगामी समय प्रयासपूर्ण हो सकता है– विशेषकर वर्ष के उत्तरार्द्ध में। यदि आपकी कुण्डली में संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आप धन के अवरूद्ध हो जाने के कारण अथवा हानि होने के कारण असुविधाओं का सामना कर सकते हैं।

आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्तमान वर्ष के लिए अष्टक चक्र सूचकांक ग्रह बुध है। यह ग्रह चतुर्थेश है। यदि आपकी वर्तमान आयु के लिए प्रासंगिक है तो इस वर्ष के दौरान आप किसी महाविद्यालय/पॉलिटेक्निक/संस्थान से एक शैक्षिक योग्यता (डिग्री या डिप्लोमा) प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्तमान वर्ष के लिए अष्टक चक्र सूचकांक ग्रह बुध है। यह ग्रह चंद्र–राशि से दशमेश है, जो कि लग्न से दसवें भाव में स्थित है। यदि आपकी वर्तमान आयु के लिए प्रासंगिक है तो इस वर्ष के दौरान आप कोई नया लाभप्रद रोजगार अथवा पदोन्नति प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, बृहस्पति वर्षेश्वर ग्रह है।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्षेश्वर ग्रह अपनी राशि में स्थित है। यह ना तो अस्त है और ना ही ग्रसित है। यह एक अनुकूल संकेत है तथा आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, जन्मकुण्डली का लग्नेश वर्षेश्वर है, जबकि यह ग्रह किसी त्रिक–भाव अर्थात छठें/आठवें/बारहवें में स्थित नहीं है। अतः यह एक अनुकूल योग है और आप कई मामलों में उल्लेखनीय रूप से भाग्यशाली होंगे। इस वर्ष के दौरान आपको कुछ विशेष उपलब्धियां प्राप्त हो सकती हैं। या फिर अथवा साथ ही, आपके परिवार में कुछ शुभ समारोह आयोजित हो सकते हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्षेश्वर एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है। परिणामस्वरूप आप भाग्यशाली होंगे। इस वर्ष के दौरान होने वाली घटनाएं बहुत सहज व सरल होंगी तथा आपको किसी अशुभ घटना अथवा अपने सामान्य मामलों में किसी आकस्मिक उतार–चढ़ाव का सामना नहीं करना पड़ेगा।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्षेश्वर वृहस्पति है। आपकी सम्पन्नता के सूर्य का उदय होगा और किस्मत आप पर अपने वरदानों की बौछार प्रचूर व पर्याप्त मात्रा में करेगी। आपको अधिकारियों से लाभ व सम्मान

प्राप्त होगा— इनमें से कुछ के साथ आप सौहार्दपूर्ण संबंध अथवा घनिष्ठ मित्रता स्थापित कर सकते हैं। आपका घरेलू जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण होगा तथा धार्मिक रूझान गहन होगा। विवाह अथवा संतान के जन्म से आपके परिवार में एक और सदस्य की वृद्धि हो सकती है। पवित्र धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन में आपकी रूचि में वृद्धि हो सकती है तथा आप धर्मार्थ गतिविधियों और मानवीय कर्मों में सक्रियता से भाग ले सकते हैं, जिसके लिए आपकी प्रशंसा हो सकती है।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था दसवें में है। यह एक अत्यंत प्रशंसनीय व अत्यधिक पुरस्कृत स्थिति है, इसलिए आप अत्यंत भाग्यशाली होंगे। आपकी आशावादीता को बहुत बढ़ावा मिलेगा एवं आप अत्यंत उर्जावान बनेंगे। आपके सभी प्रयास पर्याप्त रूप से फलदायक होंगे एवं आपकी कोई लम्बे समय से अभिलाषित महात्वाकांक्षा सिद्ध होगी। आपको अपने वरिष्ठों से प्रत्यक्ष समर्थन प्राप्त होगा एवं सरकारी स्रोतों से अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्त हो सकता है। जैसाकि यह स्थिति किसी को उच्चतम शिखर पर पहुंचाने में सक्षम कही जाती है, इसलिए आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति की एक बड़ी छलांग लगाने की उचित अपेक्षा कर सकते हैं एवं अपने समकालिनों को बहुत पीछे छोड़ सकते हैं। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, मनोबल ऊँचा होगा, खुशमिजाज एवं सुखी रहेंगे।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था–राशि सूर्य की राशि सिंह में है। आगामी वर्ष आपके लिए अनुकूल होगा। आपको अपने सभी प्रयासों में सफलता मिलेगी एवं अपने वरिष्ठों व अधिकारियों से समर्थन व लाभ प्राप्त होगा। आप बहुत उत्साही और आशावादी होंगे। पद व प्रतिष्ठा वाले व्यक्तियों से मित्रता स्थापित करने के लिए यह समय आपके लिए बहुत अनुकूल है। प्रबल संभावना है कि आपको एक नया चुनौतीपूर्ण रोजगार मिल सकता है या आप और अधिक प्रतिष्ठित पद पर आसीन हो सकते हैं। आपकी लोकप्रियता में वृद्धि होगी एवं सामान्यतः लोग आप से सम्मानजनक व्यवहार करेंगे।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था–राशि का स्वामी जन्मकुण्डली में जिस राशि में स्थित है, वर्षफल कुण्डली में भी उसी राशि में स्थित है। इसलिए यह वर्ष महत्वपूर्ण और घटनाओं से भरा होगा। जैसाकि वर्षफल कुण्डली में मुन्था–राशि के स्वामी की एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रहों के साथ युति है अथवा दृष्टि (ताजिक) संबंध है, जबकि किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ इसकी युति अथवा दृष्टि (ताजिक) संबंध नहीं है, इसलिए वर्ष के आरम्भ में एवं वर्ष के अन्त में भी कुछ शुभ अवसर या घटनाएं घटित होने की आशा है अर्थात इस वर्ष आपके जन्मदिन के कुछ दिनों के बाद एवं अगले वर्ष आपके जन्मदिन के कुछ दिनों से तुरन्त पहले।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था–राशि का स्वामी जन्मकुण्डली में जिस राशि में स्थित है, वर्षफल कुण्डली में भी उसी राशि में स्थित है। इसलिए यह वर्ष महत्वपूर्ण और घटनाओं से भरा होगा। जैसाकि वर्षफल कुण्डली में मुन्था–राशि के स्वामी की किसी भी ग्रह के साथ युति है अथवा दृष्टि (ताजिक) संबंध नहीं है, इसलिए वर्ष के आरम्भ में एवं वर्ष के अन्त में भी कुछ अनुकूल अवसर या घटनाएं घटित होने की आशा है

अर्थात इस वर्ष एक बार आपके जन्मदिन के कुछ दिनों के बाद एवं अगले वर्ष आपके जन्मदिन के कुछ दिनों से तुरन्त पहले।

# वर्षफल सहम से भविष्यफल

**Varhphal Years: 77 (2022-2023) Varhphal Date: 22:12:2022, Time: 05:41Hrs**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, पितृ–सहम एकादशेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा एकादशेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 23:02:2023 और 20:10:2023 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ अनुकूल घटनाएं (इस विशेष सहम से संबंधित) हो सकती हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, राजा–सहम एकादशेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा एकादशेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 23:02:2023 और 20:10:2023 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ अनुकूल घटनाएं (इस विशेष सहम से संबंधित) हो सकती हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, प्रीति–सहम एकादशेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा एकादशेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 20:12:2023 और 24:12:2022 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ अनुकूल घटनाएं (इस विशेष सहम से संबंधित) हो सकती हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, शत्रु–सहम अष्टमेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा अष्टमेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 23:07:2023 और 22:05:2023 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ प्रतिकूल घटनाएं (इस विशेष सहम से संबंधित) हो सकती हैं।

# वर्षफल

**Varhphal Years: 77 (2022-2023) Varhphal Date: 22:12:2022, Time: 05:41Hrs**

## वर्षेश और अन्य कारकों का फल

आपका वर्षेश गुरु इस वर्ष मध्यम बली है। अतः यह वर्ष आपके लिए अल्प मात्रा में शुभ फल प्रदान करेगा। इस वर्ष आपका स्थानान्तरण हो सकता है। आपके मान–सम्मान में कमी आ सकती है। शारीरिक रूप से आप कमजोर व अस्वस्थ्य हो सकते हैं। आपकी रूचि किसी वैज्ञानिक विषय में होगी एवं आपके ज्ञान में वृद्धि होगी। आपका अपने सगे–संबंधियों या अन्य लोगों से विवाद हो सकता है। आपके शत्रुओं में वृद्धि हो सकती है एवं कुछ नए शत्रु भी बन सकते हैं। व्यर्थ के व्यय से धन हानि की भी संभावनाएं हैं।

इस वर्ष आपके वर्षेश गुरु की शनि के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः यह वर्ष आपके लिए प्रतिकूल साबित हो सकता है। आप वात विकार, फोड़े–फुन्सी, घाव आदि से पीड़ित हो सकते हैं। आपको दुर्व्यसनों से बचने का प्रयास करना चाहिए, क्योंकि इनसे आपको हानि होगी। इस वर्ष आपको कलंकित करने का प्रयास किया जा सकता है, जिससे आपके मान–सम्मान को हानि पहुंच सकती है। आपको अपना स्थान भी परिवर्तित करना पड़ सकता है। नीच या दुष्ट प्रकृति के व्यक्तियों से दूर रहना चाहिए, क्योंकि ऐसे व्यक्तियों से हानि के योग हैं। आपके लिए पश्चिम दिशा की ओर यात्रा करना चिंताजनक हो सकता है। चौपायों आदि से दुर्घटना आदि का खतरा हो सकता है। आप काले रंग की वस्तुओं का व्यापार करके लाभ कमा सकते हैं। अपने मित्रों के साथ आपके संबंध अच्छे रहेंगे।

इस वर्ष आपकी वर्षफल कुण्डली में वर्षेश पांचवें भाव में उपस्थित है। अतः यह वर्ष आपके धार्मिक रूझान को दर्शा रहा है। आपमें धर्म के प्रति आस्था में वृद्धि होगी और स्वभाव में विनम्रता आएगी। अपने परिजनों के प्रति आपके मन में दया की भावना उत्पन्न होगी। आपमें उत्कृष्ट बुद्धि का विकास होगा एवं विद्वान व्यक्तियों से सम्पक्र और मित्रता बढ़ेगी।

## जन्म लग्न का फल

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न की राशि आपकी वर्षकुण्डली में पांचवें भाव में स्थित है। अतः इस वर्ष आपको अपने द्वारा किए गए सभी कार्यों में सफलता प्राप्त होगी, आपकी उद्यमशीलता बनी रहेगी, तथा यदि आप किसी परीक्षा में बैठ रहे हैं, तो आपको उसमें भी सफलता मिलेगी। आपके घर–परिवार में शुभ समारोहों का आयोजन हो सकता है एवं आपको संतान संबंधी सुख की भी प्राप्ति होने के योग हैं।

## कुण्डली के भावों का उनके कारकत्व के अनुसार विश्लेषण

**लग्न भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्ष कुण्डली में चंद्रमा लग्न में स्थित है। अतः इस वर्ष आपके खर्चों में वृद्धि हो सकती है, किन्तु साथ ही

आपको धन लाभ के नये स्रोत प्राप्त होंगे एवं आपको धन की प्राप्ति होगी। आप स्वास्थ्य की दृष्टि से पीड़ित एवं कमजोर हो सकते हैं। आप श्वास, कफ, नेत्र, मुख आदि से संबंधित रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। अतः आपको अपने स्वास्थ्य का पर्याप्तख्याल रखना चाहिए एवं उचित उपचार करवाना चाहिए।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश सातवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको अपने पेशे से लाभ होगा। आपकी आकांक्षाएं पूरी होंगी तथा आप प्रसन्नचित्त रहेंगे। आपको अपने जीवनसाथी से भी लाभ प्राप्त होगा।

आपकी वर्षकुण्डली में, जन्म लग्नेश, वर्ष लग्नेश और मुन्थेश केन्द्र–त्रिकोण या द्वितीय–एकादश में स्थित हैं। आपको धन–सम्पदा, सोना–चाँदी, वस्त्र–आभूषण, सुख–सुविधा आदि की प्राप्ति होगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, जन्मराशि का स्वामी शक्तिशाली स्थिति में है। यह आपके लिए भाग्यवर्द्धक साबित होगा।

**द्वितीय भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली मे सूर्य दूसरे भाव में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए अनुकूल नहीं है। आपके परिवार में असंतुष्टि के भाव उत्पन्न होने से प्रायः कलह–क्लेश हो सकते हैं। अतः आपको घर में शांति बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। आपके शत्रु भी आपके लिए परेशानियां खड़ी कर सकते हैं तथा आपका कोई नया शत्रु उत्पन्न हो सकता है, जो आपको हानि पहुंचाने का प्रयास कर सकता है। चोरी, आगजनी या गुम हो जाने से आपको धन की हानि हो सकती है, अतः पर्याप्त सावधानी बरतना चाहिए। इस वर्ष आपके नियोक्ता या राज्यपक्ष की ओर से कोई प्रतिकूल स्थिति उत्पन्न होने के कारण आपके विरूद्ध कार्यवाही की जा सकती है।आपकी वर्षकुण्डली में बुध दूसरे भाव में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए बहुत अनुकूल होगा। आपकी बौद्धिक क्षमता प्रखर होगी, आप नीतिपूर्ण व्यवहार करेंगे एवं उन्नतिपूर्ण कार्य करेंगे। आप अपनी बातों से लोगों को प्रभावित एवं अपनी ओर आकर्षित करेंगे। आपके उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे एवं आपका समर्थन करेंगे। इस वर्ष आपको अत्यधिक धन की प्राप्ति होने के योग हैं। आपकी संतान उन्नति करेगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके मित्रों की संख्या में वृद्धि होगी। सुखी एवं खुशहाल रहेंगे। आपके स्वजनों में आपकी प्रतिष्ठा व मान–सम्मान बना रहेगा।आपकी वर्षकुण्डली में, शुक्र दूसरे भाव में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए अनुकूल होगा। इस वर्ष आप शारीरिक दृष्टि से चुस्त–दुरूस्त रहेंगे। आपका मन प्रसन्नचित्त रहेगा। आप विपरीत लिंग के व्यक्तियों की ओर आकर्षित हो सकते हैं एवं उनके साथ आपके सुखद संबंध बन सकते हैं। इस वर्ष आपको उत्तम मात्रा में धन की प्राप्ति होने की संभावना है। आपके मित्रों की संख्या में वृद्धि होगी। आप अपने शत्रुओं को परास्त कर उनका नाश करेंगे। आप अल्प प्रयासों से ही अपने कार्यों में वांछित सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, द्वितीयेश पांचवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको अपनी संतान के द्वारा लाभ प्राप्त होने की संभावना है, एवं आपको अपने लेखन कार्य से भी लाभ प्राप्त होने के योग हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य जिस राशि में विराजमान है, आपकी वर्षकुण्डली में उसी राशि में दूसरे भाव में स्थित

है। इस वर्ष आपको प्रचुर धन की प्राप्ति होगी।

**तृतीय भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, शनि तीसरे भाव (पराक्रम–भाव)में स्थित है। इसलिए, इस वर्ष आपको अपने कार्यों में सफलता मिलेगी। अपने विरोधियों को परास्त करेंगे। आपका अपने अधिकरियों एवं सहकर्मियों के साथ अच्छे संबंध रहेंगे एवं मान–सम्मान प्राप्त होगा। आप सभी प्रकार की चिन्ताओं से मुक्त रहेंगे एवं मन प्रसन्नचित्त रहेगा। आपको पर्याप्त मात्रा में धन की प्राप्ति होगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, तृतीयेश तीसरे भाव में स्थित है। इस वर्ष आप अपने जीवनसाथी के साथ सुखमय जीवन का आनन्द लेंगे। आपका अपने भाई–बहनों से भी अच्छे संबंध रहेंगे। आपकी रूचि संगीत में हो सकती है एवं आप इसका आनन्द लेंगे।

**चतुर्थ भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, चतुर्थेश तीसरे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको भूमि व भवन के संबंध में व्यय करना पड़ सकता है।

**पंचम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में बृहस्पति पांचवें भाव में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए अनुकूल फलदायक होगा। इस वर्ष आपको संतान का सुख प्राप्त होगा, उनसे उचित सम्मान मिलेगा एवं संबंध स्नेहपूर्ण बने रहेंगे। आपके नये मित्र बनेंगे। आपकी बुद्धि का विकास होगा एवं शिक्षा प्राप्ति के सुनहरे अवसर प्राप्त होंगे। आप अपनी बौद्धिक क्षमता एवं विवेक से अपने कार्यों में सफलता अर्जित करेंगे। आपकी वांछित इच्छाओं की पूर्ति होगी। आपके मान–सम्मान एवं ख्याति में वृद्धि होगी। लोग आपके प्रति आदर का भाव रखेंगे एवं आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे।

आपकी वर्षकुण्डली में, पंचमेश पांचवें भाव में स्थित है तथा इसकी किसी पाप ग्रह के साथ युति है या ऐसे ग्रह की इस पर दृष्टि है, इसलिए आपको इस वर्ष धनोपार्जन में कठिनाइयों व अवरोधों का सामना करना पड़ सकता है। इसके अतिरिक्त संतान संबंधी क्लेश या परेशानी होने की भी संभावना है।

आपकी वर्षकुण्डली में, वर्षेश शक्तिशाली स्थित में है और पाँचवें भाव में है। इस वर्ष आपको पुत्र रत्न की प्राप्ति होने के योग हैं। (अगर आप उम्र के उस दौर में हैं तो अन्यथा आपको अपने पुत्र अथवा पुत्री के किसी कार्य से सम्मान मिलेगा)

आपकी वर्षकुण्डली में, सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति और शुक्र में से कोई एक वर्षेश होकर पाँचवें या ग्यारहवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको पुत्र की प्राप्ति होगी। (अगर आप उम्र के उस दौर में हैं तो अन्यथा आपको अपने पुत्र

अथवा पुत्री के किसी कार्य से सम्मान मिलेगा)

आपकी जन्मकुण्डली में बुध या शुक्र जिस राशि में स्थित हैं, वह राशि आपकी वर्षकुण्डली में लग्न में स्थित है। इस वर्ष आपको पुत्र रत्न की प्राप्ति होने के प्रबल योग हैं। (अगर आप उम्र के उस दौर में हैं तो अन्यथा आपको अपने पुत्र अथवा पुत्री के किसी कार्य से सम्मान मिलेगा)

आपकी वर्षकुण्डली में, बृहस्पति वर्षेश होकर पाँचवें या ग्यारहवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको पुत्र संतान की प्राप्ति होगी एवं संतानों से सुख मिलेगा। (अगर आप उम्र के उस दौर में हैं तो अन्यथा आपको अपने पुत्र अथवा पुत्री के किसी कार्य से सम्मान मिलेगा)

**षष्टम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, राहु छठवें भाव में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए अनुकूल फलदायक रहेगा। इस वर्ष आपका पारिवारिक जीवन सुख–शांतिपूर्ण व्यतीत होगा एवं आप अपने परिवार के साथ प्रसन्नचित्त होकर जीवन का आनन्द लेंगे। आप शारीरिक रूप से स्वस्थ्य एवं रोगमुक्त रहेंगे। आपको अपने कार्यक्षेत्र में सफलता व प्रगति के अवसर मिलेंगे। आप अपने शत्रुओं को परास्त करेंगे।

आपकी वर्षकुण्डली में, षष्ठेश सातवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको अपने शत्रुओं से लाभ हो सकता है, किन्तु साथ ही आप मानसिक रूप से किसी भय से ग्रसित भी रह सकते हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश और षष्ठेश दोनों एक ही साथ एक ही भाव में विराजमान हैं। इस वर्ष आप शारीरिक रूप से थोड़ा अस्वस्थ रह सकते हैं।

**सप्तम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में मंगल सातवें भाव में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए अनुकूल नहीं हो सकता है। आपके जीवनसाथी एवं संतान को कष्ट हो सकता है। आपको भी कुछ शारीरिक कष्ट हो सकता है। आपको अपने निवास स्थान से किसी कारणवश दूर जाना पड़ सकता है। आपके घर–परिवार में विरोध एवं कलह की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। आपके मन में भी अनैतिक भावना पनप सकती है।

आपकी वर्षकुण्डली में, सप्तमेश दूसरे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपका अपने जीवनसाथी से विवाद या मनमुटाव हो सकता है। आपका मन अस्थिर एवं व्याकुल रह सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, मंगल सातवें भाव में स्थित है। इसलिए इस वर्ष सदैव आपको स्त्री संबंधी किसी ना किसी प्रकार का कष्ट होता रहेगा।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश सातवें या बारहवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको लड़ाई–झगड़े व विवाद में हार

का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, चंद्रमा जिस राशि में स्थित है, उसी राशि का स्वामी चंद्रमा पर दृष्टि डाल रहा है। इस वर्ष आपकी खोई हुई वस्तु वापस मिल जायेगी।

**अष्टम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, अष्टमेश दूसरे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको अपने जीवनसाथी से किसी प्रकार का कष्ट हो सकता है। इसके अतिरिक्त आपको धन हानि की स्थिति का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, चंद्रमा मेष या वृश्चिक राशियों में है। इस वर्ष आपको राजदण्ड का भय हो सकता है।

**नवम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, नवमेश लग्न में स्थित है। यह वर्ष आपके लिए भाग्यवर्द्धक साबित होगा। इस वर्ष आपको अपने किसी बड़े व महत्वपूर्ण कार्य में सफलता मिल सकती है।

आपकी वर्षकुण्डली में, नौवां भाव (भाग्य भाव) शनि से युत या दृष्ट है। इस वर्ष आपकी उन्नति के मार्ग में बाधायें उत्पन्न हो सकती हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, मंगल वर्षेश है और केन्द्र में स्थित है। इस वर्ष आप दूरस्थ स्थानों की यात्रायें करेंगे।

**दशम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, दशमेश दूसरे भाव में स्थित है। इस वर्ष आप धनोपार्जन करेंगे एवं स्वयं के अर्जित धन से उत्तम भोजन व सुख–सुविधाओं का आनन्द प्राप्त करेंगे।

आपकी वर्षकुण्डली में, बुध या बृहस्पति के साथ शुक्र की युति है। इस वर्ष आपको श्रेष्ठ नौकरी मिलने की प्रबल संभावना है।

आपकी वर्षकुण्डली में, दसवें भाव में सूर्य के साथ या सिंह राशि में मुन्था है। इस वर्ष आपको उच्च राजकीय नौकरी प्राप्त होने की संभावना सर्वाधिक है।

आपकी वर्षकुण्डली में, वर्षेश या लग्नेश उच्चस्थ, स्वगृही या मूल त्रिकोण राशि में स्थित है। इस वर्ष आपकी उन्नति की संभावनायें प्रबल होंगी।

## एकादश भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में, एकादशेश दूसरे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको उत्तम धन–लाभ की प्राप्ति होगी। आपका अपने मित्रों से मधुर संबंध रहेगा एवं उनसे सुख व सहयोग मिलेगा।

आपकी वर्षकुण्डली में, मुन्था दसवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको शिक्षा से लाभ की प्राप्ति होने की संभावना है।

## द्वादश भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में, केतु बारहवें भाव में स्थित है। यदि आप अध्ययनरत हैं, तो आपके अध्ययन या प्रशिक्षण के मार्ग में बाधाएं उत्पन्न हो सकती है तथा आपकी सफलता की संभावनाएं कम हो सकती हैं। आपके तेज, अधिकार एवं प्रताप में कमी आ सकती है, तथा आप निम्न स्तर के अधिकारी की भांति हो सकते हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, द्वादशेश दूसरे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको धन की हानि हो सकती है। यदि द्वादशेश दूसरे भाव में शुभ ग्रहों से युत है या ऐसे ग्रहों की इस पर दृष्टि है, तो आपको सवारी का लाभ व सुख प्राप्त हो सकता है।

# पत्ययनी दशाफल

**Varhphal Years: 77 (2022-2023) Varhphal Date: 22:12:2022, 05:41Hrs**

## रवि दशा

**21:12:2022-09:03:2023**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, सूर्य उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित नहीं है। समग्र रूप से यह एक उदासीन योग का निर्माण करता है। अतः सूर्य की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। हालांकि आपको अपने कार्यस्थल पर कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है एवं आप अपने किसी वरिष्ठ अथवा सहकर्मी के साथ मामूली असहमति अथवा गलतफहमी के कारण झुंझलाहट महसूस कर सकते हैं।

## गुरु दशा

**10:03:2023-09:03:2023**

वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, गुरु उच्चस्थ अथवा अपनी राशि में स्थित है एवं यह अस्त या ग्रसित होने से दूषित नहीं है। गुरु की दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। आपको अपने वरिष्ठों एवं अधिकारियों से लाभ व समर्थन प्राप्त होगा। आप उच्च पद वाले लोगों से मित्रता स्थापित करेंगे एवं आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। आपकी आय और अर्जित लाभ में वृद्धि होगी एवं आपका घरेलू जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा। आपको सभी प्रकार से संतुष्टि प्राप्त होगी। धर्म और पवित्र प्राचीन गंथों के अध्ययन में आपकी रूचि बढ़ेगी। आप धर्मपरायण लोगों से मिलेंगे एवं धार्मिक प्रवचन सुनेंगे। यदि आप व्यापारी हैं तो यह अवधि आपके लिए उपयोगी, सहजतापूर्ण व लाभदायक होगी।

## चंद्र दशा

**10:03:2023-24:07:2023**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, चंद्रमा नीचस्थ या राहु (या केतु) के समीप होने के कारण दूषित है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। चंद्रमा की दशा आपके लिए अच्छी अवधि नहीं हो सकती है। अतः आपको अपने सभी मामलों में सामान्यतः सावधान व सचेत रहना चाहिए एवं अपने स्वास्थ्य का उचित ध्यान रखना चाहिए। इस अवधि के दौरान किसी भी शुभ या महत्वपूर्ण कार्य की शुरूआत अथवा किसी लम्बी यात्रा के लिए प्रस्थान करना फलदायक नहीं हो सकता है। आपके कार्यस्थल की स्थिति थोड़ी समस्याजनक हो सकती है एवं आपके अपने कुछ सहकर्मियों या वरिष्ठों से विवाद हो सकते हैं।

## मंगल दशा

**25:07:2023-06:08:2023**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मंगल उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते है। अतः मंगल की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। हालांकि आपको अपने कार्यस्थल पर कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। या फिर आप अपने सगे या चचेरे भाई या पड़ोसी के साथ

संपत्ति–विवाद में फंस सकते हैं, जिसके कारण आप झुंझलाहट महसूस कर सकते हैं।

## शुक्र दशा

**07:08:2023-22:09:2023**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, शुक्र उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते है। अतः शुक्र की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। सामान्यतः आपके सभी मामलें भली भांति चलेंगे। आपके पेशे के क्षेत्र में चीजें बहुत सहजतापूर्ण ढंग से होंगी। अपने सगे–संबंधियों व मित्रों की संगति में बिताने के लिए आप कुछ खाली समय निकालने में सक्षम होंगे। आपका घरेलू जीवन आनन्दपूर्ण व सुखमय होगा।

## लग्न दशा

**23:09:2023-19:11:2023**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, लग्नेश नीचस्थ या वक्री या अस्त या ग्रसित है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। लग्न दशा आपके लिए उत्तम अवधि नहीं हो सकती है। अतः आपको अपने सभी मामलों में सामान्यतः सावधान व सतर्क रहना चाहिए एवं अपने स्वास्थ्य का अधिक ध्यान रखना चाहिए। इस अवधि के दौरान किसी भी शुभ और महत्वपूर्ण कार्य की शुरूआत करना अथवा किसी लम्बी यात्रा के लिए प्रस्थान करना फलदायक नहीं हो सकता है। हालांकि आपके कार्यस्थल की स्थिति कुछ हद तक बिगड़ सकती है। यद्यपि सामान्य लोग आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे, फिर भी आपके वरिष्ठ/अधिकारी आपको दबाने का प्रयास कर सकते हैं एवं तर्कसंगत रूप से आपको मिलने वाला श्रेय किसी और को दे सकते हैं। या फिर आपको अन्यायपूर्वक बहुत छोटी अथवा बिना किसी गलती के दोषी ठहराया जा सकता है।

## बुध दशा

**20:11:2023-02:12:2023**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, बुध उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते है। अतः बुध की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। सामान्यतः आपके सभी मामलें भली भांति चलेंगे। आपके पेशे के क्षेत्र में चीजें बहुत सहजतापूर्ण ढंग से होंगी। अपने सगे–संबंधियों व मित्रों के साथ मिलने–जुलने के लिए आप कुछ खाली समय निकालने में सक्षम होंगे।

## शनि दशा

**03:12:2023-20:12:2023**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, शनि उच्चस्थ अथवा अपनी राशि में स्थित है एवं यह अस्त या ग्रसित होने से दूषित नहीं है। शनि की दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। आपको नए परिचितों एवं विदेशी स्रोतों से लाभ व समर्थन प्राप्त होगा। आपका परिचय कुछ दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों के साथ हो सकता है, जिसके कारण आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। आपकी आय में वृद्धि होगी एवं आपके स्तर में सुधार होगा। आपमें

संतोष की भावना विकसित होगी, किन्तु अपने प्रयुक्त किए जाने वाले साधनों/उपायों पर आपको नजर रखना चाहिए। साथी आपको सावधान व सतक्र रहना चाहिए, क्योंकि आपके किसी दुर्घटना का सामना करने और/या वातमय रोगों से पीड़ित होने का खतरा है।

# ज्योतिष सारिणी

| | SAMPLE | ज्योतिष सारिणी |
|---|---|---|
| जन्म दिनाकं | 21:12:1945 | 22:12:2023 |
| दिन | शुक्रवार | शुक्रवार |
| ज्योतिषिय वार | शुक्रवार | शुक्रवार |
| जन्म समय | 11:34:00 | 11:42:46 |
| जन्म स्थान | ranchi | ranchi |
| अक्षांश | 023:20:00N | 023:20:00N |
| रेखांश | 085:19:00E | 085:19:00E |
| यु./ग्रीष्म समय संस्कार | -00:00 | -00:00 |
| जी. एम. टी. समय | 006:03:00 | 006:12:46 |
| स्थानीय समय संस्कार | 000:11:15 hrs | 000:11:15 hrs |
| स्थानीय समय | 011:45:15 hrs | 011:54:01 hrs |
| सांपातिक काल | 017:43:03 hrs | 017:56:13 hrs |
| सूर्योदय | 06:28:24AM | 06:28:45AM |
| सूर्यास्त | 05:04:58PM | 05:05:20PM |

| | | |
|---|---|---|
| लग्न | मीन | मीन |
| लग्नाधिपति | गुरु | गुरु |
| राशि (चन्द्रमा) | कर्क | मेष |
| राशिपति | चंद्र | मंगल |
| नक्षत्र | पुष्य | अश्विनी |
| नक्षत्रपति | शनि | केतु |
| नक्षत्र चरण | 1 | 3 |
| पाया | रजत | रजत |
| ऋतु | हेमन्त | हेमन्त |
| मास | पौष कृष्ण | अग्रहन शुक्ल |
| पक्ष | कृष्ण | शुक्ल |
| तिथि | तृतीया | एकादशी |
| तिथि श्रेणी | जया | नन्दा |
| तिथि पति | मंगल | मंगल |
| करण | वनिज | वनिज |
| करण श्रेणी | चर | चर |
| करणपति | मनिभद्र | मनिभद्र |
| सूर्य सिद्धान्त योग | इन्द्रय | शिव |
| तत्व | जल | पृथ्वी |
| तत्वाधिपति | शुक्र | बुध |
| विहग | पिंगला | भारधंक |
| वेध | पूर्वाशाढ़ | ज्येष्ठा |

# ग्रह स्थिती वर्षफल

**Varhphal Years: 78 (2023-2024) Varhphal Date: 22:12:2023, Time: 11:42Hrs**

| ग्रह | राशि | अंश | नक्षत्र | विशेष |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | मीन | 01:13 | पूर्वाभाद(4) | |
| सूर्य(ग्र.) | धनु | 05:55 | मूला (2) | मित्र राशि |
| चन्द्रमा | कर्क | 04:53 | पुष्य (1) | स्व राशि |
| मंगल(व.) | कर्क | 08:17 | पुष्य (2) | नीच राशि |
| बुध | वृश्चिक | 14:56 | अनुराधा (4) | सम राशि |
| बृहस्पति | तुला | 00:18 | चित्रा (3) | शत्रु राशि |
| शुक्र | वृश्चिक | 25:47 | ज्येष्ठा (3) | सम राशि |
| शनि(व.) | कर्क | 00:04 | पुनर्वसु (4) | शत्रु राशि |
| राहु(व.) | मिथुन | 06:56 | अरिद्रा (1) | मित्र राशि |
| केतु(व.) | धनु | 06:56 | मूला (3) | स्व नक्षत्र |
| हर्षल(व.) | वृष | 21:45 | रोहिणी (4) | ..... |
| नेपच्यून | कन्या | 15:24 | हस्ता (2) | ..... |
| प्लूटो(व.) | कर्क | 18:23 | अश्लेषा (1) | ..... |

| ग्रह | राशि | अंश | नक्षत्र | विशेष |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | मीन | 04:32 | पूर्वाभाद(1) | |
| सूर्य | धनु | 05:55 | मूला (2) | मित्र राशि |
| चन्द्रमा | मेष | 07:43 | अश्विनी (3) | सम राशि |
| मंगल(अ.) | वृश्चि | 25:55 | ज्येष्ठा (3) | स्व राशि |
| बुध(व.)(अ.) | धनु | 07:11 | मूला (3) | सम राशि |
| बृहस्पति(व.) | मेष | 11:31 | अश्विनी (4) | मित्र राशि |
| शुक्र | तुला | 26:37 | विशाखा (2) | स्व राशि |
| शनि | कुंभ | 08:14 | शतभिषा (1) | स्व राशि |
| राहु(व.) | मीन | 27:12 | रेवती (4) | सम राशि |
| केतु(व.) | कन्या | 27:12 | चित्रा (2) | सम राशि |
| हर्षल(व.) | मेष | 25:26 | भरणी (4) | .... |
| नेपच्यून | मीन | 00:46 | पूर्वाभाद (4) | .... |
| प्लूटो | मकर | 04:52 | उत्तरा (3) | .... |

## लग्न कुण्डली

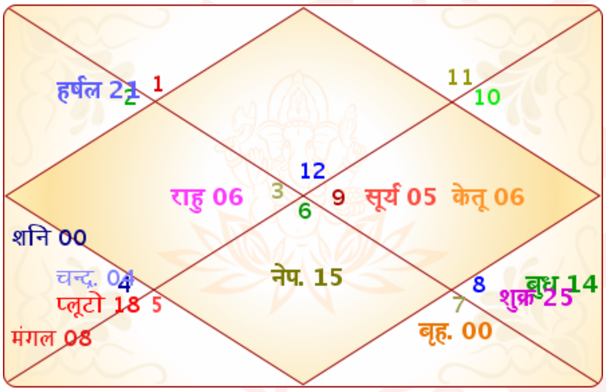


## चन्द्र कुण्डली

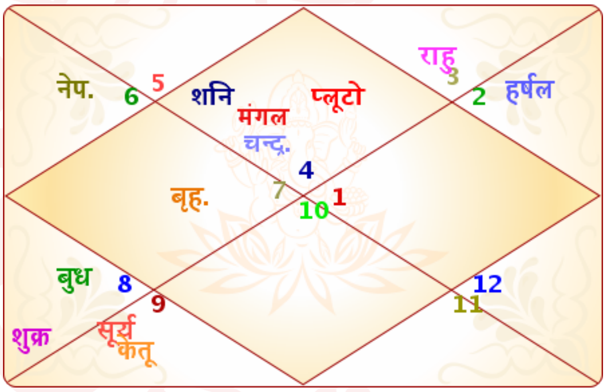


## लग्न कुण्डली ( वर्षफल )

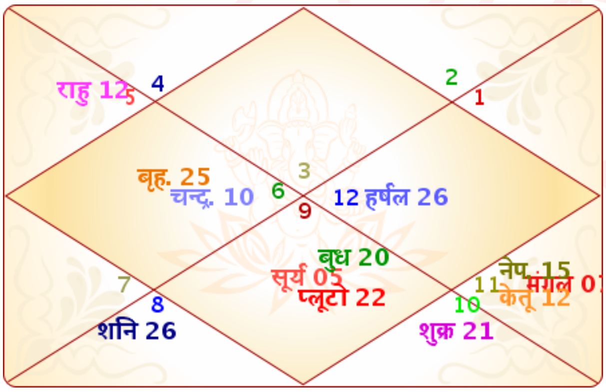


## चन्द्र कुण्डली ( वर्षफल )

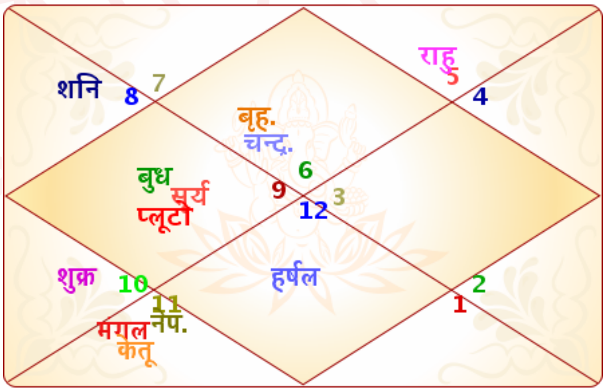

# द्वादश वर्ग कुण्डली

लग्न कुण्डली

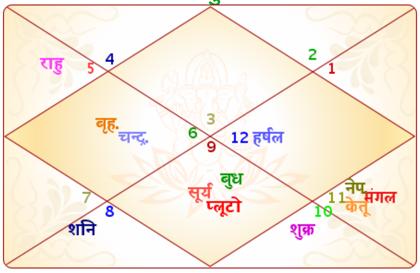


होरा कुण्डली

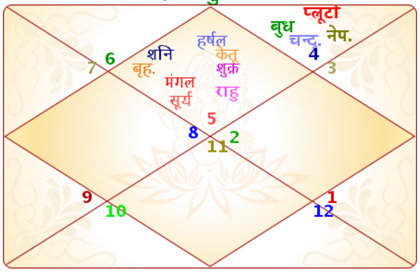


द्रेष्काण कुण्डली

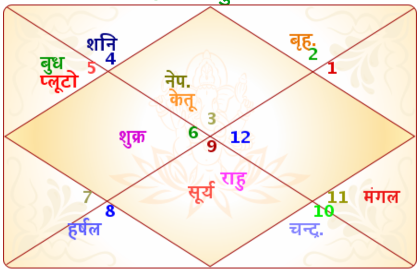


चतुर्थांश कुण्डली

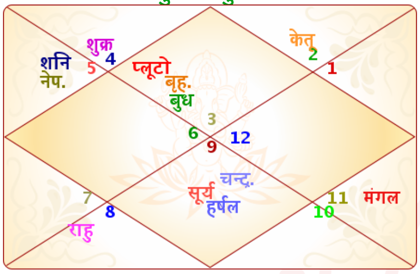


पंचमांश कुण्डली

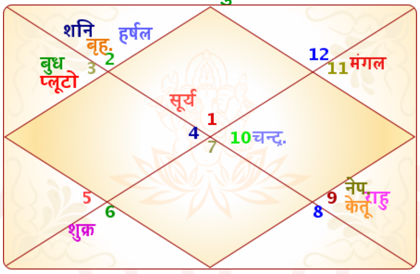


षष्टमांश कुण्डली

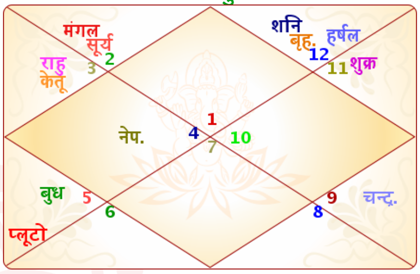


सप्तमांश कुण्डली

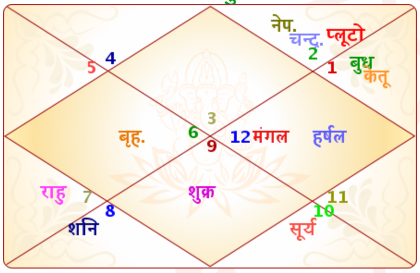


अष्टमांश कुण्डली

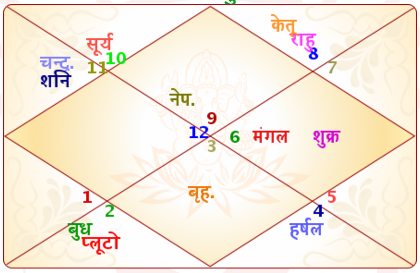


नवांश कुण्डली

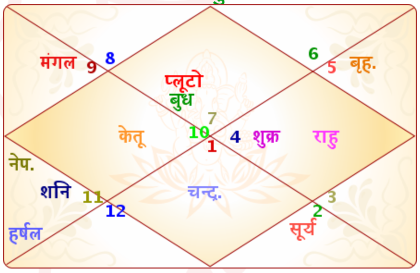


चर्तुविशांश कुण्डली

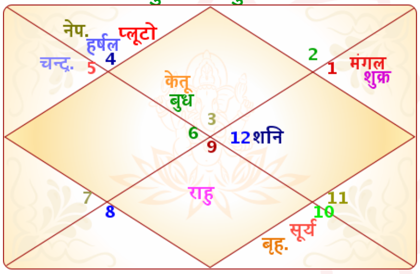


एकादशांश कुण्डली

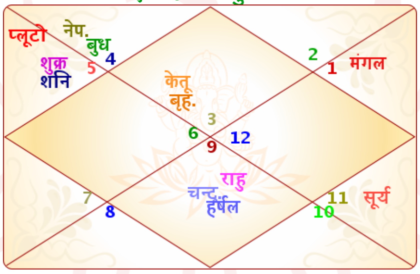


द्वादशांश कुण्डली

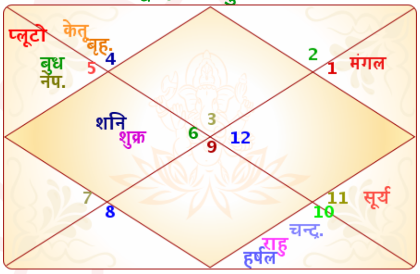


## वर्षफल कुण्डली में ग्रहों की दृष्टि

| | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहू | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रवि | .... | प्र.प्रेम | सम | प्र.शत्रु | प्र.प्रेम | गु.प्रेम | गु.प्रेम | गु.शत्रु | गु.शत्रु |
| चंद्र | प्र.प्रेम | .... | सम | प्र.प्रेम | प्र.शत्रु | प्र.शत्रु | गु.प्रेम | सम | सम |
| मंगळ | सम | सम | .... | सम | सम | सम | गु.शत्रु | प्र.प्रेम | गु.प्रेम |
| बुध | प्र.शत्रु | प्र.प्रेम | सम | .... | प्र.प्रेम | गु.प्रेम | गु.प्रेम | गु.शत्रु | गु.शत्रु |
| गुरु | प्र.प्रेम | प्र.शत्रु | सम | प्र.प्रेम | .... | प्र.शत्रु | गु.प्रेम | सम | सम |
| शुक्र | गु.प्रेम | प्र.शत्रु | सम | गु.प्रेम | प्र.शत्रु | .... | प्र.प्रेम | सम | सम |
| शनि | गु.प्रेम | गु.प्रेम | गु.शत्रु | गु.प्रेम | गु.प्रेम | प्र.प्रेम | .... | सम | सम |
| राहू | गु.शत्रु | सम | प्र.प्रेम | गु.शत्रु | सम | सम | सम | .... | प्र.शत्रु |
| केतु | गु.शत्रु | सम | गु.प्रेम | गु.शत्रु | सम | सम | सम | प्र.शत्रु | .... |

प्र.प्रेमः–प्रकट प्रेम दृष्टि ,गु.प्रेमः–गुप्त प्रेम दृष्टि ,प्र.शत्रुः–प्रकट शत्रु दृष्टि ,गु.शत्रुः–गुप्त शत्रु दृष्टि ,समः–सम दृष्टि ,

# वर्षफल कुण्डली में ग्रहों का बल

Varhphal Years: 78 (2023-2024) Varhphal Date: 22:12:2023, Time: 11:42Hrs

## पंचवर्गीय बल

| क्र0स0 | बल | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | क्षेत्र बल | 22.5 | 15.0 | 30.0 | 22.5 | 15.0 | 30.0 | 30.0 |
| 2 | उच्च बल | 6.21 | 17.19 | 13.1 | 10.87 | 10.73 | 3.29 | 7.97 |
| 3 | हद्दा बल | 11.25 | 3.75 | 3.75 | 11.25 | 3.75 | 15.0 | 11.25 |
| 4 | द्रेक्कन बल | 2.5 | 5.0 | 5.0 | 10.0 | 7.5 | 2.5 | 7.5 |
| 5 | नवांश बल | 3.75 | 3.75 | 1.25 | 5.0 | 1.25 | 5.0 | 3.75 |
| | योग | 11.55 | 11.17 | 13.28 | 14.9 | 9.56 | 13.95 | 15.12 |
| | तुलनात्मक बल | बलशाली | बलशाली | बलशाली | बलशाली | साधारण | बलशाली | पूर्णबली |

## द्वादश वर्गीय बल

| क्र0स0 | बल | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | राशि बल | -1 | 0 | +2 | -1 | 0 | +2 | +2 |
| 2 | होरा बल | +2 | -1 | 0 | 0 | -1 | 0 | -1 |
| 3 | द्रेक्कन बल | -1 | 0 | 0 | -1 | -1 | -1 | +2 |
| 4 | चतुर्थांश बल | -1 | +2 | 0 | -1 | 0 | 0 | -1 |
| 5 | पंचमाशं बल | 0 | -1 | 0 | -1 | -1 | +2 | +2 |
| 6 | षष्टाशं बल | -1 | 0 | 0 | -1 | -1 | -1 | -1 |
| 7 | सप्तमाशं बल | -1 | 0 | +2 | -1 | -1 | 0 | -1 |
| 8 | अष्टमाशं बल | -1 | -1 | 0 | -1 | 0 | 0 | -1 |
| 9 | नवाशं बल | -1 | -1 | 0 | +2 | 0 | +2 | -1 |
| 10 | दसाशं बल | -1 | -1 | 0 | -1 | 0 | -1 | 0 |
| 11 | एकादसाशं बल | -1 | -1 | 0 | -1 | -1 | 0 | -1 |
| 12 | द्वादशाशं बल | -1 | +2 | 0 | -1 | -1 | -1 | -1 |
| | योग | -8 | -2 | +4 | -8 | -7 | +2 | -2 |
| | तुलनात्मक बल | निकृष्ट | सम | अच्छा | निकृष्ट | बहुत बुरा | साधारण | सम |

## हर्ष बल

| क्र0स0 | बल | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | स्थान बल | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 5.0 |
| 2 | क्षेत्र बल | 0.0 | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 0.0 | 5.0 | 5.0 |
| 3 | ओज–युग्म बल | 5.0 | 5.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 5.0 | 0.0 |
| 4 | दिवा–रात्रि बल | 5.0 | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 0.0 |
| | योग | 10 | 5 | 10 | 0 | 5 | 10 | 10 |
| | तुलनात्मक बल | मध्यबली | अल्पबली | मध्यबली | निर्बबली | अल्पबली | मध्यबली | मध्यबली |

# वर्षफल सहम

Varhphal Years: 78 (2023-2024) Varhphal Date: 22:12:2023, Time: 11:42Hrs

| क्र0स0 | सहम का नाम | राशि | अंश | सहम अधिपति | 11 भाव पति | 8 भाव पति |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | पुण्य सहम (भाग्य) | कर्क | 006:21:01 | चन्द्रमा | शुक्र | ... |
| 2 | विद्या सहम | धनु | 002:44:23 | बृहस्पति | शुक्र | ... |
| 3 | यश सहम | धनु | 009:43:16 | बृहस्पति | शुक्र | ... |
| 4 | मित्र सहम (मित्र) | सिहं | 001:48:18 | सूर्य | बुध | ... |
| 5 | महात्य सहम (महानता) | तुला | 014:57:49 | शुक्र | सूर्य | ... |
| 6 | आशा सहम (इच्छा) | मिथुन | 016:51:39 | बुध | मंगल | ... |
| 7 | समर्थ सहम (पुरूषार्थ) | वृश्चिक | 018:57:03 | मंगल | बुध | ... |
| 8 | भ्रात्रि सहम (भाई) | वृष | 007:49:26 | शुक्र | बृहस्पति | ... |
| 9 | गौरव सहम (सम्मान) | मकर | 009:43:16 | शनि | मंगल | ... |
| 10 | पितृ सहम (पिता) | मिथुन | 006:51:57 | बुध | मंगल | ... |
| 11 | राजा सहम (अधिकार) | मिथुन | 006:51:57 | बुध | मंगल | ... |
| 12 | मात्रि सहम (माता) | सिहं | 015:38:52 | सूर्य | बुध | ... |
| 13 | अपत्य सहम (संतान) | मेष | 008:20:22 | मंगल | शनि | ... |
| 14 | जीव सहम (जीवन) | कुम्भ | 001:15:59 | शनि | बृहस्पति | ... |
| 15 | कर्म सहम (कार्रवाई) | कुम्भ | 023:17:03 | शनि | बृहस्पति | ... |
| 16 | रोग सहम | कुम्भ | 001:21:30 | शनि | ... | बुध |
| 17 | काली सहम (कलह, संघर्ष) | कर्क | 020:08:22 | चन्द्रमा | ... | शनि |
| 18 | शास्त्र सहम (उच्च शिक्षा) | कुम्भ | 010:28:18 | शनि | बृहस्पति | ... |
| 19 | बन्धु सहम (रिश्तेदार) | धनु | 004:00:22 | बृहस्पति | शुक्र | ... |
| 20 | निधन सहम | तुला | 001:29:28 | शुक्र | ... | शुक्र |
| 21 | परदेश सहम (विदेश) | कुम्भ | 013:25:27 | शनि | बृहस्पति | ... |
| 22 | धन सहम (धन) | कर्क | 013:17:28 | चन्द्रमा | शुक्र | ... |
| 23 | प्रदर सहम (परस्त्रीगमन) | मकर | 025:14:51 | शनि | मंगल | ... |
| 24 | वनिज सहम (धंधा) | कर्क | 005:05:03 | चन्द्रमा | शुक्र | ... |
| 25 | कार्यसिद्धि सहम (सफलता) | कर्क | 013:50:50 | चन्द्रमा | शुक्र | ... |
| 26 | विवाह सहम | वृश्चिक | 022:55:37 | मंगल | बुध | ... |
| 27 | संताप सहम (दुःख) | कर्क | 005:11:37 | चन्द्रमा | ... | शनि |
| 28 | श्रद्धा सहम (भक्ति) | कुम्भ | 005:14:33 | शनि | बृहस्पति | ... |
| 29 | प्रिति सहम (प्यार) | वृश्चिक | 008:39:59 | मंगल | बुध | ... |
| 30 | जाड्य सहम (स्थाई रोग) | कन्या | 024:52:38 | बुध | ... | मंगल |
| 31 | ब्यापार सहम | धनु | 022:13:46 | बृहस्पति | शुक्र | ... |
| 32 | शत्रु सहम | धनु | 022:13:46 | बृहस्पति | ... | चन्द्रमा |
| 33 | जलपत्तन सहम (विदेश यात्रा) | सिहं | 011:17:51 | सूर्य | बुध | ... |
| 34 | बंधन सहम (कारावास) | सिहं | 002:38:53 | सूर्य | ... | बृहस्पति |
| 35 | अपघात सहम (आकस्मिक दुर्घटना) | मकर | 013:17:28 | शनि | ... | सूर्य |
| 36 | वित्तहानि सहम | मीन | 000:58:32 | बृहस्पति | ... | शुक्र |
| 37 | त्रिक स्फूट (दुर्घटना) | वृष | 010:48:14 | शुक्र | ... | बृहस्पति |
| 38 | घात स्थान (अनहोनी) | धनु | 004:30:40 | बृहस्पति | ... | चन्द्रमा |

# त्रिपताकी चक्र

**Varhphal Years: 78 (2023-2024) Varhphal Date: 22:12:2023, Time: 11:42Hrs**

| क्र0स0 | राशि | ग्रह |
|---|---|---|
| 1 | 12 | सूर्य, चन्द्रमा |
| 2 | 1 | |
| 3 | 2 | |
| 4 | 3 | |
| 5 | 4 | केतु |
| 6 | 5 | |
| 7 | 6 | |
| 8 | 7 | शनि |
| 9 | 8 | |
| 10 | 9 | मंगल |
| 11 | 10 | बृहस्पति, राहु |
| 12 | 11 | बुध, शुक्र |

## त्रिपताकी चक्र में वेध

**लग्न** : सूर्य , चन्द्र , मंग.
**सूर्य** : सूर्य , चन्द्र , मंग. , चन्द्र , मंग.
**चन्द्रमा** : सूर्य , मंग.
**मंगल** : सूर्य , चन्द्र
**बुध** : गुरू , शुक्र , शनि , राहु , केतु
**बृहस्पति** : बुध , शुक्र , राहु
**शुक्र** : बुध , गुरू , शनि , राहु , केतु
**शनि** : बुध , शुक्र

## ग्रहों द्वारा चन्द्र वेध का फल

**सूर्य :**

आत्मविश्वास की कमी, बदनामी, वृथा अंहकार, दोषयुक्त आँखें, पिता को कठिनाई, मानसिक तनाव, चिड़चिड़ापन, उच्च ज्वर, पित्तजनित रोग तथा निराशायें।

**मंगल :**

शत्रुओं से भय, हथियार, रक्त अनियमितत, दुर्घटनायें, शरीर में दर्द और चोट, शीघ्र क्रोधित होना, लड़ाई–झगड़ा, संघर्ष, हिंसा, लेकिन साथ ही ज्ञान व धन की प्राप्ति भी।

**बुध :**

ज्ञान व बुद्धिमत्ता में वृद्धि, तीक्ष्ण बुद्धि, अच्छे लोगों की संगति और धन का लाभ। लेकिन यदि दूषित है, तो व्यक्ति उतावला व क्षुद्र दिमाग वाला होता है, परिवार की नाराजगी, तनाव और चिन्ताओं की प्राप्ति तथा शत्रुओं से भय।

**बृहस्पति :**

शांति और प्रसन्नता, सभ्य लोगों की संगति, तीर्थ यात्रा, धार्मिक कार्यों के प्रति रूझान, सामाजिक स्तर में उन्नति, धन का लाभ, उपक्रमों के सफलता, संतान का जन्म, और सामान्य समृद्धि।

**शुक्र :**

इच्छाओं की पूर्ति, इन्द्रिय सुख की प्राप्ति, धन–संपदा व शिक्षा की प्राप्ति, शत्रुओं पर विजय। लेकिन शारीरिक सुख के प्रति अत्यधिक लालसा होने के कारण मानसिक व्यग्रता, जल से भय और वातमय विकार।

**शनि :**

तुच्छ व निम्न स्तर के लोगों के साथ संगति, स्वार्थी, तानाशाही, गरीबी, वियोग, यौन विकृति, शारीरिक रोग, सर्दी व जुकाम के साथ–साथ वातमय विकार।

**राहु :**

गंभीर बीमारी/आशंका, मान–प्रतिष्ठा/धन की हानि, विदेशी स्रोतों से कठिनाईयां, उदासीन मन, डरपोक स्वभाव तथा अनेक प्रकार की कठिनाइयों से पीड़ित।

**केतु :**

अस्वस्थता, कमजोर पाचनशक्ति, अस्थिरता, आत्मिक व घुमन्तु प्रकृति, निराशा, चिन्तायें और दुख।

Varhphal Years: 78 (2023-2024) Varhphal Date: 22:12:2023, Time: 11:42Hrs

| मुद्दा योगिनी दशा | | | मुद्दा षोडशोत्तरी दशा | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दशा | अवधि | से | दशा | अवधि | से |
| संकटा (शनि) | 0.0 y.2.0 m.20 d. | 21:12:2023 | रवि | 0.0 y.1.0 m.5 d. | 21:12:2023 |
| मंगला (चन्द्रमा) | 0.0 y.0.0 m.10 d. | 11:03:2024 | मंगल | 0.0 y.1.0 m.8 d. | 25:01:2024 |
| पिगंला (सूर्य) | 0.0 y.0.0 m.20 d. | 21:03:2024 | गुरु | 0.0 y.1.0 m.11 d. | 03:03:2024 |
| धान्य (वृहस्पति) | 0.0 y.1.0 m.0 d. | 11:04:2024 | रवि | 0.0 y.1.0 m.5 d. | 13:04:2024 |
| भ्रमरि (मंगल) | 0.0 y.1.0 m.10 d. | 11:05:2024 | मंगल | 0.0 y.1.0 m.8 d. | 17:05:2024 |
| भभद्रिका (बुध) | 0.0 y.1.0 m.21 d. | 21:06:2024 | गुरु | 0.0 y.1.0 m.11 d. | 24:06:2024 |
| उल्का (शनि) | 0.0 y.2.0 m.0 d. | 11:08:2024 | शनि | 0.0 y.1.0 m.14 d. | 04:08:2024 |
| सिद्धा (शुक्र) | 0.0 y.2.0 m.11 d. | 11:10:2024 | केतु | 0.0 y.1.0 m.17 d. | 17:09:2024 |

## पत्ययनी दशा

| क्र0स0 | दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | लग्न | 0.0 y.2.0 m.2 d. | 21:12:2023 |
| 2 | रवि | 0.0 y.0.0 m.19 d. | 21:02:2024 |
| 3 | बुध | 0.0 y.0.0 m.18 d. | 11:03:2024 |
| 4 | चंद्र | 0.0 y.0.0 m.8 d. | 29:03:2024 |
| 5 | शनि | 0.0 y.0.0 m.7 d. | 05:04:2024 |
| 6 | गुरु | 0.0 y.1.0 m.15 d. | 12:04:2024 |
| 7 | मंगल | 0.0 y.6.0 m.15 d. | 27:05:2024 |
| 8 | शुक्र | 0.0 y.0.0 m.10 d. | 11:12:2024 |

## मुद्दा विंशोत्तरी दशा

| क्र0स0 | दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | मंगल | 0.0 y.0.0 m.21 d. | 21:12:2023 |
| 2 | राहू | 0.0 y.1.0 m.24 d. | 11:01:2024 |
| 3 | गुरु | 0.0 y.1.0 m.19 d. | 06:03:2024 |
| 4 | शनि | 0.0 y.1.0 m.27 d. | 24:04:2024 |
| 5 | बुध | 0.0 y.1.0 m.21 d. | 21:06:2024 |
| 6 | केतु | 0.0 y.0.0 m.21 d. | 12:08:2024 |
| 7 | शुक्र | 0.0 y.2.0 m.0 d. | 02:09:2024 |
| 8 | रवि | 0.0 y.0.0 m.19 d. | 02:11:2024 |
| 9 | चंद्र | 0.0 y.1.0 m.0 d. | 20:11:2024 |

## वर्ष जैमिनी चर दशा

| क्र0स0 | दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | मीन | 0.0 y.1.0 m.7 d. | 21:12:2023 |
| 2 | वृश्चिक | 0.0 y.1.0 m.10 d. | 27:01:2024 |
| 3 | कर्क | 0.0 y.0.0 m.10 d. | 07:03:2024 |
| 4 | कुंभ | 0.0 y.1.0 m.10 d. | 17:03:2024 |
| 5 | तुला | 0.0 y.1.0 m.10 d. | 25:04:2024 |
| 6 | मिथुन | 0.0 y.1.0 m.3 d. | 04:06:2024 |
| 7 | मकर | 0.0 y.1.0 m.7 d. | 08:07:2024 |
| 8 | कन्या | 0.0 y.0.0 m.30 d. | 13:08:2024 |
| 9 | वृष | 0.0 y.0.0 m.23 d. | 12:09:2024 |
| 10 | धनु | 0.0 y.0.0 m.27 d. | 05:10:2024 |
| 11 | सिंह | 0.0 y.0.0 m.27 d. | 01:11:2024 |
| 12 | मेष | 0.0 y.0.0 m.23 d. | 28:11:2024 |

# वर्षफल कुण्डली से महत्वपूर्ण भविष्यफल

Varhphal Years: 78 (2023-2024) Varhphal Date: 22:12:2023, Time: 11:42Hrs

## (अष्टक चक्र, ढुढिंराजा पद्धति, वर्षेश्वर और मुन्था)

आपकी वर्षफल कुण्डली में, पूर्व भाग में शेष बचता है, जबकि उत्तर भाग में कोई शेष नहीं बचता है, अतः आपका आगामी समय प्रयासपूर्ण हो सकता है– विशेषकर वर्ष के उत्तरार्द्ध में। यदि आपकी कुण्डली में संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आप धन के अवरूद्ध हो जाने के कारण अथवा हानि होने के कारण असुविधाओं का सामना कर सकते हैं।

आपकी वर्षफल कुण्डली में, पूर्व–भाग व उत्तर–भाग दोनों में ही शेष नहीं बचता है, अतः संभवतः आपका आगामी समय बहुत व्यवधानकारी हो सकता है। सामान्यतः आपको अपने सभी मामलों में सावधान व सतक्र रहना चाहिए, साथ ही विवादों व झगड़ों से बचना चाहिए एवं अपने स्वास्थ्य का उचित ख्याल रखना चाहिए। आपको रोमांचक और अनुमानित निवेशों से दूर रहना चाहिए, क्योंकि ये वो संभावित स्रोत हैं जो कि भारी निराशा उत्तपन्न कर सकते हैं।

77व0 ल0व10व0 उ0व11 क0व के आयु के आस–पास की अवधि आपके लिए अत्यंत कष्टदायक साबित हो सकती है। अतः आपको इस अवधि01रू11रू2023 के एक महीने आगे पीछे के दौरान सचेत रहना चाहिए एवं किसी प्रकार का जोखिम उठाने से बचना चाहिए, क्योंकि आपके चारों तरफ की सभी चीजें बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के अस्त–व्यस्त हो सकती हैं। किसी दुर्घटना का शिकार होने अथवा कुछ अशुभ घटनाओं के कारण परेशान होने की भी संभावनाएं हैं।

आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्तमान वर्ष के लिए अष्टक चक्र सूचकांक ग्रह चन्द्रमा है। यह ग्रह पांचवें भाव में स्थित है। यदि आपकी वर्तमान आयु के लिए प्रासंगिक है तो इस वर्ष के दौरान आप किसी महाविद्यालय/पॉलिटेक्निक/संस्थान से एक शैक्षिक योग्यता (डिग्री या डिप्लोमा) प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्तमान वर्ष के लिए अष्टक चक्र सूचकांक ग्रह चन्द्रमा है। यह ग्रह पंचमेश है। यदि आपकी वर्तमान आयु के लिए प्रासंगिक है तो इस वर्ष के दौरान आप कोई नया लाभप्रद रोजगार अथवा पदोन्नति प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं।

आप एक पुरुष हैं। आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्तमान वर्ष के लिए अष्टक चक्र सूचकांक ग्रह चन्द्रमा है, जो कि पंचमेश है और लग्न से पांचवें भाव में स्थित है। यदि आप विवाहित हैं और संतान की कामना कर रहे हैं तो इस वर्ष के दौरान आप एक योग्य संतान प्राप्ति की आशा कर सकते हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, बुध वर्षेश्वर ग्रह है।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्षेश्वर एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है। परिणामस्वरूप आप भाग्यशाली होंगे। इस वर्ष के दौरान होने वाली घटनाएं बहुत सहज व सरल होंगी तथा आपको किसी अशुभ घटना अथवा अपने सामान्य मामलों में किसी आकस्मिक उतार–चढ़ाव का सामना नहीं करना पड़ेगा।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्षेश्वर एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है। यह दसवें भाव में स्थित है, किन्तु यह नीचस्थ या अस्त या ग्रसित या वक्री है। फलस्वरूप आपको अपने सभी मामलों में सामान्यतः कुछ जटिल समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है तथा विशेषकर व्यवसाय/व्यापार के संदर्भ में। ऐसी संभावना कम ही है कि आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक प्रगति करेंगे, क्योंकि परिस्थितियां आपके अनुकूल नहीं हो सकती हैं अथवा कुछ प्रतिकूल घटनाओं के कारण आपकी संभावनाएं कुछ हद तक प्रभावित हो सकती हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्षेश्वर बुध है। यदि आप शैक्षिक या बौद्धिक कार्यों से जुड़े हुए हैं तो आप अत्यंत उत्तम प्रगति करेंगे तथा परीक्षाओं और/या प्रतियोगिताओं में सफल होंगे। आपको सम्पन्नता का सूर्योदय प्राप्त होगा– यदि आपके व्यवसाय का संबंध व्यापार/वाणिज्य, प्रेस/छपाई, शिक्षण, परामर्श केन्द्र आदि से है तो। आप विद्वान व्यक्तियों से मिलेंगे एवं उनके साथ जीवन्त चर्चा करेंगे। आप अपने कुछ मौलिक लेखों के कारण सराहना व प्रशंसाा प्राप्त कर सकते हैं। वैज्ञानिक सूचनाओं, आधुनिक तकनीकी विकासों, कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग, गणित, तक्र, ज्योतिषशास्त्र आदि में भी आपकी रूचि बढ़ेगी।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था सातवें में स्थित है। अतः यह काफी प्रतिकूल स्थिति है। वर्ष का आगामी समय आपके लिए कष्टकारी हो सकता है। आपके जीवनसाथी का गिरता हुआ स्वास्थ्य आपके लिए चिन्ता का कारण हो सकता है। आपका स्वास्थ्य भी उत्तम नहीं रह सकता है एवं आप आलसी या सुस्त हो सकते हैं। आपका अनेक लोगों से झगड़े या गलतफहमियां हो सकती हैं एवं असफलता के कारण निराश हो सकते हैं। आपको शक्तिशाली और/या प्रभावशाली लोगों से किसी प्रकार के विवादों में फंसने से बचना चाहिए, क्योंकि संभवतः आपके मुकदमें में फंसने का भय है।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था–राशि बुध की राशि में स्थित है। आगामी वर्ष आपके लिए अनुकूल है। आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे एवं अपने वरिष्ठों से समर्थन व लाभ प्राप्त करेंगे। आपके व्यवसाय में प्रगति होगी एवं अनेक ज्ञानी लोगों के साथ सम्पक्र बनेंगे। यदि आप शैक्षिक अथवा बौद्धिक कार्यों में संलग्न हैं तो सार्थक प्रगति करेंगे। अपनी महत्वपूर्ण उपलब्धियों से आप अनेक लोगों को आकर्षित करने में सक्षम होंगे। आपकी लोकप्रियता में वृद्धि होगी एवं सामान्यतः लोग आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था–राशि का स्वामी अस्त (सूर्य के निकट होने के कारण) है। यह

एक अनुकूल योग नहीं है। इस वर्ष के दौरान किसी समय आप बीमारी से पीड़ित हो सकते हैं, भारी व व्यर्थ के खर्चे हो सकते हैं, आपको हानि होने का भी खतरा हो सकता है। व्यवसाय के क्षेत्र में आप अस्थाई आघात का सामना कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आपकी विश्वसनीयता व सम्मान भी कुछ अजीब कारणों से दांव पर लग सकते हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था–राशि का स्वामी वक्री है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। इस वर्ष के दौरान किसी समय आप बीमारी से पीड़ित हो सकते हैं, भारी व व्यर्थ के खर्चे हो सकते हैं, आपको हानि होने का भी खतरा हो सकता है। व्यवसाय के क्षेत्र में आप अस्थाई आघात का सामना कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आपकी विश्वसनीयता व सम्मान भी कुछ अजीब कारणों से दांव पर लग सकते हैं।

# वर्षफल सहम से भविष्यफल

**Varhphal Years: 78 (2023-2024) Varhphal Date: 22:12:2023, Time: 11:42Hrs**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, अपत्य–सहम एकादशेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा एकादशेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 22:10:2024 और 21:02:2024 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ अनुकूल घटनाएं (इस विशेष सहम से संबंधित) हो सकती हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, परदेश–सहम एकादशेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा एकादशेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 19:02:2024 और 24:10:2024 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ अनुकूल घटनाएं (इस विशेष सहम से संबंधित) हो सकती हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, जलपत्तन–सहम एकादशेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा एकादशेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 22:02:2024 और 21:10:2024 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ अनुकूल घटनाएं (इस विशेष सहम से संबंधित) हो सकती हैं।

आपकी कुण्डली में एक ही ग्रह शनि जन्मकुण्डली और वर्षफल कुण्डली में प्रदर–सहम का स्वामी है। सहम का स्वामी एक या एक से अधिक शुभ ग्रहों के साथ जुड़ा हुआ है या उनकी इस पर दृष्टि पड़ रही है एवं यह किसी अशुभ ग्रह के साथ ना तो जुड़ा हुआ है और ना ही ऐसे किसी ग्रह की इस पर दृष्टि पड़ रही है। आप अपनी तृष्णा/लालसा को पूरा करने के लिए कुछ–कुछ सनकी हो सकते हैं। यदि आप अविवाहित हैं तो किसी के साथ जिसे आप पागलपन की हद तक प्यार करते हैं उससे अंतरंग संबंध बनाने की आपमें प्रबल इच्छा उत्पन्न हो सकती है। किन्तु आपको उचित ध्यान व एहतियात बरतना चाहिए, ताकि आप और आपकी प्रियतमा लोगों के लिए तात्कालिक चर्चा का विषय ना बन सकें।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, प्रदर–सहम एकादशेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा एकादशेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 23:10:2024 और 20:02:2024 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ यादगार घटनाएं (इस विशेष सहम से संबंधित) हो सकती हैं।

आपकी कुण्डली में एक ही ग्रह चन्द्रमा जन्मकुण्डली और वर्षफल कुण्डली में संताप–सहम का स्वामी है। सहम का स्वामी एक या एक से अधिक शुभ ग्रहों के साथ जुड़ा हुआ है या उनकी इस पर दृष्टि पड़ रही है एवं यह

किसी अशुभ ग्रह के साथ ना तो जुड़ा हुआ है और ना ही ऐसे किसी ग्रह की इस पर दृष्टि पड़ रही है। ये संकेत फिर भी बहुत अनुकूल नहीं हैं एवं वर्ष के दौरान कुछ नाजुक कारणों से आप दुखी हो सकते हैं। हालांकि आपको केवल नपे–तुले कदम उठाने की आदत डालनी चाहिए एवं मजबूत आधार से जुड़े रहने का प्रयास करना चाहिए। आपको अपने अति आशावादीता पर भी नियंत्रण करना चाहिए एवं किसी अवांछित आघात की संभावना से बचने के लिए किसी भी प्रकार का जोखिम लेने से बचना चाहिए।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, संताप–सहम अष्टमेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा अष्टमेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 26:07:2024 और 19:05:2024 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ प्रतिकूल घटनाएं (इस विशेष सहम से संबंधित) हो सकती हैं।

# वर्षफल

**Varhphal Years: 78 (2023-2024) Varhphal Date: 22:12:2023, Time: 11:42Hrs**

## वर्षेश और अन्य कारकों का फल

आपका वर्षेश बुध इस वर्ष मध्यम बली है। अतः यह वर्ष आपके लिए सामान्य फलदायक रहेगा। इस वर्ष आपकी रूचि धर्म संबंधी कार्यों में होने से मान–सम्मान की प्राप्ति होगी। आपको संतान सुख की प्राप्ति होगी और मित्रों के साथ भी आत्मीय संबंध होंगे। किन्तु आपका अपने जीवनसाथी के साथ विवाद हो सकता है एवं आपके शत्रु आपको परेशान कर सकते हैं। इस वर्ष आप शारीरिक और मानसिक रूप से कभी–कभी पीड़ित रह सकते हैं। पशुपालन से प्राप्त होने वाले लाभ व आय में कमी हो सकती है। व्यय में वृद्धि होगी। व्यापार में मंदी रहेगी। यदि आप नौकरी कर रहे हैं तो आपके अधिकारी वर्ग से आपका मनमुटाव या हानि हो सकती है। आपको अपनी वाणी पर संयम रखना चाहिए, क्योंकि इसके कारण आपको परेशानी हो सकती है।

इस वर्ष आपके वर्षेश बुध की सूर्य के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः यह वर्ष सामान्यतः आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। आपको दाम्पत्य सुख और संतान सुख की प्राप्ति होगी और पारिवारिक वातावरण सुखद व उत्सवपूर्ण रहेगा। आपकी स्थिति के अनुसार इस वर्ष आपको चौपाए पशु अथवा वाहन का सुख प्राप्त होगा। शिक्षा के क्षेत्र में आपको विशिष्टता प्राप्त हो सकती है एवं मान–सम्मान मिलेगा। कार्यक्षेत्र में आपका अधिकारी वर्ग आपसे प्रसन्न रहेगा। स्वर्ण आदि धन का आप संचय भी कर सकते हैं। आपको कोई आकस्मिक लाभ प्राप्त हो सकता है। आप किसी तीर्थ यात्रा पर जा सकते हैं। उत्तर दिशा की ओर की यात्रा लाभप्रद हो सकती है। पूर्व दिशा से कार्य में सफलता मिलेगी। आप ज्वर से पीड़ित हो सकते हैं। आपके शत्रु आपके लिए परेशानियां उत्पन्न करने का प्रयास कर सकते हैं।

इस वर्ष आपके वर्षेश बुध की गुरु के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ रहेगा। इस वर्ष आपकी पहले से चली आ रही परेशानियां, रोग, चिन्ता आदि से मुक्ति मिलेगी। आपकी आय में वृद्धि होगी, धनागम के अवसर प्राप्त होंगे। आपको स्वर्णकार से हानि हो सकती है। इस वर्ष आप किसी तीर्थ यात्रा पर जाएंगे। ईशान कोण की यात्रा से लाभप्रद कार्य में सफलता मिलेगी एवं नैऋत्य कोण से भी कार्य सिद्धि हो सकती है। राज्य सरकार या समाज द्वारा आपको कोई सम्मान प्राप्त हो सकता है। लोगों में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी एवं वे आपके प्रति सम्मानपूर्ण भाव रखेंगे। दक्षिण दिशा से आपको हानि हो सकती है। आपके कार्यक्षेत्र में या राज्य पक्ष के कार्य आपके अनुकूल होगा। आप सत्य बोलेंगे। आप सिर दर्द से ग्रसित हो सकते हैं। आपके शत्रु परास्त होंगे।

इस वर्ष आपकी वर्षफल कुण्डली में वर्षेश दसवें भाव में उपस्थित है। अतः यह वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। इस वर्ष आपको राजसी सुखों की प्राप्ति होगी और ख्याति चारों ओर फैलेगी। आपका अपने मित्रों व संबंधियों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध रहेंगे, उनके मन में आपके प्रति सम्मान और प्रेम की भावना बनी रहेगी एवं आपको उनका

पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। आपके शारीरिक सौन्दर्य में वृद्धि होगी। आपके मन में सबके प्रति दया की भावना उत्पन्न होगी।

## जन्म लग्न का फल

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न की राशि आपकी वर्षकुण्डली में लग्न में स्थित है। अतः यह वर्ष आपके लिए कष्टप्रद हो सकता है। इस वर्ष आप शारीरिक रूप से अस्वस्थ्य रह सकते हैं एवं आपको अनेक प्रकार की मानसिक चिन्ताएं रह सकती हैं।

## वर्षफल के योग

आपकी वर्षकुण्डली में, सभी पाप ग्रह सातवें भाव से लग्न पर्यन्त तक क्रम से स्थित हैं, जिसे मुक्तावली योग कहा जाता है। यह एक शुभ संकेत नहीं है। यह आपके लिए शुभ फलदायक नहीं हो सकता है। इस योग के प्रभाव से आपको इस वर्ष वाद–विवाद, क्लेश, मानसिक एवं शारीरिक पीड़ा के साथ–साथ राजभय का भी खतरा हो सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, जन्म लग्न ही वर्ष लग्न है, ऐसे वर्ष को एकोदय वर्ष कहते हैं। सामान्यतः यह अनुकूल योग नहीं है, इस योग को कलांवार योग कहा जाता है। इस वर्ष आप शारीरिक रूप से अस्वस्थ रह सकते हैं। आप बुखार, श्वास, कास, कम्पन, कण्डु आदि जैसे रोगों से पीड़ित हो सकते हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, कन्या राशि के आगे की विषम राशियों में शुक्र स्थित है तथा मेष राशि के आगे की सम राशियों में लग्न या नवांश में बृहस्पति स्थित है। यह एक अत्यंत अनुकूल योग है, जिसे कुलाब योग कहा जाता है। इस योग के प्रभाव से इस वर्ष आपको अपने सभी कार्यों में सफलता मिलेगी, आपके शत्रुओं का नाश होगा एवं आपको स्त्री–सुख का विशेष आनन्द भी प्राप्त होगा।

## कुण्डली के भावों का उनके कारकत्व के अनुसार विश्लेषण

### लग्न भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में, राहु लग्न में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए अनुकूल नहीं हो सकता है। इस वर्ष आप वातजनित रोगों के कारण सिरदर्द आदि रोगों से पीड़ित रह सकते हैं। आप किसी प्रकार की चिन्ता से ग्रसित रह सकते हैं। आपके विरोधी आपको हानि पहुंचा सकते हैं। आर्थिक तंगी की स्थिति उत्पन्न हो सकती है तथा आपके मान–सम्मान व वैभव में कमी आ सकती है।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश दूसरे भाव में स्थित है। यह वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। आप धनार्जन करेंगे, आपके प्रताप व पराक्रम में वृद्धि होगी, तथा आपको उत्तम वस्त्राभूषणों की भी प्राप्ति होगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, जन्म लग्नेश, वर्ष लग्नेश और मुन्थेश केन्द्र–त्रिकोण या द्वितीय–एकादश में स्थित हैं। आपको धन–सम्पदा, सोना–चाँदी, वस्त्र–आभूषण, सुख–सुविधा आदि की प्राप्ति होगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्न से बारहवें में एक मार्गी ग्रह है तथा दूसरे भाव में एक वक्री ग्रह स्थित है। इस वर्ष आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, चंद्रमा की वक्री ग्रह से मित्र दृष्टि संबंध है। इस वर्ष आपका तबादला हो सकता है।

**द्वितीय भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में चंद्रमा दूसरे भाव में स्थित है। इसलिए इस वर्ष आपका बौद्धिक विकास होगा एवं आप बहुत ही सुगमतापूर्वक विवेकपूर्ण ढंग से सभी मसलों को समझकर उसका हल ढूंढ लेंगे। धनोपार्जन में नए स्रोत प्राप्त होंगे। श्वेत वस्तुओं की प्राप्ति होने की भी संभावना है। आपको अपने स्वजनों से मान–सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। शारीरिक दृष्टि से आप स्वस्थ्य रहेंगे तथा अपने शत्रुओं को परास्त करेंगे।आपकी वर्षकुण्डली में बृहस्पति दूसरे भाव में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए बहुत शुभकारी होगा। इस वर्ष आप शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ्य एवं निरोग रहेंगे। आपको सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति होगी एवं आप प्रसन्नचित्त रहेंगे। आप विलासिता की वस्तुओं का क्रय कर सकते हैं। आपको इस वर्ष धनार्जन के पर्याप्त साधन प्राप्त होने की संभावना है तथा आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनी रहेगी। आपका संपक्र उच्च स्तर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों से हो सकती है, एवं आपका उनसे नजदीकी संबंध स्थापित होंगे। आप अपने मित्रों की संगति में आनन्दमय समय व्यतीत करेंगे तथा आपको उनका भरपूर सुख व सहयोग मिलेगा।

आपकी वर्षकुण्डली में, द्वितीयेश नौवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको अपना निवास स्थान छोड़कर कहीं और भी जाना पड़ सकता है। अत्यधिक अनावश्यक व्यय हो सकते हैं, जिससे आर्थिक तंगी की स्थिति उत्पन्न हो सकती है एवं उससे उबरने के लिए आपको ऋण तक भी लेना पड़ सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में गोचर का शनि दूसरे भाव पर दृष्टि डाल रहा है। इस वर्ष आपको व्यापार में हानि अथवा किसी प्रकार से धन हानि हो सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली का द्वितीयेश आपकी वर्षकुण्डली में अस्त है। इस वर्ष आपके संचित धन की हानि हो सकती है।

**तृतीय भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, तृतीयेश आठवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आप रोगादि से ग्रसित होने के कारण शारीरिक रूप से पीड़ित रह सकते हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, तृतीयेश से सातवें भाव में वर्षेश अथवा लग्नेश स्थित है। इस वर्ष आपका अपने भाइयों से लड़ाई–झगड़े हो सकते हैं।

**चतुर्थ भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, चतुर्थेश दसवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको भूमि से संबंधित सुख एवं लाभ की प्राप्ति होने के योग हैं।

**पंचम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, पंचमेश दूसरे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको शिक्षा से धन प्राप्त होने की संभावना है।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि अथवा मंगल जिस राशि में स्थित है, आपकी वर्षकुण्डली में वह राशि पाँचवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको पुत्र की प्राप्ति होने की प्रबल संभावना है। (अगर आप उम्र के उस दौर में हैं तो अन्यथा आपको अपने पुत्र अथवा पुत्री के किसी कार्य से सम्मान मिलेगा)

आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल या शनि जिस राशि में स्थित है, वही राशि वर्षकुण्डली में लग्न या पाँचवें भाव में है। इस वर्ष आपके पुत्र को कष्ट होने की संभावना अत्यधिक है।

**षष्टम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, षष्ठेश दसवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपके शरीर में ट्यूमर या फोड़ा होने की संभावना है। आपको संतान संबंधी सुख प्राप्त होगा। आपकी आर्थिक स्थिति पहले की भांति बनी रहेगी। आपके शत्रु की स्थिति में भी कोई परिवर्तन नहीं होगा।

**सप्तम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, केतु सातवें भाव में स्थित है। अतः इस वर्ष आप उदर भाग में किसी रोग से पीड़ित रह सकते हैं तथा आपके जीवनसाथी को भी कोई परेशानी रह सकती है, एवं आपको अपने जीवनसाथी का सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। आप अनावश्यक चिन्ताओं से ग्रसित रह सकते हैं। आपके शत्रु आपके प्रति और अधिक कटुता रख सकते हैं एवं आपका अहित करने की कोशिश कर सकते हैं। अपने कार्यक्षेत्र में आपका अपने उच्चाधिकारियों से अच्छे संबंध नहीं हो सकते हैं एवं आपको उनसे सहयोग व सम्मान प्राप्त नहीं हो सकता है। आपकी यात्राएं निष्फल हो सकती हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, सप्तमेश दसवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपके उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे, तथा उनसे अच्छे संबंध होने के कारण आपको उनसे लाभ व सहयोग की प्राप्ति होगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, शुक्र अपनी राशि में स्थित है तथा चंद्रमा की उस पर दृष्टि पड़ रही है या उसके साथ चंद्रमा स्थित है। इस वर्ष आपको स्त्री की प्राप्ति हो सकती है।

आपकी वर्षकुण्डली में, मंगल बली होकर शुक्र की जन्म–राशि में स्थित है। यदि आप विवाह योग्य हैं और अविवाहित हैं, तो इस वर्ष आपके विवाह के शुभ एवं प्रबल योग हैं।

आपकी जन्मकुण्डली का सप्तमेश, वर्षकुण्डली का मुन्थेश तथा वर्षेश एक साथ सातवें या दसवें भाव में विराजमान हैं। इस वर्ष आपका विवाह हो सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, बृहस्पति युति अथवा दृष्टि से मुन्थेश के साथ संबद्ध है। यदि आप विवाह योग्य हैं और अविवाहित हैं, तो आपका इस वर्ष विवाह होने के प्रबल योग हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, विवाह सहम का स्वामी शुक्र की जन्म–राशि में केन्द्र या त्रिकोण में स्थित है। यदि आप विवाह योग्य हैं और अविवाहित हैं, तो आपका इस वर्ष विवाह होने के योग हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश और सप्तमेश परस्पर शत्रु हैं। इस वर्ष लड़ाई–झगड़े होने की संभावना बनी रह सकती है।

आपकी वर्षकुण्डली में, मंगल और शनि शक्तिशाली हैं। इस वर्ष प्रायः आपका किसी से लड़ाई–झगड़ा हो सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, मंगल शुक्र की राशि में स्थित है। इस वर्ष आप पराई स्त्रियों की तरफ आकर्षित हो सकते हैं।

**अष्टम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, शुक्र आठवें भाव में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए  अनुकूल नहीं हो सकता है। इस वर्ष आप मानसिक रूप से चिन्तित रह सकते हैं एवं आपका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रह सकता है। आपका पारिवारिक जीवन सुख–शांतिपूर्ण नहीं हो सकता है तथा अत्यधिक कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपने परिजनों से संबंधित चिन्ताएं रह सकती हैं। आप अत्यधिक क्रोध कर सकते हैं एवं प्रतिकूल परिस्थिति में मन विचलित हो सकता है। आपका अपने शत्रुओं से विवाद हो सकता है। आप यात्रायें भी कर सकते हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, अष्टमेश आठवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आप पर आने वाले किसी संकट का समाधान होगा। आपकी आयु में वृद्धि होगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, चंद्रमा मेष या वृश्चिक राशियों में है। इस वर्ष आपको राजदण्ड का भय हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में बुध मंगल की राशि में है, जो कि वर्षकुण्डली में पंचाधिकारियों में से एक है। इस वर्ष आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है, आप रोगादि से ग्रसित रह सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में आठवें भाव का स्वामी, आपकी वर्षकुण्डली में आठवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको अतिशय शारीरिक कष्ट हो सकता है।

**नवम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में मंगल नौवें भाव में स्थित है। अतः इस वर्ष आपके धन लाभ में कमी आ सकती है। आपमें बौद्धिक विकार उत्पन्न हो सकते हैं एवं आपका मन अनैतिक कार्यों की तरफ आकर्षित हो सकता है। आपका मन बेचैन रह सकता है तथा आपका अपने मित्रों एवं स्वजनों से विवाद या वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। आपके वैभव व प्रतिष्ठा में कमी आने से आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है एवं आपके आन्तरिक स्वास्थ्य के साथ–साथ आपके बाह्य स्वरूप को भी प्रभावित कर सकती है। आपको ऐसी विपरीत परिस्थितियों में धैर्य से काम लेना चाहिए एवं इस बुरे समय को व्यतीत हो जाने देना चाहिए।

आपकी वर्षकुण्डली में, नवमेश नौवें भाव में स्थित है। यह वर्ष आपके लिए भाग्यवर्द्धक साबित होगा। आप अपने शत्रुओं को परास्त करेंगे। साथ ही आप इस वर्ष वाहन का सुख भी प्राप्त करेंगे।

आपकी वर्षकुण्डली में, मंगल कमजोर स्थिति में नौवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपका अपने परिवार से वियोग हो सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, नौवां भाव (भाग्य भाव) शनि से युत या दृष्ट है। इस वर्ष आपकी उन्नति के मार्ग में बाधायें उत्पन्न हो सकती हैं।

**दशम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली मे सूर्य दसवें भाव में स्थित है। इसलिए इस वर्ष आपको धन लाभ पदोन्नति एवं सम्मान प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे, जिनका लाभ उठाने का पूर्ण प्रयास करना चाहिए। आपका बौद्धिक विकास होगा, आप अपने विरोधियों को परास्त करेंगे तथा आपको अपने सभी कार्यों में वांछित सफलता प्राप्त होगी। आपको अपने अधिकारियों से सम्मान, सहयोग एवं लाभ की प्राप्ति होगी। आपकी वर्षकुण्डली में बुध दसवें भाव में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए बहुत अनुकूल होगा। आप शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ्य एवं निरोग रहेंगे एवं आपकी कान्ति बढ़ेगी। इस वर्ष यदि आप प्रयत्न करेंगे, तो आपको भूमि–भवन की प्राप्ति अवश्य होगी। आपको अपने परिजनों से सुख, स्नेह, सम्मान एवं सहयोग प्राप्त होगा। आपके व्यापार–व्यवसाय में वृद्धि होगी एवं धनार्जन में

भी पर्याप्त वृद्धि होगी। अपने उच्चाधिकारियों से भी आपका संबंध अच्छा रहेगा एवं उनसे आपको लाभ व सहयोग मिलेगा, जिससे आपकी उन्नति की संभावना भी बनेगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, दशमेश दूसरे भाव में स्थित है। इस वर्ष आप धनोपार्जन करेंगे एवं स्वयं के अर्जित धन से उत्तम भोजन व सुख–सुविधाओं का आनन्द प्राप्त करेंगे।

आपकी वर्षकुण्डली में, सातवें या आठवें भाव में शुक्र उपस्थित है। इस वर्ष आपको पद की प्राप्ति या पदोन्नति हो सकती है।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश और दशमेश दोनों की चंद्रमा के साथ युति या दृष्टि संबंध है। आपको इस वर्ष प्रतिष्ठित पद प्राप्त होने की प्रबल संभावना है।

आपकी वर्षकुण्डली में, राज्येश/दशमेश का चतुर्थेश से युति या दृष्टि संबंध है। इस वर्ष आपको जल मार्ग की यात्रा करनी पड़ सकती है।

आपकी वर्षकुण्डली में, दशमेश कमजोर स्थिति में है और उस पर शनि की दृष्टि पड़ रही है। इस वर्ष आपके पिता को कष्ट हो सकता है।

**एकादश भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, एकादशेश बारहवें भाव में स्थित है। अतः यद्यपि आप इस वर्ष अपने शत्रुओं को परास्त कर विजय हासिल करेंगे, किन्तु आपके खर्चों में वृद्धि हो सकती है। आपको अपने अधीनस्थों, नौकरों, सेवकों आदि से लाभ प्राप्त होने के योग हैं।

**द्वादश भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, शनि बारहवें भाव (व्यय–भाव) में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए अनुकूल नहीं हो सकता है। इस वर्ष आप शारीरिक दृष्टि से अस्वस्थ रह सकते हैं, आपको छाती, आंख और पैर से संबंधित रोगों से पीड़ित रहना पड़ सकता है। आपको किसी आकस्मिक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। सरकार या राज्य पक्ष से कोई समस्या उत्पन्न हो सकती है, जिसके कारण व्यर्थ का खर्च हो सकता है। आप लम्बी दूरी की यात्रा कर सकते हैं, किन्तु यात्रा में आपको कष्ट एवं हानि हो सकती है। आपका अपने मित्रों एवं संबंधियों से वाद–विवाद व मतभेद हो सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, द्वादशेश बारहवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको कन्या संबंधी सुख की प्राप्ति होगी। आप वाहन का सुख भी प्राप्त कर सकते हैं। किन्तु आपके खर्चों में भी वृद्धि हो सकती है।

आपकी वर्षकुण्डली में, अष्टमेश छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है। यह वर्ष आपके लिए लाभप्रद नहीं हो सकता है।

# पत्ययनी दशाफल

**Varhphal Years: 78 (2023-2024) Varhphal Date: 22:12:2023, 11:42Hrs**

## लग्न दशा

**21:12:2023-20:02:2024**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, लग्नेश नीचस्थ या वक्री या अस्त या ग्रसित है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। लग्न दशा आपके लिए उत्तम अवधि नहीं हो सकती है। अतः आपको अपने सभी मामलों में सामान्यतः सावधान व सतक्र रहना चाहिए एवं अपने स्वास्थ्य का अधिक ध्यान रखना चाहिए। इस अवधि के दौरान किसी भी शुभ और महत्वपूर्ण कार्य की शुरूआत करना अथवा किसी लम्बी यात्रा के लिए प्रस्थान करना फलदायक नहीं हो सकता है। हालांकि आपके कार्यस्थल की स्थिति कुछ हद तक बिगड़ सकती है। यद्यपि सामान्य लोग आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे, फिर भी आपके वरिष्ठ/अधिकारी आपको दबाने का प्रयास कर सकते हैं एवं तक्रसंगत रूप से आपको मिलने वाला श्रेय किसी और को दे सकते हैं। या फिर आपको अन्यायपूर्वक बहुत छोटी अथवा बिना किसी गलती के दोषी ठहराया जा सकता है।

## रवि दशा

**21:02:2024-10:03:2024**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, सूर्य उपचय भाव (तीसरे या छठें या दसवें या ग्यारहवें) में स्थित है। यह नीचस्थ अथवा राहु (या केतु) के निकट स्थित नहीं है। यह एक अनुकूल योग है एवं सूर्य की दशा आपके लिए उपयोगी व लाभदायक साबित होगी। आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे एवं इस अवधि के दौरान कुछ विशेष उपलब्धि हासिल करेंगे। वरिष्ठ अधिकारी एवं सरकारी कर्मचारी आपके प्रति अनुकूल होंगे एवं आपको उनसे समर्थन व लाभ प्राप्त हो सकता है।

## बुध दशा

**11:03:2024-28:03:2024**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, बुध नीचस्थ है या अस्त अथवा ग्रसित होने के कारण दूषित है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। बुध की दशा आपके लिए अच्छी अवधि नहीं हो सकती है। अतः आपको सावधान व सचेत रहना चाहिए एवं अपने स्वास्थ्य का उचित ध्यान रखना चाहिए। आप कफमय एवं वातमय रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। इस अवधि के दौरान किसी भी महत्वपूर्ण कार्य की शुरूआत अथवा किसी लम्बी यात्रा के लिए प्रस्थान करना अधिक फलदायक नहीं हो सकता है। आपके कार्यस्थल की स्थिति कुछ–कुछ बिगड़ सकती है एवं अपने किसी सहकर्मी से विवाद होने के कारण आप चिड़चिड़े हो सकते हैं।

## चंद्र दशा

**29:03:2024-04:04:2024**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, सूर्य उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त भी नहीं है। अतः चंद्रमा की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/समारोह के होगी। हालांकि आप अपने घरेलू क्षेत्र में कुछ समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपके कुछ

पारिवारिक–सदस्य क्रोधपूर्ण ढंग से बात व व्यवहार कर सकते हैं, जिसके कारण आप काफी चिड़चिड़े व अप्रसन्न हो सकते हैं।

## शनि दशा

**05:04:2024-11:04:2024**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, शनि उच्चस्थ अथवा अपनी राशि में स्थित है एवं यह अस्त या ग्रसित होने से दूषित नहीं है। शनि की दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। आपको नऐ परिचितों एवं विदेशी स्रोतों से लाभ व समर्थन प्राप्त होगा। आपका परिचय कुछ दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों के साथ हो सकता है, जिसके कारण आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। आपकी आय में वृद्धि होगी एवं आपके स्तर में सुधार होगा। आपमें संतोष की भावना विकसित होगी, किन्तु अपने प्रयुक्त किए जाने वाले साधनों/उपायों पर आपको नजर रखना चाहिए। साथी आपको सावधान व सतक्र रहना चाहिए, क्योंकि आपके किसी दुर्घटना का सामना करने और/या वातमय रोगों से पीड़ित होने का खतरा है।

## गुरु दशा

**12:04:2024-26:05:2024**

श्श इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, गुरु उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते है। अतः गुरु की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। सामान्यतः आपके सभी मामलें भली भांति चलेंगे। आपके पेशे के क्षेत्र में चीजें बहुत सहजतापूर्ण ढंग से होंगी। अपने सगे–संबंधियों व मित्रों की संगति में बिताने के लिए आप कुछ खाली समय निकालने में सक्षम होंगे।

## मंगल दशा

**27:05:2024-10:12:2024**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मंगल उच्चस्थ या अपनी राशि में स्थित है, किन्तु यह अस्त अथवा ग्रसित होने के कारण दूषित है। अतः मंगल की दशा के दौरान आप कुछ मामूली समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है। वरिष्ठ अधिकारियों से मिलने के लिए आप किसी दूरस्थ स्थान की यात्रा कर सकते हैं। आपकी यात्रा के उद्देश्य की पूर्ति आपकी अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं हो सकती है। यदि आप नौकरी में हैं तो आपकी प्रगति के अवसर अस्थाई रूप से स्थगित हो सकते हैं। यदि आप व्यापार में हैं तो आप एक बड़ा आपूर्ति का आर्डर प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं, किन्तु यह लम्बी अवधि में बहुत लाभदायक साबित नहीं हो सकता है।

## शुक्र दशा

**11:12:2024-20:12:2024**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, शुक्र उच्चस्थ अथवा अपनी राशि में स्थित है एवं यह अस्त या ग्रसित होने से दूषित नहीं है। शुक्र की दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। आपको अपने वरिष्ठों एवं अधिकारियों से लाभ व समर्थन प्राप्त होगा। आप उच्च पद वाले लोगों से मित्रता स्थापित करेंगे एवं आपके शत्रु

पूर्णतः परास्त होंगे। आपको सभी प्रकार से संतुष्टि प्राप्त होगी एवं एक विपरीत लिंग का व्यक्ति आपके लिए विशेष प्रसन्नता का स्रोत हो सकता है। आपकी आय एवं बहुमूल्य अधिग्रहण में वृद्धि होगी एवं आपका घरेलू जीवन बहुत आनन्दमय होगा। यदि आप व्यापारी हैं तो यह अवधि आपके लिए उपयोगी, सहजतापूर्ण व लाभदायक होगी।

# ज्योतिष सारिणी

| | SAMPLE | ज्योतिष सारिणी |
|---|---|---|
| जन्म दिनाकं | 21:12:1945 | 21:12:2024 |
| दिन | शुक्रवार | शनिवार |
| ज्योतिषिय वार | शुक्रवार | शनिवार |
| जन्म समय | 11:34:00 | 17:57:59 |
| जन्म स्थान | ranchi | ranchi |
| अक्षांश | 023:20:00N | 023:20:00N |
| रेखांश | 085:19:00E | 085:19:00E |
| यु./ग्रीष्म समय संस्कार | -00:00 | -00:00 |
| जी. एम. टी. समय | 006:03:00 | 012:27:58 |
| स्थानीय समय संस्कार | 000:11:15 hrs | 000:11:16 hrs |
| स्थानीय समय | 011:45:15 hrs | 018:09:15 hrs |
| सांपातिक काल | 017:43:03 hrs | 024:11:31 hrs |
| सूर्योदय | 06:28:24AM | 06:28:36AM |
| सूर्यास्त | 05:04:58PM | 05:05:12PM |

| | | |
|---|---|---|
| लग्न | मीन | मिथुन |
| लग्नाधिपति | गुरु | बुध |
| राशि (चन्द्रमा) | कर्क | सिंह |
| राशिपति | चंद्र | रवि |
| नक्षत्र | पुष्य | पुर्वफाल्गुनी |
| नक्षत्रपति | शनि | शुक्र |
| नक्षत्र चरण | 1 | 3 |
| पाया | रजत | ताम्र |
| ऋतु | हेमन्त | हेमन्त |
| मास | पौष कृष्ण | पौष कृष्ण |
| पक्ष | कृष्ण | कृष्ण |
| तिथि | तृतीया | सप्तमी |
| तिथि श्रेणी | जया | भद्रा |
| तिथि पति | मंगल | शनि |
| करण | वनिज | विष्टी |
| करण श्रेणी | चर | चर |
| करणपति | मनिभद्र | यम |
| सूर्य सिद्धान्त योग | इन्द्रय | प्रीति |
| तत्व | जल | जल |
| तत्वाधिपति | शुक्र | शुक्र |
| विहग | पिंगला | पिंगला |
| वेध | पूर्वाशाढ़ | उत्तरभाद्र |

# ग्रह स्थिती वर्षफल

**Varhphal Years: 79 (2024-2025) Varhphal Date: 21:12:2024, Time: 17:57Hrs**

| ग्रह | राशि | अंश | नक्षत्र | विशेष |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | मीन | 01:13 | पूर्वाभाद(4) | |
| सूर्य(ग्र.) | धनु | 05:55 | मूला (2) | मित्र राशि |
| चन्द्रमा | कर्क | 04:53 | पुष्य (1) | स्व राशि |
| मंगल(व.) | कर्क | 08:17 | पुष्य (2) | नीच राशि |
| बुध | वृश्चिक | 14:56 | अनुराधा (4) | सम राशि |
| बृहस्पति | तुला | 00:18 | चित्रा (3) | शत्रु राशि |
| शुक्र | वृश्चिक | 25:47 | ज्येष्ठा (3) | सम राशि |
| शनि(व.) | कर्क | 00:04 | पुनर्वसु (4) | शत्रु राशि |
| राहु(व.) | मिथुन | 06:56 | अरिद्रा (1) | मित्र राशि |
| केतु(व.) | धनु | 06:56 | मूला (3) | स्व नक्षत्र |
| हर्षल(व.) | वृष | 21:45 | रोहिणी (4) | ..... |
| नेपच्यून | कन्या | 15:24 | हस्ता (2) | ..... |
| प्लूटो(व.) | कर्क | 18:23 | अश्लेषा (1) | ..... |

| ग्रह | राशि | अंश | नक्षत्र | विशेष |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | मिथुन | 18:05 | पूर्वाभाद(4) | |
| सूर्य | धनु | 05:55 | मूला (2) | मित्र राशि |
| चन्द्रमा | सिंह | 20:31 | पुर्वफाल्ग (3) | मित्र राशि |
| मंगल(व.) | कर्क | 10:30 | पुष्य (3) | नीच राशि |
| बुध | वृश्चि | 14:27 | अनुराधा (4) | सम राशि |
| बृहस्पति(व.) | वृष | 20:14 | रोहिणी (4) | शत्रु राशि |
| शुक्र | मकर | 22:01 | श्रवण (4) | मित्र राशि |
| शनि | कुंभ | 19:36 | शतभिषा (4) | स्व राशि |
| राहु(व.) | मीन | 07:50 | उत्तरभाद्र (2) | सम राशि |
| केतु(व.) | कन्या | 07:50 | उत्तरफाल्ग (4) | सम राशि |
| हर्षल(व.) | मेष | 29:43 | कृतिका (1) | .... |
| नेपच्यून | मीन | 02:58 | पूर्वाभाद (4) | .... |
| प्लूटो | मकर | 06:32 | उत्तरा (3) | .... |

## लग्न कुण्डली

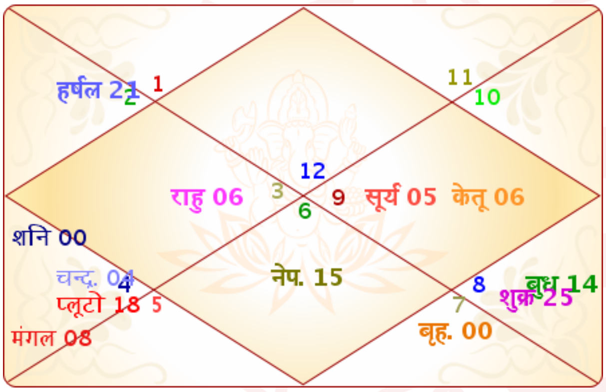


## चन्द्र कुण्डली

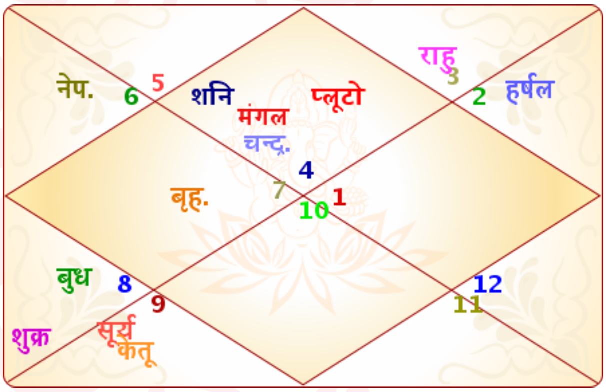


## लग्न कुण्डली ( वर्षफल )

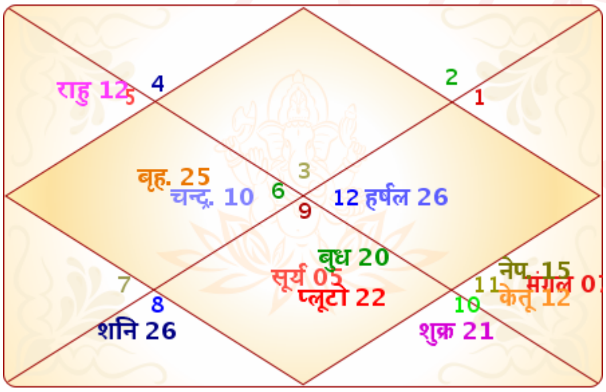


## चन्द्र कुण्डली ( वर्षफल )

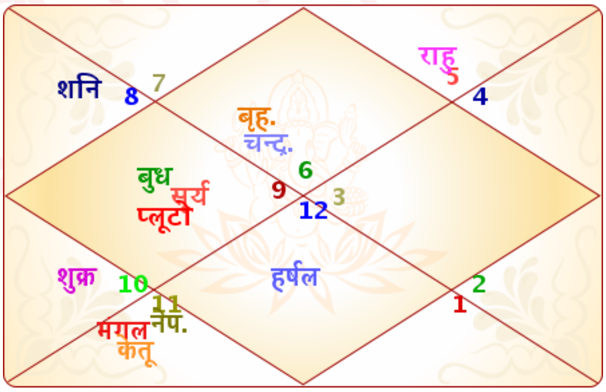

# द्वादश वर्ग कुण्डली

लग्न कुण्डली

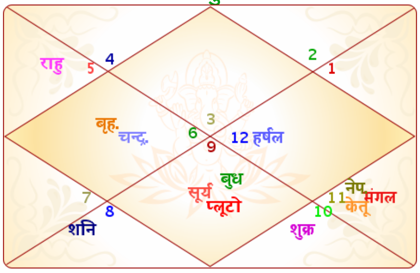


होरा कुण्डली

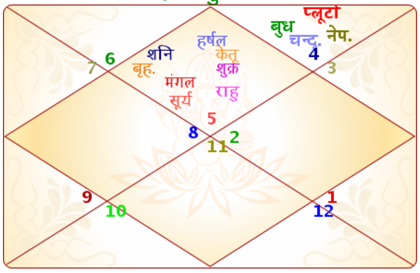


द्रेष्काण कुण्डली

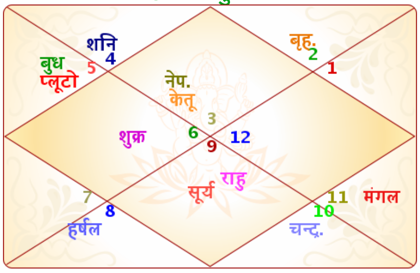


चतुर्थांश कुण्डली

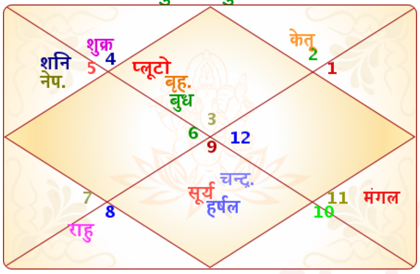


पंचमांश कुण्डली

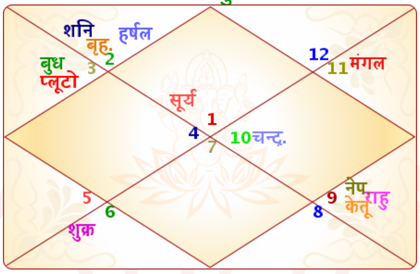


षष्टमांश कुण्डली

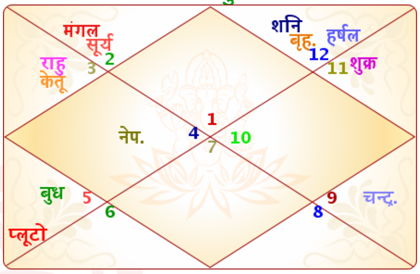


सप्तमांश कुण्डली

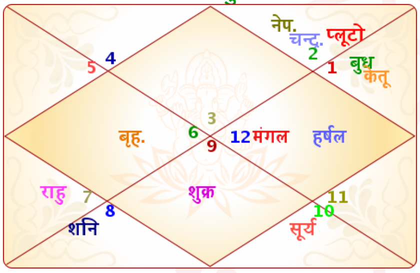


अष्टमांश कुण्डली

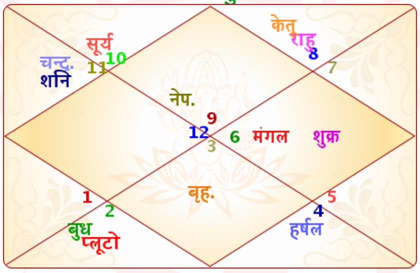


नवांश कुण्डली

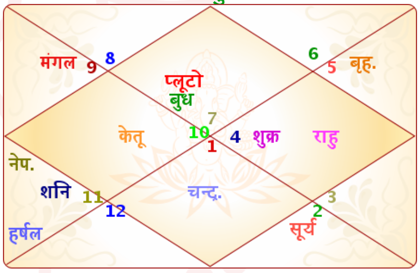


चर्तुविशांश कुण्डली

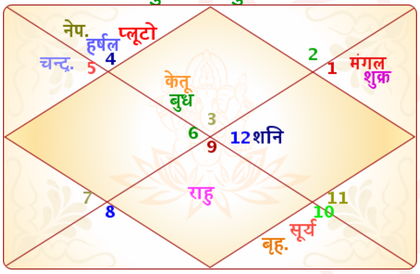


एकादशांश कुण्डली

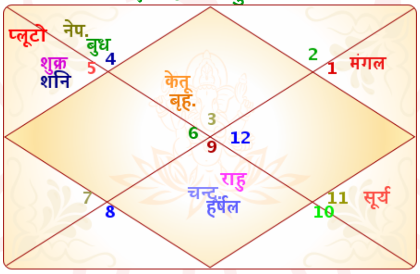


द्वादशांश कुण्डली

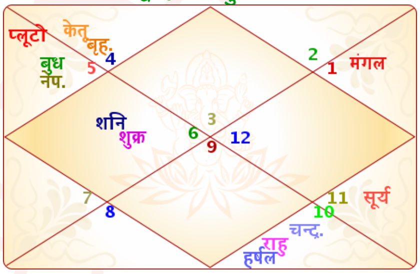


## वर्षफल कुण्डली में ग्रहों की दृष्टि

| | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहू | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रवि | .... | प्र.प्रेम | सम | सम | सम | सम | गु.प्रेम | गु.शत्रु | गु.शत्रु |
| चंद्र | प्र.प्रेम | .... | सम | गु.शत्रु | गु.शत्रु | सम | प्र.शत्रु | सम | सम |
| मंगळ | सम | सम | .... | प्र.प्रेम | गु.प्रेम | प्र.शत्रु | सम | प्र.प्रेम | गु.प्रेम |
| बुध | सम | गु.शत्रु | प्र.प्रेम | .... | प्र.शत्रु | गु.प्रेम | गु.शत्रु | प्र.प्रेम | गु.प्रेम |
| गुरु | सम | गु.शत्रु | गु.प्रेम | प्र.शत्रु | .... | प्र.प्रेम | गु.शत्रु | गु.प्रेम | प्र.प्रेम |
| शुक्र | सम | सम | प्र.शत्रु | गु.प्रेम | प्र.प्रेम | .... | सम | गु.प्रेम | प्र.प्रेम |
| शनि | गु.प्रेम | प्र.शत्रु | सम | गु.शत्रु | गु.शत्रु | सम | .... | सम | सम |
| राहू | गु.शत्रु | सम | प्र.प्रेम | प्र.प्रेम | गु.प्रेम | गु.प्रेम | सम | .... | प्र.शत्रु |
| केतु | गु.शत्रु | सम | गु.प्रेम | गु.प्रेम | प्र.प्रेम | प्र.प्रेम | सम | प्र.शत्रु | .... |

प्र.प्रेमः–प्रकट प्रेम दृष्टि ,गु.प्रेमः–गुप्त प्रेम दृष्टि ,प्र.शत्रुः–प्रकट शत्रु दृष्टि ,गु.शत्रुः–गुप्त शत्रु दृष्टि ,समः–सम दृष्टि ,

# वर्षफल कुण्डली में ग्रहों का बल

Varhphal Years: 79 (2024-2025) Varhphal Date: 21:12:2024, Time: 17:57Hrs

## पंचवर्गीय बल

| क्र0स0 | बल | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | क्षेत्र बल | 15.0 | 22.5 | 15.0 | 22.5 | 22.5 | 15.0 | 30.0 |
| 2 | उच्च बल | 6.21 | 8.05 | 1.94 | 13.39 | 15.03 | 12.78 | 6.71 |
| 3 | हद्दा बल | 7.5 | 3.75 | 3.75 | 15.0 | 15.0 | 7.5 | 3.75 |
| 4 | द्रेक्कन बल | 5.0 | 5.0 | 7.5 | 5.0 | 2.5 | 5.0 | 2.5 |
| 5 | नवांश बल | 2.5 | 2.5 | 1.25 | 3.75 | 1.25 | 2.5 | 1.25 |
| | योग | 9.05 | 10.45 | 7.36 | 14.91 | 14.07 | 10.7 | 11.05 |
| | तुलनात्मक बल | साधारण | बलशाली | साधारण | बलशाली | बलशाली | बलशाली | बलशाली |

## द्वादश वर्गीय बल

| क्र0स0 | बल | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | राशि बल | 0 | -1 | 0 | -1 | -1 | 0 | +2 |
| 2 | होरा बल | +2 | +2 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| 3 | द्रेक्कन बल | 0 | 0 | +2 | 0 | 0 | -1 | 0 |
| 4 | चतुर्थाशं बल | 0 | 0 | 0 | 0 | -1 | 0 | -1 |
| 5 | पंचमाशं बल | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | -1 | 0 |
| 6 | षष्टाशं बल | 0 | -1 | -1 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| 7 | सप्तमाशं बल | -1 | 0 | -1 | 0 | +2 | -1 | 0 |
| 8 | अष्टमाशं बल | -1 | 0 | -1 | -1 | 0 | -1 | +2 |
| 9 | नवाशं बल | 0 | 0 | 0 | -1 | 0 | 0 | 0 |
| 10 | दसाशं बल | -1 | 0 | -1 | -1 | 0 | 0 | -1 |
| 11 | एकादसाशं बल | -1 | 0 | 0 | -1 | +2 | -1 | 0 |
| 12 | द्वादशाशं बल | -1 | 0 | +2 | -1 | 0 | -1 | 0 |
| | योग | -3 | 0 | 0 | -6 | +2 | -6 | +2 |
| | तुलनात्मक बल | बुरा | सम | सम | बहुत बुरा | साधारण | बहुत बुरा | साधारण |

## हर्ष बल

| क्र0स0 | बल | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | स्थान बल | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 |
| 2 | क्षेत्र बल | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 5.0 |
| 3 | ओज–युग्म बल | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 0.0 | 5.0 | 5.0 | 5.0 |
| 4 | दिवा–रात्रि बल | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 5.0 | 5.0 |
| | योग | 0 | 15 | 0 | 5 | 5 | 10 | 15 |
| | तुलनात्मक बल | निर्बबली | पर्णबली | निर्बबली | अल्पबली | अल्पबली | मध्यबली | पर्णबली |

# वर्षफल सहम

Varhphal Years: 79 (2024-2025) Varhphal Date: 21:12:2024, Time: 17:57Hrs

| क्र0स0 | सहम का नाम | राशि | अंश | सहम अधिपति | 11 भाव पति | 8 भाव पति |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | पुण्य सहम (भाग्य) | वृश्चिक | 003:29:56 | मंगल | बुध | ... |
| 2 | विद्या सहम | मीन | 002:40:59 | बृहस्पति | शनि | ... |
| 3 | यश सहम | धनु | 001:21:08 | बृहस्पति | शुक्र | ... |
| 4 | मित्र सहम (मित्र) | कर्क | 005:15:45 | चन्द्रमा | शुक्र | ... |
| 5 | महात्य सहम (महानता) | कुम्भ | 025:06:25 | शनि | बृहस्पति | ... |
| 6 | आशा सहम (इच्छा) | वृश्चिक | 009:00:10 | मंगल | बुध | ... |
| 7 | समर्थ सहम (पुरूषार्थ) | वृश्चिक | 022:02:19 | मंगल | बुध | ... |
| 8 | भ्रात्रि सहम (भाई) | तुला | 018:43:32 | शुक्र | सूर्य | ... |
| 9 | गौरव सहम (सम्मान) | मीन | 006:12:28 | बृहस्पति | शनि | ... |
| 10 | पितृ सहम (पिता) | मेष | 004:24:52 | मंगल | शनि | ... |
| 11 | राजा सहम (अधिकार) | मेष | 004:24:52 | मंगल | शनि | ... |
| 12 | मात्रि सहम (माता) | धनु | 019:35:24 | बृहस्पति | शुक्र | ... |
| 13 | अपत्य सहम (संतान) | कन्या | 018:22:20 | बुध | चन्द्रमा | ... |
| 14 | जीव सहम (जीवन) | तुला | 018:43:32 | शुक्र | सूर्य | ... |
| 15 | कर्म सहम (कार्रवाई) | वृश्चिक | 022:02:19 | मंगल | बुध | ... |
| 16 | रोग सहम | मेष | 015:39:48 | मंगल | ... | मंगल |
| 17 | काली सहम (कलह, संघर्ष) | सिहं | 008:22:06 | सूर्य | ... | बृहस्पति |
| 18 | शास्त्र सहम (उच्च शिक्षा) | सिहं | 013:49:41 | सूर्य | बुध | ... |
| 19 | बन्धु सहम (रिश्तेदार) | मीन | 024:08:51 | बृहस्पति | शनि | ... |
| 20 | निधन सहम | मकर | 023:34:16 | शनि | ... | सूर्य |
| 21 | परदेश सहम (विदेश) | कर्क | 025:42:27 | चन्द्रमा | शुक्र | ... |
| 22 | धन सहम (धन) | सिहं | 023:34:16 | सूर्य | बुध | ... |
| 23 | प्रदर सहम (परस्त्रीगमन) | वृष | 002:00:00 | शुक्र | बृहस्पति | ... |
| 24 | वनिज सहम (धंधा) | तुला | 012:01:05 | शुक्र | सूर्य | ... |
| 25 | कार्यसिद्धि सहम (सफलता) | कर्क | 005:00:40 | चन्द्रमा | शुक्र | ... |
| 26 | विवाह सहम | सिहं | 015:40:35 | सूर्य | बुध | ... |
| 27 | संताप सहम (दुःख) | वृष | 015:57:16 | शुक्र | ... | बृहस्पति |
| 28 | श्रद्धा सहम (भक्ति) | धनु | 006:35:17 | बृहस्पति | शुक्र | ... |
| 29 | प्रिति सहम (प्यार) | तुला | 007:45:43 | शुक्र | सूर्य | ... |
| 30 | जाड्य सहम (स्थाई रोग) | कर्क | 023:33:03 | चन्द्रमा | ... | शनि |
| 31 | ब्यापार सहम | वृश्चिक | 009:00:10 | मंगल | बुध | ... |
| 32 | शत्रु सहम | कुम्भ | 027:10:46 | शनि | ... | बुध |
| 33 | जलपत्तन सहम (विदेश यात्रा) | कुम्भ | 022:41:40 | शनि | बृहस्पति | ... |
| 34 | बंधन सहम (कारावास) | वृश्चिक | 004:11:43 | मंगल | ... | बुध |
| 35 | अपघात सहम (आकस्मिक दुर्घटना) | धनु | 013:34:01 | बृहस्पति | ... | चन्द्रमा |
| 36 | वित्तहानि सहम | कुम्भ | 025:04:12 | शनि | ... | बुध |
| 37 | त्रिक स्फूट (दुर्घटना) | तुला | 020:38:14 | शुक्र | ... | शुक्र |
| 38 | घात स्थान (अनहोनी) | मिथुन | 021:44:17 | बुध | ... | शनि |

# त्रिपताकी चक्र

**Varhphal Years: 79 (2024-2025) Varhphal Date: 21:12:2024, Time: 17:57Hrs**

| क्र0स0 | राशि | ग्रह |
|---|---|---|
| 1 | 3 | |
| 2 | 4 | केतु |
| 3 | 5 | |
| 4 | 6 | |
| 5 | 7 | शनि |
| 6 | 8 | |
| 7 | 9 | मंगल |
| 8 | 10 | बृहस्पति, राहु |
| 9 | 11 | बुध, शुक्र |
| 10 | 12 | सूर्य, चन्द्रमा |
| 11 | 1 | |
| 12 | 2 | |

## त्रिपताकी चक्र में वेध

**लग्न** : सूर्य , चन्द्र , मंग.

**सूर्य** : सूर्य , चन्द्र , मंग. , चन्द्र , मंग.

**चन्द्रमा** : सूर्य , मंग.

**मंगल** : सूर्य , चन्द्र

**बुध** : गुरू , शुक्र , शनि , राहु , केतु

**बृहस्पति** : बुध , शुक्र , राहु

**शुक्र** : बुध , गुरू , शनि , राहु , केतु

**शनि** : बुध , शुक्र

## ग्रहों द्वारा चन्द्र वेध का फल

**सूर्य :**

आत्मविश्वास की कमी, बदनामी, वृथा अंहकार, दोषयुक्त आँखें, पिता को कठिनाई, मानसिक तनाव, चिड़चिड़ापन, उच्च ज्वर, पित्तजनित रोग तथा निराशायें।

**मंगल :**

शत्रुओं से भय, हथियार, रक्त अनियमितत, दुर्घटनायें, शरीर में दर्द और चोट, शीघ्र क्रोधित होना, लड़ाई–झगड़ा, संघर्ष, हिंसा, लेकिन साथ ही ज्ञान व धन की प्राप्ति भी।

**बुध :**

ज्ञान व बुद्धिमत्ता में वृद्धि, तीक्ष्ण बुद्धि, अच्छे लोगों की संगति और धन का लाभ। लेकिन यदि दूषित है, तो व्यक्ति उतावला व क्षुद्र दिमाग वाला होता है, परिवार की नाराजगी, तनाव और चिन्ताओं की प्राप्ति तथा शत्रुओं से भय।

**बृहस्पति :**

शांति और प्रसन्नता, सभ्य लोगों की संगति, तीर्थ यात्रा, धार्मिक कार्यों के प्रति रूझान, सामाजिक स्तर में उन्नति, धन का लाभ, उपक्रमों के सफलता, संतान का जन्म, और सामान्य समृद्धि।

**शुक्र :**

इच्छाओं की पूर्ति, इन्द्रिय सुख की प्राप्ति, धन–संपदा व शिक्षा की प्राप्ति, शत्रुओं पर विजय। लेकिन शारीरिक सुख के प्रति अत्यधिक लालसा होने के कारण मानसिक व्यग्रता, जल से भय और वातमय विकार।

**शनि :**

तुच्छ व निम्न स्तर के लोगों के साथ संगति, स्वार्थी, तानाशाही, गरीबी, वियोग, यौन विकृति, शारीरिक रोग, सर्दी व जुकाम के साथ–साथ वातमय विकार।

**राहु :**

गंभीर बीमारी/आशंका, मान–प्रतिष्ठा/धन की हानि, विदेशी स्रोतों से कठिनाईयां, उदासीन मन, डरपोक स्वभाव तथा अनेक प्रकार की कठिनाइयों से पीड़ित।

**केतु :**

अस्वस्थता, कमजोर पाचनशक्ति, अस्थिरता, आत्मिक व घुमन्तु प्रकृति, निराशा, चिन्तायें और दुख।

Varhphal Years: 79 (2024-2025) Varhphal Date: 21:12:2024, Time: 17:57Hrs

| मुद्दा योगिनी दशा | | | मुद्दा षोडशोत्तरी दशा | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दशा | अवधि | से | दशा | अवधि | से |
| मंगला (चन्द्रमा) | 0.0 y.0.0 m.10 d. | 21:12:2024 | मंगल | 0.0 y.1.0 m.8 d. | 21:12:2024 |
| पिगंला (सूर्य) | 0.0 y.0.0 m.20 d. | 31:12:2024 | गुरु | 0.0 y.1.0 m.11 d. | 28:01:2025 |
| धान्य (वृहस्पति) | 0.0 y.1.0 m.0 d. | 21:01:2025 | रवि | 0.0 y.1.0 m.5 d. | 10:03:2025 |
| भ्रमरि (मंगल) | 0.0 y.1.0 m.10 d. | 20:02:2025 | मंगल | 0.0 y.1.0 m.8 d. | 14:04:2025 |
| भभद्रिका (बुध) | 0.0 y.1.0 m.21 d. | 02:04:2025 | गुरु | 0.0 y.1.0 m.11 d. | 21:05:2025 |
| उल्का (शनि) | 0.0 y.2.0 m.0 d. | 22:05:2025 | शनि | 0.0 y.1.0 m.14 d. | 01:07:2025 |
| सिद्धा (शुक्र) | 0.0 y.2.0 m.11 d. | 22:07:2025 | केतु | 0.0 y.1.0 m.17 d. | 14:08:2025 |
| संकटा (शनि) | 0.0 y.2.0 m.20 d. | 01:10:2025 | चंद्र | 0.0 y.1.0 m.20 d. | 30:09:2025 |

## पत्ययनी दशा

| क्र0स0 | दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | रवि | 0.0 y.3.0 m.7 d. | 21:12:2024 |
| 2 | मंगल | 0.0 y.2.0 m.16 d. | 30:03:2025 |
| 3 | बुध | 0.0 y.2.0 m.5 d. | 14:06:2025 |
| 4 | लग्न | 0.0 y.1.0 m.30 d. | 18:08:2025 |
| 5 | शनि | 0.0 y.0.0 m.25 d. | 17:10:2025 |
| 6 | गुरु | 0.0 y.0.0 m.11 d. | 11:11:2025 |
| 7 | चंद्र | 0.0 y.0.0 m.5 d. | 22:11:2025 |
| 8 | शुक्र | 0.0 y.0.0 m.25 d. | 26:11:2025 |

## मुद्दा विंशोत्तरी दशा

| क्र0स0 | दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | राहू | 0.0 y.1.0 m.24 d. | 21:12:2024 |
| 2 | गुरु | 0.0 y.1.0 m.19 d. | 14:02:2025 |
| 3 | शनि | 0.0 y.1.0 m.27 d. | 04:04:2025 |
| 4 | बुध | 0.0 y.1.0 m.21 d. | 31:05:2025 |
| 5 | केतु | 0.0 y.0.0 m.21 d. | 22:07:2025 |
| 6 | शुक्र | 0.0 y.2.0 m.0 d. | 12:08:2025 |
| 7 | रवि | 0.0 y.0.0 m.19 d. | 12:10:2025 |
| 8 | चंद्र | 0.0 y.1.0 m.0 d. | 31:10:2025 |
| 9 | मंगल | 0.0 y.0.0 m.21 d. | 30:11:2025 |

## वर्ष जैमिनी चर दशा

| क्र0स0 | दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | मिथुन | 0.0 y.0.0 m.24 d. | 21:12:2024 |
| 2 | तुला | 0.0 y.0.0 m.14 d. | 13:01:2025 |
| 3 | कुंभ | 0.0 y.1.0 m.26 d. | 27:01:2025 |
| 4 | कर्क | 0.0 y.1.0 m.21 d. | 25:03:2025 |
| 5 | वृश्चिक | 0.0 y.1.0 m.7 d. | 15:05:2025 |
| 6 | मीन | 0.0 y.0.0 m.10 d. | 22:06:2025 |
| 7 | सिंह | 0.0 y.1.0 m.7 d. | 01:07:2025 |
| 8 | धनु | 0.0 y.0.0 m.24 d. | 07:08:2025 |
| 9 | मेष | 0.0 y.0.0 m.14 d. | 31:08:2025 |
| 10 | कन्या | 0.0 y.0.0 m.10 d. | 14:09:2025 |
| 11 | मकर | 0.0 y.1.0 m.21 d. | 23:09:2025 |
| 12 | वृष | 0.0 y.1.0 m.7 d. | 14:11:2025 |

# वर्षफल कुण्डली से महत्वपूर्ण भविष्यफल

Varhphal Years: 79 (2024-2025) Varhphal Date: 21:12:2024, Time: 17:57Hrs

## (अष्टक चक्र, ढुढिंराजा पद्धति, वर्षेश्वर और मुन्था)

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, सूर्य वर्षेश्वर ग्रह है।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्षेश्वर एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह है। यह ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि में स्थित है। इसके अतिरिक्त इसे पंचवर्गीय बल द्वारा उत्तम शक्ति प्राप्त नहीं हो रही है। परिणामस्वरूप, इस वर्ष के दौरान होने वाली घटनाएं अधिक सहज व सरल नहीं हो सकती हैं। यदि आपकी वर्षफल कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अचानक किसी अशुभ घटना का सामना करना पड़ सकता है अथवा आपको आर्थिक मामलों में व्यापक उतार–चढ़ाव की अनुभूति हो सकती है।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्षेश्वर सूर्य है। अतः यह आपको अनेक संदर्भो में भाग्यशाली बनाएगा। आप एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं तथा आपकी आर्थिक स्थिति में विशेष सुधार होगा। पद और अधिकार वाले व्यक्तियों से आपका सम्पक्र स्थापित हो सकता है। सामान्यतः आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, किन्तु संभवतः इस वर्ष के दौरान कभी एक बार आप बुखार से ग्रस्त हो सकते हैं। आपका घरेलू जीवन बहुत खुशहाल व सुखमय होगा तथा आपकी संतानें अपने कार्यों से आपको गौरान्वित करेंगी। आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे तथा आपका नाम व यश दूर–दूर तक फैलेगा।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था पांचवें में स्थित है। अतः यह बहुत अनुकूल स्थिति है तथा आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। आपको अपने वरिष्ठों से समर्थन प्राप्त होगा एवं सरकारी स्रोतों से भी लाभ प्राप्त होगा। आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा, मनोरंजक स्थानों का भ्रमण करेंगे, रचनात्मक कार्यों में संलग्न रहेंगे एवं मनोंरजन के क्षेत्रों से उत्तम लाभ प्राप्त करेंगे। आपके ज्ञान व बुद्धिमता में वृद्धि होगी एवं आपकी संतानों की समृद्धि आपकी खुशियों में बढ़ोत्तरी करेगा। आप कुछ पवित्र कर्म करेंगे एवं धर्मार्थ गतिविधियों में भाग लेंगे।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था–राशि शुक्र की राशि में स्थित है। आगामी वर्ष आपके लिए अनुकूल है। आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे एवं अधिकारियों व कुलीन पृष्ठभूमि की कुछ महिलाओं से भी से समर्थन व लाभ प्राप्त करेंगे। आपके व्यवसाय में प्रगति होगी एवं पद व प्रतिष्ठा वाले लोगों के साथ सम्पक्र बनेंगे। यदि आप कलात्मक कार्यों में संलग्न हैं तो सार्थक प्रगति करेंगे। आपका विपरीत लिंग के लोगों के साथ अधिक आत्मीय संबंध होंगे एवं आपकी सामाजिक लोकप्रियता में वृद्धि होगी।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था–राशि का स्वामी वर्ष–लग्न से आठवें भाव में स्थित है एवं यह ग्रह उच्चस्थ अथवा अपनी राशि या अपने नक्षत्र में नहीं है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। इस वर्ष के दौरान आप बीमारी से पीड़ित हो सकते हैं, भारी व व्यर्थ के खर्चे हो सकते हैं, आपको हानि होने का भी खतरा हो सकता है। व्यवसाय के क्षेत्र में आप अस्थाई आघात का सामना कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आपकी विश्वसनीयता व सम्मान भी कुछ अजीब कारणों से दांव पर लग सकते हैं।

# वर्षफल सहम से भविष्यफल

**Varhphal Years: 79 (2024-2025) Varhphal Date: 21:12:2024, Time: 17:57Hrs**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, प्रीति–सहम एकादशेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा एकादशेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 18:02:2025 और 23:10:2025 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ अनुकूल घटनाएं (इस विशेष सहम से संबंधित) हो सकती हैं।

# वर्षफल

**Varhphal Years: 79 (2024-2025)  Varhphal Date: 21:12:2024, Time: 17:57Hrs**

## वर्षेश और अन्य कारकों का फल

आपका वर्षेश सूर्य कमजोर स्थिति में है। अतः यह वर्ष आपके लिए प्रतिकूल फलदायक साबित हो सकता है। आप शारीरिक रूप से रोगादि के कारण लम्बे समय तक पीड़ित रह सकते हैं। आपका अपने पिता, मित्र आदि के साथ तनावपूर्ण संबंध हो सकते हैं। पारिवारिक वातावारण तनावपूर्ण हो सकता है। आपका दुराचारी लोगों के साथ लड़ाई–झगड़े होने की भी संभावना है। आपको नौकरी या राजपक्ष से कोई भय हो सकता है। आपके अपने कार्यक्षेत्र में अधिकारों में कमी आ सकती है एवं पदानवति व स्थानान्तरण भी हो सकता है। इस वर्ष आपको निरंतर हानि होने की संभावनाएं हैं एवं आपके मान–सम्मान का ह्रास हो सकता है तथा अपयश की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। यात्राओं से आपको लाभ कम और हानि अधिक हो सकती है।

इस वर्ष आपकी वर्षफल कुण्डली में वर्षेश सातवें भाव में उपस्थित है। अतः यह वर्ष आपके लिए अनुकूल फलप्रदायक है। आपका दाम्पत्य जीवन सुख शांतिपूर्वक व्यतीत होगा। इस वर्ष आप स्वयं के घर का सुख प्राप्त करेंगे। आप प्रसन्नचित्त रहेंगे। आपको अपने कार्यक्षेत्र में भी सम्मान प्राप्त होगा। आप कोई लाभकारी यात्रा भी करेंगे।

## जन्म लग्न का फल

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न की राशि आपकी वर्षकुण्डली में दसवें भाव में स्थित है। यह वर्ष आपके लिए अनुकूल फलदायक है। आपको अपने कार्यों में सफलता मिलेगी, व्यापार में लाभ एवं आर्थिक रूप से संपन्नता प्राप्त होगी। आपको प्राप्त होने वाले सम्मान एवं पदोन्नति के अवसर को अपने हाथ से जाने नहीं देना चाहिए।

## वर्षफल के योग

आपकी वर्षकुण्डली में, अष्टमेश नौवें, पाँचवें या छठे भाव में स्थित है एवं द्वितीयेश (धनेश) पाप ग्रह के घर में उपस्थित है। इस योग को गोशना योग कहा जाता है। यह एक अशुभ फलदायी योग है। इस वर्ष आपको वस्त्र आदि से संबंधित परेशानी या हानि हो सकती है।

## कुण्डली के भावों का उनके कारकत्व के अनुसार विश्लेषण

### लग्न भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश छठवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपका अपने मातृ–पक्ष के लोगों के साथ मधुर संबंध रहेंगे। आप अपने शत्रुओं को परास्त करेंगे। हालांकि आप शारीरिक दृष्टि से अस्वस्थ रह सकते हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, जन्मलग्नपति, वर्षलग्नपति और मुन्थापति तीनों चौथे, छठे, आठवें या बारहवें भाव में एक ही राशि में स्थित हैं। इस वर्ष आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्न से बारहवें में एक मार्गी ग्रह है तथा दूसरे भाव में एक वक्री ग्रह स्थित है। इस वर्ष आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है।

**द्वितीय भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में मंगल दूसरे भाव में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए अनुकूल नहीं हो सकता है। आप नेत्र रोग एवं अन्य प्रकार की शारीरिक पीड़ा से ग्रसित हो सकते हैं। जलीय स्थानों जैसे नदी, तालाब झील आदि से आपको खतरा हो सकता है तथा आपको आग से भी हानि हो सकती है, अतः पर्याप्त सावधानी बरतें। इस वर्ष आपकी वांछित इच्छाएं पूरी नहीं हो सकती हैं, जिससे आपको मानसिक कष्ट एवं व्याकुलता हो सकती है। चोरी या गुम होने के कारण धन हानि भी हो सकती है।

आपकी वर्षकुण्डली में, द्वितीयेश तीसरे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपकी मान–प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपका अपने मित्रों व संबंधियों के साथ अच्छे संबंध रहेंगे एवं उनसे आपको सुख व सहयोग मिलेगा। आपके पराक्रम में भी वृद्धि होगी।

आपकी वर्षकुण्डली में दूसरे भाव में पापी ग्रह के साथ कोई नीच ग्रह उपस्थित है। इस वर्ष आपको विभिन्न कारणों से धन संबंधी चिन्ता या परेशानी रह सकती है व धन हानि भी हो सकती है।

**तृतीय भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में चंद्रमा तीसरे भाव में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए शुभ फलदायक होगा। धर्म के प्रति आपमें आस्था जागृत होगी एवं आपके घर में कोई शुभ समारोह का आयोजन होगा एवं पारिवारिक वातावरण आनन्दमय रहेगा। आप अपने किसी शक्तिशाली शत्रु को परास्त करने में सफल हो सकते हैं। आपको धन–लाभ एवं उच्च पद की प्राप्ति होगी। यदि आप प्रयास करते हैं, तो आपके किसी वांछित इच्छा की पूर्ति होगी। आपके पराक्रम एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, तृतीयेश सातवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आप अपनी योग्यता से लाभार्जन करेंगे। अपने भ्रातृ–पक्ष से आपका संबंध मधुर रहेगा एवं सुख की प्राप्ति होगी।

**चतुर्थ भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, केतु चौथे भाव में स्थित है। अतः इस वर्ष आपकी माता का स्वास्थ्य खराब रह सकता है, आपके जीवनसाथी को भी कोई कष्ट हो सकता है, साथ ही आपका शरीर भी कमजोर रह सकता है। आपके घर–परिवार में लड़ाई–झगड़े या विवाद हो सकते हैं। इस वर्ष धनाभाव का भी सामना करना पड़ सकता है। आप किसी बड़े धार्मिक अनुष्ठान का आयोजन करवा सकते हैं। वाहन से दुर्घटना होने की संभावना है, अतः आपको

उचित सावधानी रखनी चाहिए।

आपकी वर्षकुण्डली में, चतुर्थेश छठवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपका अपने बन्धुजनों से विवाद या विरोध संभव है। आपको भूमि व भवन से संबंधित व्यय भी करना पड़ सकता है।

**पंचम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, पंचमेश आठवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको घर का सुख प्राप्त होगा तथा आप व्यवसाय से लाभ प्राप्त करेंगे। यदि पंचमेश की शुभ ग्रहों से युति या शुभ ग्रहों की इस पर दृष्टि है, तो आपको इस वर्ष संतान संबंधी शुभ फल की प्राप्ति होने के योग हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में बृहस्पति जिस राशि में स्थित है, वह राशि आपकी वर्षकुण्डली में लग्न या पाँचवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको पुत्र की प्राप्ति होगी। (अगर आप उम्र के उस दौर में हैं तो अन्यथा आपको अपने पुत्र अथवा पुत्री के किसी कार्य से सम्मान मिलेगा)

**षष्टम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में बुध छठवें भाव में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए अनुकूल नहीं हो सकता है। आपमें उन्माद का भाव उत्पन्न हो सकता है एवं लापरवाह प्रकृति भी विकसित हो सकती है। परिणामस्वरूप आपका अपने स्वजनों के साथ वाद–विवाद हो सकता है। आप शारीरिक रूप से पीड़ित रह सकते हैं एवं आपकी आभा धूमिल हो सकती है। आपके शत्रुओं की शक्ति में वृद्धि हो सकती है एवं आपके नये शत्रु भी उत्पन्न हो सकते हैं। अतः ऐसी विपरीत परिस्थितियों में आपको सावधान रहना चाहिए।

आपकी वर्षकुण्डली में, षष्ठेश दूसरे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको अपने शत्रुओं के कारण धन खर्च करना पड़ सकता है।

**सप्तम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली मे सूर्य सातवें भाव में स्थित है। इसलिए इस वर्ष आपके जीवनसाथी को किसी प्रकार का कष्ट होने की संभावना है तथा आप भी शारीरिक रूप से अस्वस्थ रह सकते हैं। आपको नेत्र, सिर, वस्थि प्रदेश से संबंधित रोग हो सकते हैं। इस वर्ष आपको यात्रा में कष्ट एवं हानि होने की संभावना है, इसलिए सावधानी अपेक्षित है। किन्तु वाहन का सुख प्राप्त करने की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल है। आप अपनी स्थिति के अनुसार वाहन खरीद सकते हैं एवं उसका सुख प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, सप्तमेश बारहवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपके जीवनसाथी को ट्यूमर/फोड़े आदि या अन्य रोगादि से शारीरिक रूप से पीड़ित रहना पड़ सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, बृहस्पति युति अथवा दृष्टि से मुन्थेश के साथ संबद्ध है। यदि आप विवाह योग्य हैं और

अविवाहित हैं, तो आपका इस वर्ष विवाह होने के प्रबल योग हैं।

**अष्टम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, शुक्र आठवें भाव में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए अनुकूल नहीं हो सकता है। इस वर्ष आप मानसिक रूप से चिन्तित रह सकते हैं एवं आपका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रह सकता है। आपका पारिवारिक जीवन सुख–शांतिपूर्ण नहीं हो सकता है तथा अत्यधिक कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपने परिजनों से संबंधित चिन्ताएं रह सकती हैं। आप अत्यधिक क्रोध कर सकते हैं एवं प्रतिकूल परिस्थिति में मन विचलित हो सकता है। आपका अपने शत्रुओं से विवाद हो सकता है। आप यात्रायें भी कर सकते हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, अष्टमेश नौवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको उत्तराधिकार के रूप में किसी का धन प्राप्त होने की संभावना है। यदि अष्टमेश की पाप ग्रहों के साथ युति है या ऐसे ग्रहों की इस पर दृष्टि है, तो इस वर्ष आप दुखी या व्यथित रह सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में बुध मंगल की राशि में है, जो कि वर्षकुण्डली में पंचाधिकारियों में से एक है। इस वर्ष आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है, आप रोगादि से ग्रसित रह सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में आठवें भाव का स्वामी, आपकी वर्षकुण्डली में आठवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको अतिशय शारीरिक कष्ट हो सकता है।

**नवम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, शनि नौवें भाव (धर्म–भाव) में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए अनुकूल नहीं हो सकता है। इस वर्ष आपके बड़े भाई–बहनों को किसी प्रकार का कष्ट रह सकता है। आपकी धार्मिक भावना में कमी आ सकती है एवं नैतिक मूल्यों का पतन हो सकता है। आपको अपने व्यापार–व्यवसाय में हानि हो सकती है। राज्य पक्ष से अथवा कार्यक्षेत्र से कोई अप्रिय सूचना मिल सकती है एवं अनेक मामलों में आपको निराश होना पड़ सकता है। आपकी पदावनति भी हो सकती है।

आपकी वर्षकुण्डली में, नवमेश नौवें भाव में स्थित है। यह वर्ष आपके लिए भाग्यवर्द्धक साबित होगा। आप अपने शत्रुओं को परास्त करेंगे। साथ ही आप इस वर्ष वाहन का सुख भी प्राप्त करेंगे।

आपकी वर्षकुण्डली में, नौवां भाव (भाग्य भाव) शनि से युत या दृष्ट है। इस वर्ष आपकी उन्नति के मार्ग में बाधायें उत्पन्न हो सकती हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, चतुर्थेश और भाग्येश में युति अथवा दृष्टि संबंध है। इस वर्ष आपको जमीन–जायदाद आदि की प्राप्ति होने के प्रबल योग हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में शनि पंचाधिकारियों में से नहीं है तथा नौवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपकी यात्रा असुविधाजनक हो सकती है, साथ ही चोरी या धनहानि का भय भी हो सकता है।

**दशम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, राहु दसवें भाव में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए अधिक अनुकूल नहीं हो सकता है। इस वर्ष आपको शारीरिक कष्ट हो सकते हैं। आपका अपने उच्चाधिकारियों से अच्छे संबंध नहीं हो सकते हैं एवं उनसे परेशानी हो सकती है। आपको धन हानि भी हो सकती है।

आपकी वर्षकुण्डली में, दशमेश बारहवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको रोगादि के कारण धन खर्च करना पड़ सकता है। इसके अतिरिक्त अन्य अनावश्यक खर्चों में भी वृद्धि होने की संभावना है।

आपकी वर्षकुण्डली में, सातवें या आठवें भाव में शुक्र उपस्थित है। इस वर्ष आपको पद की प्राप्ति या पदोन्नति हो सकती है।

आपकी वर्षकुण्डली में, राज्येश/दशमेश का चतुर्थेश से युति या दृष्टि संबंध है। इस वर्ष आपको जल मार्ग की यात्रा करनी पड़ सकती है।

**एकादश भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, एकादशेश दूसरे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको उत्तम धन–लाभ की प्राप्ति होगी। आपका अपने मित्रों से मधुर संबंध रहेगा एवं उनसे सुख व सहयोग मिलेगा।

**द्वादश भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में बृहस्पति बारहवें भाव में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए अनुकूल नहीं हो सकता है। इस वर्ष आपको अपने जन्म–स्थान से स्थानान्तरण अथवा अन्य किसी कारणवश दूर रहना पड़ सकता है। प्रवास से आपको लाभ प्राप्त होने की संभावनाएं कम ही रहेंगी। व्यर्थ के खर्चों में वृद्धि होने अथवा किसी अन्य कारण से धन की हानि या कमी हो सकती है। आपको अपने अधिकारियों से या राज्य पक्ष से किसी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। इस वर्ष आपका मन व्यथित हो सकता है एवं आप चिन्ताओं से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, द्वादशेश आठवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आप अपने शत्रुओं से भयभीत रह सकते हैं एवं वे आपके लिए परेशानियां खड़ी कर सकते हैं, जिसके कारण आपको अत्यधिक धन व्यय करना पड़ सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, द्वादशेश(व्ययेश) दसवें भाव में स्थित है अथवा दशमेश द्वादश भाव में स्थित है। इस वर्ष

आपको कर, जुर्माना आदि के रूप में राजदण्ड का भागी बनना पड़ सकता है।

# पत्ययनी दशाफल

Varhphal Years: 79 (2024-2025) Varhphal Date: 21:12:2024, 17:57Hrs

## रवि दशा

21:12:2024-29:03:2025

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, सूर्य उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित नहीं है। समग्र रूप से यह एक उदासीन योग का निर्माण करता है। अतः सूर्य की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। हालांकि आपको अपने कार्यस्थल पर कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है एवं आप अपने किसी वरिष्ठ अथवा सहकर्मी के साथ मामूली असहमति अथवा गलतफहमी के कारण झुंझलाहट महसूस कर सकते हैं।

## मंगल दशा

30:03:2025-13:06:2025

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मंगल नीचस्थ है अथवा अस्त या ग्रसित होने के कारण दूषित है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। मंगल की दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं रह सकता है एवं आपके सगे या चचेरे भाई आपको सम्पत्ति संबंधी मामलों में परेशान कर सकते हैं। इस अवधि के दौरान कोई महत्वपूर्ण कार्य प्रारम्भ करना या किसी लम्बी यात्रा के लिए प्रस्थान करना लाभदायक नहीं हो सकता है। आपके कार्यस्थल पर स्थिति कुछ हद तक बदतर हो सकती है एवं आपकी अपने कुछ सहकर्मियों या वरिष्ठों से असहमति हो सकती है।

## बुध दशा

14:06:2025-17:08:2025

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, बुध उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते है। अतः बुध की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। सामान्यतः आपके सभी मामलें भली भांति चलेंगे। आपके पेशे के क्षेत्र में चीजें बहुत सहजतापूर्ण ढंग से होंगी। अपने सगे–संबंधियों व मित्रों के साथ मिलने–जुलने के लिए आप कुछ खाली समय निकालने में सक्षम होंगे।

## लग्न दशा

18:08:2025-16:10:2025

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, लग्नेश उच्चस्थ अथवा अपनी राशि में अथवा नीचस्थ नहीं है। किन्तु यह वक्री या अस्त या ग्रसित नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते हैं। अतः लग्न की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना या अवसर के होगी। हालांकि आपके कार्यस्थल की स्थिति कुछ हद तक बिगड़ सकती है। यद्यपि सामान्य लोग आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे, फिर भी आपके वरिष्ठ/अधिकारी आपको दबाने का प्रयास कर सकते हैं एवं तक्रसंगत रूप से आपको मिलने वाला श्रेय किसी और को दे सकते हैं। या फिर आपको अन्यायपूर्वक बहुत छोटी अथवा बिना किसी गलती के दोषी ठहराया जा

सकता है।

## शनि दशा

**17:10:2025-10:11:2025**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, शनि उच्चस्थ अथवा अपनी राशि में स्थित है एवं यह अस्त या ग्रसित होने से दूषित नहीं है। शनि की दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। आपको नऐ परिचितों एवं विदेशी स्रोतों से लाभ व समर्थन प्राप्त होगा। आपका परिचय कुछ दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों के साथ हो सकता है, जिसके कारण आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। आपकी आय में वृद्धि होगी एवं आपके स्तर में सुधार होगा। आपमें संतोष की भावना विकसित होगी, किन्तु अपने प्रयुक्त किए जाने वाले साधनों/उपायों पर आपको नजर रखना चाहिए। साथी आपको सावधान व सतर्क रहना चाहिए, क्योंकि आपके किसी दुर्घटना का सामना करने और/या वातमय रोगों से पीड़ित होने का खतरा है।

## गुरु दशा

**11:11:2025-21:11:2025**

श्श इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, गुरु उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते है। अतः गुरु की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। सामान्यतः आपके सभी मामलें भली भांति चलेंगे। आपके पेशे के क्षेत्र में चीजें बहुत सहजतापूर्ण ढंग से होंगी। अपने सगे–संबंधियों व मित्रों की संगति में बिताने के लिए आप कुछ खाली समय निकालने में सक्षम होंगे।

## चंद्र दशा

**22:11:2025-25:11:2025**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, सूर्य उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त भी नहीं है। अतः चंद्रमा की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/समारोह के होगी। हालांकि आप अपने घरेलू क्षेत्र में कुछ समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपके कुछ पारिवारिक–सदस्य क्रोधपूर्ण ढंग से बात व व्यवहार कर सकते हैं, जिसके कारण आप काफी चिड़चिड़े व अप्रसन्न हो सकते हैं।

## शुक्र दशा

**26:11:2025-20:12:2025**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, शुक्र उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते है। अतः शुक्र की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। सामान्यतः आपके सभी मामलें भली भांति चलेंगे। आपके पेशे के क्षेत्र में चीजें बहुत सहजतापूर्ण ढंग से होंगी। अपने सगे–संबंधियों व मित्रों की संगति में बिताने के लिए आप कुछ खाली समय निकालने में सक्षम होंगे। आपका घरेलू जीवन आनन्दपूर्ण व सुखमय होगा।

# ज्योतिष सारिणी

| | SAMPLE | ज्योतिष सारिणी |
|---|---|---|
| जन्म दिनाकं | 21:12:1945 | 22:12:2025 |
| दिन | शुक्रवार | सोमवार |
| ज्योतिषिय वार | शुक्रवार | रविवार |
| जन्म समय | 11:34:00 | 00:02:19 |
| जन्म स्थान | ranchi | ranchi |
| अक्षांश | 023:20:00N | 023:20:00N |
| रेखांश | 085:19:00E | 085:19:00E |
| यु./ग्रीष्म समय संस्कार | -00:00 | -00:00 |
| जी. एम. टी. समय | 006:03:00 | 018:32:19 |
| स्थानीय समय संस्कार | 000:11:15 hrs | 000:11:15 hrs |
| स्थानीय समय | 011:45:15 hrs | 000:13:34 hrs |
| सांपातिक काल | 017:43:03 hrs | 006:15:54 hrs |
| सूर्योदय | 06:28:24AM | 06:29:00AM |
| सूर्यास्त | 05:04:58PM | 05:05:35PM |

| | | |
|---|---|---|
| लग्न | मीन | कन्या |
| लग्नाधिपति | गुरु | बुध |
| राशि (चन्द्रमा) | कर्क | धनु |
| राशिपति | चंद्र | गुरु |
| नक्षत्र | पुष्य | पूर्वाशाढ़ |
| नक्षत्रपति | शनि | शुक्र |
| नक्षत्र चरण | 1 | 4 |
| पाया | रजत | लौह |
| ऋतु | हेमन्त | हेमन्त |
| मास | पौष कृष्ण | पौष शुक्ल |
| पक्ष | कृष्ण | शुक्ल |
| तिथि | तृतीया | द्वितिया |
| तिथि श्रेणी | जया | भद्रा |
| तिथि पति | मंगल | चंद्र |
| करण | वनिज | कौलव |
| करण श्रेणी | चर | चर |
| करणपति | मनिभद्र | चन्द्र |
| सूर्य सिद्धान्त योग | इन्द्रय | ध्रुव |
| तत्व | जल | वायु |
| तत्वाधिपति | शुक्र | शनि |
| विहग | पिंगला | कुक्कुट |
| वेध | पूर्वाशाढ़ | पुष्य |

# ग्रह स्थिती वर्षफल

**Varhphal Years: 80 (2025-2026) Varhphal Date: 22:12:2025, Time: 00:02Hrs**

| ग्रह | राशि | अंश | नक्षत्र | विशेष |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | मीन | 01:13 | पूर्वाभाद(4) | |
| सूर्य(ग्र.) | धनु | 05:55 | मूला (2) | मित्र राशि |
| चन्द्रमा | कक्र | 04:53 | पुष्य (1) | स्व राशि |
| मंगल(व.) | कक्र | 08:17 | पुष्य (2) | नीच राशि |
| बुध | वृश्चिक | 14:56 | अनुराधा (4) | सम राशि |
| बृहस्पति | तुला | 00:18 | चित्रा (3) | शत्रु राशि |
| शुक्र | वृश्चिक | 25:47 | ज्येष्ठा (3) | सम राशि |
| शनि(व.) | कक्र | 00:04 | पुनर्वसु (4) | शत्रु राशि |
| राहु(व.) | मिथुन | 06:56 | अरिद्रा (1) | मित्र राशि |
| केतु(व.) | धनु | 06:56 | मूला (3) | स्व नक्षत्र |
| हर्षल(व.) | वृष | 21:45 | रोहिणी (4) | ..... |
| नेपच्यून | कन्या | 15:24 | हस्ता (2) | ..... |
| प्लूटो(व.) | कक्र | 18:23 | अश्लेषा (1) | ..... |

| ग्रह | राशि | अंश | नक्षत्र | विशेष |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | कन्या | 09:25 | पूर्वाभाद(4) | |
| सूर्य | धनु | 05:55 | मूला (2) | मित्र राशि |
| चन्द्रमा | धनु | 24:50 | पूर्वाषाढ़ (4) | सम राशि |
| मंगल(अ.) | धनु | 10:39 | मूला (4) | मित्र राशि |
| बुध | वृशि | 19:10 | ज्येष्ठा (1) | स्व राशि |
| बृहस्पति(व.) | मिथुन | 28:24 | पुनर्वसु (3) | स्व राशि |
| शुक्र(अ.) | धनु | 02:06 | मूला (1) | सम राशि |
| शनि | मीन | 01:26 | पूर्वाभाद (4) | सम राशि |
| राहु(व.) | कुंभ | 18:29 | शतभिषा (4) | स्व राशि |
| केतु(व.) | सिंह | 18:29 | पुर्वफाल्ग (2) | मित्र राशि |
| हर्षल(व.) | वृष | 04:02 | कृतिका (3) | .... |
| नेपच्यून | मीन | 05:11 | उत्तरभाद्र (1) | .... |
| प्लूटो | मकर | 08:11 | उत्तरा (4) | .... |

लग्न कुण्डली

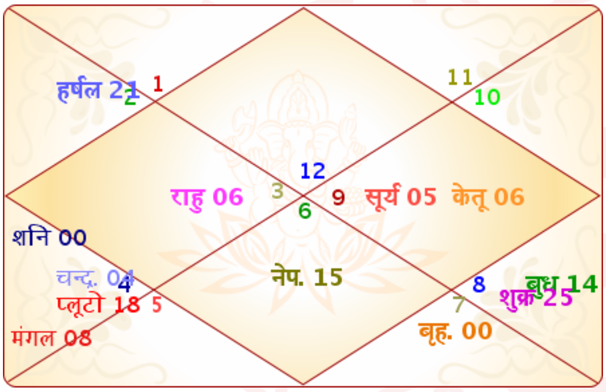


चन्द्र कुण्डली

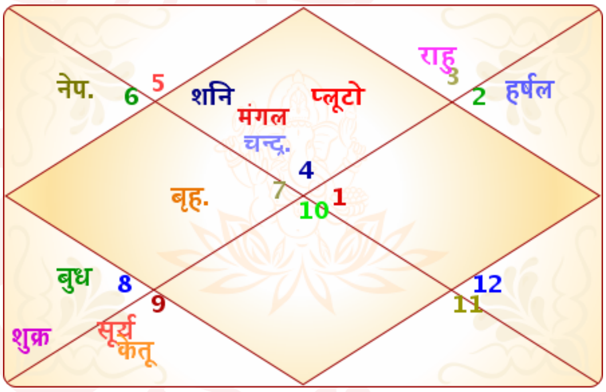


लग्न कुण्डली ( वर्षफल )

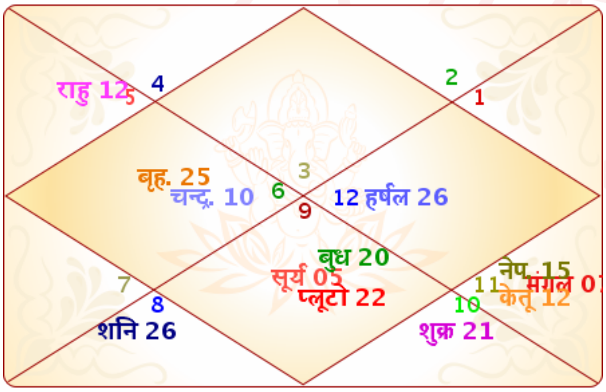


चन्द्र कुण्डली ( वर्षफल )

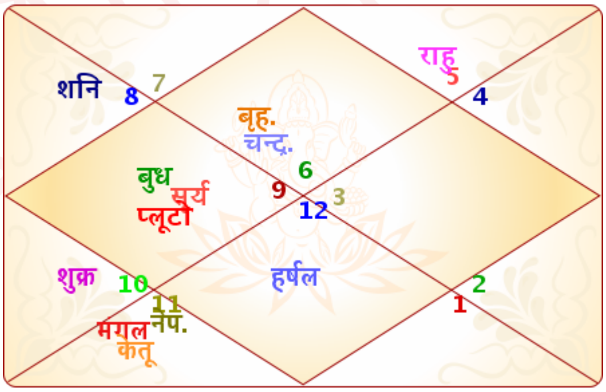

# द्वादश वर्ग कुण्डली

लग्न कुण्डली

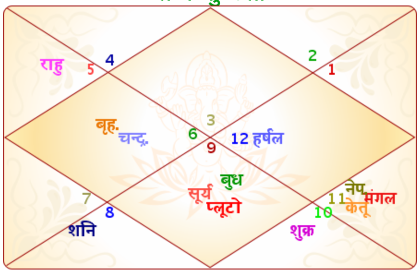


होरा कुण्डली

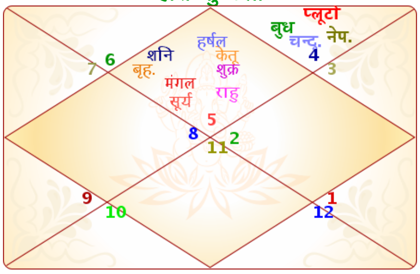


द्रेष्काण कुण्डली

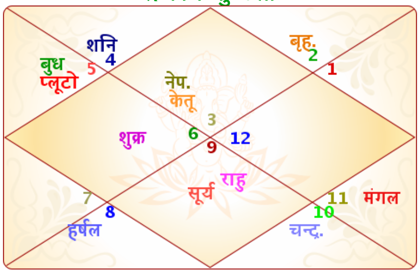


चतुर्थांश कुण्डली

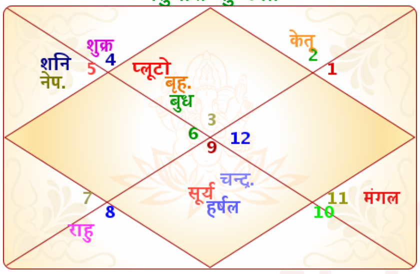


पंचमांश कुण्डली

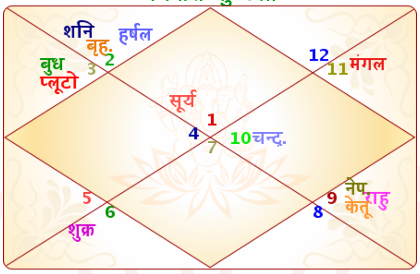


षष्टमांश कुण्डली

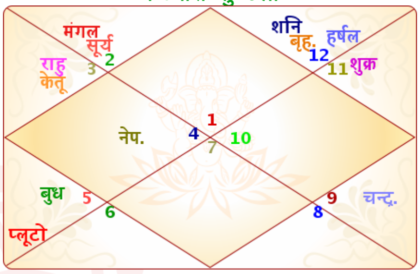


सप्तमांश कुण्डली

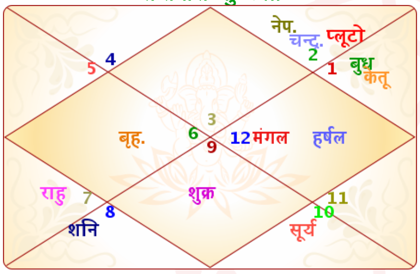


अष्टमांश कुण्डली

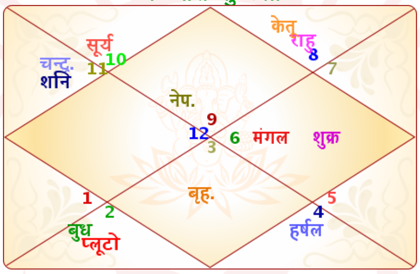


नवांश कुण्डली

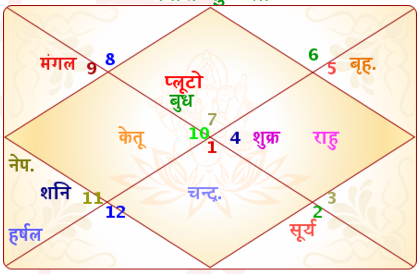


चर्तुविशांश कुण्डली

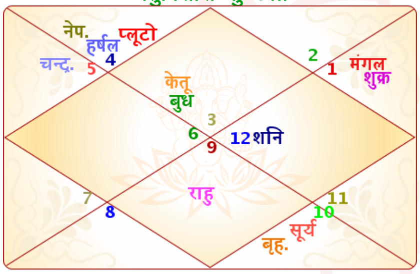


एकादशांश कुण्डली

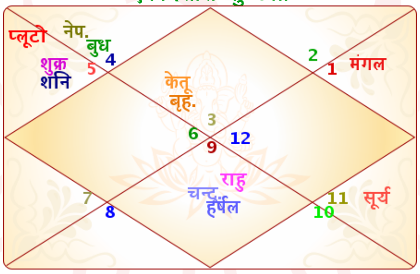


द्वादशांश कुण्डली

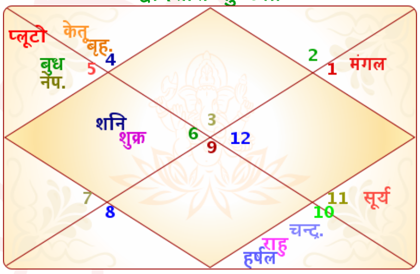


## वर्षफल कुण्डली में ग्रहों की दृष्टि

| | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहू | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रवि | .... | प्र.शत्रु | प्र.शत्रु | सम | प्र.शत्रु | प्र.शत्रु | गु.शत्रु | गु.प्रेम | प्र.प्रेम |
| चंद्र | प्र.शत्रु | .... | प्र.शत्रु | सम | प्र.शत्रु | प्र.शत्रु | गु.शत्रु | गु.प्रेम | प्र.प्रेम |
| मंगळ | प्र.शत्रु | प्र.शत्रु | .... | सम | प्र.शत्रु | प्र.शत्रु | गु.शत्रु | गु.प्रेम | प्र.प्रेम |
| बुध | सम | सम | सम | .... | सम | सम | प्र.प्रेम | गु.शत्रु | गु.शत्रु |
| गुरु | प्र.शत्रु | प्र.शत्रु | प्र.शत्रु | सम | .... | प्र.शत्रु | गु.शत्रु | प्र.प्रेम | गु.प्रेम |
| शुक्र | प्र.शत्रु | प्र.शत्रु | प्र.शत्रु | सम | प्र.शत्रु | .... | गु.शत्रु | गु.प्रेम | प्र.प्रेम |
| शनि | गु.शत्रु | गु.शत्रु | गु.शत्रु | प्र.प्रेम | गु.शत्रु | गु.शत्रु | .... | सम | सम |
| राहू | गु.प्रेम | गु.प्रेम | गु.प्रेम | गु.शत्रु | प्र.प्रेम | गु.प्रेम | सम | .... | प्र.शत्रु |
| केतु | प्र.प्रेम | प्र.प्रेम | प्र.प्रेम | गु.शत्रु | गु.प्रेम | प्र.प्रेम | सम | प्र.शत्रु | .... |

प्र.प्रेमः–प्रकट प्रेम दृष्टि ,गु.प्रेमः–गुप्त प्रेम दृष्टि ,प्र.शत्रुः–प्रकट शत्रु दृष्टि ,गु.शत्रुः–गुप्त शत्रु दृष्टि ,समः–सम दृष्टि ,

# वर्षफल कुण्डली में ग्रहों का बल

Varhphal Years: 80 (2025-2026) Varhphal Date: 22:12:2025, Time: 00:02Hrs

## पंचवर्गीय बल

| क्र0स0 | बल | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | क्षेत्र बल | 7.5 | 7.5 | 7.5 | 15.0 | 15.0 | 7.5 | 7.5 |
| 2 | उच्च बल | 6.21 | 5.76 | 14.74 | 12.87 | 19.27 | 7.23 | 5.4 |
| 3 | हद्दा बल | 3.75 | 3.75 | 3.75 | 7.5 | 3.75 | 3.75 | 3.75 |
| 4 | द्रेक्कन बल | 5.0 | 2.5 | 2.5 | 5.0 | 2.5 | 5.0 | 10.0 |
| 5 | नवांश बल | 1.25 | 1.25 | 1.25 | 2.5 | 2.5 | 1.25 | 1.25 |
| | योग | 5.93 | 5.19 | 7.44 | 10.72 | 10.75 | 6.18 | 6.97 |
| | तुलनात्मक बल | साधारण | साधारण | साधारण | बलशाली | बलशाली | साधारण | साधारण |

## द्वादश वर्गीय बल

| क्र0स0 | बल | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | राशि बल | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| 2 | होरा बल | +2 | +2 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| 3 | द्रेक्कन बल | 0 | 0 | +2 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| 4 | चतुर्थांश बल | 0 | 0 | 0 | 0 | +2 | 0 | 0 |
| 5 | पंचमाशं बल | 0 | 0 | 0 | +2 | 0 | 0 | 0 |
| 6 | षष्टाशं बल | 0 | 0 | 0 | -1 | 0 | 0 | 0 |
| 7 | सप्तमाशं बल | 0 | 0 | 0 | +2 | +2 | 0 | -1 |
| 8 | अष्टमाशं बल | 0 | 0 | 0 | -1 | 0 | 0 | 0 |
| 9 | नवाशं बल | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| 10 | दसाशं बल | 0 | 0 | 0 | -1 | +2 | 0 | 0 |
| 11 | एकादसाशं बल | 0 | 0 | 0 | +2 | 0 | 0 | 0 |
| 12 | द्ववादशाशं बल | 0 | 0 | +2 | +2 | 0 | 0 | 0 |
| | योग | +2 | +2 | +4 | +5 | +6 | 0 | -1 |
| | तुलनात्मक बल | साधारण | साधारण | अच्छा | बहुत अच्छा | बहुत अच्छा | सम | सम |

## हर्ष बल

| क्र0स0 | बल | रवि | चंद्र | मंगळ | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | स्थान बल | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 |
| 2 | क्षेत्र बल | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 |
| 3 | ओज–युग्म बल | 5.0 | 0.0 | 5.0 | 5.0 | 5.0 | 0.0 | 5.0 |
| 4 | दिवा–रात्रि बल | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 5.0 | 0.0 | 5.0 | 5.0 |
| | योग | 5 | 5 | 5 | 10 | 5 | 5 | 10 |
| | तुलनात्मक बल | अल्पबली | अल्पबली | अल्पबली | मध्यबली | अल्पबली | अल्पबली | मध्यबली |

# वर्षफल सहम

Varhphal Years: 80 (2025-2026) Varhphal Date: 22:12:2025, Time: 00:02Hrs

| क्र0स0 | सहम का नाम | राशि | अंश | सहम अधिपति | 11 भाव पति | 8 भाव पति |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | पुण्य सहम (भाग्य) | सिहं | 020:30:34 | सूर्य | बुध | ... |
| 2 | विद्या सहम | तुला | 028:21:12 | शुक्र | सूर्य | ... |
| 3 | यश सहम | धनु | 001:32:01 | बृहस्पति | शुक्र | ... |
| 4 | मित्र सहम (मित्र) | कुम्भ | 024:12:54 | शनि | बृहस्पति | ... |
| 5 | महात्य सहम (महानता) | धनु | 029:35:12 | बृहस्पति | शुक्र | ... |
| 6 | आशा सहम (इच्छा) | मिथुन | 018:39:47 | बुध | मंगल | ... |
| 7 | समर्थ सहम (पुरूषार्थ) | सिहं | 017:56:39 | सूर्य | बुध | ... |
| 8 | भ्रात्रि सहम (भाई) | कुम्भ | 006:24:20 | शनि | बृहस्पति | ... |
| 9 | गौरव सहम (सम्मान) | मिथुन | 002:22:05 | बुध | मंगल | ... |
| 10 | पितृ सहम (पिता) | मिथुन | 013:55:30 | बुध | मंगल | ... |
| 11 | राजा सहम (अधिकार) | मिथुन | 013:55:30 | बुध | मंगल | ... |
| 12 | मात्रि सहम (माता) | सिहं | 016:41:44 | सूर्य | बुध | ... |
| 13 | अपत्य सहम (संतान) | मीन | 005:52:22 | बृहस्पति | शनि | ... |
| 14 | जीव सहम (जीवन) | कुम्भ | 006:24:20 | शनि | बृहस्पति | ... |
| 15 | कर्म सहम (कार्रवाई) | सिहं | 017:56:39 | सूर्य | बुध | ... |
| 16 | रोग सहम | वृष | 024:00:51 | शुक्र | ... | बृहस्पति |
| 17 | काली सहम (कलह, संघर्ष) | कुम्भ | 021:41:20 | शनि | ... | बुध |
| 18 | शास्त्र सहम (उच्च शिक्षा) | कक्र | 022:12:13 | चन्द्रमा | शुक्र | ... |
| 19 | बन्धु सहम (रिश्तेदार) | वृश्चिक | 015:06:09 | मंगल | बुध | ... |
| 20 | निधन सहम | वृष | 024:50:57 | शुक्र | ... | बृहस्पति |
| 21 | परदेश सहम (विदेश) | मेष | 002:06:50 | मंगल | शनि | ... |
| 22 | धन सहम (धन) | धनु | 002:06:48 | बृहस्पति | शुक्र | ... |
| 23 | प्रदर सहम (परस्त्रीगमन) | तुला | 013:14:44 | शुक्र | सूर्य | ... |
| 24 | वनिज सहम (धंधा) | सिहं | 003:45:37 | सूर्य | बुध | ... |
| 25 | कार्यसिद्धि सहम (सफलता) | तुला | 004:59:31 | शुक्र | सूर्य | ... |
| 26 | विवाह सहम | मकर | 008:45:07 | शनि | मंगल | ... |
| 27 | संताप सहम (दुःख) | धनु | 002:50:47 | बृहस्पति | ... | चन्द्रमा |
| 28 | श्रद्धा सहम (भक्ति) | तुला | 017:59:00 | शुक्र | सूर्य | ... |
| 29 | प्रिति सहम (प्यार) | वृश्चिक | 007:44:15 | मंगल | बुध | ... |
| 30 | जाड्य सहम (स्थाई रोग) | मीन | 009:56:46 | बृहस्पति | ... | शुक्र |
| 31 | ब्यापार सहम | मिथुन | 018:39:47 | बुध | मंगल | ... |
| 32 | शत्रु सहम | मकर | 000:12:00 | शनि | ... | सूर्य |
| 33 | जलपत्तन सहम (विदेश यात्रा) | मेष | 025:51:54 | मंगल | शनि | ... |
| 34 | बंधन सहम (कारावास) | मीन | 020:21:19 | बृहस्पति | ... | शुक्र |
| 35 | अपघात सहम (आकस्मिक दुर्घटना) | वृष | 010:39:55 | शुक्र | ... | बृहस्पति |
| 36 | वित्तहानि सहम | मकर | 005:55:38 | शनि | ... | सूर्य |
| 37 | त्रिक स्फूट (दुर्घटना) | कक्र | 018:00:30 | चन्द्रमा | ... | शनि |
| 38 | घात स्थान (अनहोनी) | तुला | 025:00:25 | शुक्र | ... | शुक्र |

# त्रिपताकी चक्र

Varhphal Years: 80 (2025-2026) Varhphal Date: 22:12:2025, Time: 00:02Hrs

| क्र0स0 | राशि | ग्रह |
|---|---|---|
| 1 | 6 | |
| 2 | 7 | शनि |
| 3 | 8 | |
| 4 | 9 | मंगल |
| 5 | 10 | बृहस्पति, राहु |
| 6 | 11 | बुध, शुक्र |
| 7 | 12 | सूर्य, चन्द्रमा |
| 8 | 1 | |
| 9 | 2 | |
| 10 | 3 | |
| 11 | 4 | केतु |
| 12 | 5 | |

## त्रिपताकी चक्र में वेध

**लग्न** : सूर्य , चन्द्र , मंग.
**सूर्य** : सूर्य , चन्द्र , मंग. , चन्द्र , मंग.
**चन्द्रमा** : सूर्य , मंग.
**मंगल** : सूर्य , चन्द्र
**बुध** : गुरू , शुक्र , शनि , राहु , केतु
**बृहस्पति** : बुध , शुक्र , राहु
**शुक्र** : बुध , गुरू , शनि , राहु , केतु
**शनि** : बुध , शुक्र

## ग्रहों द्वारा चन्द्र वेध का फल

**सूर्य :**

आत्मविश्वास की कमी, बदनामी, वृथा अंहकार, दोषयुक्त आँखें, पिता को कठिनाई, मानसिक तनाव, चिड़चिड़ापन, उच्च ज्वर, पित्तजनित रोग तथा निराशायें।

**मंगल :**

शत्रुओं से भय, हथियार, रक्त अनियमितत, दुर्घटनायें, शरीर में दर्द और चोट, शीघ्र क्रोधित होना, लड़ाई–झगड़ा, संघर्ष, हिंसा, लेकिन साथ ही ज्ञान व धन की प्राप्ति भी।

**बुध :**

ज्ञान व बुद्धिमत्ता में वृद्धि, तीक्ष्ण बुद्धि, अच्छे लोगों की संगति और धन का लाभ। लेकिन यदि दूषित है, तो व्यक्ति उतावला व क्षुद्र दिमाग वाला होता है, परिवार की नाराजगी, तनाव और चिन्ताओं की प्राप्ति तथा शत्रुओं से भय।

**बृहस्पति :**

शांति और प्रसन्नता, सभ्य लोगों की संगति, तीर्थ यात्रा, धार्मिक कार्यों के प्रति रूझान, सामाजिक स्तर में उन्नति, धन का लाभ, उपक्रमों के सफलता, संतान का जन्म, और सामान्य समृद्धि।

**शुक्र :**

इच्छाओं की पूर्ति, इन्द्रिय सुख की प्राप्ति, धन–संपदा व शिक्षा की प्राप्ति, शत्रुओं पर विजय। लेकिन शारीरिक सुख के प्रति अत्यधिक लालसा होने के कारण मानसिक व्यग्रता, जल से भय और वातमय विकार।

**शनि :**

तुच्छ व निम्न स्तर के लोगों के साथ संगति, स्वार्थी, तानाशाही, गरीबी, वियोग, यौन विकृति, शारीरिक रोग, सर्दी व जुकाम के साथ–साथ वातमय विकार।

**राहु :**

गंभीर बीमारी/आशंका, मान–प्रतिष्ठा/धन की हानि, विदेशी स्रोतों से कठिनाईयां, उदासीन मन, डरपोक स्वभाव तथा अनेक प्रकार की कठिनाइयों से पीड़ित।

**केतु :**

अस्वस्थता, कमजोर पाचनशक्ति, अस्थिरता, आत्मिक व घुमन्तु प्रकृति, निराशा, चिन्तायें और दुख।

Varhphal Years: 80 (2025-2026) Varhphal Date: 22:12:2025, Time: 00:02Hrs

| मुद्दा योगिनी दशा | | | मुद्दा षोडशोत्तरी दशा | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दशा | अवधि | से | दशा | अवधि | से |
| पिगंला (सूर्य) | 0.0 y.0.0 m.20 d. | 21:12:2025 | गुरु | 0.0 y.1.0 m.11 d. | 21:12:2025 |
| धान्य (वृहस्पति) | 0.0 y.1.0 m.0 d. | 10:01:2026 | रवि | 0.0 y.1.0 m.5 d. | 30:01:2026 |
| भ्रमरि (मंगल) | 0.0 y.1.0 m.10 d. | 09:02:2026 | मंगल | 0.0 y.1.0 m.8 d. | 06:03:2026 |
| भभद्रिका (बुध) | 0.0 y.1.0 m.21 d. | 22:03:2026 | गुरु | 0.0 y.1.0 m.11 d. | 13:04:2026 |
| उल्का (शनि) | 0.0 y.2.0 m.0 d. | 11:05:2026 | शनि | 0.0 y.1.0 m.14 d. | 24:05:2026 |
| सिद्धा (शुक्र) | 0.0 y.2.0 m.11 d. | 11:07:2026 | केतु | 0.0 y.1.0 m.17 d. | 07:07:2026 |
| संकटा (शनि) | 0.0 y.2.0 m.20 d. | 20:09:2026 | चंद्र | 0.0 y.1.0 m.20 d. | 23:08:2026 |
| मंगला (चन्द्रमा) | 0.0 y.0.0 m.10 d. | 10:12:2026 | बुध | 0.0 y.1.0 m.23 d. | 12:10:2026 |

## पत्ययनी दशा

| क्र0स0 | दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | शनि | 0.0 y.0.0 m.19 d. | 21:12:2025 |
| 2 | शुक्र | 0.0 y.0.0 m.9 d. | 08:01:2026 |
| 3 | रवि | 0.0 y.1.0 m.19 d. | 17:01:2026 |
| 4 | लग्न | 0.0 y.1.0 m.15 d. | 07:03:2026 |
| 5 | मंगल | 0.0 y.0.0 m.16 d. | 21:04:2026 |
| 6 | बुध | 0.0 y.3.0 m.18 d. | 07:05:2026 |
| 7 | चंद्र | 0.0 y.2.0 m.12 d. | 24:08:2026 |
| 8 | गुरु | 0.0 y.1.0 m.16 d. | 05:11:2026 |

## मुद्दा विंशोत्तरी दशा

| क्र0स0 | दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | गुरु | 0.0 y.1.0 m.19 d. | 21:12:2025 |
| 2 | शनि | 0.0 y.1.0 m.27 d. | 07:02:2026 |
| 3 | बुध | 0.0 y.1.0 m.21 d. | 06:04:2026 |
| 4 | केतु | 0.0 y.0.0 m.21 d. | 28:05:2026 |
| 5 | शुक्र | 0.0 y.2.0 m.0 d. | 18:06:2026 |
| 6 | रवि | 0.0 y.0.0 m.19 d. | 18:08:2026 |
| 7 | चंद्र | 0.0 y.1.0 m.0 d. | 05:09:2026 |
| 8 | मंगल | 0.0 y.0.0 m.21 d. | 05:10:2026 |
| 9 | राहू | 0.0 y.1.0 m.24 d. | 27:10:2026 |

## वर्ष जैमिनी चर दशा

| क्र0स0 | दशा | अवधि | से |
|---|---|---|---|
| 1 | कन्या | 0.0 y.0.0 m.10 d. | 21:12:2025 |
| 2 | वृष | 0.0 y.0.0 m.25 d. | 31:12:2025 |
| 3 | मकर | 0.0 y.0.0 m.10 d. | 25:01:2026 |
| 4 | सिंह | 0.0 y.1.0 m.9 d. | 03:02:2026 |
| 5 | मेष | 0.0 y.0.0 m.20 d. | 15:03:2026 |
| 6 | धनु | 0.0 y.1.0 m.19 d. | 04:04:2026 |
| 7 | कर्क | 0.0 y.1.0 m.5 d. | 23:05:2026 |
| 8 | मीन | 0.0 y.1.0 m.14 d. | 26:06:2026 |
| 9 | वृश्चिक | 0.0 y.1.0 m.24 d. | 10:08:2026 |
| 10 | मिथुन | 0.0 y.0.0 m.25 d. | 03:10:2026 |
| 11 | कुंभ | 0.0 y.0.0 m.5 d. | 28:10:2026 |
| 12 | तुला | 0.0 y.1.0 m.19 d. | 02:11:2026 |

# वर्षफल कुण्डली से महत्वपूर्ण भविष्यफल

Varhphal Years: 80 (2025-2026) Varhphal Date: 22:12:2025, Time: 00:02Hrs

## (अष्टक चक्र, ढुढिंराजा पद्धति, वर्षेश्वर और मुन्था)

आपकी वर्षफल कुण्डली में, पूर्व भाग में शेष बचता है, जबकि उत्तर भाग में कोई शेष नहीं बचता है, अतः आपका आगामी समय प्रयासपूर्ण हो सकता है– विशेषकर वर्ष के उत्तरार्द्ध में। यदि आपकी कुण्डली में संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आप धन के अवरूद्ध हो जाने के कारण अथवा हानि होने के कारण असुविधाओं का सामना कर सकते हैं।

आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्तमान वर्ष के लिए अष्टक चक्र सूचकांक ग्रह शनि है। यह ग्रह पांचवें भाव में स्थित है। यदि आपकी वर्तमान आयु के लिए प्रासंगिक है तो इस वर्ष के दौरान आप किसी महाविद्यालय/पॉलिटेक्निक/संस्थान से एक शैक्षिक योग्यता (डिग्री या डिप्लोमा) प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्तमान वर्ष के लिए अष्टक चक्र सूचकांक ग्रह शनि है। यह ग्रह चंद्र–राशि से सप्तमेश है, जो कि लग्न से सातवें भाव पर दृष्टि डाल रहा है। यदि आपकी वर्तमान आयु के लिए प्रासंगिक है तो इस वर्ष के दौरान आप विवाह करने अथवा खुद का नया व्यापार (संभवतः सांझेदारी/सहभागिता के द्वारा) प्रारम्भ करने की उम्मीद कर सकते हैं।

आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्तमान वर्ष के लिए अष्टक चक्र सूचकांक ग्रह शनि है। यह ग्रह सप्तमेश है, जो कि चंद्र–राशि से सातवें भाव पर दृष्टि डाल रहा है। यदि आपकी वर्तमान आयु के लिए प्रासंगिक है तो इस वर्ष के दौरान आप आप विवाह करने अथवा खुद का नया व्यापार (संभवतः सांझेदारी/सहभागिता के द्वारा) प्रारम्भ करने की उम्मीद कर सकते हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, बृहस्पति वर्षेश्वर ग्रह है।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, जन्मकुण्डली का लग्नेश वर्षेश्वर है, जबकि यह ग्रह किसी त्रिक–भाव अर्थात छठें/आठवें/बारहवें में स्थित नहीं है। अतः यह एक अनुकूल योग है और आप कई मामलों में उल्लेखनीय रूप से भाग्यशाली होंगे। इस वर्ष के दौरान आपको कुछ विशेष उपलब्धियां प्राप्त हो सकती हैं। या फिर अथवा साथ ही, आपके परिवार में कुछ शुभ समारोह आयोजित हो सकते हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्षेश्वर एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है। परिणामस्वरूप आप भाग्यशाली होंगे। इस वर्ष के दौरान होने वाली घटनाएं बहुत सहज व सरल होंगी तथा आपको किसी अशुभ घटना अथवा अपने सामान्य मामलों में किसी आकस्मिक उतार–चढ़ाव का सामना नहीं करना पड़ेगा।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्षेश्वर एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है। यह दसवें भाव में स्थित है, किन्तु यह नीचस्थ या अस्त या ग्रसित या वक्री है। फलस्वरूप आपको अपने सभी मामलों में सामान्यतः कुछ जटिल समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है तथा विशेषकर व्यवसाय/व्यापार के संदर्भ में। ऐसी संभावना कम ही है कि आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक प्रगति करेंगे, क्योंकि परिस्थितियां आपके अनुकूल नहीं हो सकती हैं अथवा कुछ प्रतिकूल घटनाओं के कारण आपकी संभावनाएं कुछ हद तक प्रभावित हो सकती हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्षेश्वर वृहस्पति है। आपकी सम्पन्नता के सूर्य का उदय होगा और किस्मत आप पर अपने वरदानों की बौछार प्रचूर व पर्याप्त मात्रा में करेगी। आपको अधिकारियों से लाभ व सम्मान प्राप्त होगा– इनमें से कुछ के साथ आप सौहार्दपूर्ण संबंध अथवा घनिष्ठ मित्रता स्थापित कर सकते हैं। आपका घरेलू जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण होगा तथा धार्मिक रूझान गहन होगा। विवाह अथवा संतान के जन्म से आपके परिवार में एक और सदस्य की वृद्धि हो सकती है। पवित्र धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन में आपकी रूचि में वृद्धि हो सकती है तथा आप धर्मार्थ गतिविधियों और मानवीय कर्मों में सक्रियता से भाग ले सकते हैं, जिसके लिए आपकी प्रशंसा हो सकती है।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था तीसरे भाव में स्थित है। अतः यह एक बहुत अनुकूल स्थिति है तथा आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा तथा अपने विरोधियों पर विजय पाएंगे। यदि आपका किसी के साथ कोई विवाद या मुकद्मा चल रहा है तो, इसका फैसला आपके पक्ष में होगा। आपका अपने भाई–बहनों के साथ और अधिक आत्मीय संबंध बनेगा एवं आप उनसे सहयोग व लाभ प्राप्त करेंगे। आप निकट स्थानों की अनेक यात्राएं करेंगे एवं कुछ नए मित्र बनाएंगे। आपके सभी प्रयासों को सफलता मिलेगी एवं आपका समय वास्तव में बहुत आनन्ददायक होगा।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था–राशि मंगल की राशि में स्थित है। आगामी वर्ष आपके लिए अनुकूल है। आप बहुत उर्जावान होंगे एवं अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे। आप अपने सभी वादों को पूरा करेंगे एवं आपकी विश्वसानीयता व सम्मान में वृद्धि होगी। आप अपने वरिष्ठों का ध्यान आकर्षित करेंगे एवं अधिकारियों की प्रशंसा अर्जित करेंगे। ऐसी प्रबल संभावना है कि आप एक अधिक प्रतिष्ठित पद प्राप्त कर सकते हैं। आपकी लोकप्रियता में वृद्धि होगी एवं सामान्यतः लोग आपके साथ सम्मानजनक व्यवहार करेंगे।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था–राशि का स्वामी वर्ष–लग्न से चौथे भाव में स्थित है एवं यह ग्रह उच्चस्थ अथवा अपनी राशि या अपने नक्षत्र में नहीं है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। इस वर्ष के दौरान आप बीमारी से पीड़ित हो सकते हैं, भारी व व्यर्थ के खर्चे हो सकते हैं, आपको हानि होने का भी खतरा हो सकता है। व्यवसाय के क्षेत्र में आप काफी अप्रत्याशित रूप से अस्थाई आघात का सामना कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आपकी विश्वसनीयता व सम्मान भी कुछ अजीब कारणों से दांव पर लग सकते हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था–राशि का स्वामी अस्त (सूर्य के निकट होने के कारण) है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। इस वर्ष के दौरान किसी समय आप बीमारी से पीड़ित हो सकते हैं, भारी व व्यर्थ के खर्चे हो सकते हैं, आपको हानि होने का भी खतरा हो सकता है। व्यवसाय के क्षेत्र में आप अस्थाई आघात का सामना कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आपकी विश्वसनीयता व सम्मान भी कुछ अजीब कारणों से दांव पर लग सकते हैं।

# वर्षफल सहम से भविष्यफल

**Varhphal Years: 80 (2025-2026) Varhphal Date: 22:12:2025, Time: 00:02Hrs**

आपकी कुण्डली में एक ही ग्रह बुध जन्मकुण्डली और वर्षफल कुण्डली में पितृ–सहम का स्वामी है। सहम का स्वामी एक या एक से अधिक शुभ ग्रहों के साथ जुड़ा हुआ है या उनकी इस पर दृष्टि पड़ रही है एवं यह किसी अशुभ ग्रह के साथ ना तो जुड़ा हुआ है और ना ही ऐसे किसी ग्रह की इस पर दृष्टि पड़ रही है। आप अपने पिता के संदर्भ में बहुत भाग्यशाली होंगे। उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आपका उनके साथ बहुत आत्मीय संबंध होगा। वह बहुत मददगार साबित होंगे एवं आपको जरूरत होने पर लाभ व सहयोग प्रदान कर सकते हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, पितृ–सहम एकादशेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा एकादशेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 19:06:2026 और 25:06:2026 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ अनुकूल घटनाएं (इस विशेष सहम से संबंधित) हो सकती हैं।

आपकी कुण्डली में एक ही ग्रह बुध जन्मकुण्डली और वर्षफल कुण्डली में राजा–सहम का स्वामी है। सहम का स्वामी एक या एक से अधिक शुभ ग्रहों के साथ जुड़ा हुआ है या उनकी इस पर दृष्टि पड़ रही है एवं यह किसी अशुभ ग्रह के साथ ना तो जुड़ा हुआ है और ना ही ऐसे किसी ग्रह की इस पर दृष्टि पड़ रही है। आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। अपने वरिष्ठों व अधिकारियों के साथ आपके बहुत आत्मीय संबंध रहेंगे। वे आपके प्रति दयालु व उदार साबित होंगे एवं आपको जरूरत पड़ने पर किसी प्रकार का लाभ व सहयोग प्रदान करने के इच्छुक होंगे।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, राजा–सहम एकादशेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा एकादशेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 19:06:2026 और 25:06:2026 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ अनुकूल घटनाएं (इस विशेष सहम से संबंधित) हो सकती हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, कार्यसिद्धि–सहम एकादशेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा एकादशेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों21:02:2026 और 21:10:2026 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ अनुकूल घटनाएं (इस विशेष सहम से संबंधित) हो सकती हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, कली–सहम अष्टमेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा अष्टमेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 19:09:2026 और 25:03:2026 का पता चलता है, जिनमें से

किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ प्रतिकूल घटनाएं (इस विशेष सहम से संबंधित) हो सकती हैं।

# वर्षफल

**Varhphal Years: 80 (2025-2026) Varhphal Date: 22:12:2025, Time: 00:02Hrs**

## वर्षेश और अन्य कारकों का फल

आपका वर्षेश गुरु इस वर्ष मध्यम बली है। अतः यह वर्ष आपके लिए अल्प मात्रा में शुभ फल प्रदान करेगा। इस वर्ष आपका स्थानान्तरण हो सकता है। आपके मान–सम्मान में कमी आ सकती है। शारीरिक रूप से आप कमजोर व अस्वस्थ्य हो सकते हैं। आपकी रूचि किसी वैज्ञानिक विषय में होगी एवं आपके ज्ञान में वृद्धि होगी। आपका अपने सगे–संबंधियों या अन्य लोगों से विवाद हो सकता है। आपके शत्रुओं में वृद्धि हो सकती है एवं कुछ नए शत्रु भी बन सकते हैं। व्यर्थ के व्यय से धन हानि की भी संभावनाएं हैं।

इस वर्ष आपके वर्षेश गुरु की सूर्य के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि पड़ रही है। इस वर्ष आपको पूर्व दिशा की यात्रा से हानि होने की संभावना है। आपके घर–परिवार का वातावरण क्लेशपूर्ण हो सकता है। लाभ की मात्रा में कमी होने के योग हैं एवं धन हानि व व्यर्थ के व्यय अधिक हो सकते हैं। आपको अपने शत्रुओं से सावधान रहना चाहिए, क्योंकि वे आपका अहित करने का प्रयास कर सकते हैं। आप किसी तीर्थ यात्रा पर भी जा सकते हैं। आपका अपने मित्रों के साथ उत्तम संबंध रहेंगे। राजनीति के क्षेत्र में आप बहुत ख्याति अर्जित करेंगे। आपके तेज में वृद्धि होने से आपके कार्य साहस के साथ सम्पादित होंगे। आप सिर दर्द, नेत्र संबंधी विकार, ज्वर आदि से पीड़ित रह सकते हैं। आपको चोर, लुटेरों, ठगों आदि से सावधान रहना चाहिए।

इस वर्ष आपके वर्षेश गुरु की चंद्रमा के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः यह वर्ष आपके लिए अनुकूल फलदायक रहेगा। आप धार्मिक कार्यों में अधिक रूचि लेंगे। आपको श्वेत वस्तुओं के व्यापार में लाभ प्राप्त होगा। आपको दाम्पत्य सुख और संतान सुख की प्राप्ति होगी एवं अपने परिवार के साथ सुखमय व शांतिपूर्ण समय व्यतीत करेंगे। आपको उत्तम भोजन की प्राप्ति होगी एवं खुशियों में वृद्धि होगी। आपका अपने मित्रों के साथ आत्मीय व सहयोगपूर्ण संबंध रहेंगे। आप खांसी से ग्रसित रह सकते हैं। आपके लिए वायव्य कोण की यात्रा लाभप्रद साबित हो सकती है।

इस वर्ष आपके वर्षेश गुरु की मंगल के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। आप शारीरिक रूप से स्वस्थ्य रहेंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं तो आप अच्छा कार्य करेंगे एवं आपकी पदोन्नति हो सकती है। इस वर्ष आपको विभिन्न सुखों की प्राप्ति होगी एवं आपके यश में वृद्धि होगी। लागों के मन में आपके प्रति सम्मान व सद्भावना विकसित होगी। आपके लिए दक्षिण दिशा में यात्रा करना लाभप्रद हो सकता है। राज्य पक्ष से आपको कुछ परेशानी होने की संभावना है। आप लाल वस्तुओं के व्यापार से लाभ अर्जित कर सकते हैं। आप यदा–कदा ज्वर या वमन आदि से पीड़ित हो सकते हैं। आपको पशु या वाहन से सावधान रहना चाहिए, क्योंकि इनसे आपको हानि हो सकती है।

इस वर्ष आपके वर्षेश गुरु की शुक्र के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि पड़ रही है। इस वर्ष आपको प्राप्त होने वाले शुभ फलों में कमी आ सकती है। किसी से वियोग के कारण आप मानसिक रूप से अशांत हो सकते हैं। धन के अपव्यय से परेशान हो सकते हैं। आपके शत्रु आपका अहित करने का भरूपर प्रयास कर सकते हैं। आपके जीवनसाथी को विशेष रूप से कष्ट हो सकता है। इस वर्ष ईशान कोण से आपको कोई हानि या चिंताजनक बात हो सकती है।

इस वर्ष आपकी वर्षफल कुण्डली में वर्षेश दसवें भाव में उपस्थित है। अतः यह वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। इस वर्ष आपको राजसी सुखों की प्राप्ति होगी और ख्याति चारों ओर फैलेगी। आपका अपने मित्रों व संबंधियों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध रहेंगे, उनके मन में आपके प्रति सम्मान और प्रेम की भावना बनी रहेगी एवं आपको उनका पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। आपके शारीरिक सौन्दर्य में वृद्धि होगी। आपके मन में सबके प्रति दया की भावना उत्पन्न होगी।

## जन्म लग्न का फल

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न की राशि आपकी वर्षकुण्डली में सातवें भाव में स्थित है। अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ फलदायक होगा। आपके घर–परिवार में शुभ समारोहों का आयोजन हो सकता है। आपको अपने कार्यों में वांछित सफलता प्राप्त होगी।

## कुण्डली के भावों का उनके कारकत्व के अनुसार विश्लेषण

**लग्न भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश तीसरे भाव में स्थित है। यह वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। इस वर्ष आपको अपने भाइयों, अधीनस्थों, कर्मचारियों, मजदूर, नौकर आदि से लाभ की प्राप्ति होने की संभावना है।

आपकी वर्षकुण्डली में, चंद्रमा, बुध, बृहस्पति या शुक्र में से कोई दो ग्रह केन्द्र में स्थित हैं, दोनों में से कोई नीचस्थ अथवा अस्त नहीं है। यह योग सभी प्रकार के अरिष्टों को अवश्य समाप्त करेगा।

आपकी वर्षकुण्डली में, चंद्रमा लग्न से चौथे, छठे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है।

**द्वितीय भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, द्वितीयेश चौथे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको मकान, दुकान, भवन आदि से किराये के रूप में लाभ प्राप्त होने की संभावना है, इसके अतिरिक्त भी कई प्रकार के लाभ प्राप्त हो सकते हैं। आपको कृषि

संबंधी कार्यों से भी लाभ प्राप्त होंगे। आपको अपने मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा।

आपकी जन्मकुण्डली का द्वितीयेश आपकी वर्षकुण्डली में अस्त है। इस वर्ष आपके संचित धन की हानि हो सकती है।

**तृतीय भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में बुध तीसरे भाव में स्थित है। इसलिए, इस वर्ष आपकी स्थिति सामान्यतः पूर्ववत बनी रह सकती है। आपको लाभ की प्राप्ति पूर्व की भांति ही होती रहेगी एवं धनोपार्जन में कोई परिवर्तन नहीं होगा। इस वर्ष आप व्यापार में रूचि ले सकते हैं। आपका अपने मित्रों एवं परिजनों से यथावत संबंध बना रहेगा तथा सुख–दुख की स्थिति भी पहले की ही तरह रहेगी। आप अनेक यात्राएं कर सकते हैं। लाभ–हानि में भी कोई परिवर्तन नहीं आएगा। संक्षेप में इस वर्ष आपकी स्थिति में कोई परिवर्तन होने के योग नहीं हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, तृतीयेश चौथे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको पदोन्नति प्राप्त होने की संभावना है। आपको अपने भ्रातृ–पक्ष से धन के अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी लाभ की प्राप्ति हो सकती है। आपको भूमि–भवन आदि का सुख प्राप्त होने योग हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में बुध या शुक्र लग्नेश होकर वर्षकुण्डली में तीसरे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपका अपने भाइयों एवं संबंधियों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध रहेगा।

आपकी वर्षकुण्डली में, तृतीयेश से सातवें भाव में वर्षेश अथवा लग्नेश स्थित है। इस वर्ष आपका अपने भाइयों से लड़ाई–झगड़े हो सकते हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, षष्ठेश तथा तृतीयेश पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि पड़ रही है। इस वर्ष आपके भाइयों को रोगादि से शारीरिक कष्ट होने की संभावना है।

आपकी वर्षकुण्डली में, सूर्य अशुभ ग्रहों के साथ स्थित है अथवा उस पर पापी ग्रहों की दृष्टि पड़ रही है। आपका अपने भाइयों से क्लेश हो सकता है एवं आपके भाई आपको धोखा दे सकते हैं।

**चतुर्थ भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली मे सूर्य चौथे भाव में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए अनुकूल नहीं है। इस वर्ष आपका स्थानान्तरण हो सकता है। आपको उच्चाधिकारियों या राज्य पक्ष की ओर से परेशानी हो सकती है। आप शारीरिक रूप से कमजोर हो सकते हैं। यात्रा के दौरान कष्ट हो सकता है। वाहन चलाते समय आपको उचित सावधानी रखनी चाहिए। आपका अपने परिजनों से मतभेद व विरोध हो सकता है तथा आपके मित्र भी मददगार नहीं हो सकते हैं या उनसे मनमुटाव हो सकता है।आपकी वर्षकुण्डली में चंद्रमा चौथे भाव में स्थित है। इसलिए,

यह वर्ष आपके लिए शुभ फलदायक होगा। आपको जीवनसाथी एवं सतान का सुख प्राप्त होगा एवं उनके साथ शांतिपूर्ण एवं मधुर संबंध रहेगा। धन–लाभ की प्राप्ति, भूमि–भवन संबंधि उन्नति एवं वाहन का सुख भी प्राप्त होने के योग हैं। आपके व्यवसाय की स्थिति उत्तम रहेगी, आपको कृषि कार्य से भी लाभ होगा एवं पशुधन की प्राप्ति भी हो सकती है।आपकी वर्षकुण्डली में मंगल चौथे भाव में स्थित है। इसलिए, इस वर्ष आपकी माता को शारीरिक कष्ट हो सकता है। आपके मित्रों एवं स्वजनों से आपका विरोध व मतभेद हो सकता है। आपके परिवार में कलह–क्लेश रहने के कारण अथवा किसी अन्य कारणवश आप मानसिक रूप से व्यथित हो सकते हैं। आगजनी से हानि हो सकती है। चौपाया पशु या वाहन से भी हानि होने की संभावना है। इस वर्ष आपको यात्रा में कष्ट हो सकता है। व्यवसाय या कृषि संबंधी कार्यों में लाभ की प्राप्ति अधिक नहीं हो सकती है।आपकी वर्षकुण्डली में, शुक्र चौथे भाव में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए अनुकूल होगा। इस वर्ष आप शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ्य एवं निरोग रहेंगे एवं आपको शारीरिक सुखों की प्राप्ति होगी। अपने कार्यक्षेत्र में उन्नति करेंगे एवं अनेक सम्मान प्राप्त करेंगे। इस वर्ष आपको भूमि–भवन आदि का उत्तम सुख प्राप्त होगा, आपको कृषि योग्य भूमि की भी प्राप्ति हो सकती है। आप नये वाहन का सुख भी प्राप्त कर सकते हैं। आपका अपने मित्रों के साथ अच्छे संबंध रहेंगे।

आपकी वर्षकुण्डली में, चतुर्थेश दसवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको भूमि से संबंधित सुख एवं लाभ की प्राप्ति होने के योग हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, बृहस्पति और चंद्रमा केन्द्र में स्थित हैं अथवा बृहस्पति और शुक्र चौथे भाव में स्थित हैं। इस वर्ष आपको बहुत कठिन परिश्रम के बाद गड़े हुए धन की प्राप्ति होने की संभावना है।

आपकी वर्षकुण्डली में, सूर्य और चंद्रमा दोनों एक साथ चौथे भाव में स्थित हैं। इस वर्ष आपके माता–पिता दोनों को ही कष्ट हो सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में सूर्य और चंद्रमा के साथ बृहस्पति या शुक्र स्थित है। आपको इस वर्ष अपने माता–पिता का सुख प्राप्त होगा।

**पंचम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, पंचमेश सातवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपका अपने मित्रों के साथ मधुर संबंध रहेंगे एवं संतान का सुख भी प्राप्त होगा। किन्तु पंचमेश सातवें भाव में शत्रु राशि में स्थित होने के कारण आपकी मान–प्रतिष्ठा का ह्रास हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में पाँचवें भाव का स्वामी, आपकी वर्षकुण्डली में क्रूर ग्रहों के साथ स्थित है। इस वर्ष आपको संतान से संबंधित दुख हो सकता है।

## षष्टम् भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में, राहु छठवें भाव में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए अनुकूल फलदायक रहेगा। इस वर्ष आपका पारिवारिक जीवन सुख–शांतिपूर्ण व्यतीत होगा एवं आप अपने परिवार के साथ प्रसन्नचित्त होकर जीवन का आनन्द लेंगे। आप शारीरिक रूप से स्वस्थ्य एवं रोगमुक्त रहेंगे। आपको अपने कार्यक्षेत्र में सफलता व प्रगति के अवसर मिलेंगे। आप अपने शत्रुओं को परास्त करेंगे।

आपकी वर्षकुण्डली में, षष्ठेश सातवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको अपने शत्रुओं से लाभ हो सकता है, किन्तु साथ ही आप मानसिक रूप से किसी भय से ग्रसित भी रह सकते हैं।

## सप्तम् भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में, शनि सातवें भाव में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए अनुकूल नहीं हो सकता है। इस वर्ष आपको अपने जन्मस्थान से दूर जाना पड़ सकता है अथवा प्रवास करना पड़ सकता है। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है तथा आपकी संतान को भी कोई पीड़ा रह सकती है। आप अपने जीवनसाथी के अतिरिक्त किसी अन्य के प्रति आकर्षित हो सकते हैं या उससे संबंध स्थापित हो सकते हैं। इस वर्ष आप पर कोई झूठा आरोप लगाने का प्रयत्न कर सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, सप्तमेश दसवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपके उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे, तथा उनसे अच्छे संबंध होने के कारण आपको उनसे लाभ व सहयोग की प्राप्ति होगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, बृहस्पति युति अथवा दृष्टि से मुन्थेश के साथ संबद्ध है। यदि आप विवाह योग्य हैं और अविवाहित हैं, तो आपका इस वर्ष विवाह होने के प्रबल योग हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, चंद्रमा जिस राशि में स्थित है, उसी राशि का स्वामी चंद्रमा पर दृष्टि डाल रहा है। इस वर्ष आपकी खोई हुई वस्तु वापस मिल जायेगी।

## अष्टम् भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में, अष्टमेश चौथे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपकी माता को कष्ट होने की संभावना है।

आपकी जन्मकुण्डली में बुध मंगल की राशि में है, जो कि वर्षकुण्डली में पंचाधिकारियों में से एक है। इस वर्ष आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है, आप रोगादि से ग्रसित रह सकते हैं।

## नवम् भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में, नवमेश चौथे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको कोई संपत्ति प्राप्त होने की संभावना है।

इसके अतिरिक्त आप घर, मकान, दुकान आदि से किराया या भाड़ा के रूप में भी आय प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, बुध शक्तिशाली स्थिति में तीसरे या नौवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आप पवित्र तीर्थ स्थानों की यात्रायें करेंगे।

आपकी वर्षकुण्डली में, नौवां भाव (भाग्य भाव) शनि से युत या दृष्ट है। इस वर्ष आपकी उन्नति के मार्ग में बाधायें उत्पन्न हो सकती हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, चतुर्थेश और भाग्येश में युति अथवा दृष्टि संबंध है। इस वर्ष आपको जमीन–जायदाद आदि की प्राप्ति होने के प्रबल योग हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, मंगल वर्षेश है और केन्द्र में स्थित है। इस वर्ष आप दूरस्थ स्थानों की यात्रायें करेंगे।

**दशम् भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में बृहस्पति दसवें भाव में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए बहुत शुभकारी होगा। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं, तो इस वर्ष आपको सरकारी या किसी प्रतिष्ठित संस्थान में रोजगार प्राप्ति का सुनहरा अवसर मिलने के योग हैं अथवा आपका संबंध राज्य पक्ष से अच्छा रहेगा, जिससे आपको पदोन्नति भी मिल सकती है। आप अपने विवेकशीलता एवं युक्तिपूर्ण निर्णय से किसी भी परिस्थिति में विजयी होंगे। आपकी मान–प्रतिष्ठा एवं यश में वृद्धि होगी तथा लोग आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे। आपके घर में खुशहाली का माहौल रहेगा एवं समारोह का आयोजन हो सकता है और आप आनन्दमग्न रहेंगे।

आपकी वर्षकुण्डली में, दशमेश तीसरे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको अपने भाइयों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको अपने कार्यों में सफलता मिलेगी एवं धनार्जन भी होगा।

आपकी वर्षकुण्डली में, वर्षेश शक्तिशाली स्थिति में दसवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको मंत्री पद या उच्च सरकारी पद प्राप्त होने के प्रबल योग हैं।

**एकादश भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, एकादशेश चौथे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको भूमि, कृषि संबंधी कार्यों आदि से लाभ प्राप्त होने की संभावना है। यदि एकादशेश की पाप ग्रहों के साथ युति है या ऐसे ग्रहों की उस पर दृष्टि है, तो आपको इस वर्ष अधिक कष्टों का सामना करना पड़ सकता है।

**द्वादश भाव का विश्लेषण –**

आपकी वर्षकुण्डली में, केतु बारहवें भाव में स्थित है। यदि आप अध्ययनरत हैं, तो आपके अध्ययन या प्रशिक्षण के

मार्ग में बाधाएं उत्पन्न हो सकती है तथा आपकी सफलता की संभावनाएं कम हो सकती हैं। आपके तेज, अधिकार एवं प्रताप में कमी आ सकती है, तथा आप निम्न स्तर के अधिकारी की भांति हो सकते हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, द्वादशेश चौथे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको कृषि से संबंधित कार्यों से लाभ होगा एवं आपके धन खर्च में भी वृद्धि होगी।

# पत्ययनी दशाफल

Varhphal Years: 80 (2025-2026) Varhphal Date: 22:12:2025, 00:02Hrs

## शनि दशा

21:12:2025-07:01:2026

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, शनि उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते है। अतः शनि की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। सामान्यतः आपके सभी मामलें भली भांति चलेंगे। आपके पेशे के क्षेत्र में चीजें बहुत सहजतापूर्ण ढंग से होंगी। संभवतः आप उद्योगों या खानों के लोगों के साथ संबंध स्थापित कर सकते हैं। आपका घरेलू जीवन आनन्दपूर्ण व सुखमय होगा।

## शुक्र दशा

08:01:2026-16:01:2026

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, शुक्र नीचस्थ है या अस्त अथवा ग्रसित होने के कारण दूषित है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। शुक्र की दशा आपके लिए अच्छी अवधि नहीं हो सकती है। अतः आपको सावधान व सचेत रहना चाहिए एवं अपने स्वास्थ्य का उचित ध्यान रखना चाहिए। आपके कुछ पारिवारिक सदस्य– विशेषकर आपकी पत्नी– का बिगड़ता हुआ स्वास्थ्य आपको कुछ चिन्तित कर सकता है। अथाव धन के अवरूद्ध होने के कारण आप अपने वचनों को पूरा करने में कठिनाई का सामना कर सकते हैं। इस अवधि के दौरान किसी भी महत्वपूर्ण कार्य की शुरूआत करना अथवा किसी लम्बी यात्रा के लिए प्रस्थान करना अधिक फलदायक नहीं हो सकता है।

## रवि दशा

17:01:2026-06:03:2026

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, सूर्य उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित नहीं है। समग्र रूप से यह एक उदासीन योग का निर्माण करता है। अतः सूर्य की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। हालांकि आपको अपने कार्यस्थल पर कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है एवं आप अपने किसी वरिष्ठ अथवा सहकर्मी के साथ मामूली असहमति अथवा गलतफहमी के कारण झुंझलाहट महसूस कर सकते हैं।

## लग्न दशा

07:03:2026-20:04:2026

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, लग्नेश उच्चस्थ अथवा अपनी राशि में अथवा नीचस्थ नहीं है। किन्तु यह वक्री या अस्त या ग्रसित नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते हैं। अतः लग्न की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना या अवसर के होगी। हालांकि आपके कार्यस्थल की स्थिति कुछ हद तक बिगड़ सकती है। यद्यपि सामान्य लोग आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे, फिर भी आपके वरिष्ठ/अधिकारी आपको दबाने का प्रयास कर सकते हैं एवं तक्रसंगत रूप से आपको मिलने वाला श्रेय किसी

और को दे सकते हैं। या फिर आपको अन्यायपूर्वक बहुत छोटी अथवा बिना किसी गलती के दोषी ठहराया जा सकता है।

## मंगल दशा

**21:04:2026-06:05:2026**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मंगल नीचस्थ है अथवा अस्त या ग्रसित होने के कारण दूषित है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। मंगल की दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं रह सकता है एवं आपके सगे या चचेरे भाई आपको सम्पत्ति संबंधी मामलों में परेशान कर सकते हैं। इस अवधि के दौरान कोई महत्वपूर्ण कार्य प्रारम्भ करना या किसी लम्बी यात्रा के लिए प्रस्थान करना लाभदायक नहीं हो सकता है। आपके कार्यस्थल पर स्थिति कुछ हद तक बदतर हो सकती है एवं आपकी अपने कुछ सहकर्मियों या वरिष्ठों से असहमति हो सकती है।

## बुध दशा

**07:05:2026-23:08:2026**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, बुध उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते है। अतः बुध की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। सामान्यतः आपके सभी मामलें भली भांति चलेंगे। आपके पेशे के क्षेत्र में चीजें बहुत सहजतापूर्ण ढंग से होंगी। अपने सगे–संबंधियों व मित्रों के साथ मिलने–जुलने के लिए आप कुछ खाली समय निकालने में सक्षम होंगे।

## चंद्र दशा

**24:08:2026-04:11:2026**

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, सूर्य उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त भी नहीं है। अतः चंद्रमा की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/समारोह के होगी। हालांकि आप अपने घरेलू क्षेत्र में कुछ समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपके कुछ पारिवारिक–सदस्य क्रोधपूर्ण ढंग से बात व व्यवहार कर सकते हैं, जिसके कारण आप काफी चिड़चिड़े व अप्रसन्न हो सकते हैं।

## गुरु दशा

**05:11:2026-20:12:2026**

श्श इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, गुरु उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते है। अतः गुरु की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। सामान्यतः आपके सभी मामलें भली भांति चलेंगे। आपके पेशे के क्षेत्र में चीजें बहुत सहजतापूर्ण ढंग से होंगी। अपने सगे–संबंधियों व मित्रों की संगति में बिताने के लिए आप कुछ खाली समय निकालने में सक्षम होंगे।